प्रीति कारण सेतु बान्हल

Redefining Maithili

𑒣𑓂𑒩𑒲𑒞𑒱 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒮𑒹𑒞𑒳 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒪

प्रीति कारण सेतु बान्हल

Redefining Maithili

सम्पादक: आशीष अनचिन्हार

COVER DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

“Preeti Karan Setu Banhal-Redefining Maithili” A Critical Appreciation of the Works of Gajendra Thakur & Preeti Thakur (2024, Language: Maithili)

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*

माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओइपर (*गद्य-पद्य रूपी*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ

गोटेकें ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकें, क्षत्रियकें, शूद्रकें आ आर्यकें; अपन लोककें आ अपरिचितकें सेहो (माने सभकें)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकें समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकें प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तें तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

----

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्ति:

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তি:

आजु जनकपुर मंगल भुप सभ आओल हे...

अनुक्रम

प्रथम गणेश पद गाओल देवता मनाओल हे...- आशीष अनचिन्हार (पृ. 3-17)

बनहीमे मुँगिया जनमि गेल बनही लतरि गेल हे...- प्रस्तुति-आशीष अनचिन्हार (पृ.18-28)

पीपरक पात अकासहि डोलए शीतल बहए बसात यौ...

खण्ड-1: कृपानंद ठाकुर

1. करोट फेरैत गामक निदर्शकः के.एन.टी- सियाराम झा 'सरस' (पृ.30-65)

पहिल पहर गौरी पूजल...

खण्ड-2: प्रीति ठाकुर

1. प्रीति ठाकुरक गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा- डॉ. शेफालिका वर्मा (पृ. 67-68)

2. गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा- वीणा ठाकुर (पृ. 69-74)

3. ‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’ आ ‘मैथिली चित्रकथा’- डॉ. रमण झा (पृ. 75-78)

4. गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा- शिव कुमार झा ‘टिल्लू’ (पृ. 79-83)

5. प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर एक नजरि- धीरेन्द्र कुमार (पृ. 84-86)

6. नेना लेल सुन्दर चित्रकथा- दुर्गानन्द मण्डल (पृ. 87-90)

7. मैथिली चित्रकथा- शिव कुमार झा ‘टिल्लू’ (पृ. 91-94)

8. मिथिलाक लोक देवता- शिव कुमार झा ‘टिल्लू’ (पृ. 95-99)

9. मैथिली चित्रकथा केर प्रारंभिक इतिहास (2002 सँ 2016)- आशीष अनचिन्हार (पृ. 100-108)

10. मैथिलीक पहिल चित्रकथा लेखिका प्रीति ठाकुर केर साक्षात्कार (आशीष अनचिन्हार द्वारा ई-मेल केर माध्यमसँ)- (पृ. 109-112)

तोड़लनि धनुष कठोर हे परिछन चलू सखिया...

खण्ड-3: गजेन्द्र ठाकुर

(इंटरनेट, भाषा, पञ्जी, लिपि, शब्दकोश, संपादन, अनुसंधान, साहित्य एवं अन्य)

1. विदेह डिजिटल पुस्तकालयः पठन-पाठनक सौखीन लोक लेल वरदान- कल्पना झा (पृ. 114-126)

2. मैथिली डिजिटल पत्रकारिताक सूत्रधारः गजेन्द्र ठाकुर- कीर्तिनाथ झा (पृ. 127-131)

3. मैथिलीक इंटरनेट मैनः गजेन्द्र ठाकुर- लाल देव कामत (पृ. 132-135)

4. पञ्जी साहित्यमे गजेन्द्र ठाकुरक योगदान- विनयानन्द झा (पृ. 136-150)

5. की थिक पञ्जी-प्रबन्ध- जगदीशचंद्र ठाकुर 'अनिल' (पृ. 151-158)

6. दूषण पञ्जी: गजेन्द्र ठाकुर केर मैथिली संस्कृति पर सार्वभौमिक योगदान- डॉ. कैलाश कुमार मिश्र (पृ. 159-203)

7. मिथिलाक पञ्जी आ ओकर संरक्षणक दिशामे श्री गजेन्द्र ठाकुर- भवनाथ झा (पृ. 204-212)

8. सौजन्यमूर्ति श्री गजेन्द्र बाबू- भीमनाथ झा (पृ. 213-218)

9. मिथिलाक धरोहरि संरक्षक गजेन्द्र ठाकुर- डॉ. शिव कुमार मिश्र (पृ. 219-227)

10. गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी, अंग्रेजी-मैथिली आ अंग्रेजी-मैथिली कम्प्यूटर शब्दकोश- उदय नारायण सिंह "नचिकेता" (पृ. 228-241)

11. श्री गजेन्द्र ठाकुर: हमर नजरिमे- प्रणव कुमार झा (पृ. 242-249)

12. मिथिला मिहिर आ विदेह वेब पत्रिका- लक्ष्मण झा ‘सागर’ (पृ. 250-258)

13. मैथिलीक पत्रिकामे विशेषांक (विशेष संदर्भ-व्यक्तिपरक विशेषांक)- शिवशंकर श्रीनिवास (पृ. 259-268)

14. श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक मैथिलीक हेतु अमूल्य योगदान: विदेह ई पत्रिका- रबीन्द्र नारायण मिश्र (पृ. 269-274)

15. विदेह ओ गजेन्द्र-धनाकर ठाकुर (पृ.275-278)

16. मैथिली साहित्यक साधक-अराधक श्री गजेन्द्र ठाकुर- डॉ. योगानन्द झा (पृ. 279-287)

17. गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक- उदय नारायण सिंह "नचिकेता" (पृ. 288-292)

18. गजेन्द्र ठाकुर आ हुनक उपन्यास- अशोक (पृ.293-296)

19. सहस्त्रबाढनि: हमर दृष्टि मे (किछु टिप्पणी)-अरविन्द ठाकुर (पृ.297-316)

20. कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)- राजदेव मंडल (पृ. 317-336)

21. कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक- शिव कुमार झा ‘टिल्लू’ (पृ. 337-362)

22. मैथिली बाल काव्यधारा- प्रोफेसर प्रेमशंकर सिंह (पृ. 363-368)

23. सामाजिक विषमताक तह धरि पैसैत कथा- आभा झा (पृ. 369-379)

24. साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर: व्यक्तित्व आ कृतित्व- आचार्य रामानंद मंडल (पृ. 380-383)

25. मैथिलीक सुच्चा सेवक: श्रीमान् गजेन्द्र ठाकुर जी- अजित कुमार झा (पृ. 384-390)

26. मैथिली वेब पत्रिकारिता केर नव आयाम दैत गजेन्द्र ठाकुर- मुकेश दत्त (पृ. 391-394)

27. पञ्जी प्रबंधक प्रकाशन बहन्ने श्रुति प्रकाशन एवं नागेद्र कुमार झाक चर्चा- आशीष अनचिन्हार (पृ. 395-410)

28. गप्प-सप्प- मुन्नाजी (पृ. 411-431)

29. गजेन्द्र ठाकुर केर साक्षात्कार- आशीष अनचिन्हार द्वारा ई-मेल केर माध्यमसँ (पृ. 432-442)

कवन नगर के सेनुरिया सेनुर बेचे आयल रे आहे कवन नगर के कुमारी धिया सेनुर बेसाहल हे...गजेन्द्र ठाकुर एवं प्रीति ठाकुरक परिचय (पृ. 444-473)

करमी के लत्ती जकाँ लतरथु पुरैन जकाँ पसरथु हे... (पृ. 474-475)

सहयोगी लेखक परिचय (पृ. 476-477)

सम्पादक-परिचय (पृ. 478-478)

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्ति र्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

𑓇 𑒠𑓂𑒨𑒾: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭 Ẇ 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑓁 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒰𑒣: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒼𑒭𑒡𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹 𑒠𑒹𑒫𑒰: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒥𑓂𑒩𑒿𑒯𑓂𑒧

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:-जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟𑒢𑒰 𑒖𑒹 𑒠𑓂𑒨𑒳𑒪𑒼𑒏𑒧𑒹, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭𑒧𑒹, 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲𑒣𑒩, 𑒖𑒪𑒧𑒹, 𑒎𑒭𑒡𑒧𑒹, 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒱𑒧𑒹, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒧𑒹, 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒑𑒝𑒧𑒹 𑒂 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒧𑒹 𑒬𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒯𑒳𑒁𑒨। 𑓇-𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝, 𑒠𑓂𑒨𑒾-𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨-𑒞𑒩𑒹𑒑𑒝, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭- 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒂 𑒠𑓂𑒨𑒳𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒥𑒲𑒔, 𑒂𑒣:-𑒖𑒪, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹𑒠𑒹𑒫𑒰- 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰, 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧- 𑒮𑒩𑓂𑒖𑒏।

ॐ, स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात्।

𑓇, 𑒮↓𑒯𑒮𑓂𑒩↑𑒬𑒲𑒩𑓂𑒭𑒰↓ 𑒣𑒳𑒩𑒳↑𑒭𑓁। 𑒮↓𑒯↓𑒮𑓂𑒩𑒰↓𑒏𑓂𑒭𑓁

𑒮↓𑒯𑒮𑓂𑒩↑𑒣𑒰𑒞𑓂।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

𑒮 𑒦𑒴𑒧𑒱𑓀↑ Ẇ 𑒫𑒱↓𑒬𑓂𑒫𑒞𑒼↑ 𑒫𑒵↓𑒞𑓂𑒫𑒰। 𑒁𑒞𑓂𑒨↑𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒠𑓂 𑒠𑒬𑒰𑒓𑓂𑒑𑒳↓𑒪𑒧𑓂॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

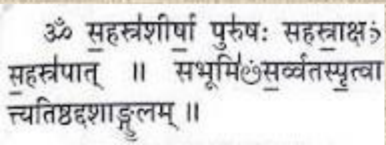
ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमिं सर्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

प॒द्भ्याग्ँ॒ शू॒द्रो अंजायत॥

प↓ड्भ्याग्ँ↑ शृ↓द्रो अ↑जायत॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

प॒द्भ्यां भूमि॒र्दिशः॒ श्रोत्रा॑त्।

প↓ড্ডাঁ হূমি↓র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑↑৯।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐(Swastik)

Ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

৺ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम সিদ্ধিৰস্তু, সিদ্ধম Devanagari Anji)

ঀ (Bengali Anji, Siddham)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑓆

समर्पण

सिरजनहारकेँ

आजु जनकपुर मंगल भुप सभ आओल हे...

प्रथम गणेश पद गाओल देवता मनाओल हे.....

गजेन्द्र ठाकुर एवं प्रीति ठाकुर लेखक-लेखिका छथि आ पति-पत्नी सेहो। मैथिलीमे दंपति रचनाकारक जे अवधारणा छै ताहिमे ईहो एकटा छथि। साहित्यमे प्रीतिजीक रूप छनि चित्रकथा, बाल साहित्य एवं विदेह लेल नेपथ्य बला काज सभ करब। मुदा गजेन्द्रजीक अलग-अलग रूप छनि। गजेन्द्र ठाकुर मैथिलीकेँ इंटरनेपर आनए ओ स्थापित करए बला छथि, भाषाक विकास लेल कार्यरत छथि, पञ्जी केँ सामान्य पाठक लेल सुलभ बनाबए बला छथि, तिरहुता संग कुल 11 टा लिपिमे पत्रिका पाठक लग पहुँचाबए बला छथि, शब्दकोश केर निर्माता छथि, संपादक छथि, अनुसंधानकर्ता छथि आ साहित्यकार छथि। आ एहू सभसँ बढ़ि कऽ चुपचाप काज करए बला छथि। एहि पोथीमे गजेन्द्र ठाकुर बला खंडक आलेख सभकेँ अही क्रममे सजाएल गेल अछि (इंटरनेट, भाषा, पञ्जी, लिपि, शब्दकोश, संपादन, अनुसंधान, साहित्य एवं अन्य)। आ एहि काज सभ लेल जिनकासँ जेहन काज, जेहन सहायता लेबाक रहनि से लेलाह आ लऽ रहलाह अछि। हुनक काज वा इच्छाकेँ पूरा करबा लेल एहन दू व्यक्ति आगू एलखिन जिनक सहायतासँ पूरा मैथिली साहित्य केर इतिहास बदलि गेल। गजेन्द्र ठाकुर आइडिया अनैत रहलाह आ ई दूनू व्यक्ति आइडिया कोना पूरा हेतै तकर संसाधन केर संधानमे

लागल रहलाह। एक छथि नागेन्द्र कुमार झा आ दोसर छथि पञ्जीकार विद्यानंद झा। ई दूनू कोना काज केलाह तकर विवरण सेहो पोथीमे भेटत। प्रसंगवश ईहो कहि दी जे अही पोथीमे संकलित अपन लेखमे धनाकर ठाकुरजी गजेन्द्र ठाकुरकेँ "नीक मैनेजर" केर संज्ञा देलखिन अछि। तँइ हमर मानब अछि जे ई पोथी भने प्रत्यक्ष रूपें गजेन्द्र ठाकुर एवं प्रीति ठाकुरपर अछि मुदा एहि पोथीमे साहित्यिक तौरपर चारि गोटाक मूल्यांकन भेल अछि। अही पोथीमे सियाराम झा 'सरस' जीक आलेख सामाजिक स्तरपर गजेन्द्र ठाकुरजीक पिता कृपानंद ठाकुरजीक मूल्यांकन करैत अछि एहि हिसाबें देखी तऽ एहि पोथीमे कुल पाँच गोटाक मूल्यांकन भेल अछि। एहि पोथीकेँ तीन खंडमे बाँटल गेल अछि। पहिल कृपानंद ठाकुर खंड, दोसर प्रीति ठाकुर खंड आ तेसर गजेन्द्र ठाकुर खंड। स्वाभाविक तौरपर एहि पोथीमे आएल लेख सभ अही आधारपर भेटत। गजेन्द्र ठाकुर भाषाक लेल जे काज केलाह ताहि लेल हम कोनो आलेख एकट्ठा नहि कऽ सकलहुँ। कारण जाहि मैथिलीमे मानल जाइत हो जे मात्र आन्दोलन वा धरना देबए बला मात्र भाषाकर्मी छै ओहि मैथिलीमे गजेन्द्र ठाकुर वा कि कोनो आन भाषावैज्ञानिक भाषा लेल काज केलाह से कियो नै मानतै। तँइ हम एहि प्रकरणकेँ भूमिकामे अनलहुँ। बाबू भोला लाल दास जहिया आन्दोलन केलखिन से ओहि युगक आवश्यकता रहै, ताराकांत झा जाहि समयमे सरकारपर केस केलखिन आ पूरा तागति लगा देलखनि से ओहि

समयमे आवश्यक रहै मुदा एखनुक समयमे आवश्यकता छै जे अपन बच्चा सभकेँ मैथिली मीडियमसँ पढ़ेबाक लेल स्कूलमे नाम लिखाएब से कियो नै कऽ रहल छै। सभ अपन बच्चाकेँ पढ़ेतै अंग्रेजी माध्यमसँ बस खाली मैथिली शिक्षकक भर्ती भऽ जाए से मोनमे छनि सभकेँ। मुदा सरकार लग सभ सूचना छै, किएक ओ करतै एहन काज। भाषाक विकास लेल ई आवश्यक छै जे अहाँ जाहि कालखंडमे छी ताहि कालखंडमे बाँकी आन विकसित भाषाक जे प्रगति छै से प्रगति अहाँक भाषामे हो ताहि लेल अहाँ की केलियै? इएह एकमात्र पैमाना छै हमरा जनैत। गजेन्द्र ठाकुर मैथिली भाषा लेल जे इंटरनेटक प्रयोग केलखिन, ओकर विभिन्न टूल लेल काज केलखिन से मंचपर कएल जा रहल आन कोनो एक्टिभिटीसँ ऊपरक चीज छै आ प्रभावी छै। एहि दृष्टिसँ गजेन्द्र ठाकुर, बाबू भोला लाल दास, प्रबोधनारायण सिंह, काञ्चीनाथ झा 'किरण', सुभद्र झा, बाबू साहेब चौधरी, पं. गोविन्द झा, जयकांत मिश्र, ताराकांत झा प्रो. डॉ. रामावतार यादव आ एहने सन आनो भाषा लेल समर्पित सेनानीक पाँतिमे अबैत छथि। इंटरनेटक माध्यमसँ गजेन्द्र ठाकुर द्वारा भाषा संबंधी जे काज भेलै तकरा भविष्यमे कियो लिखताह से उम्मेद अछि। किछु विषयपर आलेख नहि आबि सकल जेना 'विदेह आ डाइभर्सिटी', 'विदेह आ नव लेखक', 'विदेहमे प्रकाशित शोध आलेख', 'विदेह केर जनपक्षधरता' आदि मुदा विभिन्न आलेख सभमे

एकर संकेत आएल अछि। भविष्यमे विभिन्न विषयपर विदेहक मूल्यांकन हएत से उम्मेद अछि।

पञ्जी (दू भाग) आ शब्दकोश केर संपादकगणमे छथि गजेन्द्र ठाकुर, विद्यानंद झा पञ्जीकार एवं नागेन्द्र झा। जँ हमर प्रमादवश कोनो आलेखमे मात्र गजेन्द्रेजीक नाम उल्लेख भेटए तऽ ओकरा अहाँ सभ संपादकत्रय पढ़ब। एहि पोथीमे संकलित आलेख सभ समाजक विभिन्न वर्गसँ आएल अछि। वर्ग मने जाति नहि। साहित्यकार एकटा अलग वर्ग भेल, संस्था अलग। पाठक एकटा अलग वर्ग भेल तऽ मात्र तकनीकी काज करऽ बला अलग। एकछाहा साहित्यकारे वर्गक आलेख नहि भेटत जेना कि आन ग्रंथ सभमे रहैत छै। ओना अही कारणसँ किछु गोटेकेँ एहि पोथीक प्रस्तुतिकरण कमजोर लागि सकै छनि। मुदा हमरा जनैत इएह कारण छै जे एहि पोथीमे आएल विचार सभ एकदम आलोचनात्मक आ तथ्यपरक भेटत। एकर दोसर फायदा ईहो जे सभ जाहि विषयपर लिखने छथि ताही विषयपर केंद्रित भेल छथि। कोनो आलेखमे विषयान्तर नहि भेटत संगहि बहुत रास एहन सार्थक सूचना-तथ्य भेटत जे गजेन्द्र ठाकुर, प्रीति ठाकुर वा कि विदेहक काजकेँ बेसी पुष्ट ओ बलगर बनबैत छै। तही कारणसँ ई पोथी पाठक लेल एकटा इतिहासक पोथी सेहो बनि जाएत से हमरा पूर्ण विश्वास अछि।

विदेहक विशेषांक सभ लेल हम ओहनो लोक सभ लग आलेख लेल जाइत छी, हुनको सूचना दैत छी जे कि हमर, विदेह या गजेन्द्र ठाकुरक धुर विरोधी छथि। आ एहू पोथी लेल हम सएह केने छी। दू-चारि लोक कहि सकै छथि जे हमरा सूचना नहि भेटल, तऽ हुनकासँ हमर आग्रह जे कमसँ कम ओ अपन ह्वाटसएप आ फेसबुक वा ई-मेल केर मैसेज बॉक्स (इनबॉक्स) देखथि। हमर एहि प्रयासक प्रतिफल विदेहक विशेषांक सहित एहि पोथीमे देखाइ पड़त से उम्मेद अछि।

मैथिलीमे "संपादक" शब्द केर अलगे स्वैग (देखाउँस, तड़क-भड़क) छै। मैथिलीमे संपादक वएह जे पाइ केर व्यवस्था कऽ सकथि, आकर्षक कभरमे नीक कागजपर पोथी छपा सकथि। जखन कि ई काज सभ संपादक केर नै छै। पाइ केर जोगाड़ भऽ सकै छै, आकर्षक कभर कोनो नीक डिजाइनर बना सकै छथि, कोनो प्रूफरीडर वर्तनीकेँ एक रंग बना कऽ नीक भाषा कहि सकै छथि। मुदा दृष्टि आ भिजन केर जे बात छै से कहाँसँ एतै? संपादन मुख्यतः दृष्टि, भिजन एवं आलोचनात्मक विचार केर वस्तु छै। जखन दृष्टिए नै तखन आकर्षक कभर आ एक रंगक वर्तनी कोनो काजक नहि रहत। एकटा संपादक केर तौरपर हमर दृष्टि-भिजन केहन रहैत अछि तकर आकलन अहाँ सभ हमरे द्वारा संपादित आ 2020 मे प्रकाशित पोथी "स्वतंत्रचेता अरविन्द

ठाकुरः व्यक्तित्व-कृतित्व" केर भूमिका पढ़ि, ओकर संयोजन देखि, कऽ सकैत छी। स्वतंत्रचेता पोथीक भूमिकासँ अरविन्दजीक आलोचना गतिविधिकेँ जँ कनियों विस्तार भेटल हेतनि तँ एकर मूल्यांकन मैथिली आलोचना जगत भविष्यमे कहियो करबे टा करत। प्रसंगवश ईहो सूचित करब उचित जे "स्वतंत्रचेता अरविन्द ठाकुरः व्यक्तित्व-कृतित्व" नामक जे पोथी अछि से मूलतः विदेहक अरविन्द ठाकुर विशेषांकक संशोधित रूप अछि। ई विशेषांक विदेहक अंक 189, 1 नवम्बर 2015 केँ प्रकाशित भेल रहै।

गजेन्द्र ठाकुर एखन धरि जे-जे काज केलाह तकर संक्षिप्त विवरण विभिन्न लेखक सभ द्वारा लीखल गेल अछि। अही क्रममे किछु एहन काज छै जे गजेन्द्र ठाकुर करताह तऽ मिथिला-मैथिली लेल नीक रहतै। एहन काज सभ एना अछि-

1) संपूर्ण मैथिली साहित्य केर आलोचनात्मक इतिहास- मैथिलीमे एखन धरि जे साहित्यिक इतिहास लीखल गेल अछि से एकभगाह अछि। एकभगाह मात्र एहि कारणसँ छै जे मैथिली साहित्य केर हरेक समयमे जे सामानान्तर धारा बहैत रहलैए तकर कोनो चर्चा नहि अछि अथवा एकदम कम चर्चा भेलैए। गजेन्द्र जी लग मैथिली साहित्य केर दूनू धाराक प्रमाणिक अध्य्यन छनि। तँइ हमर मानब अछि एखन धरि मैथिलीक

साहित्यिक इतिहास एखन धरि अपूर्ण अछि आ एहि 'अपूर्ण' इतिहासकेँ गजेन्द्र जी "संपूर्ण मैथिली साहित्य केर आलोचनात्मक इतिहास"मे बदलि सकै छथि।

2) लेक्सिकन एवं थिसॉरस संबंधी काज- गजेन्द्र ठाकुर शब्दकोशक संपादन केने छथि तँइ हुनका लेल मैथिलीक लेक्सिकन एवं थिसॉरस केर संपादन करब सुविधाजनक हेतनि।

3) मिथिलाक समग्र इतिहास- एखन धरि जे मिथिलाक इतिहास अछि जे टुकड़ी-टुकड़ीमे बाँटल अछि। बहुत एखन कालखंड छै जतऽ इतिहासकार मौन भऽ जाइत छथि। बहुत एहन राजवंश आ प्रजाक तात्कालीन दशा छै जाहिपर इतिहासकार चुप्पी लाधि लै छथि। गजेन्द्र ठाकुर लग जे दृष्टि छनि ताहि संग ओ मिथिलाक समग्र इतिहासक लेखन कऽ सकताह।

4) मिथिलाक सभ जातिक पञ्जी केँ अद्यतन आ डिजिटल करब- गजेन्द्र ठाकुर द्वारा बहुत रास उतेढ़ केर डिजटिल भेल अछि मुदा एखनो बहुत रास बाँकी अछि। आन जाति पञ्जी पर एखन कोनो काज नै भेल अछि। पहिने पञ्जी केँ पञ्जीकार सभ आपसमे बैसार कऽ अद्यतन करैत छलाह आब ई काज नै भऽ

रहल अछि। एखन वर्तमान मिथिलामे एकमात्र गजेन्द्रे ठाकुर छथि जे ई काज कऽ सकै छथि।

5) साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक-विदेह अपन कोनो एक अंकमे "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक" प्रकाशित करबाक घोषणा केने रहए मुदा से एखन धरि संभव नहि भऽ सकलैए। हम चाहब जे गजेन्द्र जी एहि विषयपर एकटा अलग पोथी लीखथि, आ जनता लग ई सूचना देथि जे एहि सभसँ मैथिली साहित्यकेँ कतेक नोकसान भेल छै।

विदेह मूलतः शब्दमे विभक्ति सटा कऽ लिखैत अछि संगहि मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम लेल “भाषापाक” नामक अपन दिशानिर्देश सेहो रखने अछि मुदा ओहिमे छपए बला लेखक लेल स्वतंत्रता छै जे ओ कोन रूपमे लिखै छथि। विदेह सभ वर्तनी आ स्वरूपक सम्मान करैत अछि। तँइ अहू पोथीमे वएह नियम बूझू। हमर भूमिका वा आनो रचनामे विभक्ति सटल भेटत मुदा अलग-अलग लेखक आ प्रकाशक अपन शैली आनै छथि। खराप ओहो नै छै। ओना हम मानैत छी जे विभक्ति सटल रहने सुंदरता बढ़ैत छै। बहुत गोटे क्रियापद संगे 'कऽ' हटा लीखै छथि तँ किछु गोटे सटा। हम एहि पोथीमे दू स्वरूपकेँ लेलहुँ अछि। आनो व्याकरणिक नियम लेल एहने सन बूझू। एकटा बात हम ईहो गछऽ चाहब जे कोनो आलेख टाइप

करैत काल अथवा टाइप आलेखमे सुधार करैत काल झोंकमे हमर अपन वर्तनी आ स्वरूप आबि जाइत छै। तँइ बहुत संभव जे एकै शब्दक दू वर्तनी एकै लेखमे भेटि जाए। एहि लेल जँ किनको कष्ट होइन तऽ एकरा हमर प्रमाद बूझि माफ करथि। बहुत सावधानी रखलाक बादो कतहुँ-कतहुँ संयुक्ताक्षर मूल रूपमे भेटत (जेना शुरू आ बीच अक्षरमे हलंत लगले रहि जाएब)।

एहि पोथीमे मुन्नाजी द्वारा लेल गेल पुरान साक्षात्कार सेहो देल गेल अछि जाहिमे गजेन्द्रजीसँ प्रश्न पूछल गेल रहनि-"अहाँक मैथिली पत्रकारिताकेँ दूरि हेबासँ बचेबाक वा सत्यक खोजक कारणेँ गारि-गंजनक पछातियो एक स्टंपपर अड़ल रहबाक दृढ़ संकल्प कतेक दिन धरि निमहता हएत?" एकर उत्तरमे गजेन्द्र ठाकुर कहने रहथिन- "हम यएह कहि सकै छी जे एकर निर्धारण भविष्य़ करत, अपन विषयमे बढ़ा-चढ़ा कऽ की कहू" अही कारणसँ पुरान साक्षात्कार सेहो देलहुँ जाहिसँ पाठक हुनक ओहि समयक कमिटमेंट आ हुनकर एखनुक एक्टिभिटी एवं कमिटमेंटमे साम्यता ताकि सकथि। संगहि नव साक्षात्कार सेहो देल गेल अछि। प्रीति ठाकुरक संभवतः पहिल आ एखन धरिक एकमात्र साक्षात्कार सेहो एहिमे देल गेल अछि।

एहि संग्रहमे गजेन्द्र ठाकुरजीक उपर हमर कोनो आलेख नै अछि

आ से जानि-बूझि कऽ नै देल गेल अछि। हमर किछु आलेख हुनका पर छनि आ निश्चिते ओहिमे आर आलेख जोड़ि एकटा अलग पोथी अहाँ सभ लग प्रस्तुत करब। ओनाहुतो गजेन्द्र ठाकुरक जे काज छनि, जते काज छनि तकरा मात्र एकटा संपादित पोथीसँ नहि जानल जा सकैए।

एहि पोथीक शीर्षक बारहमासासँ लेल गेल अछि। लोक कंठमे पाठ भिन्नता रहिते छै तँइ जे पाँति हम लेलहुँ तकर दोसरो पाठ छै मुदा पोथीमे देल गेल पाठ हमरा बेसी नीक लागल। पाठ निर्धारण लेल हम जे तीन टा सोर्स लेलहुँ से एना अछि-

https://youtu.be/mONclfV0uHk?si=MbV7kmM3NCbfc1iA
https://youtu.be/GiDjpjgTNHY?si=KSZSErHO_f1aEwoJ
https://durgatutorial.com/wp-content/uploads/2023/03/Class-9Mithilak-DharoharMithilak-DharoharChapter-3CL9-MITH-DHAROHAR-CH-3.pdf

हम जतेक जनैत छी ताहिमे ई पोथी संभवतः मैथिलीक एहन पहिल पोथी अछि जाहिमे एकै संग रचनाकार पति-पत्नीक

मूल्यांकन कएल गेल अछि। प्रसंगवश ईहो जानब उचित जे ‘पोथी प्रकाशन वर्ष’क आधारपर प्रीति ठाकुर, गजेन्द्र ठाकुरसँ वरिष्ठ रचनाकार छथि। जखन कि मैथिलीमे उल्टा होइत छै। पतिक पोथी पहिने आ पत्नीक पोथी बादमे या बहुत बादमे प्रकाशित होइत छै। किछु पत्नीक पोथी प्रकाशितो नै होइत छनि। सियाराम झा 'सरस' जीक देल सूचनाक आधारपर नीरजा रेणु एवं किशोरनाथ झा केर बाद ई संयोग घटित भेल अछि। एहिठाम ईहो कहब उचित जे किशोरनाथ झा मूलतः संस्कृत केर विद्वान एवं लेखक छथि। संस्कृतमे हुनक पोथी नीरजाजीसँ पहिने प्रकाशित भेल छनि। ओना सरसजी एक-दू नाम आर कहने रहथि जेना नरेन्द्र झा एवं पन्ना झा मुदा तजबीज केलापर पहने पतिक प्रकाशन सामने आएल। जे किछु हो एहन प्रवृति रेयर छै आ मैथिलीक स्त्री-विमर्शकार सभकेँ एहि बातक संज्ञान लेबाक चाही। प्रसंगेवश पाठक ईहो जानथि जे जाहि गामक गजेन्द्र ठाकुरजी छथि ताही गाममे हुनकासँ बहुत पहिने रचनाकार दंपति गोपाल झा 'गोपेश' एवं प्रभावती झा सेहो भेल छथिन।

जँ अहाँ अइ पोथी केर PDF पढ़ि रहल छी तँ कोनो शब्द वा पाँति अंडरलाइनमे नीला वा कोनो अलग रंगक देखाए तँ बुझि लिअ जे ओहिमे लिंक देल गेल छै रेफरेंस लेल आ तकरा क्लिक करबै तँ ओ लिंक खुजि जाएत। कोनो-कोनो फोटोमे सेहो लिंक

देल गेल छै। पाठक एहि माध्यमसँ कम समयमे रेफरेंस सभहक अध्ययन कऽ सकै छथि। मुदा प्रिंटमे प्रकाशित पोथीमे ई सुविधा नै रहत। अइ कारणसँ भऽ सकैए जे पाठककेँ एहि पोथीक किछु पाँति प्रचलित नै बुझेतनि। जाहि ठाम लिंक देल गेल छै ताहि ठामक पाँतिक किछु शब्दक बीच बेसी स्थान छूटल छै। ओकरा एक पाँति बना पढ़ी से आग्रह। हम चाहितहुँ तँ सभ लिंक वा चित्रकेँ एकठाम दऽ सकै छलहुँ मुदा हमर सोच अछि जे पाठककेँ एकै ठाम बेसी रेफरेंस भेटनि।

धन्यवाद लक्ष्मण झा ‘सागर’ जीकेँ जे कहलाह जे प्रिंट पत्रिका सभकेँ गजेन्द्र ठाकुरपर विशेषांक प्रकाशित करबाक चाही। एक-दू पत्रिका केर नामो कहने छलाह। हम कहने रहियनि जे काज नीके हेतै मुदा कियो करतै नै। बादमे एखन धरिक विदेहक पुरान अंक एवं विदेह द्वारा संचालित ब्लाग सभमे गजेन्द्र आ प्रीति जीक ऊपर वा हुनका दूनूसँ संबंधित जे लेख सभ छल से एक ठाम केलहुँ (‘विदेह पेटारसँ लीखि इंगित कएल गेल अछि)। आ सोचलहुँ जे आन पत्रिका निश्चिते नै प्रकाशित करतै कारण भिजन केर अभाव छै। तखन अही आलेख सभ संगे नव आलेखकें एक ठाम आनि पोथी किए ने बना देल जाए। आ से ई पोथी अहाँ सभहक हाथमे अछि। बहुत संभव जे विभिन्न लेखकक जे पुरान आलेख अछि से हुनक पोथी सभमे संकलित भेल हेतनि। एहन अवस्थामे हमरा जे-जे सूचना भेटल हम ओहि

आलेखक निच्चा ओहि पोथीक नाम सेहो लिखलहुँ अछि।

एकटा आवश्यक सूचना पाठक लेल ई जे हमर एक गलतीक कारणे एहि पोथीमे कत्तौ-कत्तौ पूर्णविराम चिह्नक बदला अंग्रेजी बला फुलस्टॉप आबि गेल छै। आब ई गलती भेल छै मुदा पाठक एकरा हमर बाध्यता मानथि आ फुलस्टॉप केँ पूर्ण विराम मानथि। मुदा लिंक सभमे वएह फुलस्टॉप केर चिह्न रहतै से पाठक जानथि।

एहि पोथीमे हम अपन बात मैथिली लोकगीतक किछु पाँतिक माध्यमसँ रखलहुँ अछि, जकर विवरण एना अछि-

1. आजु जनकपुर मंगल भुप सभ आओल हे... (एहि खंडमे विषय सूची अछि)।
2. प्रथम गणेश पद गाओल देवता मनाओल हे.... (एहि खंडमे हमर अपन बात अर्थात संपादकीय अछि)।
3. बनहीमे मुँगिया जनमि गेल बनही लतरि गेल हे... (एहि खंडमे गजेन्द्र ठाकुर एवं प्रीति ठाकुर केर विशेषता एवं हुनका द्वारा मैथिलीमे कएल गेल पहिल ओ महत्वपूर्ण काजकेँ सूचीबद्ध कएल गेल अछि)।
4. पीपरक पात अकासहि डोलए शीतल बहए बसात यौ... (एहि

खंडमे गजेन्द्र ठाकुरजीक पिता, हुनक पारिवारिक एवं सामाजिक विवरण देल गेल अछि)।

5. पहिल पहर गौरी पूजल... (एहि खंडमे प्रीति ठाकुरक काजक आलोचना अछि)।

6. तोड़लनि धनुष कठोर हे परिछन चलू सखिया... (एहि खंडमे गजेन्द्र ठाकुरक काजक आलोचना अछि)।

7. कवन नगर के सेनुरिया सेनुर बेचे आयल रे आहे कवन नगर के कुमारी धिया सेनुर बेसाहल हे...(एहि खंडमे गजेन्द्र ठाकुर एवं प्रीति ठाकुरक संपूर्ण परिचय अछि)।

8. करमी के लत्ती जकाँ लतरथु पुरैन जकाँ पसरथु हे... (एहि खंडमे एहि पोथीसँ संबंधित हमर अंतिम बात अछि)।

एहि पोथीमे जाहि ज्ञात-अज्ञात गीतकार सभहक पाँति प्रयोग कएल गेल अछि तिनका प्रति आभार। बहुत संभव जे एहि लोकगीतक ठाम-ठाम प्रयोग किछु प्रगतिशील पाठक ओ विद्वानकेँ नहि अरघनि। किछु प्रगतिशील लेखक-आलोचक ईहो कहि सकै छथि जे एहि पोथीमे जिनकर रचना छनि तिनका सभकेँ गीतगाइन बना देल गेलनि। एहन बातक उत्तरमे हम अनेको बेर कहने छी जे अपन परंपरासँ कटल लेखक-आलोचक एहन बात कहथि से कोनो अचंभा नहि। ईहो बात एहन प्रगतिशील सभ लग पहुँचनि जे हमर स्पष्ट मानब अछि जे

मैथिलीक वाचिक साहित्य कथित गंभीर साहित्यसँ बहुत बेसी आगूक चीज छै। तँइ जे गंभीर पाठक-लेखक छथि तिनका गीतक पाँति सभ नीके लगतनि। हम जहाँ धरि बूझि सकल छी एहि पोथीमे हम जाहि संदर्भ ओ जाहि जगहपर लोकगीतक जे पाँति रखलहुँ अछि से संकलित लेख सभहक उद्येश्यकेँ आर नीक जकाँ रेखांकित केलक अछि। आब ई पोथी पाठकक हाथमे छनि, हुनका जे बुझाइन से हमरा कहि सकै छथि। हुनक सुझावकेँ हम सादर एहि पोथीक आन संस्करण एवं भविष्यक आन संपादन लेल जोगा कऽ राखब।

-आशीष अनचिन्हार

बनहीमे मुँगिया जनमि गेल बनही लतरि गेल हे...

एहिठाम गजेन्द्र ठाकुर ओ प्रीति ठाकुर केर विशेषता एवं हुनका द्वारा मैथिली भाषा-साहित्यमे द्वारा किछु एहन काज भेल जे मैथिली लेल पहिल अछि से देल गेल अछि-

1) प्रीति ठाकुर मैथिलीक पूर्णकालिक बाल साहित्यकार छथि। ओ अपन चित्रकथा लेल अपनेसँ चित्र बनबै छथि। मिथिलाक मुख्यधारासँ बारल किछु नायक सभहक काल्पनिक चित्र हिनके बनाएल छनि। पाठक एहि नायक सभहक चित्र हिनक चित्रकथामे देखि सकै छथि।
2) प्रीति ठाकुर मैथिलीक पहिल चित्रकथा केर रचनाकार छथि, 2002 मे पहिने ई "छोट आ पैघ" नामक चित्रकथाक अनुवाद केलीह आ बर्ख 2008 मे हिनक मूल मैथिली चित्रकथा “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” प्रकाशित भेल।
3) मैथिलीमे इंटरनेटपर पहिल उपस्थिति गजेन्द्र ठाकुर द्वारा संचालित ब्लाग "भालसरिक गाछ" छल जे बर्ख 2000 सँ छल।
4) समदिया मैथिलीक पहिल समादपरक ब्लाग अछि जकरा गजेन्द्र ठाकुर 2004 मे बनेने छलाह।
5) पञ्जी कैँ सार्वजनिक रूपैँ साधारण जनता लेल डिजिटल एवं पोथी रूपमे आनए बला गजेन्द्र ठाकुर पहिल लोक छथि। पञ्जी

कैँ डिजिटल करबाक काज ओ 2007 केर आस-पासमे समाप्त केलाह। एहि काज लेल गजेन्द्रजीकैँ जिनका दू आर लोकसँ सहायता भेटलनि से संपादकक तौरपर लेल गेल छथि एहि काजमे। बर्ख 2007हि मे ओ एकर एकटा कॉपी अंशुमान पांडेयकैँ बिना कोनो शर्तकैँ देलाह जाहिसँ पांडेयजी मिशिगन विश्वविद्यालय, अमेरिकासँ अपन शोध पूरा केलाह। शोध केर विषय छलै "Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar" ई शोध 2014 मे प्रकाशित भेलै आ जकर पृष्ठ 22 पर अंशुमानजी गजेन्द्र ठाकुरजीक एहि उपरोक्त काजकैँ acknowledge केने छथिन।

गजेन्द्र ठाकुरसँ पहिने पञ्जीक संरक्षण लेल Genealogical Society of Utah (United States) आगू आएल मुदा ओ समाजक लेल नै अपना लेल आर्काइभ बनेलक। एहि लेल ओ किछु स्थानीय लोकक सहायतासँ पञ्जीकार धरि पहुँचल आ पञ्जीकार सभकैँ किछु पाइ भेटलनि आ बहुत संभव जे स्थानीय गाइड सभ रहथिन हुनको फंड भेटल होइन। Genealogical Society of Utah मे जे पञ्जीक आर्काइभ अछि तकरा साधारण जनता उपयोग नै कऽ सकैए कारण

Genealogical Society पाइ दऽ कऽ लेने छै आब ओ डिजिटल रूप ओकर संपति छै जकरा ओ अपन रिसर्च लेल उपयोग करतै। एखन बहुत लोक ई कहैत भेटि जेता जे पञ्जीकार सभ सहयोग नै करै छथि पञ्जी देबामे से शायद Genealogical Society केर काजक उपज भऽ सकै छै। पञ्जीकार सभकेँ होइत हेतनि जे फेर कियो आएत आ पाइ दऽ कऽ जाएत। मुदा एकर विपरीत गजेन्द्र ठाकुर अपन इच्छाशक्ति आ मेहनतिसँ मिथिलाक चीज मिथिला लेल आ संपूर्ण देशक जनता लेल डिजिटल आ प्रिंट दूनू स्तरपर सुलभ बनेलाह। Genealogical Society बला डिजिटल काज कतेक गोपनीय छै तकर अंदाजा अही बातसँ लागत जे भैरव लाल दास जे एकटा नीक अध्येता छथि से हमर फेसबुकक पोस्टपर अपन एक कमेंटमे गछलाह जे बहुत तकलाक बादो हुनका Genealogical Society बला नै भेटलनि। कमेंट केर स्क्रीन शाट अंतमे देल जा रहल अछि। हमर फेसबुक पोस्ट केर लिंक अछि- https://www.facebook.com/anchinhar/posts/pfbid02Sr82dVYSSAYf8JoFZ2ZvjcFY8R6WTPPUfxbuuPojC9yQv13dAJ3S6PjNUNgQBp6nl

6) दूषण पञ्जी कैँ सार्वजनिक करऽ बला पहिल लोक गजेन्द्र ठाकुर छथि। पञ्जीक शुरूआतसँ लऽ कऽ एखन धरिमे एकरा

सार्वजनिक करबाक पहिल प्रयास छै। एहि काज लेल गजेन्द्र ठाकुरक मेलमे धमकी आ गारि सभ देल गेल छनि।

7) मैथिलीक पहिल ई-पत्रिका विदेह अछि, जे बर्ख 2008सँ एखन धरि अछि आ जकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि। http://videha.co.in/

8) विदेह पत्रिका मैथिलीक एहन पहिल पत्रिका अछि जकरा ISSN (International Standard Serial Number) भेटलै।

9) विदेह मैथिलीक पहिल एहन पत्रिका अछि जे कि एकसँ बेसी लिपिमे (देवनागरी, तिरहुता, ब्रेल, कैथी, नेवाड़ी, आइ.पी.ए, ब्राह्मी, खरोष्ठी, उर्दू, तिब्बती एवं तिब्बती-उमे) प्रकाशित होइत अछि। विदेह ई काज Transliteration (एकर मतलब छै लिप्यंतरण) केर तकनीकसँ करैत अछि। पाठक लग एकटा सहज प्रश्न आबि सकैए जे कि विदेहक संपादक या एहिसँ जुड़ल लोक एहि सभ लिपिक ज्ञाता छथि? तँ एकर सहज उत्तर छै ई अनिवार्य तौरपर जरूरी नहि छै। चूँकि Transliteration तकनीकपर आधारित छै मुदा एकरा अभिरुचि आ स्वाध्याय केर प्रतीक तऽ मानले जा सकैए। बहुत संभव जे एहि स्वाध्याय केर बलपर विदेहसँ जुड़ल लोक निष्णात भऽ जाथि।

10) मैथिलीक पहिल डिजिटल पुस्तकालय विदेह द्वारा बर्ख 2008 मे शुरू भेलै।

11) गजेन्द्र ठाकुर मैथिलीक पहिल अरूजी छथि (अरूजी मने गजल छंद शास्त्रक जानकार एवं ओकर प्रणेता)। गजलक माध्यमसँ वैदिक छंदक फेरसँ परिचय कराबए बला लोक छथि गजेन्द्र ठाकुर।

12) Computer पर आधारित मैथिलीक पहिल शब्दकोश केर संपादकत्रयमेसँ एक छथि गजेन्द्र ठाकुर।

13) ब्रेल लिपिमे मैथिलीक पहिल पोथी गजेन्द्र ठाकुरजी केर छनि। ई पोथी "सहस्रबाढ़नि" नामक उपन्यास अछि।

14) तिरहुतता लिपिमे सभसँ बेसी पोथी गजेन्द्र ठाकुरजीक छनि।

15) मैथिलीक पहिल संपादक गजेन्द्र ठाकुर छथि जे एकसँ बेसी लिपिमे पत्रिकाक अंक प्रकाशित करै छथि।

16) इंटरनेटपर साहित्यिक अनुवाद लेल पहिल ब्लाग http://Madhubani-art.blogspot.com
 अछि जे गजेन्द्र ठाकुरजी द्वारा बनाएल गेल अछि।

17) इंटरनेटपर बाल साहित्य लेल "नेना-भुटका" नामसँ ब्लाग आएल अछि जे कि 2009 सँ अछि आ जकरा गजेन्द्र ठाकुर बनेने छथि।

18) मैथिली विकीपीडिया लेल पहिल प्रयास गजेन्द्र ठाकुर द्वारा बर्ख 2008 मे भेल, 2013 धरि विभिन्न अनुवादक काज भेलै आ 2014 मे मैथिली विकीपीडियाकेँ मंजूरी भेटलै। विकीपीडिया एकटा Community project छै जाहिमे

सभ काज बिना पाइकेँ समाज लेल कएल जाइत छै।

19) विदेह मैथिलीक पहिल एग्रीगेटर छै जाहिठाम मैथिलीक आन-आन इंटरनेटक साइट केर सूची भेटत।

20) गूगल ट्रांसलेशन लेल पहिल प्रयास 2011 मे गजेन्द्र ठाकुर द्वारा भेलै आ मइ 2022 मे गूगल एकरा मंजूरी देलकै। गूगल ट्रांशलेशन एकटा Community project छै।

21) मैथिली नाटकपर केंद्रित पहिल ब्लाग "विदेह मैथिली नाट्य उत्सव" अछि जे अगस्त 2011सँ अछि आ जकरा गजेन्द्र ठाकुर बनेने छथि।

22) विदेह: सदेह : पहिल तिरहुता (मिथिलाक्षर) जालवृत्त (ब्लॉग) जकर लिंक अछि http://videha-sadeha.blogspot.com/एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

23) विदेह:ब्रेल: ब्रेल लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लाग अछि, जकर लिंक अछि http://videha-braille.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

24) विदेह रेडियो:मैथिलीक पहिल पोडकास्ट साइट जकर लिंक अछि

http://videha123radio.wordpress.com/

एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

25) विदेह मैथिली संकेत लिपि-पहिल मैथिली संकेत लिपि ब्लॉग जकर लिंक अछि https://maithili-sign-language.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

26) विदेह ब्राह्मी- ब्राह्मी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग जकर लिंक अछि https://maithili-brahmi.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

27) विदेह खरोष्ठी- खरोष्ठी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग जकर लिंक अछि https://maithili-kharoshthi.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

28) विदेह कैथी लिपिमे- मैथिलीक कैथी लिपिमे पहिल ब्लॉग जकर लिंक अछि https://maithili-kaithi.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

29) विदेह नेवाड़ी लिपिमे- मैथिलीक नेवाड़ी लिपिमे पहिल ब्लॉग जकर लिंक अछि https://maithili-newari.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

30) विदेह आइ.पी.ए. लिपिमे- मैथिलीक आइ.पी.ए.मे पहिल ब्लॉग जकर लिंक अछि https://maithili-

ipa.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।
31) विदेह- उर्दू नस्तालिक लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग जकर लिंक अछि https://maithili-urdu.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।
32) विदेह- तिब्बती लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग जकर लिंक अछि https://maithili-tibetan.blogspot.com/ एकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि।
33) मैथिलीमे जापानी काव्य विधा टंका/ शेनर्यू/ हैबून अनबाक श्रेय गजेन्द्र ठाकुरजीकेँ छनि। एहिसँ पहिने मैथिलीमे मात्र हाइकू छल। 2008सँ मैथिली हाइकू/ टंका/ शेनर्यू/ हैबून केर ब्लाग सेहो अछि जाहि ठाम विदेहक फेसबुक भर्सनसँ हाइकू केर संग्रह कएल गेल अछि। ई ब्लाग एहि पतापर देखल जा सकैए http://maithili-haiku.blogspot.com/
34) गजेन्द्र ठाकुर (क्रियेटिभ आइडिया) एवं नागेन्द्र कुमार झा (संसाधन+टेक्निकल एप्रोच) केर संयुक्त प्रयास केर प्रतिफल अछि "श्रुति प्रकाशन"। श्रुति प्रकाशन (Shruti Publication) मैथिलीक पहिल मानक प्रकाशक अछि। मानक प्रकाशक माने जे कि बिना पाइ लेने पोथी प्रकाशित करै छै आ ओइ के बाबजूद कापीराइट लेखके लग रहैत छनि। ई प्रकाशन एखन धरि 100 सँ बेसी पोथीक प्रकाशन केने अछि

जाहि हमर पोथी "अनचिन्हार आखर" (2011) सेहो अछि।

ऊपरक ई लिस्ट हमर पोथी "मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास" नामक पोथीसँ लेल गेल अछि। पाठक विस्तृत जानकारी ओहि पोथीकेँ पढ़ि कऽ लऽ सकै छथि। ई अंतिम लिस्ट नै अछि। बहुत रास 'पहिल' काज हमरा नजरिसँ छूटि गेल हएत, जकरा भविष्यमे हम देब। संगहि किछु एहन पहिल चीज सभ अछि जकर वर्णन पोथीक भीतर विभिन्न आलेख सभमे अछि। प्रसंगवश एहिठाम हम पाठककेँ ईहो सूचना देब जे विदेह केर काजकेँ देखैत, मैथिली गजलमे प्रयुक्त एक बहर (छंद) केर नाम बहरे विदेह राखल गेल अछि। एकर विस्तृत विवेचन हमर गजल संग्रह "कुमारि इच्छा"मे भेटत। आग्रह ईहो जे जँ कोनो पाठककेँ हमर भूमिका, हमरा द्वारा देल लिस्ट वा एहि पोथीक लेख सभमे देल कोनो तथ्यसँ असहमति होइन वा कि एहि पोथीमे देल पहिल काजसँ पहिनेहो ओ काज भेल हो तऽ संदर्भ सहित ओ सभ आबथि हम अपनामे तात्काल सुधार कऽ लेब।

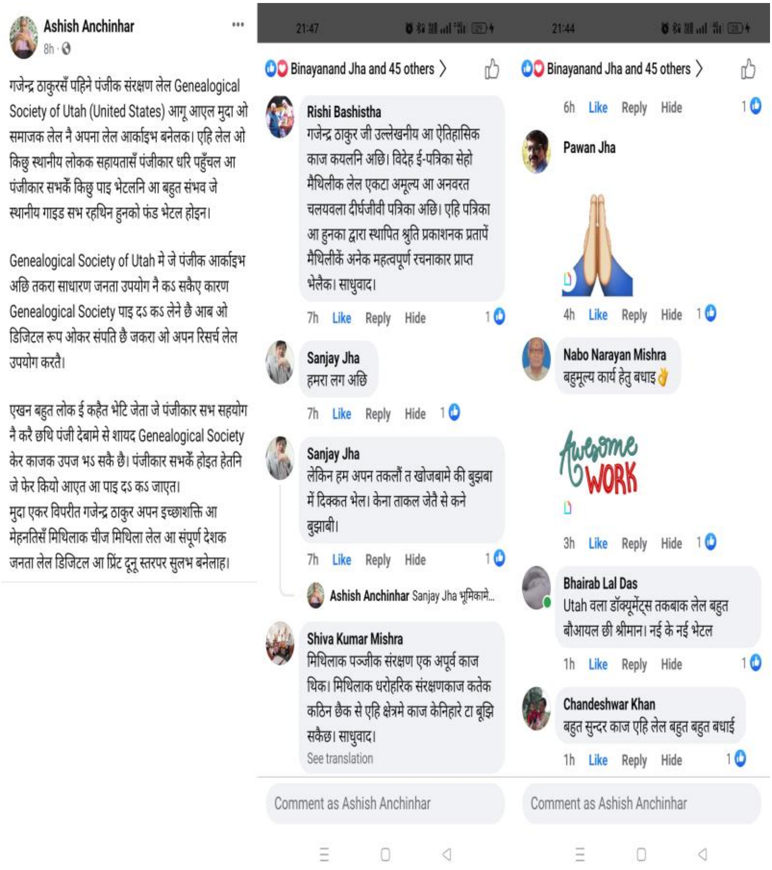

Ashish Anchinhar
8h ·

गजेन्द्र ठाकुरसँ पहिने पंजीक संरक्षण लेल Genealogical Society of Utah (United States) आगू आएल मुदा ओ समाजक लेल नै अपना लेल आर्काइभ बनेलक। एहि लेल ओ किछु स्थानीय लोकक सहायतासँ पंजीकार धरि पहुँचल आ पंजीकार सभकेँ किछु पाइ भेटलनि आ बहुत संभव जे स्थानीय गाइड सभ रहथिन हुनको फंड भेटल होइन।

Genealogical Society of Utah मे जे पंजीक आर्काइभ अछि तकरा साधारण जनता उपयोग नै कऽ सकैए कारण Genealogical Society पाइ दऽ कऽ लेने छै आब ओ डिजिटल रूप ओकर संपति छै जकरा ओ अपन रिसर्च लेल उपयोग करतै।

एखन बहुत लोक ई कहैत भेटि जेता जे पंजीकार सभ सहयोग नै करै छथि पंजी देबामे से शायद Genealogical Society केर काजक उपज भऽ सकै छै। पंजीकार सभकेँ होइत हेतनि जे फेर कियो आएत आ पाइ दऽ कऽ जाएत।
मुदा एकर विपरीत गजेन्द्र ठाकुर अपन इच्छाशक्ति आ मेहनतिसँ मिथिलाक चीज मिथिला लेल आ संपूर्ण देशक जनता लेल डिजिटल आ प्रिंट दूनू स्तरपर सुलभ बनेलाह।

21:47

Binayanand Jha and 45 others

Rishi Bashistha
गजेन्द्र ठाकुर जी उल्लेखनीय आ ऐतिहासिक काज कयलनि अछि। विदेह ई-पत्रिका सेहो मैथिलीक लेल एकटा अमूल्य आ अनवरत चलयवला दीर्घजीवी पत्रिका अछि। एहि पत्रिका आ हुनका द्वारा स्थापित श्रुति प्रकाशनक प्रतापेँ मैथिलीकेँ अनेक महत्वपूर्ण रचनाकार प्राप्त भेलैक। साधुवाद।
7h Like Reply Hide 1

Sanjay Jha
हमरा लग अछि
7h Like Reply Hide 1

Sanjay Jha
लेकिन हम अपन तकलौं त खोजबामे की बुझबा में दिक्कत भेल। केना ताकल जेतै से कने बुझाबी।
7h Like Reply Hide 1

Ashish Anchinhar Sanjay Jha भूमिकामे...

Shiva Kumar Mishra
मिथिलाक पञ्जीक संरक्षण एक अपूर्व काज थिक। मिथिलाक धरोहरिक संरक्षणकाज कतेक कठिन छैक से एहि क्षेत्रमे काज केनिहारे टा बूझि सकैछ। साधुवाद।
See translation

Comment as Ashish Anchinhar

21:44

Binayanand Jha and 45 others

6h Like Reply Hide 1

Pawan Jha

4h Like Reply Hide 1

Nabo Narayan Mishra
बहुमूल्य कार्य हेतु बधाइ

Awesome WORK

3h Like Reply Hide 1

Bhairab Lal Das
Utah वला डॉक्यूमेंट्स तकबाक लेल बहुत बौआयल छी श्रीमान। नई के नई भेटल
1h Like Reply Hide 1

Chandeshwar Khan
बहुत सुन्दर काज एहि लेल बहुत बहुत बधाई
1h Like Reply Hide 1

Comment as Ashish Anchinhar

two centuries.

The largest hinderance to a proper study of *pañjī prabandha* and other aspects of brahminical society in north Bihar during the medieval period is access to sources and the paucity of primary sources on this topic. While the *pañjī* records offer a vast amount of detail on Maithil Brahmins, the records themselves are difficult to access. The difficulty is not one of language or script or completeness of content; rather, it is one of privilege. The *pañjīkara*-s whose families have maintained these records for generations are often reluctant to allow others to persue their records. It is a matter of 'intellectual property' to them. I was fortunate enough to receive a complete digitized set of *pañjī* records from Gajendra Thakur of New Delhi in 2007. I was allow permitted to browse through transcriptions of records that are in the possession of Hetukar Jha of Patna in 2013. The second limitation is the lack of historical records about the general society, culture, and polity of the Karnata period. Several scholars have complained about this.[43] Apart from the genealogical records, there are very few sources directly related to the origins of the records. Although *pañjī prabandha* took place during Karnata rule, the kings of this dynasty left no epigraphic sources, such as copper-plate grants to Brahmins. The absence is quite curious because the *pañjī* records provide ample proof of Brahmin settlements in north Bihar. Equally curious is that there are epigraphical sources from the borderlands of Mithila slightly preceding and during Karnata rule, which show land grants being made to Brahmins in areas of north Bihar. Moreover,

[43] Sircar, *Studies in the Society and Administration of Ancient and Medieval India*, 140; Chaudhary, "Political History of North Bihar," 281.

पीपरक पात अकासहि डोलए शीतल बहए बसात यौ...
खण्ड-1: कृपानंद ठाकुर

करोट फेरैत गामक निदर्शक: के.एन.टी

सियाराम झा 'सरस'

नाम रहनि कृपानन्द ठाकुर। आशय लगबैत छी- किनकर कृपा? किनका ऊपर कृपा? आनन्द- तँ से कोन तरहक वा कोन बातक आनन्द? स्वयं आनन्दक अनुभूतिमे डूबैत आकि अनकहु ताहिमे डुबबैत? एहन-एहन बहुतो प्रश्नक कछमछीकेँ शान्त करबाक चेष्टा थिक ई व्यक्तिवाची निबन्ध!

परिसर ओ परिवेश:

बात छठम-सातम दसक, गत सदीक थिक। बात आजुक मधुबनी जिलाक थिक जे ताहि दिनमे जिला नहि, अनुमण्डले छल आ रूप तकर, बाकलम मलंगिया- 'एकटा ठिठुरल शहर- मधुबनी' सैह छलैक। ठिठुरल किएक, तकर खीसा बड़कीटा छैक मुदा अति संक्षेपहिमे कही तँ एक साल बाढ़ि, तँ दोसरमे अकाल! फेर उगडुब-उगडुब, तँ फेर सुखाड़े-सुखाड़! तैठाम गाम-घर, लोकवेद, जीव-जन्तु-बनस्पतिकेँ जेहेन हेबाक चाही- गरमीमे नंग-धरंग तँ जाड़मे कठुआइत-सिमसिमाइत! देह झाँपए, तँ टाङ उघार आ टाङ झाँपए तँ आङ उघार!

ताही जिलाक मध्यवर्ती क्षेत्रान्तर्गत कमला-बलानक पछबारिए पारमे अवस्थित अछि- एकटा गाम। नाम तकर मेंहथ। की से, तँ

मैँहमे कहियो हाथी जोतल जाइत छलै- तैँ मेंहथ! बात से फुसियो नहि थिक। 1950-55 क आसपासहु मे चारिटा हाथी रहैक, से आँखिक देखल साँच थिक। परिसरक आरो ग्रामांचलक चर्च करी, तँ कमलाक पुबारि पारमे महरैल-कन्हौली-झंझारपुर बजार-टीशन प्रभृति, तँ पच्छिम दिस कोठिया-पट्टी-रैमा, भराम-विजइ, कोइलख आदि। उत्तर दिस गोपलखा-रामखेतारी-शंकरपुर तँ दच्छिनमे महिनाथपुर-नरुआर-हैंठीबाली, भैरब-थान, विदेश्वर-थान, लोहना-कथना आदि।

एहि दसकोसी प्रक्षेत्रक रहन-सहन साधारण-गृहस्थौ सैह! हँ, किछु सोति-योगक कारणें लोहना-रुपौली-कथना, भराम-ओ कोइलखक मान-मर्यादा कनेक झाँपल-तोपल; हमरा गाममे छौ-नौ, तऽ ओइ गामसबमे नौ-तेरह होइक। एमहर ‘हौ-रौ-यौ’ चलैक, तऽ ओमहर अगबे ‘यौ-यौ-यौ’। एमहर रोटी माने-मडुआ-खेसारी-चाउर-बदाम-मकइ पर्यंते, तऽ ओमहर शुद्ध गोरकी सोहारी- खाहैँ से चाउरक हो किंवा गहूमक! कहबाक आशय जे एतबहि दूरमे अकाश-पतालक अन्तर रहैक- रहन-सहन, खान-पीन आ सोच-विचारमे।

शिक्षा: मूलभूत सुविधाक अकाल:

गाममे छल एकटा लोअर प्राइमरी इसकूल। इसकूलक बगलमे

कनेकटा शिव-मन्दिर आ आगाँमे गामक जीवन-रेखा- बड़का पोखरि। ओना छल तऽ आरो बड़का-बड़का पोखरि- समिया-पोखरि, डकही पोखरि मुदा से सब गामसँ बाहर; बाबू-बबुआनक दफानल-काँट लऽ कऽ बेढ़ल जकाँ! मिडिल इसकूलक पढ़ाइ करत क्यो, तऽ डेढ़ किलोमीटर दूर, गाम टपिकऽ कोठिया-इसकूल। ई बोर्ड मिडिल स्कूल छल (औखन तहिनाक तहिना अछि)। एतय चारू दिशक पाँच गामक छौँड़ा अबैत छल चौथा किलासमे, तै मेसँ मोटे 50% सातमा पास कए बहराइत छल, बाँकी 50% हरबाही-चरवाही, खेती-किसानीमे लागि जाइत छल आ से नै, तँ सोझे कलकत्ता! हाइ इसकूल सातम दसकमे आबिकए दू-दूटा खूजल छल- भराम आ भैरब-थानमे। दुनू खाँटी टटघर, गाम-गामसँ बाँस-खढ़-खुट्टा-बड़ेरी मांगि-चांगिकए बनल। तकर तेहने शिक्षको-स्टाफो!

तेहनाठाम जकरा व्यवस्थित शिक्षा चाही, जे किछु खास करए-बनए चाहए- से जाथु झंझारपुर- केजरीवाल उच्चाङल विद्यालय अथवा सरिसब हाइ इसकूल अथवा टैँटमे दम होनि, तऽ देखथु मधुबनी-दड़िभंगा!

एतबा शिकस्ते आ संघर्षक अछैतो 1960 ईस्वीक आसपास अबैत-अबैत गाममे दू गोटे एम.ए. पी.च.डी. कलकत्तामे प्राध्यापक, गोट छबेक स्नातकोत्तर एवं पाँचे-छवटा स्नातक

डिग्रीधारी भए गेल रहथि, जे सबके-सब गामसँ बाहरे प्रवासमे छलाह। दुर्गा-पूजा, दीया-बाती-छठि, फगुआ तथा गरमी-तातिलमे ई लोकनि अवकाश पाबि गाम अबैत छलाह, तेँ ताहि समयमे गामक प्रायः सबहु टोलमे छहर-महर जकाँ रहैत छल। तेँ दीया-बाती-छठि लगाति अथवा सरस्वती-पूजासँ फगुआक बीच ’युवा नाट्य-कला-परिषद’ द्वारा दूटा नाटकक मंचन होइत छल।

से, जे कहैत रही शिक्षा-दीक्षाक मादे, से एकटा असाधारण समस्या छल ताहि दिनमे। 95% धरि ब्राह्मणोक परिवार खेतिए-गृहस्थी आ माले-जाल पर निर्भर छल। शेष जातिमे थोड़े-थोड़े यादव, मलाह, धोबि, हजाम, पासमान, राम, मण्डल, कमार-सोनार आदिक हाल आर बेहाल रहैक! जकरा घर बुतातो पर आफद, तेँ घरक छओंरा-माड़र इसकूलक सपना की देखत, कोना देखत!

भरिगामक दस-बारहटा परिवार जे सुभ्यस्त (झाँपले-तोपले) कहबैत छल, तिनके लोकनिक बालक मिडिल ओ हाइ इसकूल देखैत छलनि! धी-बेटीक तऽ प्रश्ने उठाएब व्यर्थ छलै। चर्चितो दस-बारह परिवारक कन्यालोकनि, गाममे लोअर प्राइमरी इसकूलक अछैतो नीक जकाँ साक्षर नहि भऽ पबैत छलि। कहबी रहरहाँ छलै ‘चिट्ठी-पुरजी लीखए आबि गेलै, तऽ बहुत भेलै!’

मुदा ताहू विषम परिस्थिति मे 1961-62 ईस्वीक आसपास गामक दूटा बेटी- उर्मिला आ सोनदाइ- झंझारपुर-स्कूलसँ जेना-तेना प्रवेशिका परीक्षा पास कएने छलि (ई दुनू उपरोक्त कलकतिया प्राध्यापक लोकनिक सहोदरा छलीह, तैँ एतबा अदम्य साहसक परिचय दए सकल छलीह)।

एहेन अकादारुण समयमे, जँ ठकुरटोलीक एकटा सामान्य मध्य-वित्त परिवार (स्व. जयकलित तथा अनकलित ठाकुरक) मे सँ एक उच्च मेधा-प्रतिभाक धनीक बालक- कृपानन्द (जन्म 1939 ई.) बहरेलाह आ केजरीवाल उच्च विद्यालय, झंझारपुरसँ प्रथम श्रेणीमे (1957) प्रवेशिका परीक्षा पास कएलनि, तँ से सहजहिं गामक लेल गौरवक एवं इलाकाक लेल अचम्भोक विषय छलैक। एतय उल्लेखनीय थिक जे उक्त विद्यालयक ट्रैक-रेकार्डे जिला स्तरपर ताहि तरहक नामी-गामी छलैक। लगातार कएक वर्ष पहिनेसँ लगातार कएक वर्ष बादहु धरि ई स्कूल वाट्सन उ.वि. मधुबनी; जिला स्कूल दरभंगा एवं एम.एल. एकेडमी (सरस्वती स्कूल) लहेरियासराय केँ टक्कर दैत रहल छलैक। तीनूमे क्रमशः ठाकुर प्रसाद सिंह, एम.ए. द्वय, डिप.एड. (झंझारपुर); चन्द्रनाथ मिश्र (पोखरौनी), एम.ए. द्वय, डिप.एड. (मधुबनी); झिंगुर कुँवर, एम.ए. द्वय, डिप.एड. (लहेरियासराय) राज्यभरिमे सुख्यात विद्वान शिक्षकेटा नहि, कठोर प्रशासक रूपेँ ततबे कुख्यातो बूझल जाइत छलाह। ततबे नहि, झंझारपुरक उक्त

विद्यालयमे जहिना लत्तीबाबू सन कठोर अंग्रेजीक विद्वान, दुखहरणबाबू ओ पीताम्बर लाल दास सन-सन स्ट्रीक्ट विज्ञान-शिक्षक, श्यामबाबू-विष्णुदेव बाबू सन-सन हिन्दी आ सामाजिक विज्ञानक स्वर्ण-पदक प्राप्त शिक्षकादिक मार्गदर्शन उपलब्ध छलैक; तहिना वाट्सन (मधुबनी) क चर्च करी तँ डा. श्यामचन्द्र झा (भवानीपुर, पंडौलक) हिन्दी-अंग्रेजीक स्नातकोत्तर, डा. देवनारायण झा (शरहद-शाहपुरक) एम.कौम, स्वर्ण-पदक प्राप्त (वाणिज्य), विज्ञान-मैथ्स शिक्षक (घोंघरडीहा-वासी) तेहने भौतिकी-रसायन ओ गणितक धुरंधर, कुलाबाबू-मदनबाबू दुनू भाइ तेहने अंग्रेजीक टॉपर स्नातकोत्तर विद्वत् जनसँ सुसज्जित छलैक ओ विद्यालय। प्राचार्यक अनुशासन केहन, तँ दू-दू बेर अपन बालककेँ टेस्ट-परीक्षा (प्री-बोर्ड) मे सेन्ट-अप नहि होबए देने छलाह किएक तँ हुनका कलमसँ अंग्रेजी विषयमे 30 नम्बर नहि आनि सकल छलनि। तखन-तेहेन होइत छलैक राष्ट्रपति-सम्मानसँ सम्मानित शिक्षक ताहि दिन मे!

आ एम.एल. एकेडमी (दरभंगा) मे ताहू सबसँ 'वज्रादपि कठोराणि' प्रशासक-सुयोग्य प्राचार्य (राष्ट्रपति-पुरस्कृत) छलाह- गंगापट्टी (लहेरियासराय) बासी झिंगुर कुँवरजी। पं श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' (संस्कृत-हिन्दी शिक्षक) सहित सभ विषयक शिक्षक मात्र तहिना एकसँ बढ़ि एक उद्भट्ट विद्वान! तँ,

तत्कालीन अविभाजित बिहारक बोर्ड परीक्षामे क्रमांक एकसँ 10 धरिक मेधा-सूचीमे पाँच-पाँच, छव-छवटा जगह यैह स्कूल सब छेकि लैत छलैक। एतबा खुशफैलसँ ई विवरण दए रहल छी, किएक तँ हम स्वयं केजरीवाल स्कूल, झंझारपुर एवं वाट्सन स्कूल, मधुबनीक छात्र रहि, हायर सेकेण्ड्री कयलहुँ तथा झिंगुर कुँवरजी मेंहथक समधिए छलाह। कृपाबाबूक प्रायः सङतुरिये रहल हेथिन- एक आर ओहने तेजस्वी छात्र- रामबहादुरजी जिनकर हाथ पकड़ि लए गेल रहथि अपन जमाए बनएबा लेल (किन्तु से विद्यार्थीक इच्छाक विरुद्ध)! फलतः विवाहक दुइए-चारिए दिनक भीतर ओ असामान्य रूपेँ कालक गालमे समा गेल छलाह। एहि घटना अथवा दुर्घटनासँ सम्पूर्ण बस्ती दिन नै, मास नै, कएक वर्ष धरि शोकाकुल रहल छल तथा तकरे प्रतिफलेँ तीन-चारि बरखक अभ्यंतरे परोपट्टाक नामी वा अपना सन एकमात्रे लाइब्रेरी- ‘श्री रामबहादुर सार्वजनिक पुस्तकालय’क स्थापना सम्भव भेल छल। ओहि होनहार युवककेँ भावांजलि अर्पित करैत एहि अवन्तर कथाकेँ ठामहिं विराम दैत छी। से, कहैत जे रही- 1957 ई मे मैट्रिक आ 1959 मे आर. के. कॉलेजसँ आइ.एस.सी. उच्चांक सहित करैत कृपानन्द जी एम.आइ.टी., मुजफ्फरपुर सिविल अभियांत्रिकीमे (1959-63) रॉल नम्बर 1 सहित नामांकन लेलन्हि आ अभियन्ता बनि गेल छलाह। हमरा मोन पड़ैछ, हिनका माथपरसँ पिताक छत्र-छाया अकालहि उठि गेल छलनि मुदा अग्रज श्री नित्यानन्दजी पर ताहि

अन्हर-बिहाड़िक कोनोटा प्रभाव नै पड़ल छलनि। ओ अडिग अभिभावकत्वक निर्वहन कएने छलाह।

हिलकोर जे लहरि बनि गेल:
ढोलिया-बजनियाँ बजबाकए पूजा-प्रसाद जे भरो गाम बँटायल छल- कृपानन्दजीक सफलता ओ बिहार सरकारक सहायक अभियन्ता रूपेँ योगदान (1963) देलापर, तकर हिलकोर गौएँ-समाज धरि सीमित नहि रहल छल। प्रायः गोटेक सालक आगाँ-पाछाँ नरुआरसँ स्व. बिकल झा (मेंहथक भागिन) केर जेठ बालक श्री हरेकान्त झा (बोर्ड-टॉपर, ओही केजरीवाल विद्यालयसँ) सेहो, कोठिया तथा महरैल गामसँ दू-दू अभियन्ता (कोठियाक श्री हरिबल्लभ झा, डीडीए दिल्ली सँ विख्यात); फेर 1965-66 मे, हमरे बैचक बोर्ड-मेरिट-लिस्टक नारायण झा (नरुआर) अभियन्ता एवं ओही अवधिमे पुनः हमर मित्र-द्वय श्री नरेश झा (आब स्व.) एवं श्री दुर्गानन्द झा लोकनिक इंजीनियरिंग डिप्लोमा प्राप्त करब- महत्त्वपूर्ण परिवर्तनक दौर छल, से कहि सकैत छी। ओही बीचें, कथनासँ सेहो एक जे.ई. (नाम प्रायः वेदानन्द मिश्र छलनि, आब स्व.) भेल छलाह। हमर एक सहपाठी- मेंहथ- लक्ष्मणजी सेहो अभियन्ता बनल छलाह।

शिक्षाक आन-आन क्षेत्र वा विद्यामे सेहो एकटा द्रुत बदलाओ

ओहि अवधिमे आयल छल, तकरो अकानल जा सकैछ; यथा गोटेक सालक आगाँ-पाछाँ इन्द्रकान्तजी एम.ए. राजनीतिशास्त्र, सचीन्द्र कुमार झा (फूलबाबू) एम.ए., रामनारायण झा, बी.कॉम/ एम.कॉम, पीताम्बर झा (भुटकुन) क आइ.एस.सी. करैत नेभी ब्वाइजमे भरती, तृप्तिनारायणजीक ओ जयनारायणजीक स्नातकीय डिग्री एवं सत्यनारायण ठाकुरक बी.एस.सी. प्रतिष्ठा तथा भराम उच्चविद्यालयमे विज्ञान शिक्षकक नोकरी-प्राप्ति प्रभृति किछु एहेन-एहेन दृष्टांत थिक जे तत्कालीन शैक्षिक संक्रमण-कालक जागृतिकेँ रेखांकित करैत अछि; जे 'लठिधर-महिंसबार आ पहलमान' मेंहथकेँ पढ़ैत-लिखैत, आगू बढ़ैत तथा सुशिक्षित होइत मेंहथक रूपेँ चिन्हारए देने छल। एही नेओँपर परवर्ती पीढ़ीमे हम, कृष्ण कुमार झा, केन्द्रीय उत्पाद आयुक्त, दिल्ली; मोहन झा डॉक्टर (एम.बी.बी.एस.) आ विजय कुमार ठाकुर (मुख्य अभियन्ता, कोल इण्डिया, कृपाबाबुएक कृपा-उत्पाद) एवं आजुक ई-पत्रिका- विदेह सहित अनेक प्रकारक ई-क्रान्तिक मैथिली-साहित्यमे प्रथम सूत्रपातकर्त्ता श्री गजेन्द्र ठाकुरोक नामोल्लेख जरूरी बुझैत छी। अ थ च सातम दशकमे उठल ओ हिलकोर आइयो लहरि बनि-बनि आयुष्मती प्रीति ठाकुर धरिक तटकेँ स्पर्श करैत देखल-अकानल जा सकैछ।

गौँआ-घरुआक बीच के.एन.टी.:

कृपानन्दजी जखन अपन एवं अपना परिवारक उत्थान केर

सोपानपर पैर टिका रहल छलाह, ठीक ताही अवधि (सातम दशकक आरम्भिक काल) मे यथा-पूर्वोक्त रामबहादुरजीवला शोक-प्रसंग सेहो गौआँकेँ व्यथित आ मथित कएने रहैक। ई कहब कठिन अछि जे हमर अड़ोस-पड़ोसक गाम-समाज एहेन दुर्घट प्रसंगपर कोन रूपक प्रतिक्रिया दितए, किन्तु हमर गौआँ समाज कोना रिऐक्ट कएलक, से तँ हमरा आँखिक सोझाँ झलकैत अछि मुदा से प्रसंग कनेक थम्हिकऽ।

विद्यार्थीक सहायता:

1961 ई. मे हमर नामांकन भराम आ कोठिया हाइ स्कूल (जे सम्प्रति भैरबथानमे अवस्थित अछि) के अबडेरैत, झंझारपुर-केजरीवाल स्कूलक आठम वर्गमे, हमर इच्छाक तथा जिद्दक मान रखैत पिताजी करबओने छलाह। जड़िमे तकर कारण यैह कृपानन्देजी छलाह। से बात साल-दू-सालक बाद तखन बुझबामे आयल जखन एकबेर गरमीक तातिलमे ‘एवरी-डे-साइन्स’क पोथी लए कृपानन्दजी लग पढ़बा लेल पहुँचल रही। पोखरिक दछनबरिया भीर पर पच्छिम दिस घर-आंगन आ पूब दिसक पूबे मुहक बड़का दलान छलनि। ओहि समय धरि पितियौत लोकनि- सीताराम बाबू (डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मधुबनीक प्रधान सहायक) एवं पं बच्चा ठाकुर, कुलदीप बाबू- सभक बैसाड़ संगहि छलनि। तेँ दलान सदिखन भरले-पूरल रहैत छलनि। कय-कय जोड़ी तास

चलैत रहैत छलैक। दू-तीनटा चौकी पर सैह खेलबाड़ीसभ छेकने रहनि मुदा उत्तर-पूबक कोन पर एक कात लगाकऽ पटियापर एकटा सतरंजी देल आ तैपर चुपचाप बैसल, कोनो मोटगर-गतगर अंग्रेजी किताबमे डूबल कृपा बाबू। कृपाबाबू एहि समय धरि अपन संगी सभक बीच के.एन.टी. क नामे ख्यात भऽ गेल छला। हमरा देखिकऽ सभ खेलाड़ीकेँ जेना अचम्भा किं वा अनसोहाँत लागल सन बुझना गेल छल। कदाचित ई जे आन टोलाक ई कोना...? ई किएक...? मुदा ओ नै अकचकाएल रहथि, किएक तऽ हम एक दिन पहिनहि पोखरिमे नहाइत काल निवेदन कएने रहियनि जे मदति चाही आ ओ सहर्ष तकरा स्वीकारैत ‘आबि जाउ’ कहने छलाह। ओना, ई एकटा दीगर बात छल जे हमरा गीतहारक रूपेँ किं वा सज्जन-साँहठुल छात्रक रूपेँ सगरो गामक सभ वर्णक लोक चीन्हैत अथवा नहभरि आदरो दैत छल।

-हँ विद्यार्थी। की पढ़बाक अछि?

-एवरी-डे-साइन्स मे ‘प्रयोगशालामे ऑक्सीजन गैसक निर्माण’।

ओ हमर पुस्तक देखलनि उनटा-पुनटा कय आ एकहि सूरे तीनटा अध्याय पढ़ा देलनि आ काल्हि अहीबेरमे तीनू चैप्टरक प्रश्नोत्तर लीखि अनबाले कहलनि। बीच-बीचमे बारम्बार ‘विद्यार्थी’ कहि सम्बोधित कएने रहथि। अगिला दिन हमर होमवर्क देखि प्रसन्नता व्यक्त कएलनि आ लगातार दू घण्टा समय दए लगभग पूरे किताबक शंका-समाधान कए देलनि। हम धन्य-धन्य भए

गेल रही! आ तखन फेर इसकूलक चर्चा, एक-एक शिक्षकक हाल-चाल सहित, हमरा पढ़ाइक एवं प्रत्येक विषयक लिखित तैयारीक मंत्र देने रहथि; अंग्रेजी भाषा तथा समाज अध्ययनक गम्भीरतासँ, रटिकए नहि, अपन भाषामे अभिव्यक्त करबाक बोध देने छलाह। यद्यपि हम सम्बन्धित विषयक कॉपी-किताब लए-लए डा. परशुरामजी (अंग्रेजी विषय), देवनारायण ठाकुरजी (वाणिज्य- बुक कीपिंग) आ राजेन्द्र झा जी लग अर्थशास्त्र विषयक यदा-कदा मदति लैत रहलहुँ- बादहुमे, स्नातको स्तर धरि मुदा प्रथम 'पथ-प्रदर्शक तारा' तँ वैह कृपानन्देजी छलाह! हँ, एहि सभ सीनियर्स केर मदति लेल हमर पिताजी पहिने आरि-पाठि बान्हि अबैत छलाह। हुनकर उठब-बैसब चारू टोलमे छलनि आ हुनकर खिसक्करयनक खूब आदर रहनि (अपन दियादक घराइन छोड़िकए बाँकी भरो गाममे)।

पुस्तकालय-प्रसंग:

आब सर्वाधिक महत्वक बात समाजक दृष्टिकोणें! वैह 1960-62 केर समय छलै जखन स्व. रामबहादुरजीक नाम पर सार्वजनिक पुस्तकालय फोलबाक निर्णयक बात ऊठल छल। उपर्युक्त प्रत्येक सीनियर लोकनिक पुनः नामोल्लेख जरूरी नहि बुझैत, संक्षेपमे कहब जे चारू टोलक न्यूनतम दू-दू वा तीनियों-चारियो गोटेकेँ मिलाए एकटा अस्थायी कार्यसमिति जकाँ बनल

छल, सर्वप्रथम प्रायः दीयाबाती-छठिक अवकाशमे। एहिमे ठकुरटोलीक प्रतिनिधि कृपेबाबू छलाह। नीक बात ई जे ओ जखन नहियों रहथि, कोनो अवकाशमे नहियों आबि पाबथि, तैयो नित्यानन्द ठाकुरजी भार टेकि लेथिन आ काज बिधुत नहि होइक।

सभसँ पहिने तय भेलैक जे एहि प्रस्ताव पर रामबहादुरजीक परिजनक स्वीकृति लेल जाए। हुनक गारजन- कमलूबाबू, गौरीबाबू (मास्टर साहेब) आ राधाकान्त बाबू शोकाकुल होइतो, सहर्ष स्वीकृति देलखिन! तत्पश्चात् गारजनक स्वीकृतिसँ चारि-पाँच कनीय सदस्य लोकनि आंगन जाए आदरणीयाँ भौजीक सहमति एवं प्रथम चन्दा/ सहयोग-राशि प्राप्त करैत गेलाह। ताहि नवतूरमे एहि पाँतीक लेखक सेहो रहथि। एहि योजनाकेँ कार्य-रूप देवामे कृपानन्देजीक प्रभावशाली व्यक्तित्व सटीक कुन्जीक काज कएने छल किएक तँ ई निकटस्थ पड़ोसियेटा नै, सङतुरियो रहथिन।

तखन, दोसर प्राथमिकता छलैक स्थान-चयनक। कैकटा जगह केर प्रस्ताव आयल छलै विमर्शक क्रममे- दछिनबारि टोलमे लालबच्चाक पोखरिक उतरबारि भीर पर, तत्कालीन प्राइमरी स्कूल लग, कृष्णदेवजी (बच्चनजी, मुखिया)क मिसरटोली लगक कलममे, वर्तमान समयक दुर्गास्थान लग आदि...आदि।

लालबच्चा लग मुह छानल जाए, से फूलबाबूक सहमतिक अछैतो गामक बेसी युवककेँ नहि अरघलैक, किएक तँ बल्ली-पोखरि लगक फुटबॉल-मैदान पर जबरदस्ती टेक्टर चलबाकए दखल-दिहानी वा कब्जा कए लेब सौँसे गामकेँ असाधारण पीड़ा देने छलैक; से एतेक जल्दी बिसरबाले क्यो तैयार नै छल। सर्वानुमति प्राथमिक विद्यालये लगक स्थानपर छलैक। ओतए प्रायः 7 कट्ठा जमीन इसकूलक नामे कहियोक दान-पत्रमे दर्ज रहैक। बाँकी ताहिसँ दच्छिन शिव-मन्दिरकेँ बाड़ैत, बड़का-पोखरिक मोहारे रहैक। ताहिपर पूरा सरिसबे-खांगुर (आठ आनाक मालिक गाम परहक पटीदार आ आठ आना कचहरी टोल) लोकनिक स्वामित्व छल।

तखन फेर कचहरी टोलक गोपेशजी (बिहार हिन्दी राष्ट्रभाषा परिषद, पटना) एवं गणपतिजी (कलकत्ता) लोकनिक पत्रानुमति लैत गाम परहक पट्टीमे राजेन्द्रजी, इन्द्र (पछाति मुखिया) इत्यादिक सहमतिएँ यैह स्थान फाइनल भेल छलैक। तखन शुरू भेल बाँस-काठ, खढ़ आ ईंटाक लेल बैठकी। चारू टोलक लोक बढ़ियाँ मदति कएने छल- आन- टाका, बाँस-काठ-खढ़ सब लएकऽ। तेँ, प्रारम्भिक योजनाक टटघरकेर बदलामे पजेबेक देबाल पर बंगला छबा गेल छलै- तीन दिस बरंडा सहित।

जतए धरि मोन पड़ैछ, 1962 ई. मे एहि पुस्तकालयक पंजियन तथा ओही वर्षसँ सरकारी अनुदान (पुस्तक क्रयार्थ) तथा 1963 मे केन्द्र सरकारसँ रेडियो-सेट-स्पीकर आदि प्राप्त भए गेल छलैक। पक्का रसीद छपल रहैक आ तैपर कलकत्ता-पटना पर्यतों सँ चन्दा-नगदी अबैत छलैक, ताहिसँ बिजली कनेक्सन, पटिया-सतरंजी आ दूटा कठही अलमारी प्रभृतिक व्यवस्था भेल छलैक। सारांशमे कही तँ एहि सकल अभियानक साफल्य सर्वश्री इन्द्रकान्तजी, सत्यनारायण ठाकुरजी, कृपानन्दजी, मधुबनजी, कृष्णदेवजी (बचनी मुखिया), तृप्तिनारायणजी ओ कृष्णदेवजी (मास्टर साहैब) तथा इन्द्र (मुखिया) केर अनवरत प्रयत्ने भेटल छलैक मेंहथकेँ। तेँ, पहिल पुस्तकालयाध्यक्ष इन्द्रकान्तेजी कैँ चूनल गेल छलनि। हुनक सहयोगमे (1963 सँ 1970 धरि) लगातार यैह सरसजी (जे 1969-70 मे सी.एम. कॉलेजक छात्र रहैत ‘सरस’ पदवी सुमन-किरण-मधुप जी लोकनिक मुहसँ पओने छलाह) रहिकए संचालन-भार सम्हारने छलाह।

नाट्य-परिषद प्रसंग:

गत सदीक छठम दसकमे मेंहथ-महिनाथपुर (दुनू गामक एकहि पंचायत) केर किछु उत्साही युवक- प्रौढ़ कलाकार लोकनि मीलिकए नौटंकी-पाटी लगभग 8-9 सालधरि चलौने छलाह। दछिनबारि टोलक रमाकान्तजी (40 वर्ष पूर्वहि स्व.) मुहगर-

कनगर आ किछु पढ़लो-लिखल छलाह। बहिंगा सन-सन मोंछ आ किछु-किछु धौनी टाइपक झोँटो राखथि। वैह छलाह दलपति आ सुलताना डाकूक भूमिकामे ओ असाधारण अभिनय करथि। गामक आओर किछु चूनल-बीछल कलाकारमे ओही टोलक विशेस्वर उर्फ बिसाइ झा नामी जोकर आ विलक्षण ढोलक-नगाड़ा-वादक छलाह। तहिना छलाह मिसरटोलीक रघुवंशजी जिनका मौगियाही छवि-छटाक संग-संग फिल्मी गीत गायनक लूरि-भास सेहो छलनि। गामे-गाम उपनयन, वियाह, कोजगरा वा अन्य अवसर पर ई पाटी साइ-साटा कएकऽ दू-दू, तीन-तीन सय प्रति राति, भोजन-भार सहित पबैत छल। ओहि दिनमे जँ खा-पी कऽ 50-60 टाका कए हिस्सा पाबए कलाकार, तँ से पैघ बात होइक।अस्तु।

ओहि पाटीक टुटला-बिखरलापर एकटा शून्यताक अनुभव भरि गामक लोककेँ होइत छलैक, तकरे पूर्ति हेतु महिनाथपुरमे हर्षनारायणक नेतृत्वमे एकटा रामलीला पाटी शुरु भेल छलै आ मेंहथमे पढ़ुआ-गुनुला बहुत, तेँ नाट्य-परिषदक सूत्रपात भेल छलै (1960-61क आसपास)। जेनाकि ऊपर कहि आयल छी, सार्वजनिक पुस्तकालयक सफलतासँ सबहु टोलाक शिक्षिते लोकनिटा नहि, अशिक्षितो-अल्प शिक्षितो युवा-वर्ग एक सूत्रमे बन्हा गेल छल आ खूब भव्य तरहेँ शारदा पूजनोत्सव आरम्भ

भेल छल ओही प्राथमिक विद्यालयक प्रांगणमे। एहि अवसरपर दू राति नाटक खेलेबाक निर्णय भेल रहैक (प्रायः 61-62 मे)। एक राति सरदार भगत सिंह (हिन्दी खेला) आ दोसर राति पं. गोविन्द झा (हालहिं स्व.) द्वारा लिखित आ बहुचर्चित मैथिली नाटक बसात तय भेल छलैक।

हमरा नीक जकाँ मोन अछि जे सरदार-भगत, जनरल डायर, कर्नल (वा मेजर) सान्डर्स, लाला लाजपत राय, असफाक-उल्ला, राजगुरु आ बटुकेश्वर दत्तक संग-संग चन्द्रशेखर आजादक भूमिका लेल नयके तैयार एकताक चद्दरि मसकैत-मसकैत बाँचल छल। आ से, धन्न गोपेशजी एवं मधुबनजी! अंततः यैह दुनू गोटे मुख्य-मुख्य पात्रक भूमिका लेल जे औपबंधिक सूची प्रस्तुत केलनि, तकरा तत्कालीन दूटा वरीय गारजन श्यामबाबू (इन्द्रकान्तजीक काका) आ कचहरी टोलक लालबाबू (जे प्रतिष्ठित डाकबाबू छलाह) केर सक्रियतासँ सलटाओल गेल छल।

पहिल राति किछु महत्त्वपूर्ण अंग्रेजी-हिन्दीक कथोपकथनकेँ बजबाकए (इण्टरव्यू जकाँ) देखल-परेखल गेल आ तखन भगत सिंह मधुबनजी तथा अंग्रेजीक शानदार उच्चारण तथा प्रवाहकेँ देखैत, व्यक्तित्व आकलन करैत, कृपानन्दजीकेँ सान्डर्स ओ डायर- दुनू भूमिकाक लेल फिट पाओल गेल छलनि मुदा दुनूक

निर्वहन एक संग सम्भव नहि छलैक, से ई देखैत सान्डर्स साहेबक भूमिका कएने रहथि ई। असाधारण रूपेँ यशस्वी भेल छलाह ठाकुरजी! जनरल डायरक क्रूर छविक ओ स्वयं परित्याग कएने रहथि। ओ फ्रेंच-कट मोंछ-दाढ़ी, फूलल-फूलल गालपर ललछौंह फाउन्डेशन आ तैपर मुर्दाशंखक रोगन आ माथापर अंगरेजिया हैट...!

दुनू अंगरेजक डायलॉग जतऽ-जतऽ बेसी लमगर रहैक आ शब्द कठिनाह, ततऽ-ततऽ बहुत कारीगरीसँ एकटा-दूटा कए हिन्दीक वाक्य सेहो ओही तेबरक, घोंसिया देल गेल छलैक जाहिसँ ग्रामीण-तमशगीरक लेल बोधगम्यता सहज भए गेल छलैक। नाटकक सफलताक ’ग्राफ’ कतबा आ केहन दिव्य छल, से एहिसँ बूझल जा सकैछ जे दुनू अंग्रेजबा खलनायककेँ दर्शक दीर्घासँ जुत्ता-चप्पल आ ढेपा पर्यन्त देखाओल गेल छलैक तथा ‘मार ने रौ- अइ बनरमूहाँ के पटकिकऽ ओध-बाढ कर ने रौ’- तेहन-तेहन टिप्पणी सभ बेर-बेर उछलल छलै। ताहूसँ आगूक बात ई भेल छलै जे चारिटा मेडल (रजत) लाल-भाइ (लाल बाबू, कचहरी टोल) तथा दूटा मेडल श्याम-भाइ दए-दए सम्मानित-प्रोत्साहित कएने छलाह कलाकार लोकनिकेँ। आ कृपा-बाबू दुनू गोटेक सूचीमे एक नम्मर पर रहथि। आ ताहूसँ आगाँक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि ई भेल रहैक जे ठीक साल-डेढ़ सालक भीतरे कोनो शुभ अवसर पर एहि नाटकक मंचन फेर

करए पड़ल छलैक नाट्य-परिषदकेँ आ ताहि लेल लाल-भाइ अन्य खर्चा संग-संग 500/- टाका देने रहथिन- एक सेट परदा एवं शाही-ड्रेस कीनबा लेल। से सभ यथासमय दरभंगासँ किना गेल रहैक।

लग-पासक गाम-कोठिया, पट्टी, महिनाथपुर, भराम-गोपलखा आदिक लोक उनटिकए अबैत छल खेला देखबा लेल। वरिष्ठ गारजन लोकनि अनुशासन आ स्त्रीगण-पुरुषादिक बैसबाक समुचित व्यवस्था-भार टेकैत छलाह। कएक बेर बी.डि.यो, सी.ओ. तथा डिप्टी-इन्सपेक्टर (स्कूल) आयल रहथि आ भरि-भरि राति इसकूलक बरंदा पर दसेक कुरसी लगाए, लालबच्चा (पूर्व विधायक झंझारपुर विधान सभा), लालबाबू, कमलाबाबू, गौरीबाबू, श्यामबाबू, बाबूजीझा (पंचायत-मुखिया), फुसियाहा बच्चा (कोठिया) सन-सन सम्भ्रान्त लोकनि बैसैत छलाह। ई लोकनि बिना निवेदन अपना मोने सय-पचास टाकाक मदति देल करथि परिषदकेँ। ई क्रम एकटा परम्परा बनैत 1960-61 सँ 1980-81 धरि चलैत रहल छल जाहिमे क्रमशः दिनेशजी, नरेशजी, दुर्गानन्दजी, रवीन्द्र, उदयचन्द्रजी, ताराकान्त, हीरालाल, लक्ष्मणजी (अभियन्ता), आदि जुड़ैत चल गेल छलाह। एकरे कहैत छैक- ’हमनवा आते गए और कारबाँ बढ़ता गया’! सरस्वती पूजाक संग-संग नाटको देखबाक हँकार जाइत छलैक लगपासक सभ गामकेँ।

पुस्तकालय-प्रसंग:

बहुत बात पहिनहुँ चर्च भेल अछि, तकरा दोहरेबाक प्रयोजन नहि। एतबा कहब मुदा जरूरी अछि जे ओहि रामबहादुर सार्वजनिक पुस्तकालय (मेंहथ) केर भाग्य 1961 सँ 1981 धरि दनदनाइत-सनसनाइत उच्च सँ उच्चतर होइत रहल छलैक। पुस्तकक संख्या 1300 लगभग गौँआक सहयोगेँ आ 1800 लगभग सरकारी अनुदानसँ, कुल 3100 सँ बेसीए (दू अलमारी भरि) जमा भए गेल छलैक। अनुदानसँ पूर्व दू-दू खेप एस.डी.ओ. एवं जिला शिक्षा पदाधिकारीक निरीक्षण भेल छलैक, तिनकर स्वागत-सत्कारक व्यवस्था उत्तम रीतिएँ सकल समाजक सहयोगेँ भेल रहैक। माछ-भात, दही-चीनी-रसगुल्ला ओ पाँच चङेरा आमक व्यवस्था भेल रहैक। चाह-जलखै आ भोजनादिक व्यवस्था-बात नित्यानन्दजी एवं तकरा क्रियारूप देब हमरे पर छल।

ई पुस्तकालय केवल रामबहादुरजीकेँ श्रद्धांजलिएक लेल नहि स्थापित भेल छल, वरंच वास्तविक रूपेँ ई एकटा सामाजिक परिवर्तनक माध्यम छल आ से, प्रायः 4-5 वर्षक अभ्यंतरे बहुत रास बदलाओ निखरि-कए सोझाँ आबय लागल छल। यथा प्राथमिक इस्कूल 'लोअर' सँ 'अपर' प्राइमरी भए गेल छलैक। बातकेँ एना बूझल जाए जे हमर नाम चारिम वर्गमे (1957 ई)

कोठिया बोर्ड मिड्ल स्कूलमे लिखाओल गेल छल मुदा हमरे छोट भाय रमेशजी (मैथिलीक लेखक, अवकाश-प्राप्त उप-समाहर्त्ता) केर नामांकन कोठिया इसकूलमे छठम वर्गमे भेल छलनि। ततबे किएक? आन गाम किं वा कर-कुटुमक गाम बूझि मेंहथक अधिकांश धी-बेटी तेसर किलासक बाद जे पढ़ाइ छोड़ि देबा लेल अभिशप्ते जकाँ छल, से सब आब कम सँ कम पाँचम वर्ग धरि तँ गामहिंसँ करए लागल छलि। हमर अपने तीन-तीनटा बहिन, परशुरामजीक पुत्री, देवनारायणजीक पुत्री सहित गोट दसेक बेटी-डाँटी छठा-सातबाँक पढ़ाइ कोठिया इसकूलसँ कए आगू बढ़लि छलि।

बिजलीक लाइन गाममे आबए, ताहि लेल जे विद्युत-अनुमण्डलीय अभियन्ताकेँ आवेदन पड़ल छल, सेहो एही पुस्तकालयमे बैसिकय सर्वश्री इन्द्रकान्तजी, तृप्तिनारायणजी आ लालबाबू लोकनि तैयार कएने छलाह। तहिना मधुबनीसँ कमलाक पश्चिमी तटबन्ध (कचहरी ढड़ान) धरिकेँ डिस्टीक्ट बोर्डक सड़क केर पक्कीकरणक लेल यत्न भेल छल।

जखन मधुबनी अनुमंडल कार्यालय एवं दरभंगा जिला मुख्यालयमे जा-जाकए धक्का पड़लैक, तँ द्वितीय पंचवर्षीय योजनाक ई काज सब तृतीय पंचवर्षीय योजना कालमे (शुरुहेमे) निष्पादित भेल छलै, तहिया महिनाथपुर-कोठिया-पट्टी सन-सन

बहुतो पड़ोसिया गामकेँ डाह-ईर्ष्या भेल छलैक; तकर उपराग ओ गाम सब तत्कालीन विधायक (हमर गौआँ) केँ जहिं-तहिं बाट चलैत दैत रहै छलनि, सेहो देखल अछि।

पुस्तकालयकेँ भारत सरकारसँ बेस पैघ ‘आयरन-चेस्ट’ सनक रेडियो-सेट भेटल छलैक (1962- जनवरी-मार्चमे), ताहिपर भरो गामक लोक भोर-8 आ राति-8 बजेसँ 9 बजे धरिक हिन्दी-अंग्रेजीक समाचार सुनैत छल। समय पर रेडियो-फोलब-बन्द करब हमरे (सहायक पुस्तकालयाध्यक्षक) काज रहैत छल। खास बात ई रहैक जे ई रेडियो बिना स्पीकरे नै बजैत छलैक (इन-बिल्ट-स्पीकर नै रहैक सेटमे)। तैँ एकरा, कम्यूनिटी (सामुदायिक) रेडियो कहल जाइक। एहि स्थितिमे पुस्तकालय-बंगलाक एक कोन पर एकटा तीस-फिट्टा मोटकर बाँसमे रेडियोक भोम्हाकेँ बान्हि टाँगल गेल छलै आ भरि गाम आवाज पहुँचैक, ताहि लेल ओहि बाँसकेँ आध-आध घण्टापर घुमाबए पड़ैत छलैक; नै तँ दोसरे दिन कोनो टोलक उपराग सूनय पड़ैत छल (विशेषकए 1962 केर चीन-भारतक युद्धक समयमे)। कहि सकैत छी जे 70-75% अनपढ़-किसान वा मजदूर-बोनिहार-महिंसबारक बीचहुमे समाचार ओ रेडियो पर पटना केन्द्रसँ चौपाल कार्यक्रम सूनब एकटा सुखद अनुभूति बनि रहल छलै।

एही पुस्तकालय-कक्षमे 1964 सँ 1970-72 ई. क बीच भवानीपुर गामक गमैया-डाकदर (जे निष्णात कम्पाउण्डर मात्र रहथि) साहेब तथा बिजली मिस्त्री अनिरुद्ध बाबू (भवानीएँपुरक) सेहो रहल छलाह- गौआँक सहमति सँ। ई दुनू गोटे आस-पड़ोसक सभ गाममे साइकिल सँ भ्रमण कएल करथि आ मोटामोटी सर्वप्रिय भए गेल रहथि। आ हिनके दुनूक सूत्रसँ हम भवानीपुरक जमाए (समय-पूर्वे) बनि गेल रही।

हम गामसँ बहरेलहुँ (1970 जुलाइ), तकरा बाद 3-4 वर्ष धरि नरेशजी, दुर्गानन्दजी, रबीन्द्र, गौरीझा, जुगेशर भाइ (हमर दियाद लोकनि) घीचि-घाचिकए चलौलनि मुद प्रगति थकमका गेलैक। एही अवधिमे गाममे दोपाटी भए गेल रहैक, भरि गामक पढ़ुआ-गुनुआ आ कलकतिया लोकनि एक दिस आ पूर्व विधायक-गामक जबर्दस्तीक जमीन्दार पाँच-दसटा जी-हजूरी एवं लाठीवलाक संग दोसर दिस।

फुटबॉलक प्रसंग:
मेंहथहुमे एकटा टीम रहैक, तै मे 30 टा सँ बेसी समर्थ खेलाड़ी रहैक; निछड़ल-छाँटल छहछह करैत- 16 सँ 30-32 बरखक बयसवला; मैट्रिकसँ स्नातकोत्तर धरिक शिक्षावला आ किछु अल्प-शिक्षितो।

कृपानन्दजी आ सत्यनारायण ठाकुर उच्च श्रेणीक ‘बैक-पोजीसन’ (फुल-बैक वा हाफ बैक दुनू) वला प्लेयर छलाह। नारायण चौधरी, पीताम्बर (इण्डियन नेभीमे जॉइन- जॉइनक बादो जखन-तखन), तृप्तिनारायणजी आ नागेश्वरजी (हमर पितियौत) आदि नीक कोटिक (तेजस्वी दौड़निहार आ बामा-दहिना दुनू पैर चलैत) ‘सेंटर फारवर्ड’ छलाह। गणपतिजी तथा कृष्णदेवजी (दछिनबारि टोल, पछाति मास्टर साहैब) नीक गोली रहथि। भन्नू मण्डल, गौरी झा (पुबारि टोल), सीतम्बर, बेदानन्द (सब पुबारि टोल) लोकनि पढ़ाइमे पछड़ल किन्तु खेलमे बेस टिकाउ आ विश्वसनीय छलाह।

एकबेर गरमी तातिलमे तीनटा ‘कपवला’ (ट्रॉफी) चैम्पियनशिप मैच राखल गेल छलै। घोँघरडीहा बनाम मेंहथ, खड़ौआ बनाम मेंहथ आ रैमा बनाम मेंहथ। रैमाक टीम मे कोठिया-पट्टीक ‘बोड़ो’ तँ मेंहथहुमे भरामक रामचन्द्र सिंह (सेन्टर फॉरवर्ड) बोड़ो कएल गेल छलाह। कृपानन्दजी प्रायः सेवामे आबि गेल रहथि (1964-65), तेँ केवल दुइए मैच मे खेलाएल रहथि। से दुनू मैच क्रमशः खड़ौआ तथा रैमासँ मेंहथ जीतल छल मुदा तेसर मे हिनका नहि रहने तथा घोंघरडीहाक टीम 20 नहि, 21 छलै, ताहू कारणे तीन-एक सँ हमर गाम हारल छल। ई सबटा मैच आ चैम्पियनशिप झंझारपुरक टिबड़ेबाल स्कूल-ग्राउण्डमे भेल रहैक। एहि दुनू ठाकुरजी (के.एन.टी/ एस.एन.टी.) केर ब्यूह-भेदन

केहनो भारी टीमक लेल असम्भवे जकाँ रहैत छलैक, से हमरा आँखिक देखल अछि। अस्तु।

एहेन विलक्षण टीमक फुटबॉल-ग्राउन्ड (बल्ली-पोखरिक कात मे-उत्तरी भागमे) अकस्माते, अजराजोड़ी बन्दुकक नोंक पर हड़पि लेल गेल छलैक मेंहथमे। तैँ गाम दोपाटी! तैँ विभेद पराकाष्ठापर। 99% धरि कलकतिया-नोकरिहारा समेत भरो गामक पढ़ुआ लोकनि प्रो. धनेश्वर झा, प्रो. परशुराम झा, प्रो. राजेन्द्र झा, प्रो. देवनारायण ठाकुर, लालबाबू, मधुबनजी, इन्द्रकान्तजी प्रभृतिक सक्षम नेतृत्व पाबि संगठित भेल छला आ यएह दल धनेश्वरजीक अपमानक बदलामे जमीन्दारक जेठ सपूत (जे बन्दूक भँजैत फुटबॉल ग्राउन्ड पहुँचल रहथि पिताक बाँहि पूरैत) केँ अंततः बनिसार (जहल) मे हप्ता भरिक लेल बन्हबा देने छलनि। ई छलैक एकताक बल!
मुदा से बड़े महग ओलि छल। गामसँ फुटबॉल केर बीजधरि उपटिए गेल! तहिना, पुस्तकालयो श्रीहीन होइत चल गेल!

गुरु-शिष्य ओ सेवा-व्रत:
श्रीमान् भवानन्द झा असाधारण सूझ-बूझ ओ मेधा-प्रतिभाबला अभियन्ता छलाह। ढंगा-हरिपुर बासी, एहि बी.एन. झाक जोति बड़ैत रहनि- सातम-आठम-नवम दशक (1965-95) मे। सहायक अभियन्तासँ अविभाजित बिहारक चीफ-इंजिनियर

(इंजिनियर-इन-चीफ सहित) होइत 'बिहारक विश्वेश्वरैया' पर्यंत कहओनिहार एहि महामानव लग प्रत्येक विभूषण झुझुआने लगैछ। के करत विश्वास 50 वर्षक बाद जे हमरा लोकनिक एकटा एहनो ऋषिकल्प समाङ भेल छलाह जे प्रत्यक्ष आ परोक्षरूपेँ सोन-कमांड, कोयल-कारो, डी.भी.सी., तेनूघाट, बराकर-बाँध, राँचीक आसपासक कएक जलापूर्ति योजना (डैम निर्माण) सहिते गंगा नदी पर गांधी-सेतु (पटना) क आरेखक स्वप्नदर्शी रहथि? जे एहेन-एहेन हजारो-लाखो करोड़क योजना-परियोजनाक सूत्रधार-संचालक- महा-पर्यवेक्षक होइतो, जीवन-पर्यंत एकटा मड़ौसी खपड़पोश (ढंगाक ओ स्थायी निवास हमरा बेर-बेर देखल अछि)मे बितौलनि। बड़का-बड़का करोड़पति-अरबपति ठीकेदारकेँ सेहन्ते रहि गेलैक जे एक कप चाहो हुनका पियबतनि किं वा एक खिल्ली पानो खुअबितनि।
ताही महामनाक सहोदर, ओही लोक निर्माण विभागमे कार्यपालक अभियन्ता (अनुज- श्री सूर्यानन्द झा) सेहो छलथिन मुदा से सर्वथा दोसर लोक रहथिन।

.. आ ताही गुरुक पट्ट-शिष्य (कार्यक्षेत्रमे) रहथि हमरालोकनिक मार्गदर्शी कृपाबाबू। भेलैक एना जे संसारक सभसँ नम्मा नदी पुल (5.750 किलोमीटर प्रायः) गाँधी सेतुक निर्माण हेतु जखन भारत सरकारक स्वीकृति (1970-71: पंचम पंचवर्षीय

योजनान्तर्गत) भेटलैक, तखनेसँ-तहियेसँ एकदिस ग्लोबल-टेण्डर द्वारा विश्व-स्तरीय निर्माण एजेन्सीक चयन प्रक्रिया चलल छलैक आ से ‘गेमन इण्डिया’ केर चयन होइते, दोसर दिस कार्य-गुणवत्ताक निरीक्षण-परीक्षण हेतु सुयोग्य नहि, सुयोग्यतम अभियांत्रिक कार्य-दलक खोज-बीन सेहो चलल छलैक। ई पूरा निर्माण कार्य 1972 सँ 1982 ई. धरि चलल छलैक आ मई-1982 मे तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी एकर उद्घाटन कएने छलीह।

से, ओहि वृहदाकार परियोजनाक सम्पूर्ण देखभालक भार जखन भवानन्द बाबूक हाथ सौंपल गेल छलनि, तँ (हमरा मोन अछि-हमरो पदस्थापन पटने छल) ओ दू टूक भाषामे तत्कालीन मुख्यमंत्री (डा. जगन्नाथ मिश्र) कैँ कहने छलथिन एकटा शर्तेक रूपैँ जे निरीक्षण-परीक्षण हेतु अभियांत्रिक कार्य-दल हम अपना हिसाबैँ बनाएब आ तकर कार्य-प्रक्रियामे कोनो तरहक हस्तक्षेप कोनो मंत्री-संत्री नहि करताह। आ से यथावत् मानलो गेल छलनि। ई बड्ड पैघ बात (कहू जे आश्चर्य आ अजबे जकाँ) बूझल गेल रहैक ताहि समय मे, असाधारण रूपैँ प्रिंट-मीडिया मे चर्चित सेहो।

आ हम मैथिल लोकनि विशिष्ट गौरव-बोधक अधिकारी छी जे एहि विश्व-विश्रुत परियोजनाक संचालन-परिचालन-निरीक्षण एवं

सावधिक परीक्षण मे मुखियाजी भवानन्द बाबूक संग उप-मुखिया वा सरपंचक भूमिकामे हमरा सभक अप्पन कृपानन्देजी छलाह (यद्यपि अभियन्ता आओरो कएक छलाह दलमे किन्तु काबिलियत एवं इमानदारीक प्रतिमूर्ति यैहटा! अपना सन एकमात्र अपने! हमरा सनक बहुतो लोक छुट्टीक दिनमे निर्माण देखए जाइत छल।

एहि इमानदारी तथा कर्मठताक एकटा एहेन सत्य घटनाक विवरण रखैत एहि निबन्धक इतिश्री करए चाहब जे सिनेमाक रील जकाँ हमरा मानस-पटल पर विगत 40 वर्ष सँ यथावत अंकित अछि। एहेन-एहेन साँचमे की, कहियो आँच आबि सकैए!

(प्रायः) समय 1980-81 क एक राति। स्थान-गांधी सेतु (निर्माणाधीन)क हाजीपुर-मुहाना परहक राजकीय निरीक्षण-भवन परिसर। अस्थायी बिजलीक खुट्टामे जत्र-कुत्र टांगल तार आ छोट-छोट पीयर-पीयर क्वाटरमे टिमटिमाइत लट्टू बॉल। तकरा छपने-झँपने अबैत सन गंगा कातक कुहेसी अन्हारक महजाल! शान्त शिविरमे अशांत वा उद्विग्न-मना बइसल एक अयाचीक वरद् हस्त संतान, ओछाइन आ टेबुलपर मारते रास कागत-पत्र-फाइल पसरल।

साइट पर, बीच बालुका-राशि पर (गंगाक उतरबरिया कछेर दिस) दूर-दूर धरि पसरल लोहा-लक्कड़, छोट-पैघ रौटी-तम्मुक आ गैंता-बेलचाक संग सिक्कड़ झुलबैत गजराजक सूँढ़ सन अनेक साँवल-क्रेन-हिटाची-टाटा-कैटरपीलरक भारवाही मशीनक धर्रोहि आ तै बीच-बीचमे सिमेण्ट-लोहा-कंक्रीटक जमौआ बड़े-बड़े चट्टान (खण्डांश) जहत्तरि-बहत्तरि ढंगड़ि आयल।

तै सिमिटिया चट्टान सभकेँ हथौंड़ा मारि-मारि कोण-किनारकेँ झाड़ि-झाड़ि देखैत आ 'टेम्पर' जँचैत एक विशेषज्ञ। 'यहाँ से तोड़ो'- 'यहाँ से फोड़ो'- 'रॉड निकालकर दिखाओ', 'रॉड की मोटाई 16 एम.एम. क्योँ?', 'रॉड टाटा-ब्रैण्ड क्यों नहीं?', 'बालू क्लासिक सोन-सैण्ड क्यों नहीं?', 'स्टोन-चिप्स अण्डर-साइज क्यों?' एहेन एहेन पचासनि सवाल गेमन इण्डियाक मुख्य अभियन्तासँ होइए, से आइयो, फेर काल्हियो आ फेर परसुओ! ओकर प्रोजेक्ट डायरेक्टर तंग-तंग होइए। ओ अपन मातहतक लघु संवेदक सभक बैसार करैए। उप्पर के बाँस अपनासँ नीचाँ, तै सँ नीचाँ, तहूसँ नीचाँ... होइत-होइत सभसँ नीचाँ धरि खोँचाड़ल जाइए मुदा सही जवाब नै पबैए। अंततः निम्न स्तरीय वा स्तरहीन-निर्माण प्रमाणित करैत बीसोसँ अधिक खण्डांश [जकरा अंग्रेजीमे 'सेग्मेण्ट' (segment) कहल जाइछ] केँ खारिज वा रद्दी घोषित करबा देल गेलैक। तकरा सभ प्रक्रियाक पालन करैत, राज्य सरकार आ केन्द्र सरकारहुकेँ प्रतिवेदित हेबाक छलैक- ठीक अगिला दिन।

ओहि कम्पनीमे तँ हड़कम्प मचबे कएलैक, संगहिं (ओही कालखण्ड मे नया-नया बनल) टेक्निकल सचिवालय पर्यन्तो प्रकम्पित छल, किएक तँ ओहि कम्पनीक चयन ग्लोबल-टेण्डर सँ आ दिल्लीक सहभागितासँ भेल रहैक। दोसर महत्त्वक बात छलैक जे एहि 'सेगमेण्टेशन-बीज' क वैचारिकी एकदम्मे अभिनव रहैक जकर व्यावहारिक ज्ञान अधिकांश अभियन्तोकेँ नै छलैक ताहि दिनमे। तेसर बात जे खास रहैक से छलैक- एक-एकटा ढलाइ कएल खण्डांशक लागत लाखहु रुपैया पड़ैत छलैक, तैं कम्पनीकेँ करोड़क नोकसान सम्भावित छलैक।

गुरुदेव (बी.एन. झा) साहेब चरणबद्ध रूपेँ उक्त प्रतिवेदनक प्रक्रियासँ अवगतेटा नहि, ओहिमे शामिलो छलखिन, स्थल-निरीक्षण कए स्वयं निम्न-स्तरीय निर्णयसँ आश्वस्तो भेल छलखिन। ओहि दिनमे फोनपर भारते सरकारक एकाधिकार छलैक तथापि छत्तासँ उड़ल मधुमाछी जकाँ फोन सब तीनू दिन अनवरत घनघनाइते रहल छलै। चोङा हाथसँ रखलौं नहि कि फेर घनर-घनर...।

ओहि बिध-पुराओने सनक निरीक्षण भवनमे नाम मात्रेक दू टा प्रहरी छलै जे बहरी मे बैसल तमाकुल लटा रहल छलै। भीतरमे

एकटा आदेशपाल साहेब लेल रोटी-दालि-तरकारी बना रहल छलै आ साहेब अपन शयन-कक्षेमे, टेबुल-कुरसी लगौने रिपोर्ट-रीटर्नमे लागल छलाह। एहि शिविरसँ थोड़े हँटिकए हाथीक देखौआ दाँत सन एकटा पुलिस-पोस्टो छलैक जाहिमे कखनो दूटा लाठी-पाटी सिपाही रहैत छलै आ कखनो सेहो नदारद!

राति, घड़ीक हिसाबेँ बहुत नै भेल रहैक मुदा आबादी सँ दूर गंगा-तटक एहि टोलबा पर एकदम सन्नाटा पसरल रहैक। कि तैखन एकटा गार्ड बरंदा परक खिड़की लग लाठी पटकैत, ओही खिड़की लगाकए भीतरी बैसल हाकिमकेँ आवाज दैत बाजल- साहेब-साहेब! कोई जीप आई है फाटक पर। दो-तीन आदमी उतरा है जो फाटक खोलने बोलता है। का, तो हाकिम से मिलना है।
साहेब ठामहिं बैसले-बैसल खिड़कीक एकटा पल्ला कनिएँ फोलैत, गार्डकेँ कहलखिन- अभी ई कौन है जी? बोलो कल सुबह मे आएगा- जो भी है.. कल आठ बजे आएगा!

किन्तु ताबत काल धरि दूटा भारी-भरकम मोछेला सनसनाएल बरन्दा पर चढ़ि गेल छलैक। आ गार्डकेँ धकिअबिते जकाँ कोठलीक ओठङाओल केबाड़केँ धक्का दैत, भीतर पैसि गेल छलै। ई गौरसँ चेहरा देखलनि- एकटाक मूऽ-कान चिन्हार सन लगलनि, प्रायः साइट परहक मुंशी-तुंशी छल हैत। दोसर गोटे

साफे अनचिन्हार... देखबामे एकदम्मे सुलताना डाकूक सहोदर। डाँड़मे चमौटी आ चमौटीमे ओजनगर पेस्तौल लटकल। दुनूक हाथमे एक-एकटा ब्रीफ-केस। चेहरा पर गलौंधी बन्हने।

-आपलोग...? क्या बात है? इस समय कोई काम है मुझसे?

-जी सर! घबराइएगा नहीं! साहेब भी आए हैं, गाड़ियेमे बइठल हैं। ये (हाथक ब्रीफ-केस देखबैत) सर, आपके लिए कुछ लाए हैं!

-अच्छा-अच्छा! क्या है इनमें? मैंने तो किसी को कुछ लाने के लिए नहीं कहा था!

-सरजी! सरजी! इसमें (अपन दुनू हाथक थापड़ जकाँ देखबैत, प्रायः संकेत सँ पाँच-पाँच दस-दस केर) इतना अभी है। और जो हुकुम होगा, कल-परसू फिन आ जायेगा- साहब बोले हैं...।

-ऐ। चलो, ये उठाओ और यहाँ से भागो! चलो, भागो!...

से एतबा कहैत साहेब कोठलीक दोसर कोनमे टेबुल पर राखल फोन दिस डेग बढ़ौलनि किन्तु ततबेमे एकटा तेसरो प्रवेश केलक कोठलीमे।

-सर, सर! सुनिये न! फोन-ओन किसको कीजिएगा? इतना जो दिन-रात खटते हैं सो का मिलना है? ई नोकरी से आजकल गुजारा चलना है का?

ओ तेसर आगन्तुक समुझाबैत जकाँ कहलकनि।

-सुनिए-सुनिए! नौकरी हम करते हैं, क्या मिलता है, कितना

मिलता है- उससे आपको क्या मतलब? चलिए, आइए, ये सब लीजिए और चलते बनिए यहाँ से! हमारा गुजारा कैसे चलेगा, वो मुझे सोचना है न, आप उसमें टाङ मत अड़ाइए!

-सर-सर! बाल है, बच्चा है! परिवार का राजी-खुशी सब्बे चाहता है सर! इसलिए घर आइल लछमी का अपमान तो नहीं न होना चाहिए सर!

-सुनो-सुनो बाबू! कितनी उमर है तुम्हारी? और वजन कितना है?

-सर! 58 बरिस हो चला है! आउ ओजन तो.. 80 किलो तक...!

-और बाल-बच्चे कितने हैं?

-सर, पाँच हैं! तीनठो बेटी और दो ठो लड़का है! काहे सर! ई सब काहे पूछते हैं?

-देखो तुमको वेतन मिलता होगा पाँच-दस हजार। और फैमिली होगा, माता-पिता होंगे, तो नौ आदमी, है कि नहीं?

-जी सर! सो तो है!

ओ तीनू मुह ताकऽ लागल साहेबक।

-हाँ, तो तुमको चोरी-डकैती करना पड़ेगा, हो सकता है। और तुम जब ये सब बेइमानी-शैतानी करोगे तो बाल-बच्चे तुमसे भी बड़े शैतान-गुण्डे -मवाली होंगे। समझे? तुम्हें नमक-रोटी के साथ दारू-मुरगा भी चाहिए। तुम्हारा वजन यही हराम का खा-खा कर 80 किलो हुआ है! और बी.पी.- सूगर भी बढ़ा होगा, जाँच कराया है?

-नहीं सर! एकबार चक्कर आ गया था, तो डाक्टर बोला था ऊ दोनों जाँच कराने, नहीं करा पायें!

-बस-बस! यही समझने की बात है! मैं खुद भी स्वस्थ हूँ और बाल-बच्चों को भी तन और मन से स्वस्थ रखना चाहता हूँ। सभी परिश्रमी हैं। मन लगाकर पढ़ते-लिखते हैं। घर में न नाजायज आमद, न फालतू खर्च! न चोरी-डकैती का कोई डर! और ये मूँछबाला जो पेस्तौल लटकाके घूमता है न, कहीं सिपाही-हवलदार से रिटायर हुआ होगा और कम्पनी के जी.एम. का बॉडीगार्ड है! है न जी? तुम्हारा नाम रामेश्वर सिंह और घर बिहटा है न?

पेस्तौलवला अपन नाम-गाम सुनिते मूड़ी झुकौने तत्काले कोठलीसँ बाहर भऽ गेल। ओकर घाड़ ओतेक नै झुकल रहैक, जतेक टेरल-टेरल कड़ल-कड़ल मोंछ।

-हाँ तो अब आपलोग भी ये माल-असबाब उठाइए और जाकर अपने बॉस को बोल दीजिए कि यह पण्डित दो क्या, बीस ब्रीफकेस में भी बिकाउ नहीं है। और यह भी बोलिएगा कि अभी कम से कम डेढ़ दसक तक मृत्यु-योग नहीं है हमारा!

दृढ़ स्वरेँ एतबा कहैत, ओकरा सभकेँ बाहर बरंदा परहक सीढ़ी धरि अरिआइत देलखिन। ओ दुनू बरंदा सँ उतरि एकबेर पाछाँ घूमि हिनका भरि आँखि देखलक, कल जोड़ैत आ माफी मँगैत फाटक लगक इस्टाट भेल गाड़ी मे जा घोंसिआएल-फुर्र!

ई असाधारण हाकिम आर क्यो नहि, हमरा गामक अथवा हमरालोकनिक गौरवशाली ’अयाची-परम्परा’ केर प्रायः आखरी स्तम्भ भवानन्दे जी ओ कृपानन्द ठाकुरेजी छलाह। आ एहि घटनाक अनुगुंज पहिले-पहिल चेतना समितिक एक बैसार मे मैथिल-गौरव भवानन्दे बाबूक मुहेँ (संक्षेपमे) आ पछाति स्वयं ठाकुरेजीक मुहेँ दरभंगा-प्रवास (1989-90 क हमर गृह-प्रवेश, लक्ष्मीसागर कॉलोनी) कालमे सुनने छलहुँ।

तहिया ठाकुरजीक मुहसँ बहराएल ओ (बाल-बच्चाक मादे भविष्यवाणी वला) बात सभ आ आजुक मैथिली साहित्यांगनक ‘कुरुक्षेत्र विजयी गजेन्द्र’ आकि ‘पञ्जी-प्रबन्धक नब व्यवस्थापक गजेन्द्र’ किं वा ‘ई-पत्रिका विदेहक संस्थापक-सम्पादक गजेन्द्र’ अथवा कतेको ‘अवडेरल-अभेलित मैथिलीक साहित्यकारकेँ प्रतिष्ठापित करैत गजेन्द्र’केँ निंघारैत-हियासैत हम साँचे दंग भेल छी! संगहिं कुल-वधू प्रीतिक बिकास-उजास से, भिन्ने तरहक सुख-संतोष प्रदान करैत अछि। यैह थिक बाढ़हि पूत पिताके धर्मे! यैह थिक माता-पिताक श्रेष्ठ गुण-सूत्रक तथा सुलक्षण संस्कारक विलक्षण प्रमाण!

हँ, मुदा कचोटक बात इहो मोन रखबाक छी जे एहि चर्चित गुरु-शिष्यकेँ सामाजिक रूपेँ जेहन मान-सम्मान भेटब वांछित छलनि,

जकर ई लोकनि सभ तरहेँ अधिकारी छलाह; से भेटि नहि सकलनि। देखैत छी, सामान्यों धन्धा-पेशाक लोककेँ अथवा झूठ-साँच भाँजिकए, खादीक बदला हैण्डलूमो चमकाकए, एक-दू बेर विधायक-सांसद वा मंत्री-संत्री भऽ जाइए, सेहो तिकड़म आ जोगाड़क बलेँ पद्म-पुरस्कारक तमगा पाबि लैए। तेहनाठाम गांधी सेतु सन-सन कालजयी कृतिकेँ जमीनपर उतारि देखओनिहार आ सेहो जीवनकेँ दाओ पर लगाकए निर्लिप्त सेवा देनिहार युग-पुरुषक नाम पर दरभंगो-मधुबनी मे एकटा पथ-पार्क-पुल वा चौक-चौराहो पर्यंतक नहि होयब साबित करैछ मैथिलक अकर्मण्यताकेँ!

करौट फेड़ैत अपना गाम, अपन जिला-जवार आ देश-कोसकेँ मजगूत खाम्ह-खम्हेली सँ युक्त कैनिहार कीर्ति-पुरुष-कृपानन्द जीक पुण्य-स्मृतिकेँ शतशः नमन्।

(विदेह पेटारसँ, अंक 386, 15 जनवरी 2024)

पहिल पहर गौरी पूजल...
खण्ड-2: प्रीति ठाकुर

प्रीति ठाकुरक गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

डॉ. शेफालिका वर्मा

प्रत्येक भाषामे किछु एहेन रचनाकार होइत छथि, महिला आकि पुरुष-वर्ग, जे अपन विलक्षण प्रतिभाक कारण सभसँ फराक बुझा पड़ैत छथि। ई दोसर बात थीक कि आलोचक वर्ग महिला लेखनकेँ इतिहासक पन्नाक एकटा कोन दऽ दैत छथि। किछु भाग्यशाली लेखिकाकेँ किछु स्थानो भेटि जाइत छैक, मुदा समग्रतामे नै। लेखनमे महिला पुरुष नै होइत छैक, जइ विषय पर लेखक लिखैत छथि, ओहि पर लेखिका सेहो लिखैत छथि, कखनो बेसी नीक। बस, आब एकेटा प्रतीक्षा अछि जे कोनो सशक्त महिला आलोचककेँ देखी, जे महिला नै भऽ मात्र आलोचक रहथि, पूर्वाग्रहसँ रहित, नीक आलोचनाकेँ जन्म दैत। मैथिली साहित्यक इतिहासमे चारि चान लगाबथि। हम जनैत छी एहेन विद्वान लेखिकाक कमी नै अछि।

प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा गोनू झा पर पोथी देखि चमत्कृत भऽ गेलौं। पहिने तँ हम मैथिलीक नेना भुटका लेल कोमिक्स बुझलौं मुदा पढ़े लगलौं तँ एकरामे डूमि गेलौं। गागर मे सागर। अद्भुत, मैथिली लोकगाथाक विपुल संसारकेँ शिवक जटाजूट जकाँ केना समेटि लेने छथि, ई पढ़ला उपरान्ते बुझा

पड़त। कतेक कथाक खाली नाम सुनने छलौं, ओ सब एहि पोथीमे साकार छल। जहिना आजुक समाज अकबर बीरबलकेँ बिसरि रहल अछि, ओहिना गोनू झाकेँ। प्रस्तुत पोथीक माध्यमसँ पाठक अपन समाजक सब वर्गक आदर्शकेँ चीन्हि सकैत छथि। प्रीति जी केँ अशेष शुभकामना एतेक सुन्दर पोथी लेल। प्रीति जी आ गजेन्द्र जी सँ हम एकटा आग्रह करबैक जे कोसी नदी लेल बड खिस्सा कथा समाजमे पसरल छैक, ओकरो चित्रकलामे समेटि लैथि। कोसी नदीक रहस्यमय चरित्र, सिंघेश्वर बाबासँ विवाह आदि, आदि खिस्सा सब... जहिना समाजक प्रत्येक क्षेत्रमे नारी आइ निरंतर आगू बढ़ि रहल छथि, ओहिना मैथिली मिथिलाक विकासमे आजुक नारी अपन अपन स्तरसँ अमूल्य योगदान दऽ रहल छथि। अशेष साधुवाद, प्रीति जी। असंख्य शुभाशंसा।

(विदेह पेटारसँ, विदेह मैथिली शिशु उत्सव, विदेह सदेह-9)

गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

प्रो. वीणा ठाकुर

प्रीति ठाकुर रचित “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा” (2008) पढ़बाक आ देखबाक सुयोग भेल। देखबाक ऐ लेल जे ई पोथी चित्रकथा थिक अर्थात चित्रक माध्यमे संकलित सोलह कथाक चित्रण लेखिका कएने छथि। सोलह कथामे नौ कथाक नायक छथि गोनू झा आ शेषमे रेशमा चूहड़मल, नैका-बनिजारा, भगता ज्योति पँजियार, महुआ घटवारिन, राजा सलहेस, छेछन महराज आ कालिदास। सभ पात्र मिथिलाक संस्कृतिक प्रतिनिधित्व करैत।

वस्तुतः संस्कृति शब्द अत्यन्त व्यापक अछि, दोसर शब्दमे कहल जा सकैत अछि जे एहन व्यवहार जे परम्परासँ प्राप्त होइत अछि, संस्कृति कहबैत अछि। एकरा सामाजिक प्रथाक पर्याय सेहो कहल जा सकैत अछि। प्रेम, त्याग, दया, करुणा, सहानुभूति आदि समस्त गुण संस्कृतिक अन्तर्गत समाहित होइत अछि। संगहि कलाक उद्देश्य जौँ सौन्दर्यक अनुसंधान एवं रसानुभूति होइत अछि तँ कलाक संबंध लोक संस्कृतिसँ रहब आवश्यक भऽ जाइत अछि। गोनू झाक कथा मिथिलाक घर-घरमे जनकण्ठमे व्याप्त अछि प्रायः प्रत्येक मिथिला निवासी अपन

बुजुर्गसँ गोनू झाक कथा सुनने होएत आ पश्चात अपन बाल-बच्चा संगी-साथीकेँ सुनौने होएत। तहिना नैका बनिजारा, सलहेस, छेछन महराज, भगता ज्योति पँजियार अपन शौर्य, वीरता, पराक्रम आ उदात्त व्यक्तित्वक कारणेँ कहियो जौँ लोकनायक छलाह तँ पाछाँ लोकदेवता रूपमे पूजित होमए लगलाह। तहिना कालिदास अपना विद्वता एवं पाण्डित्यसँ भारतीय संस्कृतिमे अपन महत्वपूर्ण स्थान निर्धारित कऽ लेने छथि। महुआ घटवारिनक आदर्श प्रेम कथा एहुठाँ आदर्श रूपमे चित्रित होइत अमर भऽ गेल अछि। पोथीमे संकलित प्रत्येक पात्र एवं कथा मिथिलाक संस्कृतिक प्रतिनिधित्व कऽ रहल अछि।

संस्कृति लोक जीवनसँ सम्बद्ध रहैत अछि। समाज आ संस्कृतिमे अभिन्न सम्बन्ध अछि किएक तँ संस्कृतिक निर्माण काल सापेक्ष होइत अछि, जेना समाजमे नीक कृत्यक अनुकरण होइत अछि। किछु अवधि पश्चात ओ समाजक प्रकृति भऽ जाइत अछि। कालान्तरमे ईएह प्रकृति संस्कृतिक रूप धारण कऽ लैत अछि। एवं प्रकारे कृति, प्रकृति आ संस्कृतिक क्रम चलैत रहैत अछि। ईएह कारण अछि जे संस्कृतिक निर्माण आ विनाशमे समय लगैत अछि जखनकि सभ्यतामे परिवर्तन कम समयमे होइत अछि। पोथीमे संकलित प्रत्येक पात्र अपन-अपन समयक प्रतिनिधित्व करैत मिथिलाक संस्कृतिक प्रतीक छथि। कलाकार, लेखिका प्रीति ठाकुरजी रेखा आ रंगक माध्यमसँ चित्रकथाक

रचना कएने छथि। प्रत्येक चित्र किछु संकेतकेँ प्रकट कऽ रहल अछि। अकारण वा अनायास किछु नै बनाओल जा सकैत अछि। प्रत्येक चित्र तथ्यात्मक अछि, प्रत्येक रेखा एकटा कथाक निर्माण कऽ रहल अछि। मिथिलाक जन-जीवनक अभिव्यक्ति ऐ चित्र कथाक माध्यमसँ भेल अछि। वस्तुतः लोक चित्र कला तत्कालीन लोक जीवनक चित्रण करैत अछि जेना लोकगीत, लोकनृत्य, लोकभाषा आदिमाध्यमसँ तत्कालीन समाजक स्वरूपक ज्ञान होइत अछि।

फूलक सुगंध सदृश संस्कृति अलक्ष्य होइत अछि मुदा वातावरणकेँ अपन सौरभसँ सतत सुवासित करैत रहैत अछि। ई आन्तरिक गुण थिक जकर मात्र अनुभव कएल जा सकैत अछि। एकर स्थान हृदयमे रहैत अछि, बाह्य आचरण ओकर मात्र प्रतिफल थिक। ऐ संस्कृतिक अभिव्यक्तिक माध्यम कला होइत अछि जेना नृत्य कला, संगीत कला, चित्रकला। चित्रकला मूक होइत अछि जकर भाषा रंग आ रेखा चित्र होइत अछि। कलाकार प्रीति ठाकुरजी मिथिलाक ऐ संस्कृतिकेँ नै मात्र रंग रेखाक माध्यमसँ चित्रित कएने छथि अपितु शब्दक माध्यमसँ चित्रित करैत अपन कलाकृतिक सौन्दर्य द्विगुणित कऽ लेने छथि। वस्तुतः हिनक ई प्रयास सर्वथा प्रशंसनीय छन्हि।

कला मानव संस्कृतिक उपज थिक, कला आ मनुष्यक सम्बन्ध अविभाज्य अछि। मानव द्वारा कलाक प्रतिष्ठा भेल अछि आ कला द्वारा मानव आत्मगौरव आ आत्मचैतन्य प्राप्त कएने अछि। कलाक माध्यमे सँ मानव जीवनमे माधुर्य आ सौन्दर्यशीलताक जन्म भेल आ कर्म मधुर आ सुन्दर बनि गेल। वस्तुतः सौन्दर्यक मूलभूत प्रेरणा कलाक उद्गम स्थल थिक आ सौन्दर्याभिरुचिक प्रमाण। मनुष्यक अनुकरण प्रवृत्ति थिक। आदियेकालसँ प्राकृतिक दृश्य मानव मोनकेँ आनन्दित करैत रहल आ ऐ दृश्यक निर्माण करबाक इच्छा मोनमे जागृत भेल आ ईएह इच्छा जन्मक प्रेरक भेल। प्रीति ठाकुर जीक आत्मगौरव एवं आत्मचैतन्य ऐ चित्र कथाक रचना लेल प्रेरक भेलनि, आत्मगौरव मिथिलाक संस्कृतिक प्रति एवं आत्मचैतन्य सौन्दर्यशीलताक कारणेँ आ जकर प्रतिफल भेल विभिन्न कालक मिथिलाक लोकनायकक चित्रकथाक माध्यमसँ निरूपण करबाक।

प्रिन्ट मीडिया आ इलेक्ट्रानिक मीडियाक कारणेँ जखन सम्पूर्ण विश्वक ग्लोबलाइजेशन भऽ गेल अछि, मिथिलाक चित्रकलामे अन्य कलाक विधा सदृश सेहो पारम्परिक स्वरूपमे परिवर्तन भेल अछि। परिवर्तनेक दोसर नाम तँ विकास थिक। लेखिका मिथिला चित्रकलाक पारम्परिक स्वरूपमे परिवर्तन तँ कएने छथि मुदा लोक चित्रकथाक माध्यमसँ एकर सार्थकता आ प्रासंगिकतामे सफल भेल छथि। किएक तँ मिथिलाक चित्रकला मूल्यग्राही

अथवा कोमल हृदय कलाकारक मात्र हॉबी थिक अपितु परम्पराबद्ध समाजक एकटा अभिन्न जीवन-दर्शन थिक, संगहि मैथिल संस्कृतिक जीवनक एक अविच्छिन्न अंग सेहो।

समाजक परिवर्तनक प्रभाव कला आ साहित्यपर पड़ब स्वाभाविक अछि संगहि कला आ साहित्य समाजक प्रतिबिम्ब सेहो थिक। वस्तुतः साहित्य युगक प्रवृत्ति एवं प्रयोजनक उपेक्षा नै कऽ सकैत अछि। कला जीवनसँ निरपेक्ष नै रहि सकैत अछि कारण एकर आधार मानव जीवन थिक। एकर पोषण जीवनसँ होइत छैक, एकर प्रभाव मानव जीवनपर पड़ैत छैक, तेँ कलाकार जीवनक प्रति अपन उत्तरदायित्वक उपेक्षा नै कऽ सकैत अछि। आ इएह कारण अछि जे कलाक स्वरूपमे परिवर्तन होइत रहैत अछि। ऐ वैश्विक प्रतियोगिताक युगमे मिथिलाक चित्रकला मात्र कोहबर, डाला, अष्टदल, अरिपन, मंडप, वेदी आदिक चित्र निर्माणक परिधिमे ओझरायल अछि, आवश्यक अछि जे मिथिला चित्रकलाक विषयवस्तुमे विस्तार कएल जाए। लेखिकाक ई सर्वथा नूतन प्रयास छन्हि। प्रीति ठाकुरजी परम्परागत विषय वस्तुसँ आगाँ बढ़ि मिथिलाक लोककथाकेँ चित्रकथाक माध्यमे चित्रित करैत मैथिली साहित्य मध्य सर्वथा नूतन शैलीक रचना कएलनि अछि। निश्चित रूपसँ मैथिली साहित्यक भंडारमे श्रीवृद्धि तँ भेल अछिये, ई नव शैली, नव विषय वस्तु एक शब्दमे नव

स्टाइल सर्वथा प्रशंसनीय अछि।
समय परिवर्तनशील होइत अछि, ऐ बदलैत समयक संग जे अपनामे परिवर्तन नै आनैत अछि से विकासक धारासँ बाहर भऽ जाइत अछि। तेँ समयक यथार्थक चित्रण कलाक माध्यमसँ होएब आवश्यक अछि, तखने कला अपन प्रासंगिकता सिद्ध कऽ सकैत अछि। वर्तमान बदलैत आधुनिक समाजक आवश्यकताक अनुरूप लेखिका ऐ पोथीक रचना कएलनि, ई प्रासंगिक तँ अछिये संगहि लोकोपयोगी सेहो अछि।

संगहि एकटा तथ्य आर महत्वपूर्ण अछि। मैथिली लोक साहित्यक संरक्षिका मिथिलाक महिला लोकनि छथि, किएक तँ हिनकहि कण्ठमे लोकगीत आ लोकनृत्य आ हिनकहिं हाथे लोकचित्रकला जीवित अछि। त्याग आ तपस्यासँ युक्त हिनका लोकनिक सांस्कृतिक चेतनासँ लोककला जीवित अछि तथा हिनकहि लोकनिक कोमल तूलिकाक प्रसादात मिथिलाक चित्रकला जीवित, संरक्षित एवं विकसित भऽ रहल अछि।
आ ई पोथी “गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा”क रचयिता सेहो महिला छथि। ई सर्वथा स्तुत्य थिक।

(विदेह पेटारसँ, अंक 74, 15 जनवरी 2011)

‘गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’ आ ‘मैथिली चित्रकथा’

डॉ. रमण झा

श्रीमती प्रीति ठाकुरक दू गोट सचित्र कथा संग्रह ’गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा’ आ ’मैथिली चित्रकथा’ देखलहुँ आ पढ़लहुँ। चित्रक माध्यमे कथाक प्रस्तुति एकटा अभिनव प्रयोग थिक जे लोककेँ, विशेषतः बच्चा सभकेँ अपना दिस आकृष्ट करत।

खिस्सा पिहानी कहबाक आ सुनबाक परंपरा मिथिलामे अदौसँ चल आबि रहल अछि। बूढ़ पुरान स्त्रीगण लोकनि छोट-छोट बच्चा सभकेँ सुतयबाक काल नाना प्रकारक खिस्सा सभ सुनबैत छथि जे मनोरंजनक संग संग उपदेशप्रद एवं शिक्षाप्रद सेहो रहैत अछि। ओहि खिस्सा सभमे प्रसिद्ध अछि-दैत्य सभक खिस्सा, राज कुमार सभक खिस्सा, रामायण महाभारतक खिस्सा, गोनू झाक खिस्सा प्रभृति। उच्च विद्यालय एवं महाविद्यालयमे प्रवेश कयलाक बाद छात्र-छात्रा लोकनि स्वयं कथा पढ़ैत छथि, बुझैत छथि, ओकर रसास्वादन करैत छथि आ समयपर लोककेँ सेहो सुनबैत छथि।

मैथिलीक संग विडम्बना ई अछि जे महाविद्यालय एवं

विश्वविद्यालय स्तरपर लोक विषयक रूपमे मैथिली रखितो अछि, पढ़ितो अछि किन्तु विद्यालय स्तरपर सरकारी घोषणाक बादो लोक ने मैथिली विषयक रूपमे रखैत अछि आ ने मैथिली माध्यमे कोनो आने विषय पढ़ैत अछि। एतेक धरि जे मिथिलांचलक विद्यालय सभमे गुरुओजी लोकनि मैथिलीमे पढ़यबामे हीनताक बोध करैत छथि। नवयुवक लोकनि विवाह होइतहि पत्नीक संग हिन्दी झाड़य लगैत छथि। कनेक पढ़ल लिखल आ पदवीवला लोक सभकेँ देखबनि जे अपनामे जँ मैथिलीयोमे गप्प करताह तँ बच्चा सभसँ निश्चय रूपसँ हिन्दीमे। हुनका सभकेँ ई नहि बुझाइत छनि जे मैथिली भाषा कठिन छैक। एकर समुचित ज्ञान जँ बच्चामे नहि होयतैक तऽ बादमे होयब कठिन छैक। कवीश्वर चन्दा झा अमैथिलीभाषी (अन्यदेशीयक)क हेतु मैथिली भाषा ओहने कठिन कहलनि अछि जेहन एकटा इचना माछक बच्चाक हेतु समुद्रक सभटा जलकेँ पीयब छैक-

भाषा यदन्यदेशीयोः मिथिलायाः भवेत्तदा।
पीतमिंचाकपोतेन समस्तं वारिधेर्जलम्।।

जतय धरि हिन्दीक प्रश्न अछि तऽ ओ तऽ राष्ट्रभाषा थिक। अनिवार्य विषय थिक। ओकर ज्ञान तऽ स्वतः प्रत्येक व्यक्तिकेँ होयतैक आ रहिते छैक। एहन स्थितिमे श्रीमती प्रीति ठाकुरक उपर्युक्त विवेच्य पोथी देखि हमर मन गदगद भए गेल। गोनू झा

आ आन मैथिली चित्रकथामे कुल 16 गोट कथा अछि जाहिमे गोनू झासँ सम्बद्ध नओ गोट कथा, महाकवि कालिदाससँ सम्बद्ध एक गोट आ शेष छओटामे राजा सलहेस, नैका बनिजारा इत्यादि प्रमुख चर्चित कथा सभ काल्पनिक चित्रक माध्यमे चित्रित कयल गेल अछि। एहि सभ कथामे किछु बात तऽ शब्दक माध्यमे अभिव्यक्त कयल गेल अछि आ किछु गप्प चित्र स्वयं कहैत अछि। एहि कथा सभक प्रसंग जे लोकक मनमे एकटा भावचित्र छल होयतैक से एतय बुझि पड़ैत अछि जेना साकार भए उठल हो।

विदुषी कथा लेखिकाक दोसर संग्रह थिक मैथिली चित्रकथा जाहिमे कुल 10 गोट प्रमुख कथा सभ वर्णित अछि। एहि कथा सभक बीच बीचमे काल्पनिक चित्र सभक समायोजन कथाक यथार्थताकेँ प्रमाणित करैत अछि। एहि संग्रहमे संग्रहित महत्वपूर्ण कथा सभ थिक -राजा सलहेस, बोधि कायस्थ, दीना भदरी, नैका बनिजारा, विद्यापतिक आयु अवसान प्रभृति।
हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे उपर्युक्त दुनू कथा संग्रह बच्चा सभकेँ तऽ आकृष्ट करबे करत अपितु समाजक सभ वर्गक लोककेँ एक बेरि एकरा उलटयबाक लिप्सा होयबे करतैक। एहि दिशामे श्रीमती ठाकुरक स्तुत्य प्रयास अछि, साहसिक डेग अछि आ अभिनव प्रयोग अछि। हमर शुभकामना अछि जे कथा लेखिका

एहने सरस, सहज आ सजल रचना सभसँ मैथिली साहित्यक भण्डारकेँ सुरभित करैत रहथि।

(विदेह पेटारसँ, विदेह मैथिली शिशु उत्सव, विदेह सदेह-9)

संपादकीय टिप्पणी- विदेहमे प्रकाशित भेलाक बाद ई लेख डॉ. रमण झा अपन पोथी 'पारिजात मञ्जरी' मे सेहो संकलित केलाह।

गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा

शिव कुमार झा 'टिल्लू'

किछु अर्थमे सन् 2008-09कें मैथिली साहित्यक विकासक लेल क्रांतिकाल मानल जा सकैत अछि। सन् 2008 मे मैथिली साहित्यमे एक गोट बाल साहित्यक रचना मैथिलीक प्रवीण समीक्षक श्री तारानंद वियोगी जी कएलनि पोथिक नाओ- ई भेटल तँ की भेटल। साहित्य अकादमी द्वारा नव सृजित बाल साहित्य पुरस्कारसँ एहि पोथीकें पुरस्कृत कएल गेल अछि। जौं किछु बर्ख पूर्वमे साहित्य अकादमी एहि पुरस्कारकें स्थापित करितए तँ भऽ सकैत छल जे मैथिलीक स्थान रिक्त रहितए किएक तँ कोनो-कोनो वर्षमे मैथिली साहित्यमे बाल साहित्यक रचना भेले नहि छल। सन 2009 मे मैथिलीमे कोनो महिला रचनाकार द्वारा पहिल नाटक लिखल गेल। रचनाकार छथि मैथिलीक प्रसिद्ध साहित्यकार श्रीमती विभा रानी आ नाटकक नाओ- भाग रौ आ बलचन्दा। हर्खक गप्प जे एहि नाटकमे बाल आ नारी मनोविज्ञानकें बिम्बित कएल गेल अछि। ओना तँ श्रीमती इलारानी सिंह सेहो नाटक लिखने छथि मुदा ओ सृजनात्मक नहि भऽ कऽ अनुदित अछि। तँए श्रीमती विभारानीकें मैथिली साहित्यक पहिल महिला नाटककार मानल जा सकैत अछि। ओना श्रीमती उषा किरण खान लिखित

भुसकौल वाला पहिने छपल। क्रांतिक दीप कोनो योजना बना कऽ नहि जाराओल सकैत अछि। एकर प्रत्यक्ष प्रमाण मैथिलीमे पहिल चित्रकथा- गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा (2008) प्रस्तुत करैत अछि। हम एहिसँ पूर्व एहि विषयक पोथी मैथिलीमे नहि देखने छलहुँ। एहि चित्रकथाक सृजन श्रीमती प्रीति ठाकुर कएलनि। प्रीति जीक नाओ एहि चित्रकथाक लेखनसँ पूर्व कोनो साहित्य वा चित्रांकनमे झाँपल जकाँ छल। पहिलुक रचना आ ओहो मैथिली साहित्यक लेल आदि विषय मूलक। भारतीय संविधानक आठम अनुसूचीमे रहितहुँ हम सभ कतहु-कतहु गुम्म छलहुँ। प्रवर भाषा समूहक भाषा मैथिलीमे किछु रचनाक वर्ग अछूत छल। आश्चर्य लागल संगे विस्मित भेलहुँ जे हमरा समाजक एकटा महिला एहि नवल विषयपर कोना केन्द्रित भऽ गेली?

एहि चित्रकथामे सम्पूर्ण मिथिलाक संस्कृतिकेँ बिम्बित करैत जनश्रुति आ ऐतिहासिक कथाक 16 गोट खंडपर चित्रकथा प्रस्तुत कएल गेल। पहिल नौ गोट कथा गोनू झाक करनीपर लिखल गेल अछि। गोनू झा कोनो अनचिन्हार नाओ नहि। मुगल दरबारमे जे स्थान वीरबलकेँ भेटल अछि मिथिलाक बाक-पटुमे ओ स्थान गोनू झाकेँ देल गेल। गोनू विदूषक छलाह मुदा ककरो महिमामंडित मात्र करए बला विदूषक नहि। अपन बुद्धि आ चातुर्यसँ ककरो विस्मित करबाक कारणेँ हिनक कोनो जोड़ नहि।

दुर्भाग्य जे गोनू मैथिल छलाह जौं अंग्रेज वा कोनो आन पाश्चात्य देशक रहितथि तँ वीरबलसँ हिनक तुलना नहि भऽ कऽ वीरबलक तुलना हिनकासँ कएल जाइत। हिनक ई दुर्भाग्य हमरा सबहक लेल सौभाग्य भेल जे एहि मिथिलाक भूमिपर महाकवि विद्यापति, गोनू आ राजा सलहेस सन महामानवसँ हमरा सभकेँ आन लोक जनैत अछि।

एहि पोथीमे संकलित पहिल चित्रकथा गोनूझा आ माँ दुर्गाजीसँ गोनू झाक बौद्धिक साक्षात्कारक चर्च कएल गेल अछि। एहि कथाकेँ तँ ऐतिहासिक मान्यता नहि देल जा सकैत अछि किएक तँ इतिहास आ विज्ञानमे भगवान मात्र प्रकृतिस्थ होइत छथि, कोनो वैधानिक नहि। मुदा जौं भावक शतदलक संग देखल जाए तँ नेना-भुटका लेल ई प्रश्नसँ भरल कथा जिज्ञासा अवश्य उत्पन्न कराएत जाहिसँ अंतत: मैथिली साहित्य आ भाखाक लेल लाभ स्वाभाविक मानल जा सकैछ। चित्रक स्तर तँ नीक, रंग-नीक प्रदर्शन नीक मुदा सिंहक चित्र बिलाड़ि जकाँ लागल। कोनो राजदरबार हुअए वा कोनो पितृ आ देव कर्मक स्थल, ब्राह्मणक संग-संग ठाकुर अर्थात हजामक भूमिका आन लोकसँ बेसी मानल जाइत अिछ। “गोनू झा आ स्वर्गकथा”मे एकटा ठाकुर गोनूकेँ पछाड़ए चाहैत छथि मुदा स्वयं चित्त। छोट चित्रकथामे नीक चुटुक्का जकाँ प्रस्तुति। गोनू झासँ संबंधित आन सात गोट

कथा सेहो चोहटगर देल गेल अछि। जनश्रुतिक आधारपर लिखल गेल कथा सभ मात्र बालमनोविज्ञानक सेहंतित छायाचित्र प्रस्तुत करैत अछि किएक तँ लिखलो मात्र नेना भुटकाक लेल गेल अछि।

रेशमा चूहड़मल कथा ऐतिहासिक कथा थिक। भऽ सकैत अछि आर्यावर्त्तक इतिहासकार एकरा मान्यता नहि देथु मुदा मिथिलाक गाम-गाममे चर्चित अछि।दूधवंशी जातिसँ यदुवंशक तादात्म्य होइत छैक मुदा एहि साहित्यक चूहड़मल दुग्धवंशी दुसाध छथि आ नायिका रेशमा भूमिहार ब्राह्मण। नीक लागल जे मोकामाघाटक कथाक सृजन करबामे पूर्णियाक वणिता आ मधुबनीक पुत्रवधूकेँ कोनो संकोच नहि भेलनि। सिनेहकेँ समाजक जातीय व्यवस्थामे पददलित करबाक दृष्टिकोणकेँ एहि चित्रकथामे तोड़ल गेल अछि। नैका बनिजारा कथापर मणिपद्म जीक लेखनी मैथिलीमे सन् 1973 मे फुजि गेल अछि तँए एहि कथासँ लोकजन सभ निश्चित परिचित छथि। प्रवेशिका स्तरपर मणिपद्म जीक ई कथा मैथिलीमे देल गेल छल। एहि पोथीमे सरल भाषा आ बालोनुरागी चित्रांकन नीक लगैत अछि। भगता ज्योति पजियारक चित्रांकन सेहो नीक रूपेँ बिम्बित कएल गेल अछि। प्राचीन जनश्रुतिक लुप्त कथा महुआ घटवारिन आ छेछन महाराज पढ़ि आ एकर चित्रांकन देखि नवका पिरहीक नेना भुटका सभ निश्चित रूपसँ मिथिलाक संस्कृतिक कोखिमे प्रवेश

करबाक प्रयास करतथि। राजा सलहेस सन चराचर चर्चित विषय वस्तुक छायांकन आ कालिदासकेँ मिथिलाक संस्कारसँ संबंधक प्रदर्शन मनोवांछित लागल।

निष्कर्षत: प्रीति जीक नव प्रयास नवल सोच आ बहुआयामी विषय वस्तुक प्रस्तुति सराहनीय अछि। मैथिली साहित्यमे नव प्रकारक रचना थिक गोनू आ आन चित्रकथा तँए सम्यक समीक्षा करब हम उचित बुझैत छी।

(विदेह पेटारसँ, अंक 74, 15 जनवरी 2011)

प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर एक नजरि

धीरेन्द्र कुमार

मैथिली साहित्यमे पहिल बेर प्रकाशित चित्रकथा उमेश जीक माध्यमसँ भेटल। साहित्य पूर्ण तखने होइत अछि जखन साहित्य सभ विधामे लिखल जाए आ रचना प्रौढ़ होइ। हमर दृष्टिमे चित्रकथामे प्रीति ठाकुरक रचना गोनू झा आन मैथिली चित्रकथा आ मैथिली लोककथा सफल रचना थीक।

लेखिका धन्यवादक पात्र छथि, एहि कारणे जे मैथिली दिसि हुनक दृष्टि गेलनि। दोसर कारण ई जे मैथिलीक विरासतमे जे कथा लोकमुखमे सुरक्षित अछि तकरा ओ लेखनीक रूप प्रदान कऽ मैथिलीक चित्रकथा विधा जे नगण्य सन अछि- ताहिकेँ समृद्ध करक प्रयास केलनि अछि।

गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथामे प्रकाशित अछि- गोनू झा आ माँ दुर्गा, गोनू आ स्वर्ग, गोनू आ स्वर्ण चोर, गोनू झा आ बिलाड़ि, गोनू झाक दूटा बरद, गोनू झाक महीस, गोनू झाक अशर्फी, गोनू झा आ कर अधिकारीक दाढ़ी, गोनू झाक माए, रेशमा चूहड़मल, नैका बनिजारा, भगता ज्योति पजियार, महुआ घटबारिन, राजा सलहेस, छेछन महराज, राजा सलहेस आ कालिदास आ मैथिली चित्रकथामे अछि मोती दाइ, राजा

सजहेस, बोधि-कायस्थ, बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल, अमता घरेन, दीना भदरी, जालिम सिंह, नैका बनिजारा, रघुनी मरड़, विद्यापतिक आयु अवसान।

सभटा कथा मिथिलाक धरतीसँ सम्बद्ध अछि आ एखन धरि लोक मुखमे सुरक्षित अछि। समैएक परिवर्तन संगे लोक रूचि आ लोक संस्कारमे परिवर्त्तन सेहो होइत अछि। अपन देशक गप्प लिअ। आइ पोथीमे सुरक्षित अछि आयुर्वेद विद्या, यूनानी विद्या, होमयोपैथी आ कतेक रास ज्ञानसँ समर्पित विद्या। जँ पोथीमे सुरक्षित नहि रहत तखन अगिला पीढ़ी एहि विद्यासँ अनभिज्ञ रहि जाएत। तेँ हमर मिथिलामे जे कथा पसरल अछि ओकरा पोथी स्वरूपमे प्रदान कऽ प्रीति ठाकुर जी प्रशंसनीय काज केलनि अछि। वीरबलक कथा भऽ सकै छल जे लोक बिसरि जाइत मुदा पोथी स्वरूपमे रहलासँ आइ धरि ओ लोक-मानसक रंजनक माध्यम बनल अछि।
चित्रकथाक अपन महत्व होइत अछि। बाह्य-संप्रेषणसँ जे प्रभाव वंचित रहि जाइत अछि ओ संप्रेषित होइत अछि चित्रसँ। नाटकमे अभिनयसँ जे संप्रेषित नहि होइत अछि ओ संप्रेषित अछि रंग, ध्वनि आ प्रकाशसँ तहिना चित्रकथामे सेहो होइत अछि। प्रस्तुत आलोच्य पोथीक चित्र सुसंस्कृत अछि।

बाल साहित्य लेल ई काज प्रीति जीक सराहनीय छन्हि। चारि बर्खक नेना जेकरा अक्षर बोध नहियो छै सेहो कथाकेँ परेख सकैए, चित्रक माध्यमसँ। बाल साहित्यक जे अभाव अपना मैथिलीमे अछि ताहिपर बड़का-बड़का विद्वानक अछैत थोड़ेकबो ध्यान नहि देल गेल छल आ खास कऽ एहि तरहक। पोथी आकर्षक, रूचिकर आ बालमनकेँ प्रभावित करैत अछि। एहि लेल हम फेर एक बेर श्रीमती प्रीति ठाकुरकेँ धन्यवाद दैत छियनि। संगे आशा करब जे आगाँ सेहो एहि तरहक काज करथि।

(विदेह पेटारसँ, अंक 74, 15 जनवरी 2011)

नेना लेल सुन्दर चित्रकथा

दुर्गानन्द मण्डल

श्रीमती प्रीति ठाकुरक दू गोट चित्रकथा (पहिल गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा, दोसर मैथिली चित्रकथा) मैथिली साहित्यमे पहिल बेर श्रुति प्रकाशन नई दिल्लीसँ प्रकाशित भेल। लागल जे आब हम मैथिल दरिद्र नै सभ कथुसँ सम्पन्न भऽ रहल छी। साहित्यक तँ अनेको विधा होइ अछि जइमे कथा एक विधा थिक तहूमे चित्रकथा तँ बाल साहित्य लेल प्रमुख। चित्रकथाक माध्यमसँ अपन भूलल-बिसरल संस्कृतिक झलक सेहो भेटैत अछि। निश्चित रूपे मैथिली साहित्यमे एकर अभाव बहुत दिनसँ खटैक रहल छल। जेकरा श्रीमती प्रीति ठाकुर अपन चित्र कथा मैथिल समाजक बीच राखि एकटा असीम प्रतिभाक परिचय देलनि अछि।

बुझना जाइ छल जेना हम अपनेकेँ स्वयं बिसरि गेल छी। बिसरि गेल रही ओइ समैकेँ जइ समैमे मैयाँ अपन पोता-पोती लऽ जा कऽ घूड़ लग बैसि गोनू झाक खिस्सा सुनबैत छलीह जे अति मनोरंजक आ गोनूक तीव्र बुधिक परिचायक छल। तहिना आनो आनो कथा जेकरा प्रीति जी चित्रवत् कऽ हमरा लोकनिक सोझामे रखलीह। जइमे रेशमा-चूहरमल, नैका बनिजारा, ज्योति

पंजियार, महुआ घटवारिन, राजा सलहेस, छेछन महराज आ कालिदास छथि। जे कहियो आम छल, आब लुप्त प्राय: भेल जा रहल छल, ओकरा एकबेर पुन: परिचित करौलनि। जइमे लोक जनलक जे रेशमा के आ चूहड़मल के?

एतबे नै, प्रेमक पराकाष्ठाक परिचयक रूपमे जे लोकक ठोरपर हीर-रांझा वा लैला-मजनू रहैत छल, की ओकरासँ कम निस्वार्थ प्रेम रेशमा आ चूहड़मलक छल ई देखेबामे साकांक्ष रहलीह। जतए चुहड़मल दुधवंशी दुसाध जातिक तँ दोसर तरफ रेशमा भुमिहार ब्राह्मण जातिक बेटी। जखन जुहड़मलकेँ दंगल जीत कऽ अबैत देखलक तँ दुनूक भेँट गंगाक तटपर, ओतहि प्रेमकथाक प्रारम्भ भेल। अर्थात् प्रेममे जाति-पातिसँ कोनो लेन-देन नै अपितु प्रेम तँ प्रेम थिक। प्रेम कएल नै जाइ छै अपने भऽ जाइ छै। तहिना नैका बनिजारा सेहो प्रेमेक पराकाष्ठाक परिचायक छी। भगता ज्योति पंजियार अपन वीरता आ पराक्रमक कारणे पूजित भेल। आइ जँ धर्मराजक पूजा तँ ज्योति पंजियार सेहो पूजित छथि। धर्मराजक भक्त ज्योति पंजियार बारह बर्खक तपस्याक बाद कंचन काया लऽ कऽ घूमि घर एलाह। माइक कोखि पवित्र भेल। जे एहेन पैघ भगता ओकरा कोखिसँ जनमल।

तहिना महुआ घटवारिन सेहो अपन इज्जत बचाबए खातिर कौशिकी धारमे जान गमा अपन सतीत्वकेँ अकिंचन बना कऽ

रखलीह। राज सलहेसक कथा तँ नाचो रूपमे प्रसिद्ध अछि। जेकरा प्रीतिजी चित्रवत कऽ इतिहास बना देलनि। एकटा धरोहरक रूप दऽ देलथि। अनचिन्हार जकाँ छेछन महराज कथाक संग कालिदासक चित्र कथा आ हुनक यादव कुलमे जन्म हएब, हुनक यर्थाथ परिचए भेल। बहुतोकेँ ई बूझल हेतनि जे कालिदास तँ कर्ण-कायस्थ छलाह। ऐ लेल सेहो प्रीति जीकेँ धन्यवाद।

प्रीति जीक दोसर रचना मैथिली चित्रकथामे कुल दस गोट कथा वर्णित अछि। जइमे राजा सलहेस, बोधि कायस्थ, दीना-भदरी, नैका-बनिजारा, विद्यापतिक आयु अवसान प्रमुख अछि। ऐ प्रकारे दुनू चित्रकथा पढ़लापर एहेन लागल जे ई कथा सभ ऐतिहासिक महत पाओत। ऐ प्रकारक रचनाक सर्वथा अभाव सन छल। जेकरा प्रीतिजी हमरा सबहक समक्ष राखि एकरा धरोहरि स्वरूप महत देलनि। ऐ पोथीकेँ नैना-भुटुकाक पहिल पसिन कहल जा सकैत अछि। खास कऽ जे बच्चा नंदन, बालहंस, वा अन्य पोथी पढ़बाक हिस्सक लगौने छल आब ओ लेखिका द्वारा रचित रचनासँ लाभ उठाओत। पोथीक प्रत्येक चित्र तथ्यात्मक आ उद्देश्यपरक अछि। चित्रकथाक माध्यमसँ प्रीतिजी मिथिलाक विलुप्त प्राय भेल विषय-वस्तुकेँ कथाक रूप दऽ जीवंत कऽ देलनि। मैथिली प्रेमी ऐ तरहक रचनाकेँ नजरअंदाज नै कऽ सकैत छथि। आबैबला पीढ़ीक लेल ऐ प्रकारक रचना नै मात्र मनोरंजक

अपितु प्रेरणादायक सेहो सिद्ध हएत। पोथीक सभसँ पैघ बात ई अछि जे प्रत्येक चित्र एकटा विशेष अंदाज आ दशाकेँ प्रस्तुत करबामे सफल भेल अछि जे लिखल गेल पाँतिक भाव स्पष्ट कऽ रहल अछि। प्राय: सभ जातिक लोकक चित्रण ऐ चित्रकथामे समाएल अछि। जे प्रीति जीक समन्वयवादी सोचक परिचायक अछि। प्रगतिशील विचार तँ सहजहि। मिथिला सभ दिनसँ उदारताक परिचायक रहल मुदा किछु लोक बेवसायिक एवं जातिवादी सोचक लाड़नि बीचमे चलौलनि आ चलाइयो रहल छथि। हमरा हर्ख भऽ रहल अछि ऐ चित्रकथाक लेखिकापर जे एतेक सुन्दर, सुगम, आ प्रगतिशील डेग बढ़ा मैथिली साहित्यक विकासमे एकटा बेछप स्थान बनौलनि अछि।

हमर शुभकामना सतत रहत जे प्रीतिजी ऐ प्रकारक रचना करैत रहती तँ निश्चित रूपेँ मिथिला, मैथिली आ मैथिलामे रहनिहार सभ पूर्णत: समृद्ध भऽ जेताह।

(विदेह पेटारसँ, अंक 116, 15 अक्टूबर 2012)

मैथिली चित्रकथा

शिव कुमार झा 'टिल्लू'

आठ बर्ख पहिने 'मैथिली' भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे शामिल कएल गेल। कतिपय हर्षित भेलहुँ जे हमरो भाखाकेँ वैधानिक अस्तित्व देल गेल। मोने-मोन ओहि सभ गोटेक प्रति कृतज्ञता आ मंगल कामना करैत छलहुँ जनिक प्रयाससँ ई काज भेल। मुदा! एकटा कचोट अर्न्तमनकेँ हिलकोरि रहल छल जे आगाँ की हएत? अपन भाखाक भविष्य नीक नहि देखि रहल छलहुँ।

एहि व्यथाक सभसँ पैघ कारण छल हमरा सबहक भाषा साहित्यमे कोनो क्रांतिक आश नहि नजरि आबि रहल छल। वर्तमान पीढ़ी मातृभाषासँ दूर भऽ रहल छलाह। अगिला पीढ़ीक गप्प की कहू? कतेक नेनाकेँ ओलती, चिनुआर, थान, छान-पगहाक अर्थ बूझल अछि? जौं कोनो अभिभावकसँ पूछैत छी जे नेनासँ अपन बयनामे गप्प किए नै करैत छी तँ जवाब भेटैत अछि जे स्कूल जाएत तँ हिन्दी आ अंग्रेजी नहि बूझत तेँ अखनेसँ सिखा रहल छी। नेनोमे चेतना नहि किएक तँ बाल-साहित्य मैथिलीमे लिखले नहि गेल। जौं किछु अछि तँ ओकर अर्थ कतेक नेना बूझैत छथि। महान लेखक वा कविक श्रेष्ठ भाषामे लिखल

रचना हम नहि बूझैत छी तँ हमर धीया-पूता कोना बूझतथि? एहि मध्य मैथिलीमे विदेह-सदेहक पदार्पण भेल। नव रूप, नवल सोच आ सकारात्मक दृष्टिकोणक संग। मौलिक बिन्दुपर रचना होअए लागल। उपेक्षितकेँ नव आश भेटल। साहित्य आन्दोलनक एकटा परिणामक चर्च हम पाठकसँ कऽ रहल छी- मैथिली चित्रकथा- श्रुति प्रकाशन दिल्ली द्वारा विदेहक सौजन्यसँ ई पोथी सन् 2009 मे बहराएल। एहि पोथीक लेखिका छथि श्रीमती प्रीति ठाकुर। हिनक ई दोसर रचना थिक। विषय पूर्णत: नव, बाल साहित्यक चित्रकथा। एकरा रचना नहि कहल जा सकैछ, किएक तँ एहिमे कोनो साहित्यक सृजन नहि, लोक कथा आ जनश्रुति जे मिथिलामे पहिनेसँ सुनल जा रहल छल ओकरा चित्रक संग चर्च कएल गेल अछि। एहि प्रकारक जन श्रुति गाम-गाममे बूढ़-पुरानक मुँहसँ बाजल जाइत छल मुदा आब विलीन भऽ रहल अछि। ओहि विलुप्त विषयपर चित्रकथा लिखि प्रीति जी बड्ड नीक काज कएलनि। एहि पोथीमे जे विशेष आ नव सकारात्मक पक्ष देखलहुँ ओ अछि विषयक आ कथाक चयन। सम्पूर्ण मिथिला एहिमे समाएल छथि। सभ जाति समाजक लोक-कथाक चित्रण कएल गेल अछि। मोती दाइ कथामे रजक जातिक निष्ठाक चित्रण तँ राजा सलहेसमे दूधवंशीक भावनाक व्याख्या। मिथिला दरबारक वोधि-कायस्थक गंगा लाभ मनोरम लागल। बहुरा गोढ़िन आ नटुआ दलाल बेगूसरायक लोक कथा थिक। पहिने लोकक मानसिकता छल जे बेगूसरायक लोक

मैथिली भाषी नहि छथि। हमरो मर्म होइत छल किएक तँ हमर मातृक बेगूसरैए जिलामे अछि। एहि कथाकेँ पढ़ि तिरहुतिया आ दछिनाहाक भेद हियासँ मेटा गेल।हमरा सबहक समाजक एकटा उपेक्षित जाति छथि मुसहर। मुसहरोमे दूटा आदर्श पुरूष भेल छलाह दीना आ भद्री। ओहि दीना भद्रीक कथा बड्ड नीक लागल। पहिने बूझैत छलहुँ जे तपस्वी वनबाक लेल बौद्धिकता आ भौतिकता पैघ मापदंड थिक, मुदा आब ई भ्रम दूर भऽ गेल। एहि प्रकारे बहुत रास कथाक चित्रण कएल गेल अछि।

एकबेर आदरणीय जगदीश प्रसाद मंडल आ बेचन ठाकुर जीक रचना पढ़ि हम लिखने छलहुँ जे 'विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन' मैथिली पर लागल जातिवादी कलंककेँ धो देलक। जौं ई गप्प सत्य अछि तँ ओहिमे एहि पोथीक भूमिकाकेँ नहि नजरि अंदाज कऽ सकैत छी। वर्तमान पीढ़ीक लेल प्रेरणादायी आ अगिला पीढ़ीकेँ मैथिलीक प्रति सिनेह जगाबए लेल ई पोथी प्रासंगिक अछि। भाषा संपादन नीक लागल। चित्रक स्तर बड़ सुन्नर आ व्यापक अछि। नीक कागतक प्रयोग आ चित्रक रंग संयोजन सेहो सेहंतित लागल।

अंतमे हम प्रीति जीकेँ धन्यवाद दैत छिअनि जे हमरा सबहक बीच एकटा झाँपल विषयपर लेखनीक प्रयोग कएलनि। आगाँ सेहो

हम आशा करैत धन्यवाद ज्ञापन करैत छी।

(विदेह पेटारसँ, विदेह संचालित ब्लाग 'मैथिली समालोचना'पर प्रकाशित 7 अप्रैल 2012 कैं प्रकाशित)

मिथिलाक लोक देवता

शिव कुमार झा 'टिल्लू'

कोनो साहित्यक समृद्धिक आधार महाकाव्य, प्रबन्ध काव्य, उपन्यास वा कथाक उत्तर आधुनिक विवेचनकेँ मानल जाइत अछि। ऐ दिशामे मैथिली एखन बड़ पाछू अछि किएक तँ समग्र साहित्य विधाक परम्परागत रूपमे ई भाषा बाझल मानल जा सकैछ। साहित्यक विकास तखने संभव जखन भाषाक दीर्घकालीन संभावना परिलक्षित होएत। पुरना पीढ़ी झखड़ि रहल छथि आ नवका पीढ़ीमे शिक्षाक माध्यम अंग्रेजी तखन मैथिलीक अस्तित्वपर अपने आप प्रश्नचिन्ह लागब दर्शनीय। गाम-घरक नेना-भुटकाकेँ जौं छोड़ि देल जाए तँ मैथिल परिवारक शैशवक मातृभाषा निश्चित रूपेँ बदलि रहल अछि।

प्रारंभिक शिक्षाक माध्य अंग्रेजी आ हिन्दी थिक। ऐ दशामे साहित्यसँ बेशी आवश्यक अछि भाषाकेँ बचाएब। मैथिली तखने अपन आस्तित्वकेँ दृढ़ रूपेँ राखि सकतीह जखन नवका पीढ़ीमे मातृ आ वात्सल्य सिनेहक वेदना हुअए। ऐ लेल आवश्यक अछि बाल मनोविज्ञानकेँ स्पर्श करएबला बाल साहित्यक प्रोत्साहन। ऐ दिशामे कहबाक लेल तँ बहुत रास कार्य भेल अछि परंच वास्तविक बाल साहित्यमे आधुनिक पीढ़ीक रचनाकारक समूहमे

अग्रगन्या छथि श्रीमती प्रीति ठाकुर। हिनक तेसर पोथी 'मिथिलाक लोक देवता' श्रुति प्रकाशनक सौजन्यसँ सन् 2010 मे बहार भेल।

टी एस इलियटक Tradition and the individual talent (सन् 1917) क अनुसार कोनो कवि, कथाकार वा कलाकार स्वयंमे पूर्ण अर्थ नै स्पष्ट करैत छथि। हुनक कलाक तुलना मृत कवि वा कलाकारक रचनासँ कएलाक बादे हुनक मूल्यांकन कएल जा सकैछ। जौं ऐ मतकेँ प्रासंगिक मानल जाए तैयो प्रीतिजी अतुलनीय छथि किएक तँ हिनकासँ पूर्व ऐ प्रकारक चित्रात्मक आ लयात्मक शैलीमे बाल गद्य पहिने मैथिलीमे लिखल नै गेल। ई अक्षरश: सत्यो थिक किएक तँ आदि पुरुषक माथपर पाग रखबाक साहस कियो नै कऽ सकल। संगहि ऐ तथ्यकेँ जानब सेहो आवश्यक जे अन्य भाषा समूहसँ तुलनाक बाद प्रीतिजी कतए छथि?

'सामा चकेबा' परम्परागत जनश्रुति आ पौराणिक कथाक आधारपर मिथिलाक गाम-गाममे प्रचलित कार्तिक पूर्णमासीक पावनि थिक। ऐ कथाकेँ ऐ पोथीमे सम्मिलित कऽ प्रीतिजी कोनो नव रचनात्मक कार्य नै कएलनि परंच अनचोकेमे नवका पीढ़ीकेँ अपन संस्कृतिसँ अवश्य अवगत करा देलखिन। अनचोके शब्दक प्रयोग ऐ दुआरे कएलौं किएक तँ बहुत रास गामसँ ई पावनि

लुप्त भऽ रहल अछि शहरमे तँ एकर अस्तित्वक कल्पना करब सेहो असंभव। आन ठाम जकाँ मिथिलामे सेहो पलायनवाद हावी भऽ गेल छैक। कोनो आवश्यक नै जे पलायनक बाद लोक अपन संस्कृतिकेँ दड़भंगिया प्रभावमे झाँपि कऽ राखि सकथि। तँए एहेन पावनिक चर्च आधुनिक पीढ़ी लग आवश्यक। जखन चर्च हएत तँ भऽ सकैछ जे प्रवासी नेनामे ऐ प्रकारक संस्कृतिसँ जुड़ल रहबाक प्रेरणा जागए। मधुश्रावणी वा कोजगराक सदृश सामा चकेबा कोनो जाति विशेषक पावनि नै थिक वरन् ई सम्पूर्ण मिथिलाक प्रतिनिधित्व कएने अछि।

साहित्यानुरागी लोकनि ऐ पोथीकेँ रचनात्मक कथा (creative story) नै मानताह ई ध्रुव सत्य किएक तँ एकर कथा सभा नूतन कल्पना नै भऽ कऽ परम्परागत शैली आ कथाक प्रतिरूप थिक। ऐ दुआरे रचनाकारक आलोचना सेहो संभव अछि। मुदा ई धियान राखब सेहो आवश्यक जे अबोध नेनाकेँ क्लिष्ट साहित्यसँ कोनो सिनेह नै होइछ। ओ तँ महाकाव्यक पाँतिसँ बेसी 'आनी-मूनी हम नै जानी' सदृश अर्थहीन पाँतिसँ सिनेह रखैत अछि। तँ चालनि बाढ़नि डेढ़ बितना, जेहन करनी, चारि बटोही, बगियाक गाछ आदि जनश्रुतिसँ संबंधित कथानककेँ बाल मनोविज्ञानसँ संबंधित माननाइ उचित हएत। लेखिका पहिनहि ईमानदारीसँ ई स्वीकार कएने छथि जे बाल कालमे बूढ़-पुरानक मुखसँ जे सुनने

छलीह तकरा अपन शब्दमे कथाक रूप दऽ देलखिन।

ऐ पोथीक सबल पक्ष अछि कथा चित्रात्मक विवेचन। मोती सायर, लालबन बाबा, गरीबन बाबा, बिहुला, सीता आ सुग्गा, अयाची मिश्र, पक्षधर मिश्र आ उगना सन कथा चित्रकेँ तैयार करबामे कतेक मेहनति आ समए लागल हेतनि ओ तँ लेखिके कहि सकैत छथि। परंच ई चित्र अपन विविध मूक शैलीमे नेना-भुटकाक संग अवश्य वार्तालाप करत। आलोचनात्मक पक्षसँ जौं देखल जाए तँ एकरा आन भाषा साहित्यक कॉमिक्ससँ बेसी नै मानल जाएत। मुदा एहेन दीर्घसूत्री आलोचके कऽ सकै छथि। किएक तँ ई कोनो कम्प्यूटरक खेल नै अपन मस्तिष्कमे उपजल बालउद्बोधनक चित्रात्मक शैली थिक जे समालोचनाक भयसँ मुक्त रहैत लेखिका मात्र नेनाक लेल कएने छथि।

रंग समंजन सेहो नीक लागल। अंतिम किछु चित्र श्वेत-श्याम रूपेँ देल गेल जइमे नेना स्वयं रंगरोगन कऽ सकैत छथि। ऐ पोथीक कथानक परम्परागत अछि मुदा शैली आ चित्रांकन नव तँए अपन उद्देश्यमे रचनाकार सफल छथि। दुर्बल पक्ष जे चित्रक संग जे किछु कथा देल गेल अछि ओकरा आर विस्तृत कएल जा सकैत छल। जेना मोती सायरसँ लऽ कऽ मीरा साहेब धरिक चित्रकथामे कथानक एकाएक बदलि जाइत अछि, जे सारांश जकाँ लगल। मुदा आशा करैत छी जे नेना सभकेँ नीक लागि रहल होएतनि।

(विदेह पेटारसँ, अंक 102, 15 मार्च 2012)

मैथिली चित्रकथा केर प्रारंभिक इतिहास (2002 सँ 2016)

आशीष अनचिन्हार

लिखिया करब (चित्र बनाएब) पुरानोसँ पुरान कलामे एकटा थिक। लिपि सेहो एक तरहक चित्रे छै तँइ भारतीय परंपरामे लीखब शब्दक विस्तार भेटत हरेक भाषामे। एखनो चीन आ जापानमे चित्रेलिपि छै। पहिने विभिन्न मनोदशाक चित्र बनैत छलै आ लोक ओहि दशाकेँ देखि अपन व्याख्या करैत छल। फेर ब्रिटिश राजमे जखन अखबारक प्रचलन भेलै तखन राजनीतिक-सामाजिक कार्टूनक शुरुआत भेलै। Delhi Sketch Book(1850-57), एवं अमृत बाजार पत्रिका (बंगला भाषा,1872) भारतक प्रारंभिक कार्टूनमेसँ अछि। अखबारक कार्टून प्रायः एक वा दू चित्रक होइत छलै आ ओहिमे किछु वाक्यक संग तात्कालीन स्थितिकेँ दर्शाएल जाइत छलै। बादमे ई कार्टून पत्रिका सभमे सेहो एलै आ एकर विस्तार होइत रहलै। बादमे एकटा कथा एवं चित्रकेँ समायोजित कएल गेलै आ तकरे नाम चित्रकथा (Comics) भेलै।

प्रारंभिक चित्रकथा अनुवाद छल जे कि 1950 क दशकमे शुरू भेलै। जाहिमे The Phantom, Mandrake, Flash Gordon, Rip Kirby सन चित्रकथाक अनुवाद छल। एक बेर फेर एहि विधामे बंगला भाषा अगुआएल आ नारायण देबनाथ

द्वारा 1960 मे चित्रकथा लिखल गेल। देबनाथजी द्वारा भारतक पहिल सुपरहीरो चित्रकथा Bāṭul di Greṭ 1965 ई. मे आएल। लगभग अही समयमे आनो भाषा सभमे चित्रकथा अपन जड़ि मजगूत केलक। अमर चित्रकथा हिंदी सहित आन भाषाक चित्रकथाकेँ एहि विधाकेँ मजगूती प्रदान केलकै। मैथिलीक लोक सभ जाहि चित्रकथाकेँ जनैत छथि से अछि हिंदी भाषाक चित्रकथा जाहिमे हमहूँ छी। नागराज, सुपर कमांडो ध्रुव, डोडा सहित मोटू-पतलू, चाचा-भतीजा सिरीजक चित्रकथा अपना समयक लीजेंड छल मुदा एहि बीचमे मैथिली चित्रकथा कतहुँ नै छल।

नै छल माने हमरा जनैत कोनो पुरान पत्रिकामे चित्रकथा नै देल छल से हमरा देवशंकर नवीन जीक आलेख "मैथिली बाल साहित्य का विहंगम परिदृश्य" पढ़ि भेल। ओनाहुतो जँ कतहुँ पुरान पत्रिकामे चित्रकथा देल गेल रहितै तऽ सगरो "पहिल, पहिल" केर शोर भऽ गेल रहितै कारण मैथिल सभ काजमे पहिल हेबाक लोभ रखने रहैत छथि, ओहनो काजमे जे कि हुनकासँ बहुत पहिने भऽ गेल रहैत छै। देवशंकर नवीन जी अपन आलेखमे मैथिलीक पहिल बाल साहित्य शोधकर्ता दमन कुमार झाक पोथी "मैथिली बाल साहित्य"क संदर्भ खूब देने छथि मुदा ताहू संदर्भ सभमे चित्रकथा केर तथ्य नै अछि। एकर माने भेल

जे दमनजीकेँ सेहो अपन शोध लेल पुरान पत्रिकामे चित्रकथा नै भेटलनि। खएर ई सूचना हमर अंतिम नै अछि, जँ किनको लग पुरान मैथिली पत्रिकामे चित्रकथाक उदाहरण हो से तर्क सहित सूचना देथि। मैथिली चित्रकथाक इतिहासक शुद्धता लेल ई आवश्यक हेतै। देवशंकर नवीन जीक आलेख गद्यकोश नामक साहित्यिक वेबसाइटपर अछि जकर लिंक अछि

http://gadyakosh.org/gk/%E0%A4%AE%E0%A5%88%E0%A4%A5%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0%A5%80_%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%B2_%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF_%E0%A4%95%E0%A4%BE_%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B9%E0%A4%82%E0%A4%97%E0%A4%AE_%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%83%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%AF_/_%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B5%E0%A4%B6%E0%A4%82%E0%A4%95%E0%A4%B0_%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A5%80%E0%A4%A8

मिलेनियम ईयर (2000 ई.) ओ समय छल जाहि समयमे वेब

कामिक्स (Webcomic) जोड़ पकड़लकै। Webcomic केर मतलब छै जे इंटरनेटपर प्रकाशित चित्रकथा (प्रिंटमे नै) आ इएह समय छै "मैथिली चित्रकथाक उदयकेँ"। एहि उदयमे आरो बेसी तीव्रता एलै Creative Commons License केर प्रचलनसँ। एहि Creative Commons License केँ जनबासँ पहिने Copyright केर बारेमे जानी। कोनो लेखक जखन अपन पोथी वा रचना लीखै छै तखन ओकर Copyright ओकरा स्वतः भेटि जाइत छै। पोथी प्रकाशनसँ ई Copyright आर बेसी काज अबैत छै। एहि Copyright केर अंतर्गत एहि रचना वा पोथीक कोनो अंश बिना लेखक वा प्रकाशकक अनुमति बिना कोनो आन पोथीमे नै देल जा सकैए। ई Copyright केर नियम ओहन लोक सभकेँ दंड सेहो दैत छै जे आनक पोथीसँ मैटर चोरा कऽ अपना नामे लीखि लैत अछि। वर्तमान भारतीय Copyright क अंतर्गत लेखक मृत्युक 60 साल धरि प्रकाशन आ ओकर रोयाल्टीक अधिकार लेखकक उत्तराधिकारी लग रहैत छै आ 60 बर्ख बाद ओकरा कियो कोनो प्रकाशन छापि सकैए मुदा नाम ओही लेखक केर रहतै। जेना आब कोनो प्रकाशक चंदा झाक मिथिला भाषा रामायण छापि सकैए मुदा पोथीपर लेखक केर नाम चंदे झा रहतै, संपादकक नाम किनको भऽ सकैत छनि। बर्ख 2001 मे Creative Commons License केर जन्म भेलै जकर मूल प्रवर्तक

छथि Lawrence Lessig आ Eric Eldred एवं एकर तकनीकी सलाहकार छथि Aaron Swartz। बर्ख 2002 केर 16 दिसंबरमे एकर पहिल भर्सन एलै। Creative Commons License केर मतलब छै जे जँ कोनो लेखक अपन रचना, अपन पोथीकेँ Creative Commons License क अंतर्गत प्रकाशित केने छथि तऽ ओहि रचना अथवा पोथीपर हुनकर नाम तऽ रहतनि, हुनकर रचनाक संगे कोनो गड़बड़ी नै कएल जेतनि मुदा ओकर प्रकाशन, वितरण एवं अनुवादपर कोनो अधिकार नै रहतनि। एकर मतलब भेलै जे Creative Commons License क अंतर्गत प्रकाशित पोथीक मैथिली अनुवाद, ओकर प्रकाशन एवं वितरण लेल मूल लेखक केर अनुमति नै चाही। किछु केसमे सभ चीजक अनुमति रहैत छै मुदा ओकर व्यापारिक अनुमति नै रहै छै आ से एहि License केर अंतर्गत प्रकाशित पोथीपर लीखल रहैत छै। आनो भाषा लेल एहने बूझू।

मैथिलीमे चित्रकथा अनुवाद माध्यमसँ आएल आ तकर बाद मूल मैथिली चित्रकथा सेहो छपल। मैथिलीक पहिल चित्रकथा जे कि अनुवाद छल आ प्रीति ठाकुर द्वारा अनुवादित छल एही Webcomic आ Creative Commons License केर उपज छल। Carole Bloch द्वारा बर्ख 2002 मे लीखल पोथी Little and big, जे Vian Oelofsen द्वारा

Illustrated (मने चित्र वा रेखांकन), एवं Petra Totome द्वारा Narrated (कहानी सुनाएब) छल तकरा ओही बर्ख (2002) मे प्रीति ठाकुर द्वारा मैथिली अनुवाद "छोट आ पैघ" नामसँ भेल आ ई भालसरिक गाछ नामक ब्लागपर देल गेल। बादमे एहि पोथीक दोसर संस्करण Bloom Library पर 2022 मे भेल जकरा bloomlibrary.org पर जा कऽ देखल जा सकैए।

ठीक तहिना Jenny Katz द्वारा बर्ख 2003 मे लीखल पोथी Look at the animals, जे Sandy Campbell द्वारा Illustrated (मने चित्र वा रेखांकन), एवं Petra Totome द्वारा Narrated (कहानी सुनाएब) छल तकरा ओही बर्ख (2003) मे प्रीति ठाकुर द्वारा मैथिली अनुवाद "माल-जाल आ जानवर दिस देखू" नामसँ भेल आ ईहो भालसरिक गाछ नामक ब्लागपर देल गेल। पाठक लेल ईहो सूचना देब उचित जे Look at the animals नामसँ आनो लेखक केर पोथी छै। पाठक भ्रमित नै होथि तँइ हम लिखलहुँ। बादमे एहि पोथीक दोसर संस्करण Bloom Library पर 2022 मे भेल जकरा bloomlibrary.org पर जा कऽ देखल जा सकैए।

ठीक तहिना Clare Verbeek, Thembani Dladla आ Zanele Buthelezi द्वारा बर्ख 2007 मे लीखल पोथी My Family, जे Kathy Arbuckle द्वारा Illustrated (मने चित्र वा रेखांकन), Terry Lofgren द्वारा Coloured (रंग संयोजन) एवं Helen Sahl द्वारा Narrated (कहानी सुनाएब) छल तकरा ओही बर्ख (2007) मे प्रीति ठाकुर द्वारा मैथिली अनुवाद "हमर परिवार " नामसँ भेल आ ईहो भालसरिक गाछ नामक ब्लागपर देल गेल। बादमे एहि पोथीक दोसर संस्करण Bloom Library पर 2022 मे भेल जकरा bloomlibrary.org पर जा कऽ देखल जा सकैए।

आ बर्ख 2008 मे मैथिलीक पहिल मूल चित्रकथा "गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा" श्रुति प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित भेल जकर लेखिका छथि प्रीति ठाकुर। बर्ख 2008 मे भारतीय रिजर्व बैंक अपन वित्तीय शिक्षा श्रृखंलाक तहत मूल हिंदीक चित्रकथा केर मैथिली अनुवाद करेलक, जकर अनुवादक छलाह डॉ. रमानंद झा 'रमण'। विदेहक 32म अंक, 15 अप्रैल 2009 सँ जाहिमे देवांशु वत्स केर मैथिली चित्रकथा श्रृखंला शुरू केलक जे बादमे स्वतंत्र पोथीक रूपमे सेहो आएल। 2009 मे कुल तीन टा मैथिली चित्रकथा श्रुति प्रकाशनसँ प्रकाशित भेल-

1) नीतू कुमारी केर "मैथिली चित्रकथा"
2) देवांशु वत्स केर “नताशा”
3) प्रीति ठाकुरक “मैथिली चित्रकथा”

एकर बाद प्रीति ठाकुरक अन्य दू चित्रकथा प्रकाशित भेल-

1) मिथिलाक लोकदेवता (बालसाहित्य), (2010),
2) विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बालसाहित्य), (2012)

जहाँ धरि विदेहक बाद आन पत्रिकामे चित्रकथा प्रकाशित हेबाक बात छै से 2009 क बाद आबि जाइत अछि 2016 मे। फरवरी 2016 मे देवांशु वत्स केर संपादनमे 'नेना भुटका' नामक बाल पत्रिका अबैत अछि आ ताहिमे चित्रकथा सभ सेहो प्रकाशित भेल। पाठक लेल ईहो जानब उचित जे भूतकालमे सेहो 'नेना भुटका' केर नामसँ मैथिली पत्रिका प्रकाशित भेल अछि मुदा हम जाहि 'नेना भुटका' केर चर्च चित्रकथाक संदर्भमे केलहुँ तकर पहिल अंक फरवरी 2016 मे आएल जकर संपादक छलाह देवांशु वत्स। 2016 केर बाद प्रीति ठाकुरक अनेक अनुवाद आएल अछि आ संगहि बहुत रास महिला चित्रकथाक अनुवादमे लागल छथि। मुदा हम अपन विषय मात्र 2016 धरि रखने छी। एकर बादक मैथिली चित्रकथामे जे प्रगति भेल अछि से हम आन

लेखमे देब।

प्रसंगवश अपन एक आलेखमे दमन कुमार झा देवांशु वत्स केर 'नताशा'केँ मैथिलीक पहिल चित्रकथा मानने छथि (एकैसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिली बाल साहित्य, देखू विदेह सदेह-11)। बहुत संभव जे एकैकाल खंडमे ई पोथी सभ प्रकाशित भेल छै तँइ दमनजीकेँ एहन भ्रम भेल हो। मुदा हमरा द्वारा देल गेल सूचीसँ ई एकदम स्पष्ट अछि जे देवांशु वत्ससँ पहिने मैथिलीमे चित्रकथा छल।

मैथिलीक पहिल चित्रकथा लेखिका प्रीति ठाकुर केर साक्षात्कार *(आशीष अनचिन्हार द्वारा ई-मेल केर माध्यमसँ)*

1) अहाँ बाल साहित्य खास कऽ कॉमिक्स विधामे एलियै तऽ अहाँक नेनमति (बचपन)मे कॉमिक्स पढ़ैत छलियै, यदि हँ, तऽ ओहिसँ संबंधित कोनो संस्मरण कही।

उत्तर- हँ नन्दन, परागमे चित्र-शृंखला संगे अमर चित्र कथा आदि पढ़ै छलिऐ, रेण्टपर सेहो भेटै छलै।

2) मैथिलीमे कॉमिक्स हेबाक चाही से कोना सोचलियै आ शुरुआतमे कोन-कोन दिक्कत एलै?

उत्तर- चित्र बच्चेसँ बनबै छलिऐ, 2000 मे पुत्र जन्मक बाद जखन ओ बाजब शुरु केलक तखन मोनमे आयल।

3) कॉमिक्स बच्चा लेल होइत छै मुदा बच्चाकेँ कॉमिक्स पढ़बासँ रोकल जाइत छै। से किए? आ एहि बातक प्रभाव कॉमिक्स विधापर कोना पड़ैत छै।
उत्तर- पहिने रोकल जाइ छलै, आब तँ बच्चा सभ जखनसँ वीडियो गेम खेलेनाइ शुरु केने छै, किताब, चाहे ओ प्रिण्ट पोथी

हुअय बा कम्प्यूटर/ किण्डलपर, जँ बच्चा पढ़ै छै तँ लोककेँ खुशीये होइ छै।

4) अहाँ परिवारक बच्चा अहाँक कॉमिक्ससँ कतेक जुड़ल वा एना कही जे मैथिली कॉमिक्ससँ कतेक जुड़ल?

उत्तर- हमर पोथी तँ ओ सभ पढ़िते छथि बेटा (ओम) आ बेटी (आस्था) दुनू ट्विंकल सेहो पढ़ै जाइ छलथि। आब तँ पैघ भऽ जाइ गेल छथि।

5) कॉमिक्स विधामे एबाक लेल कोनो लेखक खास कऽ बाल साहित्यक लेखककेँ की-की सावधानी रखबाक चाही माने हुनकर तैयारी की हेबाक चाही।

उत्तर- बच्चाकेँ नीक लागै, फोटो सेहो, आ भाषा सेहो।

6) आइसँ लगभग बीस बर्ष पहिने कॉमिक्स आ आजुक टी.भीक कार्टूनमे सेहो थ्री.डी बला, यूट्यूब बला। एहन परिस्थितिमे कॉमिक्स विधा केर बजार एवं महत्व कतेक छै।

उत्तर- आब पढ़नाइकेँ नीक मानल जाइ छै, प्रिण्ट आ ई-बुक दुनू। से स्थिति नीक हेतै।

7) प्राय: कोनो ने कोनो विधामे पारंगत भेलाक बाद लेखक-लेखिका सार्वजनिक मंचपर जाइत छथि, अहाँ अनुपस्थित रहैत छियै मंचसँ। एकर की कारण?

उत्तर- स्वभाव होइ छै अपन-अपन।

8) वर्तमानमे ग्राफिक बुक (जेना ग्राफिक उपन्यास, ग्राफिक इतिहास... आदि) एवं कॉमिक्स दूनूमे की अंतर छै।

उत्तर- कॉमिक्स बच्चा सभ लेल छै, ग्राफिक्स नोवल बच्चा पैघ दुनू पढ़ै छथि, लघुकथा भेल कॉमिक्स आ उपन्यास भेल ग्राफिक नोवल।

9) अपनेक पति सेहो लेखक छथि। दंपति रचनाकार भेने की सुविधा-असुविधा होइत छै?

उत्तर- सुविधा-असुविधा कोनो नै, सभ अपन-अपन काजमे लागल रहै छी, बेटो-बेटी, अपनो दुनू गोटे।

10) की कहियो एहन भेलैए जे कोनो कॉमिक्समे कतहुँ

अटकि गेल होइ आ ताहिमे अपनेक पतिक सहायता भेटल हो। जँ, हँ तऽ ओकरा सार्वजनिक करी।

उत्तर- फोटो बनेबामे पति शून्य छथि, मुदा आइडिया कखनो काल दइ छथि। अक्षर-संयोजनमे सहयोग रहै छन्हि।

तोड़लनि धनुष कठोर हे परिछन चलू सखिया...

खण्ड-3

विदेह डिजिटल पुस्तकालय: पठन-पाठनक सौखीन लोक लेल वरदान

कल्पना झा

"हमर बाद ई मैथिली पोथी सभ दिस के ताकत ? मैथिली पोथी मे पाइ फँसाएब आब व्यर्थ बुझना जाइत अछि। जतबा कलेक्शन अछि, ततबा अपना पढ़बा लेल पर्याप्त अछि। " गप्पक क्रम मे कइअक गोटाक मुह सँ ई गप्प सुनबा लेल भेटल, जे हमर मोनक गप्प सेहो छलए/अछि, जकरा कतहु अभिव्यक्त करैत डेराइत छलहुँ। लोक बूझत महा कृपण छथि। मुदा बात ने कृपणताक अछि, आ ने आर्थिक विपन्नताक अछि। हँ, कृपणता एकटा कारण भ' सकैत अछि, एहि मे संशय नहि।

ओना एहन गप्प बजनाहर लोक मे एक-सँ-एक धनाढ्य,चल-अचल संपत्ति सँ परिपूर्ण उदारमना लोक सेहो छथि। कहबाक माने जे हाइ प्रोफाइल लोक आ मिडिल क्लास लोक आ संगहि जे उदारताक लेल जानल जाइत होइथ समाज मे, तेहन लोकक मोन मे सेहो एहि तरहक बात आबैत छनि। चाहे ओ सामान्य पाठक होइथ कि साहित्यकार होइथ, शोधक लोक होइथ कि सामाजिक-राजनैतिक गतिविधि सँ जुड़ल लोक होइथ, सभ तरहक लोकक ई समस्या छनि। पोथीक कलेक्शन बढ़एबाक सौख, झंझटिआह बला सौख अछि। झंझट कोन-कोन तरहक छै,

से देखल जाए-

1. पोथी राखबा लेल जगहक अभाव पहिल समस्या। बेसी लोक आब फ्लैट मे रहनिहार। तेहन स्थिति मे घर मे लोक कतेक बुकशेल्फ राखत। सभक लेल अपना घर मे लाइब्रेरी सन कलेक्शन राखब संभव नहि।

2. समयक अभाव कही वा लोकक अभाव। पोथीक देखभाल करबा लेल, झाड़-पोछ करबा लेल समयक अभाव आ 'के करत? 'सेहो समस्या। ई समस्या ताहि घर मे विशेष रूप सँ बेसी जटिल, जाहि घर मे परिवारक सभ सदस्यक रुचि एकदम भिन्न होइन। किछु अपवाद छोड़ि, एहन परिवार विरले भेटत जाहिठाम पति-पत्नी,धिया-पूता सभ समान रूप सँ पोथी प्रेमी होइथ। अधिक काल पति-पत्नीक सौख बेमेल रहिते टा छनि। तखन पोथी-कलेक्शन कलह केर कारण सेहो भ' सकैत अछि।

उदाहरण स्वरूप जँ कोनो घरक पुरुख पोथी इकट्ठा करबाक सौखीन रहथि, तँ हुनकर अर्द्धांगिनीक लेल ई समस्या भ' जाइत छनि। जखन-तखन सुनाबैत संकोच नहि करतीह ओ,"अहाँ पोथी आनि-आनि ढेरिअबैत रहू,आ हम भरि दिन झारैत रहू,ने.... ? हमरा आर कोनो काज नहि अछि की ? कतबो चमका क'

झाड़ब, फेर किछु दिन पर गर्दा सँ भरि जाइत अछि पोथी सभ। जतहि देखू, ततहि पोथी। रैक सभ पर पोथी, सिरमा तर मे पोथी, पलंग तर मे कार्टून भरि भरि क' थकिआएल पोथी, अलमारीक उपर पोथीक गेंट। हम अकच्छ भ' गेल छी अहाँक पोथी प्रेम सँ। एतबे पोथी ढेरिएबाक सौख अछि, तँ एकटा आदमी राखि लिअ' जे दस-दस दिन पर पोथी झाड़ैत रहत। हमरा सँ नहि पार लागत ई बेगारी काज।" बहुत लोक कैँ दीमक सँ परेशानी रहैत छनि। कहबाक माने पोथीक रख-रखाव सहज नहि।

3.उपर्युक्त दू टा कारणक बाद बात आबैत अछि, च्वॉइसक। सभ कैँ, सभ तरहक पोथी पसिन नहि पड़ैत छै। बहुत बेर एहन होइत छै, जे पोथीक विधा देखि, पोथीक शीर्षक, लेखकक नाम देखि लोक पोथी कीनि तँ लैत अछि, मुदा पोथी आधे पढ़ैत-पढ़ैत बुझा जाइत छै, किछु तेहन विशेष बात नहि अछि पोथीक भीतर। कहबाक माने "वर्थ-इट" (एखनुक बोल-चालक भाषा मे) नहि अछि, से बुझबा मे आबि जाइत छै। तखन कीनल पोथी, आपस तँ होएत नहि। एहन समय मे लागैत छै, पाइ बेरबाद केलहुँ। तखन मोन मे आएब स्वाभाविक,"आब पोथी कीनब कम क' देबै, हरसट्ठे कोनो पोथी नहि कीनब।"

4.एहि सभ कारणक उपरान्त बात आबैत छै मूल्यक। सौ सँ कम , वा सौ सँ किछुए फाजिल पन्नाक मैथिली पोथी सभक मूल्य दू

सए टाका सँ कम नहि देखैत छी। किछु पोथी अपवाद स्वरूप भेटि जाए, से भिन्न गप्प। एहन स्थिति मे मैथिल लोक कनि सोच मे निश्चित पड़ि जाइत छथि। पाँच सए टाकाक दू टा पोथी कीनब, ताहि सँ नीक दू किलो माछ आ कि पचास टा रसगुल्ला किएक ने खा क' आत्मा तृप्त करब। जिह्वा कैँ सुआद भेटत आ शरीरक लेल सेहो गुणकारी। आब एकरा कृपणता बूझल जाए किंवा मनुक्खक बुद्धि पर अन्तरिन्द्रिय 'मोन' आ ज्ञानेन्द्रिय 'जिह्वाक' विजय, जे बूझल जाए। ई बुझनाहर पर निर्भर करैत छनि। अपन-अपन सोचक हिसाबेँ लोक बुझैत रहथु।

5. एकटा बड़का कारण, एखन जे लेखकक संख्या मे द्रुतगति सँ बढ़ोतरी भ' रहल अछि, सेहो अछि। एहि कारणेँ लोक असमंजस मे पड़ि जाइत अछि। लेखक बेसी आ पाठक कम रहि गेल अछि मैथिल समाज मे। लिखबाक सौख, पढ़बाक सौख पर भारी पड़ि रहल अछि जेना। एहन मे लोक कोन पोथी कीनए आ कोन नहि कीनए, सेहो निर्णय लेब कठिन। ओना नब-नब लेखकक पदार्पण भ' रहल छनि साहित्यिक जगत मे, से प्रसन्नताक गप्प। मुदा कतेक पाइ लोक खर्च करए पोथी पर,सेहो विचारणीय। विशेष रूप सँ पचास-साठिक लगीचक लोक,जे जीवनक अन्तिम पड़ाओ दिस अपना कैँ बढ़ैत मानि रहल छथि, से बेसी पोथी ढेरिअबैत डेराइत अछि। कारण एतबा अवस्था धरि पहुँचैत-

पहुँचैत लोकक सोच एहन होमए लागैत छै, जे आब बोरिया-बिस्तर समेटबाक बेर लगीच आबि रहलए, तँ अपन असार-पसार कम करी। अपन बाद धिया-पूताक लेल किछु काजक बस्तु छोड़ि क' जाइ, जाहि सँ हुनका सभ कैँ आर्थिक सहयोग भ' सकनि। अगिला पीढ़ी लेल एहन किछु अरजि क' राखि दियैक, जाहि बस्तुक सार्थकता होइक, उपयोगिता होइक ओकरा सभ लेल। आबक धिया-पूता पढ़ितो अछि, तँ अंग्रेजी साहित्य, एहन मे मैथिली पोथीक उपयोगिता धिया-पूता लेल नहिए सन (कटु अछि, मुदा यथार्थ अछि)। एहन परिस्थिति मे बिनु एक पाइ फँसओनहि जँ पोथीक भंडार भेटि जाए, तँ ई वरदाने सन लागत ने? हमरा लेल तँ विदेह साइट सत्ते वरदान सन अछि। एक पाइ खर्च करबाक काज नहि, आ अपन पसिनक विषय-वस्तु बला, अपन पसिनक विधाक पोथी ताकि लिअ' विदेह साइट पर। डाउनलोड क' अपना मोबाइलक स्टोरेज भरबाक सेहो बेगरता नहि। जँ इच्छा हुअए, तँ स्टोर क' क' राखिओ सकैत छी। डिजिटल पोथी कलेक्शन, बिनु कोनो मूल्य कैँ बढ़बैत रहू। विदेह साइट खोलि क' पोथी ताकब, ताहि मे किछु समय तँ निश्चित देमए पड़त। अपन फाइल मे स्टोर रहत, तँ जखन मोन झट सनि कतहु,कखनहुँ पोथी निकालि पढ़ब शुरु क' सकैत छी। कहबाक माने यात्रा पर रही किंवा सुतबा काल जँ निनिआँ देवी बेसी छिड़िआएल सन बुझाथि, मोबाइल वा लैपटॉपमे सदिखन उपलब्ध विदेह लाइब्रेरी पर विजिट करु, पोथी ताकू आ पढ़ब

शुरु करू। कतेक सुविधा भ' गेल ने! विदेह साइट पर एखन धरि, जेना हमरा जनतब अछि,1500 सँ उपर पोथी- पत्रिका देल गेल अछि।

कविता-संग्रह, कथा-संग्रह, उपन्यास, आलोचना, समीक्षा, हास्य, व्यंग्य, नाटक सँ ल' क' शिशु, बाल आ किशोर साहित्य धरि, की नहि अछि विदेह साइट पर। साहित्यक संग मिथिला चित्रकला / आधुनिक चित्रकला, मिथिलाक वनस्पति एवं जीव-जन्तु, मिथिलाक जीवन आदिक पीडीएफ (PDF) फाइल आ फोटो सभ सेहो भेटत। "विदेह आर्काइव" एकटा एहन विशिष्ट पुस्तकालय अछि, जाहि पुस्तकालय मे मनोरंजक ओ ज्ञानवर्धक, दुनू तरहक सामग्री भेटत। एहि पुस्तकालयक एकटा विशेष आकर्षण पञ्जी केर मूल पृष्ठ सभक स्पष्ट फोटो सेहो अछि।

एहि पुस्तकालय मे शोधक लेल सामग्री चाही तँ सेहो भेटत, चाहे ओ यू.पी.एस.सी.क तैयारी हुअए कि दोसर दोसर आरो कोनो तरहक प्रतियोगिताक तैयारी लेल एकेडमिक मेटेरियल सभक खगता हुअए, रंग-बिरंगक पोथीक भरमार भेटत। पोथीक अतिरिक्त, विदेह ई-मैगजीनक 377 अंक (एखन धरि प्रकाशित) तँ अछिए, जे देवनागरीक अतिरिक्त तिरहुता, कैथी, नेवाड़ी, ब्रेल लिपि आ IPA सहित छओ लिपि मे प्रकाशित

होइत अछि। विदेह साइट पर उपलब्ध विदेह पत्रिका, चाहे ओ डिजिटल हुअए कि प्रिंट रूप मे, एकटा विशेष पत्रिकाक रूप मे स्थान बनओने अछि। जाहिठाम अन्य पत्रिका कोनो रचनाकारक मृत्युक बाद हुनका पर केन्द्रित विशेषांक प्रकाशित करैत रहल अछि, ओहिठाम विदेह पत्रिका द्वारा एहि चलन कैँ तोड़ैत जीवित रचनाकारक उपर विशेषांक प्रकाशित करब, एहि पत्रिका कैँ विशेष बनबैत अछि। एतबे नहि, रचनाकारक अतिरिक्त विदेह द्वारा संस्थाक उपर सेहो विशेषांक प्रकाशित कएल गेल अछि। एकर अतिरिक्त गजल विशेषांक, हाइकू विशेषांक, बीहनि-कथा विशेषांक, बाल साहित्य विशेषांक, नाटक विशेषांक, समीक्षा विशेषांक, नारी विशेषांक, अनुवाद विशेषांक, बाल गजल विशेषांक, भक्ति गजल विशेषांक, गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक, मैथिली वेब पत्रकारिता विशेषांक, कला-विमर्श विशेषांक, विदेह सम्मान विशेषांक सन महत्वपूर्ण अंक सभ प्रकाशित अछि, जे विदेह साइट पर पाठकक लेल सदिखन उपलब्ध अछि। रचनाकार सभ पर केन्द्रित विशेषांक सभक विशेषता ई, जे एखन धरि जिनका-जिनका पर विशेषांक प्रकाशित भेल, से सभ डिजर्व करैत छलाह। बहुत नीक निर्णय रहलनि विदेह टीमक। रचनाकार सभ पर केन्द्रित लगभग सभटा विशेषांक आब प्रिंट ऑन डिमांड पोथी रूप मे आबि गेल अछि। पाठक एकरा कीनि संग्रहित क' राखि सकैत छथि।

विदेह साइट पर विदेहक अतिरिक्त आरो दोसर-दोसर पत्रिकाक किछु अंक सेहो उपलब्ध अछि। जेना- पूर्वोत्तर मैथिल, मैथिली कविता त्रैमासिक, कौशिकी, देसिल बयना, मिथिला दर्शन, संकल्प, अंतिका, भारती मंडन, सन्धान, धूआ-धजा, आँगन, गामघर, आँजुर, घर-बाहर, Society Today सन असंख्य पत्रिका भेटत विदेह साइट पर। विदेह साइट पर मैथिलीक संग अंग्रेजी पोथीक कलेक्शन सेहो भेटि जाएत। जेना राधाकृष्ण चौधरी जीक तीन गोट पोथी-

1. MITHILA IN THE AGE OF VIDYAPATI
2. A SURVEY OF MAITHILI LITERATURE
3. THE POLITICAL AND CULTURAL HERITAGE OF MITHILA

उपरोक्त पोथी सभ एखनुक युवा पीढ़ीक लेल आ आबए बला पीढ़ीक लेल सेहो उपयोगी हेतनि। अपन मिथिलाक चिरकालिक पारम्परिक, सांस्कृतिक विशेषता, ऐतिहासिक धरोहर सभक विषय मे एखनुक युवपीढ़ी आ आबएबला पीढ़ी कैँ सेहो बूझब-गूनब आवश्यक ने! मैथिली पढ़ब जँ अबूह लागैत छनि, तँ अंग्रजीक एहन-एहन पोथी ओहि धिया-पूता कैँ, मिथिलाक

इतिहास बुझबा मे सहायक सिद्ध हेतनि।

जयकान्त मिश्र जीक A History of Maithili Literature आ Introduction to the Folk Literature of Mithila, उपेन्द्र ठाकुर जीक HISTORY OF MITHILA आ STUDIES IN JAINISM AND BUDDHISM IN MITHILA एहने महत्वपूर्ण पोथी मे सँ अछि। एकटा आरो महत्वपूर्ण पोथी अछि AN INTRODUCTION TO THE MAITHILI LANGUAGE OF NORTH BIHAR भाषाविद जॉर्ज ग्रियर्सन जी रचित। जे दू भाग मे अछि, पहिल-Grammar दोसर-Chrestomathy & Vocabulary, दुनू पोथी शोधार्थीक लेल तँ सहजहि, जिज्ञासु पाठकक लेल सेहो अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होएत। एकर अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा मे लिखल किछु आरो महत्वपूर्ण पोथी सभ उपलब्ध अछि। www.videha.co.in पर पोथीए टा नहि तिरहुता, नेवाड़ी आ कैथी फॉन्ट डाउनलोडक लेल सेहो उपलब्ध अछि।

एतबे नहि, ऑडियो-वीडियोक माध्यम सँ सेहो ज्ञानवर्धक, संगहि मनोरंजक सामग्रीक अथाह भंडार भेटि जाएत विदेह साइट पर। कथा वाचन, गीत-नाद आ सिनेमाक संग-संग Videha e Learning पर UPSCक तैयारी लेल श्री गजेन्द्र ठाकुर जीक

बहुत नीक, 23 टा लेक्चर उपलब्ध अछि। जाहि सँ युवावर्ग लाभान्वित भ' सकैत छथि। जनिका नहिओ तैयारी करबाक छनि, सेहो सुनि सकैत छथि, हमरा जनैत ज्ञानवर्धन सभक लेल लाभकारी। मैथिली मे Sign Language बला वीडियो सेहो भेटत विदेह साइट पर। एहि सभ तरहक काज भेल अछि मैथिली भाषान्तर्गत, से बहुत लोक कैँ प्राय: जनतबो नहि हेतनि। हम स्वयं विदेह साइट पर एहन एहन विविध मेटेरियल सभ देखि दंग रहि गेलहुँ।

अपन शहर मे कोनो पुस्तक-मेलाक जनतब भेटितहि पोथी-प्रेमी उत्साहित भ' जाइत अछि, जे सीमित समय लेल लगाओल जाइत अछि। कहुखन समयाभाव मे वा ओहि सीमित समयान्तर्गत संजोग नहि बनबाक कारणेँ लोक जा नहि पाबैत अछि पुस्तक-मेला, तँ बड्ड अफसोच होइत छै। मुदा विदेह पुस्तक मेलाक आयोजन संसार केर हरेक कोन मे 24x7x365 दिन लेल रहैए, जाहिठाम बिना कोनो मूल्य कैँ पोथीक चयन करबाक ऑप्शन पाठकक सोझाँ रहैत छै।

मैथिली भाषा ओ साहित्य सँ संबंधित, मिथिलाक इतिहास सँ संबंधित, मैथिली भाषाक व्याकरण, लिपि, शब्द-कोश सँ संबंधित जँ कोनो तरहक जिज्ञासा हुअए, निस्संदेह "विदेह

आर्काइव" पर उपलब्ध पोथी सभ सहायक सिद्ध होएत। चर्यापद, डाकवचन, विद्यापति पद्यावली, वर्णरत्नाकर, मैथिली धूर्तसमागम, व्याडीभक्ति तरङ्गिणी सन पुरान धरोहर सदृश पोथी सभ सेहो उपलब्ध अछि।

डाकवचन सन उपयोगी पोथी विदेह साइट पर पाबि आह्लादित भेलहुँ, जाहि मे दिनानुदिनक क्रिया कलाप लेल निर्देश दैत दोहा सभ एकदम सहज, सरल भाषा मे लिखल गेल अछि। गृहस्थधर्म प्रकरण, खेती प्रकरण, यात्रा प्रकरण, वनस्पति प्रकरण, विविध प्रसंग, वर्षफल सन्निहित अछि। "डाकवचन"क बहुत रास दोहा सभ बूढ़-पुरानक मुहेँ निश्चित सुनल होएत सभकेँ। जेना- "कपड़ा पहिरी तीनि दिन। बुध बृहस्पति शुक्रदिन" जे पोथीसभ आब कतहु प्रिंट रूपमे उपलब्ध नहि अछि, तेहन पुरान पोथी सभ विदेह साइट पर धरोहर जकाँ सुरक्षित राखल अछि। से बड़का बात।

तहिना विदेह साइट पर एकटा महत्वपूर्ण धरोहरक रूपमे मिथिला-मैथिली सँ संबंधित महापुरुष आ आधुनिक ऐतिहासिक पुरुष सभक चित्र संकलित क' राखल गेल अछि। संगहि Mithila Painting - Modern Art-Photosक अन्तर्गत मैथिल समाज सँ जुड़ल जीव-जन्तु, गाछ-वृक्ष सँ ल' क' कटही गाड़ी, बाँस बला सिढ़ी, चचरी बला पुल सन विलुप्त

बस्तुक चित्र सभ सेहो संकलित कएल गेल अछि। शहर मे जनमल-पलल-बढ़ल नेना सभ उपरोक्त बस्तु सभक चित्रे टा देखि सकैत छथि। तैँ एहि तरहक चित्र-संकलन एकटा महत्वपूर्ण काज कहल जाएत।

इन्टरनेटक एहन सदुपयोग करबालेल विदेह टीम निस्संदेह प्रशंसाक पात्र छथि। इन्टरनेट नहि 'अन्तर्जाल'क सदुपयोग। बुझि पड़ैए ई 'अन्तर्जाल' शब्द सेहो विदेह टीमक आविष्कार छनि। तहिना 'विदेह' शब्दक प्रयोग कोनो पोथी-पत्रिकाक डिजिटल रूप लेल करब विदेह टीमक आइडिया सन बुझना जाइत अछि। आ ओकर प्रिंट कैँ 'सदेह' कहब। डिजिटल मैगजीन भेल "विदेह" आ तकर प्रिंट भेल "सदेह-विदेह",एहि तरहेँ एकटा पुरान शब्द कैँ नब रूप मे प्रस्तुत करब "विदेह" टीम कैँ अति विशिष्ट बनबैत अछि। विदेहक संपादक श्री गजेन्द्र ठाकुर जी मैथिली शब्दकोशक निर्माताक संगे शब्दक निर्माता सेहो छथि। जाहि तरहेँ तन-मन-धन सँ समर्पित छथि मैथिली भाषाक लेल 'विदेह' टीम, तकर जतेक प्रशंसा कएल जाए कम होएत।

एकटा त्रुटि, जे हमरा देखाएल विदेह साइट पर, तकर निदान आवश्यक। किछु पोथी डाउनलोड करैत काल खुजैत नहि रहैए, तकरा (जँ ओ उपलब्ध नहि अछि) तँ तकर नाम लिस्ट सँ हटा

देल जाए। अनेरे पाठकक समय बेरबाद नहि हुअए। जेना- डॉ. गोविन्द झाक कल्याणी कोश।

दोसर समस्या जे कोनो कोनो पोथीक पीडीएफ (PDF) मे पृष्ठ संख्याक क्रम बहुत एमहर ओमहर अछि। क्रमवार नहि रहने पाठक कैँ असुविधा होइत छैक। जेना एकटा एखन स्मरण आबैत अछि, Society Today केर पीडीएफ (PDF)। एतेक नीक, स्तरीय आलेख सँ युक्त पत्रिका, पढ़बा लेल विवश करैत टॉपिक सभ। हिन्दी, अंग्रेजी आ मैथिली, तीनू भाषाक आर्टिकल सभ एक पर एक। मुदा पढ़ब शुरु केलहुँ, तँ पृष्ठ सभ क्रमबद्ध नहि भेटल। निश्चित रूप सँ जतबा सुविधा पाठक लेल उपलब्ध कराओल गेल अछि से प्रशंसनीय अछि, मुदा त्रुटि दिस धिआन दिआएब सेहो आवश्यक ने!

तेसर गप्प, एकरा समस्या तँ नहि कहल जाएत मुदा एकटा सलाह हमर विदेह टीम लेल, जे पोथीक नाम वा लेखकक नाम सँ अल्फाबेटिकल-ऑर्डर मे पोथीक लिस्टिंग कएल जाए, तँ पाठक कैँ पोथीक चयन मे सुविधा भ' जेतनि।

विदेह साइट समयक संग पुष्पित-पल्लवित होइत रहए। पाठक/लेखक सभ लाभान्वित होइत रहथि चिरकाल धरि।

मैथिली डिजिटल पत्रकारिताक सूत्रधार: गजेन्द्र ठाकुर

कीर्तिनाथ झा

सर्जनात्मक लेखन, वा वैज्ञानिक तथा कला क्षेत्रक अनुसंधान विषयक लेखककें कृतिक प्रकाशनमे दू प्रकारक बाधासँ सामना करय पड़ैत छनि, अर्थ आ स्वीकृति। अर्थक बाधाक कारण स्वतंत्रता पूर्वक बहुतो सर्जनात्मक कृति छपि नहि सकल। रचनाकार अपने अर्थक जोगाड़ नहि कए सकलाह। फलतः, कृति दिबाड़क भोग भए गेल, वा सड़ि-गलि गेल। दोसर समस्या, स्वीकृतिक छलैक आ छैक: बहुतो गोटेकें सुनय पड़लनि जे, ‘की अंट- संट लिखैत छी!’ भले, ओ गुणवत्ताक कारण नहि, निर्धारित मानदण्डक कारण अस्वीकृत भए गेल हो।

डिजिटल प्रकाशन विभिन्न प्रकारें एहि दुनू समस्याक समाधान बनि कय आयल। डिजिटल मीडियापर लेखन आ प्रकाशनक सुविधा, ‘अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता’ लेल रचनाकार लोकनिक हेतु अभूतपूर्व वरदान साबित भेल। किन्तु, छपल पोथी/ पत्रिकाकें अपन आँखिए देखबाक आ पढ़बाक सेहन्ता, देशी भाषा-साहित्यक क्षेत्रमे डिजिटल प्रकाशन लोकप्रिय नहि भेल। तथापि, एंड्राइड मोबाइल फोन आ सोशल मीडियाक अभूतपूर्व क्रान्तिक आरम्भसँ पहिनहि, मैथिलीमे गजेन्द्र ठाकुर ‘विदेह’

विदेह पाक्षिक ई-पत्रिका ल’ कए उपस्थित भेलाह। मैथिलीमे ई सर्वथा नव छल, आ सर्वप्रथम छल। आइओ ‘विदेह’क अतिरिक्त मैथिलीमे कोनो आन ई-पत्रिका अछि, से हमरा बूझल नहि अछि।

‘विदेह’ पाक्षिक ई-पत्रिकाक वेबसाइट http://videha.co.in/ पर उपलब्ध सूचनाक अनुसार ‘विदेह’ पाक्षिक ई-पत्रिका सोलह वर्ष पूर्ण कए चुकल अछि। मुदा, ताहूसँ बेसी महत्वपूर्ण ई जे प्रकाशनक संपूर्ण अवधिमे ‘विदेह’ निर्बाध प्रकाशित भए रहल अछि; दस वर्षसँ बेसीसँ निरंतर ‘विदेह’ हमरो मेल बॉक्समे आबि रहल अछि। अस्तु, मैथिलीक प्रथम डिजिटल पाक्षिकक गौरवक अतिरिक्त, मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे मे ‘विदेह’ पाक्षिक ई-पत्रिका अनेक अर्थमे अद्वितीय अछि।

हमरा विचारें, ‘विदेह’ सर्वहारा साहित्यकारक पत्रिका जकाँ आरंभ भेल छल। आरंभहिसँ ‘विदेह’ एहन लेखक लोकनिक रचनाक प्लैटफॉर्म छल जे अपनाकें कतबहिमे टारल अनुभव करैत रहथि, जे अपन रचना मुख्यधाराक पत्र-पत्रिकामे नहि पठबैत रहथि, वा जनिक रचना मुख्यधाराक पत्रिकामे नहि छपैत छलनि। हमरा जनैत, ई ‘विदेह’क मूल परिचय छल। आरंभमे लेख केर गुणवत्ता आ विविधताक दृष्टिए ‘विदेह’ झूस अवश्य छल, किन्तु, जनमिते पत्रिका सर्वगुण संपन्न भए जेबाक अपेक्षा

असंगत। ताहूमे ई उद्यम मैथिली पत्रकारितामे नव प्रयोग छल। तें, हम 'विदेह' पाक्षिकक संपादक गजेन्द्र ठाकुरजीकें मैथिली डिजिटल पत्रकारिताक सूत्रधार मानैत छियनि। बितैत समयक संग स्थिति बदलल। क्रमशः मुख्यधाराक लेखक लोकनि सेहो 'विदेह' मे लेखकीय योगदान देब सहयोग आरंभ केलनि। तथापि, एखनो रचनाक विविधताक अभाव रहैछ। कारण संपादकीय नीति थिक वा रचनाकारकर लोकनिक सहयोगक अभाव, कहब असंभव। मुदा, ई बिन्दु एतय विचारणीय नहि।

विदेह निःशुल्क अछि। ई एहि पत्रिकाक तेसर विशेषता थिक। संचालक आ संपादक-मंडल जाहि प्रकारें एहि उद्यमकें एतेक दिनसँ निरंतर चलबैत आयल छथि, से प्रशंसनीय तं थिके, आश्चर्यजनक सेहो थिक। ई संपादक गजेन्द्र ठाकुर, आ हुनकर टीम केर, सबसँ बड़का उपलब्धि थिकनि।

किन्तु, 'विदेह' डिजिटल प्लैटफॉर्मक उपलब्धिक लिस्ट एतबे टा नहि। बितैत समयक संग 'विदेह' विभिन्न दिशामे प्रगति केलक अछि। 'विदेह'क एहि सब प्रगति सबसँ ओ सब केओ परिचित छथि जे http://videha.co.in/ वेब पेजपर विविध सामग्रीक अन्वेषणमे यदा-कदा अबैत छथि। एहि वेबसाइटपर उपलब्ध मुख्य साहित्यिक-सामग्रीक विवरण निम्नवत अछि:

1) विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक
2) मैथिली ऑडियो-विडियो संकलन
3) मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य
4) संघलोक सेवा आयोगक परीक्षामे मैथिली वैकल्पिक विषयक हेतु छात्रोपयोगी सामग्री

संघलोक सेवा आयोगक परीक्षामे मैथिली वैकल्पिक विषय रखनिहार प्रत्याशी लोकनिक हेतु 'विदेह' डिजिटल प्लैटफॉर्मपर संकलित सामग्री प्रतियोगी लोकनिक हेतु बड़का सहायता थिक। इहो एहि प्लैटफॉर्मक उपलब्धि थिक। कारण, मैथिलीमे पोथीक उपलब्धता बड़का समस्या थिक; किनबाक इच्छा रहितो, पोथी उपलब्ध नहि होइछ। एहना स्थितिमे निःशुल्क सामग्री डाउनलोडक सुविधा वरदान थिक। हम स्वयं कतेक पोथी 'विदेह' वेबपेजसँ डाउनलोड केने छी। 'विदेह'क संपादक-मंडल एहि हेतु साधुवादक पात्र छथि।

एकटा विषय आओर: वर्ष 2015 सँ एखन धरि 'विदेह' पाक्षिकमे अनेक मैथिली विद्वान- अरविन्द ठाकुर, जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', रामलोचन ठाकुर, राजनन्दन लाल दास, केदारनाथ चौधरी, प्रेमलता मिश्र, शरदिंदु चौधरी, अशोक आ रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'-पर केन्द्रित विशेषांक छपल अछि।

एहिमे किछु विशेषांकक प्रिंट संस्करण सेहो उपलब्ध अछि। ई सब किछु महत्वपूर्ण थिक।

मुदा, उपरोक्त सूची http://videha.co.in/ प्लैटफॉर्मपर उपलब्ध संपूर्ण सामग्री, आ श्री गजेन्द्र ठाकुरक उपलब्धिक संपूर्ण सूची नहि थिक। उपलब्ध सामग्रीक सूचना वेब पेजपर उपलब्ध अछिए।

सारांशमे, हमरा कहैत हर्ष होइछ जे 'विदेह'क एतेक दिनक यात्रा, आ गजेन्द्र ठाकुरक श्रम प्रशंसनीय थिक। हम श्री गजेन्द्र ठाकुर, आ 'विदेह', दुनूक उत्तरोत्तर प्रगतिक कामना करैत छी।

मैथिलीक इंटरनेट मैन: गजेन्द्र ठाकुर

लाल देव कामत

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सँ सामग्री ऊर्जा आ उपकरणक उपयोग प्रिंट मीडियाक मुकाबले तीव्रतम होइछ। नव मीडियाक पैघ भाग इलेक्ट्रॉनिक मीडिया रूपेमे पसरल अछि। सरल इलेक्ट्रॉनिक जनतब आ डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक जनतब दू तरहक होइछ। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कोनो संरचनामे भ' सकैछ। कंपेनियन ऑडिट प्रस्तुत रचना आ सब्सिडी आवेदनक स्क्रीनिंग मध्य कयल काजक संकेत करैत अछि। इयह प्रक्रिया रचनाकारगणकेँ हुनक नियंत्रण केर स्वीकृत दिशानिर्देशकेँ पूर्ण करबाक आग्रह करैछ। आओर महत्वपूर्ण ख़ोज अनुचित संदर्भ, स्वीकार्य समझ आ व्यक्तिगत दृष्टिकोणकेँ छिरिआइसँ कम करैछ। समाचार मीडिया जनसंचार माध्यमक ओहन तत्व छी जाहि सँ आम जनता धरि समाचार, जनसम्पर्कक ऊपर धियान केन्द्रित करैछ। एहिमे प्रिंट मीडिया आ रेडियो-टेलीविजन हालमे बसियाइल लगैछ, सिवाय इन्टरनेट के। ग्लोबल मीडिया जर्नल, इंटरनेशनल सोशियोलॉजी जुगमे मास कम्युनिकेशन सोसायटी आगू सदति रहत। मैथिली मे इन्टरनेट गजेन्द्र ठाकुर जी द्वारा (संचालित याहू सिटीज पर) ई-पत्रिका 'भालसरिक गाछ' नामसँ पहिल उपस्थिति 2000 ई. मे भेल छल। से याहूसिटीज एकाउंट बन्न भेलापर 2004 मे एहि नाम सँ ब्लाग श्री ठाकुर जी बनौलनि।

तकरे नाम जनवरी 2008 मे विदेह नाम पड़लैक। तेँ पछिला 2004 सँ ISSN भेटलैक। मैथिली विकीपीडिया केर शुरुआत सन् 2014 सँ जे कहल जाइछ, से पूर्णतः भ्रामक अछि। मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास के लेखक आशीष अनचिन्हार एहि तथ्यकेँ सुस्पष्ट केलनि अछि। जहिना मिथिलाक इतिहास संदर्भमे विभिन्न इतिहासकारक टुकरी-टुकरीमे प्रमाण पृथक-पृथक भेटैछ, तहिना मैथिली विकीपीडिया संबंधमे मत अलग-अलग आयल अछि। अक्टूबर 2014 सँ पूर्वहि सितम्बर धरि कम मैथिली अनुवाद रहितो मैथिलीक पन्ना गजेन्द्र जी आ राजेश रंजन जीक सफल प्रयाससँ विकी घोषणा धरि भेल रहय। एडमिन बनबाक लेल गजेन्द्र जी लग प्रस्ताव एलनि तँ हुनका अपन समय देखय पड़लनि आ ओ राजेश जी सँ मन्त्रणा करैत बिप्लव आनंद नाम पर सहमति कयलनि। ई हुनक महानता थिक जे एक्टिभ बिप्लव आनंद जीकेँ विकिपीडिया टीम गछि लेलक। आओर अक्टूबर 2014 मे मैथिली विकीपीडिया लाइभ भ' गेल। विकिपीडिया केर एडमिन बनबाक जे मेल सब छै से पाठक लेल विदेहक अंक-351 द्रष्टव्य होएत। गजेन्द्र ठाकुर जी द्वारा यूनीकोड, गूगल ट्रांसलेशन एवं विभिन्न Community Project मेँ हुनकर जे संलिप्तता छनि ताहि सँ संबंधित ई-मेल सार्वजनिक कयल गेल छैक। सन् 2008 क' जनवरीमे रद्द भेला सन्ता फेर गजेन्द्र ठाकुर रिक्वेस्ट केलखिन आ अनूवाद काज पूरा

करबाक लेल ओ अपना टीम सँ सहयोगक अपेक्षा केलनि। से विदेह अंक-3 ,1 फरबरी के अपील छपल रहनि।

ई घोर आश्चर्यक बात छी, जहन जे कोनू काज आरंभ करैछ तँ ई मनोवृत्ति पोसि लैत जाइ छथि जे हमहीं ई काज प्रथमत: शुरू कयल। ई जे पहिल बनबाक लोभ संवरण नहि कए बलथोथरि करैछ, तकर तँ प्रमाण दिअ पड़त किनै। मुदा आधुनिक इतिहासकार समय-समय पर एहन मनोवृतिकेँ मैथिल सभक पर्दाफाश करैत रहलाह अछि। ताहीक्रममे आब कहबाक अछि जे, मैथिली विकिपीडियाक सेहो इतिहास एहने छैक। जाहि बिप्लव आनंदकेँ गजेन्द्र ठाकुर आ राजेश रंजन आपसी सहमतिसँ विकिपीडियाक संचालक बनाओल, सएह बिप्लव आनंद आ ताहि संग नेपालक किछ लोक ई कहि रहला अछि जे मैथिली विकिपीडिया के शुरुआत 2014 सँ भेलै। जँ एप्रूवलकेँ शुरुआत मानल जाइत हो तखन तँ ई आरो आवश्यक छै, जे एप्रूवल सँ पहिनुक कयल काज सार्वजनिक होय। से निहायत ज़रूरी छैक। गजेन्द्र जीक आ राजेश रंजन जीक नाम अलोपित कोना क' सकैए कियो। विदेह मैथिलीक ई-पत्रिका पहिल सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर छथि जे एकसँ अधिक यथा-: ब्रेल, ब्राह्मी, खरोष्ठी, कैथी, नेबारी, आई पी ए, उर्दू, तिब्बती, तिरहुता (मिथिलाक्षर) लिपि आ देवनागरीमे पत्रिकाक अंक नियमित प्रकाशित करय छथि।

गजेन्द्र जीक उपलब्धि अनेको छनि जकर विस्तृत विवरण एहि लघु आलेखमे संभव नहि भ' सकल।

पञ्जी साहित्यमे गजेन्द्र ठाकुरक योगदान

विनयानन्द झा

मिथिलाक भाषा, साहित्य एवं सांस्कृतिक क्षेत्रमे गजेन्द्र ठाकुरक योगदान महत्वपूर्ण अछि। पञ्जीक क्षेत्रमे सेहो हुनक योगदान प्रशंसनीय अछि। पञ्जीमे जेना कि सर्वविदित अछि जे मैथिल ब्राह्मण एवं मैथिल कर्ण-कायस्थ सभक उतेढ़ (वंशावली) संकलन राजा हरिसिंह देव कालमे प्रारंभ भेल। प्रस्तुत लेखक मते ई संकलन 1309 ई. सँ 1324 ई. केर बीच भेल होएत। एहि समयमे संकलनकर्तागण तात्कालीन व्यक्ति सभकेँ विभिन्न गाममे जा कऽ गोत्रानुसार नाम सूचीबद्ध कएलनि एवं विद्यमान गृह प्रमुखसँ हुनक सात-आठ पीढ़ी उपर के पूर्वजक नाम सूचीबद्ध करबाक सेहो प्रयास कएलनि। अतः कोनो व्यक्ति विशेष के जे सात-आठ पीढ़ी उपरक व्यक्ति छलाह हुनक आवासीय गामक नामपर ओहि व्यक्तिक अलग पहिचान संबद्ध गोत्रक अंतर्गत बनाओल गेल एवं हुनक गामकेँ हुनक 'मूल' कहल गेल। ओहि प्राचीनतम ज्ञात व्यक्तिकेँ ओहि मूलक 'बीजीपुरुष' कहल गेल। बीजीपुरुषसँ संकलन काल धरि हुनक संतति-शाखा जाहि-जाहि गाममे परिव्रजित भऽ बसि गेलाह से गाम सभ ओहि मूलक शाखा (मूलग्राम) कहाओल। पञ्जीक आरंभिक ग्रंथ सभ वर्तमान समयमे उपल्बध नहि अछि। प्राचीनतम जे दू संकलन बीसम सदीमे उपल्बध छल ओ दूनू

एकहि समय (अठारहम शताब्दीक पूर्वार्द्ध)मे लिखल गेल। एक मंगरौनीक पञ्जीकार पुरुषोत्तम झा द्वारा लिखल गेल (1719 ई.) एवं पुरुषोत्तम पञ्जी नामे ज्ञात अछि। दोसर ककरौड़क पञ्जीकार छोटी झा नामसँ प्रसिद्ध देवानन्द पञ्जी नामसँ जानल जाइत अछि। परवर्ती जतेक पञ्जी संकलन अछि उपर्युक्त दूनूपर आधारित अछि। एहिमे पुरुषोत्तम पञ्जी राज पुस्तकालय, दरभंगामे बीसम सदीक मध्य धरि पाओल जाइत छल। देवानन्द पञ्जी हुनक वंशज शिवनगर (पूर्णिया)क पञ्जीकार स्व. मोदानन्द झाक परिवारमे अद्यावधि सुरक्षित कहल जाइत अछि।

एहि महत्वपूर्ण देवानन्द पञ्जीक प्रकाशन गजेन्द्र ठाकुर दू अन्य विद्वान नागेन्द्र कुमार झा एवं पञ्जीकार विद्यानन्द झाक संग 2009 ई. मे "जीनोम मैपिंग (450 ए.डी सँ 2009 ए.डी) मिथिलाक पञ्जी प्रबंध" शीर्षकसँ कएलन्हि। स्पष्ट अछि जे एहिमे देवानन्द पञ्जीक बादक संकलन हुनक वंशज लोकनि करैत अएलाह तकरो प्रकाशित कएल गेल होएत।

एकहि जिल्दमे, पैघ आकारमे ई एक मोट ग्रंथ अछि। उतेढ़क वर्णनमे प्रत्येक पृष्ठमे दू स्तंभ (Column) अछि, वामा कातक स्तंभ तिरहुतामे अछि एवं दहिना कातक स्तंभ ओकरे देवनागरी लिप्यंतरण अछि। प्राचीन पञ्जी, उपटीप (श्रोत्रिय वंश) एवं

नगराम (श्रोत्रियेतर वंश) वर्गक उतेढ़ वर्णनसँ पूर्व पञ्जी संबंधी विस्तृत भूमिका अछि। ई भूमिका पहिने देवनागरी लिपिमे तत्पश्चात् तिरहुतामे मैथिली भाषामे अछि।

एतेक महत्वपूर्ण प्रकाशन रहितो सामान्यतः सामान्यजन एकरासँ लाभान्वित होएबासँ वंचित छथि। जाहि प्रकारे नाम सभक वर्णन विभिन्न मूलक अछि ओ पञ्जीक पोथीमे जाहि प्रकारे रहैत अछि ओही क्रममे एतहु प्रकाशित अछि जे सामान्य पाठक अथवा शोधार्थी हेतु बोधगम्य नहि अछि।
अतः कोनो मूल ओकर शाखा विशेष वा परवर्ती गाम विशेषक नामावलीपर काज कएनिहार अथवा अन्य जिज्ञासु पाठककेँ ओ अंश भेटब संभव नहि अछि। यदि प्रत्येक वंश (मूल)क वंशावलीक नामक वर्णन अलग-अलग अध्याय वा शीर्षक (मूलानुसार)क अंतर्गत शाखा क्रमे एवं परवर्ती गामक क्रमे रहैत तऽ पुस्तक अति उपयोगी सामान्यजन एवं शोधार्थी दूनू वर्गक पाठकक हेतु होइत। तथापि अपना तरहक ई विलक्षण एवं महत्वपूर्ण एवं विशाल (विस्तृत उतेढ़पूर्ण) कार्य अछि। एकर बाद योगनाथ झाक संपादनमे मैथिल ब्राह्मणक उतेढ़पर "पञ्जी प्रबंध" शीर्षकसँ तीन भागमे पुस्तक प्रकाशित अछि। किंतु संपादक महोदयकेँ पञ्जीक पृष्ठभूमि नहि रहबाक कारणे उक्त पुस्तक त्रुटिपूर्ण ओ भ्रामक अछि। अस्तु उतेढ़पर 'जीनोम मैपिंग' एकमात्र महत्वपूर्ण प्रकाशन अछि। जीनोम मैपिंगमे

प्रस्तुत लेखककेँ किछु तथ्यात्मक त्रुटि सेहो परिलक्षित भेल जकर ऐतिहासिक महत्व अछि। एहिमेसँ दू बातक विस्तारसँ निच्चा चर्चा कएल जा रहल अछि। प्रत्येक मूलक बीजीपुरुषक समकालमे माण्डर मूलक सदस्यक नाम अछि "नरसिंह"। मुदा एहि वंशमे 'नरसिंह'सँ पूर्वक 18-20 पीढ़ी उपरसँ नाम सेहो पञ्जी-पुस्तक सभमे संकलित अछि। अतः एहि वंशक जे प्राचीनतम ज्ञात व्यक्ति छलाह हुनक नाम छल 'त्रिनयन भट्ट' जे माण्डला (वर्तमानमे मध्यप्रदेश) निवासी रहथि। एहि दुआरे एहि मूलक नाम माण्डला भेल जे बादमे माण्डर कहाए लागल आ बोल-चालमे मड़रय भऽ गेल (माण्डलय=माण्डरय=मड़रय)। नरसिंहसँ उपर त्रिनयन भट्ट तक के नाम जीनोम मैपिंगसँ पूर्व दू अन्य पुस्तकमे अछि- एक प्रस्तुत लेखकक "मिथिला की सारस्वत सुषमा"1 एवं दोसर पं.गोविन्द झा रचित "अतीतालोक"2। एहि तीनूमे नाम एवं ओकर संख्यामे भिन्नता अछि। निच्चा तीनू सूची प्रस्तुत अछि-

क्रम संख्या	मिथिला की सारस्वत सुषमा (पृष्ठ-40)	अतीतालोक (पृष्ठ-51)	जीनोम मैपिंग (पृष्ठ-1.11)

1	त्रिनयन भट्ट	त्रिनयन भट्ट	त्रिनयन भट्ट
2	आदि भट्ट	आदि भट्ट	आर्य भट्ट
3	विजय भट्ट	उदय भट्ट	उदय भट्ट
4	त्रिलोचन भट्ट	विजय भट्ट	विजय भट्ट
5	धूर्जटी मिश्र	त्रिलोचन भट्ट	सुलोचन भट्ट (सुनयन भट्ट)
6	धर्मजटी मिश्र	सुलोचन भट्ट	--भट्ट (हाथसँ धूर्जटी लिखित)
7	धाराजटी मिश्र	धूर्जटी भट्ट	धर्मजटी मिश्र
8	ब्रह्मजटी मिश्र	धर्मजटि भट्ट	धाराजटी मिश्र
9	श्रीपुजटी	चन्द्रजटि भट्ट	ब्रह्मजटी मिश्र
10	विष्णुजटी मिश्र	अजय सिंह	त्रिपुरजटी मिश्र
11	अजय सिंह	विजय सिंह	विघुजटी मिश्र
12	विजय सिंह	पहराज सिंह	अजय सिंह
13	पहराज सिंह	परशुराम	विजय सिंह
14	परशुराम सिंह	आदिवाराह	पहराज (हाथसँ लिखित)
15	आदिवाराह सिंह	वाराह	परशुराम (हाथसँ लिखित)
16	वाराह सिंह	दुर्योधन सिंह	आदिवाराह

17	दुर्योधन सिंह	नरसिंह	महोवाराह
18	नरसिंह	-------	दुर्योधन सिंह
19	------	-------	नरसिंह

एतए प्रस्तुत लेखकक सूची अर्थात् प्रथम सूचीमे अठारह टा नाम अछि, गोविन्द झाक सूचीमे सत्रह नाम अछि एवं जीनोम मैपिंगमे उन्नैस टा नाम अछि। लेखकक हेतु ई सूची पूर्णियाक शिवनगर निवासी पञ्जीकार मोदानन्द झा (जीनोम मैपिंग केर संकलनकर्ता त्रयमेसँ एक विद्यानन्द झाक पिता) 7 जुलाई 1988 ई.मे एक पत्र द्वारा प्रेषित केने रहथि। लेखकक सूचीमे उदय भट्ट नाम नहि अछि शेष दूनू सूचीमे अछि। बहुत संभव अछि वृद्धावस्था कारण लेखक हेतु सूची निर्माणमे पञ्जीकार मोदानन्द झा द्वारा ई नाम लिखब छूटि गेल हो। अतः ई बात सोचि जे ई नाम मोदानन्द झा द्वारा लिखब छूटि गेल उदय भट्टक नाम प्रथम सूचीक तेसर स्थानपर जोड़ि देल जाए तऽ प्रथम एवं तेसर सूची नामक क्रम एवं संख्यामे एक भऽ जाइत अछि। हेबाको चाही कारण दूनू सूची एकहि स्थानसँ पिता एवं पुत्र द्वारा विभिन्न समयमे लिखल गेल। जीनोम मैपिंगमे किछु नाम विद्यानन्द झा द्वारा पढ़बासँ असमर्थ भऽ जएबाक कारणे ओ स्थान प्रकाशनमे रिक्त छोड़ि देल गेल एवं पुस्तक प्रकाशनक पश्चात् ओ नाम सभ रिक्त स्थान अथवा रिक्त स्थान नहियो रहलापर जोड़ि देल गेल

(जेना कि विद्यानन्द झा प्रस्तुत लेखकसँ कहलनि)। पुस्तकक संबद्ध अध्याय एवं पृष्ठ (1.11) पर तऽ हाथसँ संशोधन कएल गेल किंतु भूमिकामे (पृष्ठ0.15) ओ नाम सभ त्रिनयन भट्टसँ नरसिंह के उल्लेख क्रममे नहि जोड़ल जा सकल। अतः ओतए मात्र सत्रह पीढ़ीक सदस्यक नाम अछि। यद्यपि भूमिकाक ओही पृष्ठपर कहल गेल अछि नरसिंहसँ त्रिनयन तक बारह पीढ़ी। एतए बारह संख्या भ्रमवश अछि अथवा छापाखानाक त्रुटि भऽ सकैत अछि।

जेना कि उपर कहल गेल अछि जे यदि प्रथम सूचीमे तेसर स्थानपर उदय भट्ट जोड़ि देल जाए तँ नामक क्रम एवं संख्या तेसर सूचीक समान भऽ जाइत अछि तथापि किछु नाम दूनू सूचीक मेल नहि खाइत अछि। कहल जा सकैत अछि जे ई भिन्नता दूनू सूचीक निर्मातामेसँ एक द्वारा मौलिक ग्रंथक गलत पाठक परिणाम होएत।

लेखक मते उपर्युक्त सूचीक दसम स्थानपर प्रथम सूचीमे नाम विष्णुजटी के जीनोम मैपिंगमे विघुजटी (एगारहम स्थानपर) लिखल गेल अछि। जीनोम मैपिंगमे संभवतः विधुजटी हेतु मुद्रण असावधानीवश विघुजटी मुद्रित अछि।3 अस्तु देवानन्द पञ्जीमे मूलतः नाम विष्णुजटी वा विधुजटी होएत।
उपर्युक्त सूचीक चारिम स्थानक नाम अछि त्रिलोचन जाहि हेतु

जीनोम मैपिंगमे (पाँचम स्थानपर) नाम अछि सुलोचन (सुनयन)। सामान्यतः एतए ई प्रतीत होइत अछि जे दूनू सूचीकर्तामे एक गलत पाठ देने होथि। मुदा समस्या तखन गंभीर भऽ जाइत अछि जखन पं. गोविन्द झाक सूचीमे दूनू नाम अछि, अर्थात् त्रिलोचन एवं हुनक पुत्र सुलोचन। यदि एकरा प्रमाणिक मानल जाए तऽ कहल जा सकैत अछि जे मोदानन्द झा द्वारा सुलोचन लिखब एवं विद्यानन्द झा द्वारा त्रिलोचन लिखब छूटि गेल होएत। संगहि पं.गोविन्द झाक सूचीमे एक नाम अछि चन्द्रजटी (क्रमांक नौ) जे शेष दूनू सूचीमे नहि अछि। पं.गोविन्द झाक सूचीमे धाराजटी, ब्रह्मजटी एवं श्रीपुजटी (त्रिपुरजटी) नाम नहि अछि जे शेष दूनू सूचीमे अछि। अस्तु कहल जा सकैत अछि जे पं. गोविन्द झाक सूचीक स्रोत देवानन्द पञ्जीसँ भिन्न रहल होएत। ओ स्वयं माण्डर वंशक छथि अतः परंपरासँ ई सूची हुनक परिवारमे हो।

प्रस्तुत लेखक मते प्रथम सूचीमे जे श्रीपुजटी (क्रमांक नौ) नाम अछि वएह तेसर सूचीमे त्रिपुरजटी (क्रमांक दसपर) अछि। दूनू सूचीकर्तामे एक गलत पाठ केने छथि। यद्पि पं.गोविन्द झाक सूचीकेँ त्रुटिपूर्ण एवं अपूर्ण शेष दूनू सूचीक आलोकमे कहल जा सकैत अछि तथापि किछु बातक विचार आवश्यक। यथा ओहिमे त्रिलोचन एवं सुलोचन दूनू नाम अछि। शेष दूनू सूची एहिमेसँ

एक-एक नाम दैत अछि। बहुत संभव अछि जे प्रथम एवं तेसर सूचीक निर्माता द्वय एक नामकेँ लिखब वा पढ़बमे त्रुटि केने होथि तँइ छूटि गेल हो। चन्द्रजटि नाम या तऽ मौलिक देवानन्द पञ्जीमे छूटल हो अथवा दूनू सूचीकर्ताक असावधानीवश एहि दूनू सूचीमे नहि पाओल जाइत अछि। अस्तु उपर्युक्त विवेचनक परिप्रेक्ष्यमे तीनू सूचीक तुलनात्मक अध्य्यन करैत एक नवीन सूची बनाओल जाए तऽ त्रिनयनसँ नरसिंह धरि 21 टा नाम होएत। माण्डर वंशपर शोध केनिहार निर्धारित करथि जे निम्नलिखित सूची कतेक विश्वसनीय अछि-

क्रम संख्या	नाम
1	त्रिनयन भट्ट
2	आदि भट्ट (आर्यभट्ट गलत पाठ)4
3	उदय भट्ट
4	विजय भट्ट
5	त्रिलोचन भट्ट
6	सुचलोचन भट्ट (सुनयन भट्ट?)
7	धूर्जटि मिश्र
8	धर्मजटि मिश्र
9	चन्द्रजटि मिश्र (क्रमांक संदिग्ध)
10	धाराजटि मिश्र

11	ब्रह्मजटि मिश्र
12	श्रीपुजटि / त्रिपुरजटि (दूनू एकहि व्यक्ति)
13	विष्णुजटी / विधुजटि (एकहि व्यक्ति, पाठभेद)
14	अजय सिंह
15	विजय सिंह
16	पहराज सिंह
17	परशुराम सिंह
18	आदिवाराह सिंह
19	वाराह सिंह
20	दुर्योधन सिंह
21	नरसिंह

प्रत्येक स्रोतमे दुर्योधन सिंहक तीन पुत्रक नाम अछि- सोढ़र, जयसिंह एवं नरसिंह, किंतु मात्र नरसिंहक संतति शाखाक विवरण भेटैत अछि।

मिथिलामे कर्णाट वंशक पतन पश्चात् खौआड़े जगतपुर मूलक राजपंडित कामेश्वर ठाकुर राजा भेलाह। राज्य-प्राप्तिक पश्चात् एहि वंशक एक पूर्वज ओएन ठाकुरक "ओइनी" गामक निवास केर आधारपर एक अलग मूल "ओइनवार ओइनी" कहल गेल।

उपेन्द्र ठाकुरक हिस्ट्री ऑॅफ मिथिलामे कामेश्वर ठाकुर सभ

भाइक नाम अछि- कामेश्वर, हर्षण (हरिषण), त्रिपुर, तिवारी, सलखन (सलक्षण) एवं गौड़।5 जीनोम मैपिंग (पृष्ठ-1.138) मे कामेश्वर सभ भाइक नाम निम्नलिखित अछि- कामेश्वर, रामेश्वर हरीश्वर, त्रिपुरे, तेवाड़ी, सलखन एवं गोढ़ि। जीनोम मैपिंग मे हर्षण नाम नहि अछि। पर्वनिर्णय ग्रंथमे संपादक कुशेश्वर शर्मा (कुमर) केर परिचयमे कहल गेल अछि जे ई राजपंडित कामेशवरक तृतीय भ्राता हर्षण ठक्कुरसँ बारहम पीढ़ीमे अबैत छथि।6एही कुशेश्वर शर्मा (कुमर) लिखित एक ग्रंथ अछि "कुमरवंशावली" जाहिमे सौराठ (मधुबनी)क तात्कालीन दू प्रसिद्ध पञ्जीकार लूटन झा एवं बिसुनी मिश्र द्वारा बनाओल एक कुलवृक्ष अछि जे ओएन ठाकुरसँ आरंभ अछि।7 एहि के अनुसार कामेश्वर विभिन्न भाइक नाम छल- कामेश्वर ठाकुर, रामेश्वर ठाकुर, हर्षण ठाकुर, त्रिपुर ठाकुर, तेवाड़ी ठाकुर, एवं गौड़ ठाकुर।

जीनोम मैपिंगमे हर्षण नाम तऽ नहिए अछि संगहि ओहिमे सलखन केर वंशजक नाममे कतिपयमे राजा महाराजा कहल गेल अछि एवं आस्पदमे सिंह एवं कुमर पाओल जाइत अछि जाहिमेसँ अधिकांश सदस्यक नाम कुमरवंशावलीमे हर्षण के संतति शाखामे दर्शाओल गेल अछि। जीनोम मैपिंगमे सलखनक पुत्रद्वय शिवाइ एवं भट्टगोनाइमे शिवाइ के तीन पुत्रक उल्लेख अछि- कुमर प्रभाकर, श्रीकर एवं सुधाकर। कुमरवंशावली

अनुसार हर्षण के पुत्र छलाह शिवाइ एवं गोनन। शिवाइक प्रथम पत्नीक पुत्रगणक नाम छल कुमर प्रभाकर, कुमर श्रीकर, कुमर सुधाकर एवं रविदत्त।

उपेन्द्र ठाकुर कामेश्वर बंधुगणक नामोल्लेख परमेश्वर झाक मिथिलातत्व विमर्शक आधारपर करैत छथि।8 अतः मिथिलातत्व विमर्शक सूची एवं कुमरवंशावलीक सूचीमे हर्षण नाम पाओल जाइत अछि। यदि ई मानि कऽ चली जे जीनोम मैपिंगमे हर्षण नाम मुद्रण असावधानीवश छूटि गेल होएत तखन सलखन केर संततिक साम्य हर्षणक संततिसँ नहि होइत जखन कि कुमरवंशावलीमे सलखन नामक व्यक्तिक कोनो अस्तित्व नहि अछि। अस्तु ई एक शोधक विषय प्रतीत होइत अछि।

संदर्भ-

1) विनयानन्द झा, मिथिला की सारस्वत सुषमा, दिल्ली (2007 ई.), पृष्ठ-40

2) पं गोविन्द झा, अतीतालोक, अखियासल प्रकाशन, लालगंज, मधुबनी पटना, 2005 ई. पृष्ठ-51

3) योगनाथ झा 'सिंधु' संपादित पञ्जी प्रबन्ध, भाग-1 (अंकित प्रकाशन, दरभंगा,2010ई., पृष्ठ-242) हेतु उतेढ़ (वंशावली) विद्यानन्द झा प्रदान केने रहथि। ओहि पुस्तकमे विधुजटी नाम

अछि। अतः जीनोम मैपिंगमे विघुजटी के मुद्रण त्रुटि कहल जा सकैत अछि।

4) त्रिनयन के पुत्र सर्वत्र आदि भट्ट लिखल जाइत अछि। योगनाथ झाक पञ्जी प्रबंध भाग-1 जकर उतेढ़ विद्यानन्द प्रदान केलनि ओहूमे आदि भट्ट नाम अछि। अतः कहल जा सकैत अछि जे जीनोम मैपिंगमे "आर्यभट्ट" नाम गलत पाठ अछि।

5) उपेन्द्र ठाकुर, हिस्ट्री ऑॉफ मिथिला, मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा (1956 ई.) पृष्ठ-294

6) कुशेश्वर शर्मा (सं), पर्वनिर्णय, दिल्ली, 1985, पृष्ठ-141

7) कुशेश्वर शर्मा, कुमरवंशावली, पृष्ठ-5

8) परमेश्वर झा, मिथिलातत्व विमर्श, मैथिली अकादमी प्रकाशन, पटना, द्वितीय संस्करण, 2013 ई. पृष्ठ-89 मे उपर्युक्त 6 नाम देलाक पश्चात् कहल गेल अछि जे "कतहु-कतहु सातम पुत्र कामेश्वरक बाद रामेश्वर लिखित अछि"। एहि प्रकारे जेना पर्वनिर्णय एवं कुमरवंशावलीमे हर्षण के तेसर भाइ कहल गेल अछि से परमेश्वर झाक लेखनसँ सेहो पुष्ट होइत अछि। लेकनि परमेश्वर झा एवं कुमरवंशावली हर्षण के उल्लेख करैत अछि लेकिन जीनोम मैपिंगमे ई नाम नहि अछि। तहिना परमेश्वर झा एवं जीनोम मैपिंगमे सलखन नाम के उल्लेख अछि किन्तु कुमरवंशावलीमे नहि। जीनोम मैपिंगमे तेसर स्थानपर हरीश्वर नाम अछि। संभवतः देवानन्द पञ्जीमे हर्षण (हरिषण, वा हरिषेण) हेतु हरीश्वर नाम हो। हुनक परंपरामे वास्तविक नाम

हरीश्वर हो एवं अन्य पञ्जीकारक परंपरामे वस्तविक नाम (वा ज्ञात नाम) हर्षण वा हरिषेण हो। परमेश्वर झा एवं कुमरवंशावलीमे जतए अंतिम नाम गौड़ देल अछि जीनोम मैपिंग ओकर पाठान्तर गोढ़ि दैत अछि।
योगनाथ झा 'सिंधु' संपादित पञ्जी प्रबन्ध, भाग-2 (अंकित प्रकाशन, दरभंगा,2012 ई., पृष्ठ-371 मे निम्नलिखित नाम अछि-कामेश्वर, राजेश्वर, हरीश्वर, त्रिपुरे, तेवाड़ी, सतलख एवं गोढ़ि। चूँकि योगनाथ झा हेतु ई संकलन जीनोम मैपिंग के विद्यानन्द झा प्रदान केलनि तँइ कहल जा सकैत अछि जे एहि पुस्तक (पञ्जी-प्रबन्ध, भाग-2) मे रामेश्वर हेतु राजेश्वर एवं सलखन हेतु सतलख मुद्रण त्रुटि हो अथवा संपादकीय त्रुटि हो।

संपादकीय टिप्पणी- संदर्भ-3, 4 एवं 8 मे विनयानन्दजी कहि रहल छथि जे “योगनाथ झा 'सिंधु' संपादित पञ्जी प्रबन्ध, भाग-1 एवं भाग-2 हेतु उतेढ़ (वंशावली) विद्यानन्द झा प्रदान केने रहथि। मुदा तथ्य ई थिक जे योगनाथ झाजी, विद्यानन्दजीक सामग्री केर उपयोग केलाह। जखन जीनोम मैपिंग केर अंतिम प्रूफ आबि गेल रहै तखन पञ्जीकार विद्यानन्दजीसँ योगनाथ झा आग्रह केलखिन जे हुनका सोति भाग बला विवरण देल जाए जकरा ओ अपन व्यक्तिगत काज लेल रखताह। विद्यानन्दजी जीनोम मैपिंग केर मुद्रित प्रति (सोति बला) देलखिन। मुदा

योगनाथ झाजी, जीनोम मैपिंग केर ओहि भागकेँ कतिपय संशोधनक संग अपना नामे प्रकाशित करबा लेलाह। जखन ई बात विद्यानन्द झाकेँ पता चललनि तँ योगनाथ झाकेँ हुनक एहि काज लेल जे कहबाक छलनि से कहलखिन संगे-संग जीनोम मैपिंग केर दोसर भाग "जीनियोलोजिकल मैपिंग (450 ए.डी.सँ 2009 ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध -भाग-2 (संपादक- गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा) जे 2012 मे प्रकाशित भेल तकर आमुखमे योगनाथ झाक एहि गलत काजकेँ संपादकत्रय लिखित रूपे अनलाह। विनयानन्दजी पञ्जीकार विद्यानन्दजीसँ संपर्क कऽ सकै छथि आ पाठक जीनोम मैपिंग केर दोसर भाग पढ़ि सकै छथि। योगनाथ झाजी जे केलाह से कॉपीराइट हनन केर मामला छै जाहिमे ओ एकटा आन द्वारा संपादित पोथीकेँ अपना नामसँ प्रकाशित करबा लेलाह।

की थिक पञ्जी-प्रबन्ध

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

हम सभ देखैत आयल छी जे जखन कतहु विवाह तय होइत छैक त कन्या आ वर दुनू पक्षक परिचय ल' क' कन्यागत जाइत छथि सौराठमे पञ्जीकारक ओत', पञ्जीकार अपन अभिलेखमे देखिक' एकटा कागत दैत छथिन जकरा सिद्धांत कहल जाइत छैक। ई सिद्धांत वस्तुतः एकटा स्वीकृति अथवा अनुमति पत्र होइत अछि जे अमुक विवरणक कन्याक संग अमुक विवरणक बालकक विवाह भ' सकैत छनि एहि दुनू विवरणकें पञ्जीकार द्वारा सम्बंधित अभिलेखमे दर्ज कयल जाइत अछि।

समयक परिवर्तनक कारणें एकर उपयोगिता क्रमशः कम भेल जा रहल अछि, मुदा हमर पूर्वज लोकनि के छलाह, कत'-कत'सँ आयल छलाह, हुनका सभक वैवाहिक सम्बन्ध कत'-कत' छलनि,विवाहक पद्धति की छलै, ओकर वैज्ञानिक पक्ष की छलै,ओकर दुर्वल पक्ष की छलै आ और बहुत बात जानब बहुत रोचक आ ज्ञानवर्धक अछि। ई जानब सेहो आसान नहि अछि मुदा संतोषक बात अछि जे पञ्जीकार लोकनि लग जे बही अथवा पञ्जी छनि ताहिसँ ई जानकारी उपलब्ध होइत आयल अछि।

हमरा सभकें ई नहि बूझल छल जे ई पञ्जी व्यवस्था मिथिलामे कहियासँ आबि रहल अछि, कखन-कखन एहिमे कोना आ किनका द्वारा संशोधन अथवा परिमार्जन कयल गेल अछि, एहिमे की-की सभ रहैत अछि, सभ मैथिलक विवरण रहैत अछि अथवा किछुए समुदायक विवरण रहैत अछि। एहि सभ जानकारीकें एकठाम उपलब्ध कराओल गेल अछि मैथिलीक पाक्षिक इन्टरनेट पत्रिकामे सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुरजी द्वारा जे दू टा मोट-मोट पोथीमे मिथिलाक पञ्जी व्यवस्थाक विषयमे जानकारी उपलब्ध करेबाक कठिन काज कते बरख पहिने क' चुकल छथि। सौभाग्यक बात अछि जे विदेहक पेटारमे सभ जनक लेल पोथी मङनीमे उपलब्ध अछि। हम पोथी पढ़ि रहल छी मुदा एखन बहुत पृष्ठ पढ़ब शेष अछि। एहि पोथीसँ एखन धरि जे ज्ञात भेल अछि से साझी क' रहल छी। पहिने सभ क्यो अपन-अपन पुरखाक आ वैवाहिक संबन्धक लेखा स्वयं रखैत छलाह।

आरम्भ :

पूर्व मध्यकालमे ब्राह्मण,कायस्थ आ क्षत्रिय वर्गक जातिक शुद्धताक लेल पञ्जी प्रबन्धक व्यवस्थाक आरम्भ मिथिलाधीश कर्णाट वंशीय क्षत्रिय महाराज हरिसिंह देवक समयमे भेल। मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकर

दत्त आ क्षत्रियक हेतु विजय दत्त एहि हेतु नियुक्त भेलाह।ओहि समयक पञ्जी प्रबन्ध वैज्ञानिक आधारबला छल आ शुद्ध रूपें वंशावली परिचय छल। ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय सभ अपन-अपन पञ्जी मे बराबर छलाह।

परिवर्तन : महाराज माधव सिंहक समयमे शाखा पञ्जी पञ्जी प्रारम्भ भेल आ श्रोत्रिय आदि विभाजन भेल क्रमानुसार छोट-पैघक विचार आबि गेल आ ओहिसँ उपजल सामाजिक कुरीतिक प्रारम्भ भेल। कालक प्रभावे क्षत्रिय लोकनिमे पञ्जी समाप्त भए गेल।आब मात्र मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक मध्य विद्यमान अछि। गजेन्द्र ठाकुर जीक पोथीमे पञ्जी , पञ्जीकार,गोत्र, मूल, उतेढ़ आ अन्य कतेक शब्दावलीक व्याख्या कएल गेल अछि :

पञ्जी - पञ्जीकार : परिचयक पुस्तककें पञ्जी कहल गेल, एहि पुस्तककें रखनिहारकें पञ्जीकार कहल गेल अछि। पञ्जी सात प्रकारक होइत अछि :

1.मूल पञ्जी
2.शाखा पञ्जी
3.गोत्र पञ्जी

4.पत्र पञ्जी
5.दूषण पञ्जी
6.उतेढ़ पञ्जी
7.अस्वाजन्य पत्र पञ्जी

गोत्र पञ्जी मे सभ गोत्र आ तकर प्राचीन मूल रहैत अछि। पत्र पञ्जी मे मूलग्रामक उल्लेख रहैत अछि, ई लगभग 500 बरख पूर्वसँ प्रचलनमे अछि| दूषण पञ्जी मे वंशमे आएल क्षरणक उल्लेख रहैत अछि। ई ब्राह्मणक आन जाति खासक’ दलित आ मुस्लिमक संग विवाह वा पतिक मृत्युक बाद विवाहक लिखित दस्तावेज छल।

ब्राह्मण आ मैथिल ब्राह्मण :

भारतवर्षक ब्राह्मणक विभाजन सर्वप्रथम वेदक आधारपर भेल, जेना सामवेदी, यायुर्वेदी आदि। बादमे पुराणक युग अबैत-अबैत भारतवर्षक ब्राहण समाज भिन्न-भिन्न क्षेत्रक आधारपर विभिन्न दस वर्गमे विभाजित भेलाह :

1.उत्कल
2.कान्यकुब्ज
3.गौड़

4.मैथिल

5.सारस्वत

6.कर्णाट

7.गुर्जर

8.तैलंग

9.द्रविड़

10.महाराष्ट्रीय

मैथिल ब्राह्मण मूलतः दू गोट वेदक अनुयायी थिकाह।

1. ययुर्वेदक मध्यान्दिन शाखाक अनुयायी जे ‘’वाजसनेयी’’ कहबैत छथि

2. सामवेदक कौथुम शाखाक अनुयायी जे ‘’छन्दोग’’ कहबैत छथि

दुनू तरहक ब्राह्मण लोकनिक उपनयन, विवाह आदि विभिन्न संस्कारमे विधि-विधानमे किछु अन्तर रहैत अछि।

मूल :

पञ्जी प्रबन्धक समय जे व्यक्ति जतए बसैत रहथि तकरा हुनक भावी संतानक ग्राम कहल गेल। परिचय लिखौनिहार अपन पूर्वजक प्राचीनतम वासस्थानक जे नाम कहल से ओहि व्यक्तिक मूल भेल, मिथिलामे 167 मूलक ब्राह्मणक परिचय प्राप्त होइत

अछि, पोथीमे सबहक उल्लेख अछि।

गोत्र :
मैथिल ब्राह्मण समाजमे गोत्र वंश-बोधक अछि। समस्त गोत्र पितृ प्रधान अछि अर्थात प्रत्येक गोत्र अपन-अपन वंशक प्राचीनतम ज्ञात महापुरुषक नाम थिक।मैथिल ब्राह्मणमे बीस टा गोत्र अछि जाहिमे बेसी संख्या मुख्यतः निम्नलिखित सात टा गोत्रक लोकक अछि :

1.शांडिल्य
2.वत्स
3.काश्यप
4.सावर्ण
5. पराशर
6.भारद्वाज
7.कात्यायन

शेष तेरहटा गोत्र निम्नलिखित अछि :
1.गर्ग
2.कौशिक
3.अलाम्बुकाक्ष
4.कृष्णात्रय

5.गौतम

6.मौद्गल्य

7.वशिष्ठ

8.कौंडिन्य

9.उपमन्यु

10.कपिल

11.विष्णुवृद्धि

12.तण्डि

13.जातुकर्ण

कर्ण-कायस्थमे एकेटा गोत्र ‘काश्यप’ अछि।

गोत्र-मूल :

प्रत्येक गोत्र मे अनेक मूल अछि, कतेक मूल एहन अछि जे एकसँ अधिक गोत्रमे पाओल जाइत अछि।

लिपि :

पञ्जी मिथिलाक लिपि तिरहुतामे ताड़पत्र / बसहापत्रपर लिखल गेल छल।एहि लिपिक ज्ञानक अभावमे एहि पुस्तक सबहक संरक्षणक प्रति सहयोग घटल जा रहल छल, तें तिरहुतामे लिखल पञ्जीक अंकन आ देवनागरीमे लिप्यन्तरण

आवश्यक छल।

एहि कठिन काजकें पूर्ण केलनि श्री गजेन्द्र ठाकुरजी।ठाकुरजी लिखैत छथि: ‘2000 ई. मे प्राचीन पञ्जीक संग अंकन आ लिप्यन्तरण करबा काल ई अनुभव भेल जे मिथिलाक इतिहास-बोध कतेक उच्च रहल अछि, अभावग्रस्त रहितो, तत्कालीन शासकक वक्र दृष्टि सहितो मिथिलाक शैक्षणिक स्थिति, धर्म शास्त्रीय विवेचनाक क्षमता, साहित्यिक रचनाक योग्यता, कला कौशलक प्रवीणता, सांस्कृतिक विविधता देखल।

दुनियाक कोनो समाजमे एतेक विस्तृत भूभागमे पसरल मनुष्यक वंशावली 1500 बरखसँ अधिक समयसँ एहि तरहें सांगोपांग नहि लीखल गेल अछि जाहि तरहें मिथिलाक लोक विपन्न रहितो परिचय संग्रह करैत रहलाह, अपन पुरख़ाक शिक्षा, तथाकथित क्षरण आ संबंधक विवरण, कालबोध प्रवास-अप्रवासक विवरण संचित करैत रहलाह से अद्भुते अछि।’

आधुनिक मैथिल समाज एहि तरहक ज्ञान, परम्परा आ संस्कृतिकें कोना ग्रहण करत से जनबाक लेल धैर्य धारण करय पड़त, मुदा भूमण्डलीकरणक आजुक दौरमे एहि सभकें विश्वक पटलपर रखबाक लेल गजेन्द्र ठाकुरजीक भगीरथ प्रयास अपूर्व, अनुपम आ अनमोल अछि।

दूषण पञ्जी : गजेन्द्र ठाकुर केर मैथिली संस्कृति पर सार्वभौमिक योगदान

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

गजेन्द्र ठाकुर मैथिली साहित्य आ संस्कृति लेल सतत लागल रहैत छथि। कुनो तरहक सांस्कृतिक-साहित्यिक राजनीती सँ अपना के दूर रखैत छथि। हुनकर एक प्रामाणिक आ गंभीर पोथी छनि "दूषण पञ्जी" जकर संपादन गजेंद्र जी एक पारंगत पञ्जिकार केर सहयोग सँ कएलनि अछि। एकरा पोथी नहि परियोजना कहल जा सकैत अछि, ई वस्तुतः शोध आ शोधक खोज आ उपलब्धि के निष्ठुरता सँ सभक समक्ष रखबाक प्रयोग मानल जा सकैत अछि। पोथी पढ़ैत काल बहुत तरहक विचार अबैत रहल। ई पोथी कतौ बहुत नीक तँ अनेक ठाम बहुत टेक्निकल लागल। तथ्य बुझबाक लेल मुदा पूरा पोथी पढ़ब जरुरी। ओहि सँ पहिने मिथिला आ मैथिली के बुझब आवश्यक। मिथिला लौकिक आ शास्त्रीय परम्परा केर संगम रहल अछि। लिखित परम्परा अथवा विशिष्ट विद्वत परम्परा केर फोकलोर जतेक मिथिला मे भेटत ततेक आन ठाम भेटब दुर्लभ अछि। कालिदास, मंडन मिश्र, कुमारिल भट्ट, महेश ठाकुर, बिद्यापति, अयाची मिश्र सभ संग अनेक दन्त कथा आ प्रमाद जुड़ल छनि। एखनो विद्वान लोकनि पर फोकलोर बनैत रहैत अछि। बहुत बात

जे नहि लिखल रहैत अछि से सभ लोक अनेक तरहेँ अपना कंठ मे बैसा लेत अछि। लोकक प्रवित्ति सदैव तथ्य केर तह तक घुसबाक रहलैक अछि। जेना-जेना मैथिली लोक आ ज्ञान परंपरा अध्ययन करैत जाएब, ई बात स्पष्ट भेल जाएत। एहने एक परम्परा रहल अछि पञ्जी प्रबंधक जे जखन शुरू भेल ताहि समय ब्राह्मण, कर्ण कायस्थ, आ क्षत्रिय समाज मे छल मुदा आजुक समय मे ई ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ धरि बाँचल अछि। एहि परंपरा पर अनेक घमर्थन भेल अछि। एक समूह एकर तुलना जेनोम मैपिंग संग करैत छथि तँ दोसर समूह एकरा संसारक सभ सँ वैज्ञानिक आ व्यवस्थित वंशावलीक रक्षण केर प्रमाणिक स्रोत। आजुक समय मे यद्यपि ई परंपरा मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ धरि सीमित अछि तथापि एकर तुलनात्मक आ वैज्ञानिक शोध बहुत गूढ़ बात सब बता सकैत अछि। पञ्जी के कोना ठीक कएल जाय, आजुक समय मे एकर की स्वरुप हो, आ नाना तरहक जिज्ञासा केर समाधान पञ्जी केर अनेक पोथी आ पांडुलिपि केर शोध सँ संभव अछि। हमरा लगैत अछि विज्ञान केर सिद्धांत पर चलैत एहि परंपरा केर आ शोध हेबाक चाही। अति शुद्धतावादी विचारधारा, जातीय अथवा जातिक एक तथाकथित समूह केर प्रवृति, आ महानता केर एक्टिविज्म सँ दूरी बनबैत, तथ्य केर विवेचन क्षीर-नीर भाव सँ करक चाही। एहि प्रक्रिया मे संभव अछि जे उपलब्ध पञ्जी, जे आब यथेष्ट मात्रा मे डिजिटल फॉर्मेट मे उपलब्ध अछि बहुत सार्थक प्रमाण संग

उपस्थित हो। ईहो भ सकैत अछि जे भविष्य मे आन समाज केर लोक सेहो एहि अभिलेखीय प्रबंधन केर इनटेंजिबल हेरिटेज के स्वीकार करैत एकरा अधिक ग्राह्य, प्रामाणिक बना देथि। समय संग एहि मे सुधार संभव भऽ सकैत अछि।

दुनियाँक कोनो समाज मे एतेक विस्तृत भू-भाग मे पसरल मनुष्यक वंशावली 1500 वर्ष सँ अधिके समय सँ एहि तरहेँ सांगोपांग नहि लिखल गेल अछि जाहि तरहेँ मिथिलाक लोक ईमानदारी पूर्वक अपन पुरुषाक शिक्षा, तथाकथित क्षरण आ सम्बन्धक विवरण कलाबोध प्रवास-अप्रवासक संचित करैत रहलाह, से अद्भुते अछि।

अही दिशा मे एक फॉर्मेट जकर पाण्डुलिपि उप्लब्ध छैक, केर नाम छैक दूषण पञ्जी। जेना कि नाम सँ स्पष्ट छैक एहि मे अनेक वंशावली मे जे पितरक दोष छलनि तकर प्रमाण रहैत छैक। एहिमे वंशमे आएल क्षरणक उल्लेख रहैत अछि। बहुत बादमे एकर चर्च संभव होइत अछि, जाहि सँ सम्बन्धित वंश एकर दुष्परिणाम सँ बाँचल रहए।

एहि पोथी पढ़ला सँ पता चलल जे पञ्जी सात प्रकारक होइत अछि:

1. मूल
2. शाखा
3. गोत्र: गोत्र पञ्जी मे सभ गोत्र आ तकर प्राचीन मूल रहैत अछि। मुख्य बात ई रहैत छैक एक गोत्र मे विवाह नहि भऽ सकैत अछि। मैथिल ब्राह्मण मे 20 गोत्र भेटैत अछि: शाण्डिल्य, वत्स, सावर्ण, काश्यप, पराशर, भारद्वाज, कात्यायन, गर्ग, कौशिक, अलाम्बुकाक्ष, कृष्णात्रेय, गौतम, मौदगल्य, वशिष्ठ, कौण्डिन्य, उपमन्यु, कपिल, विष्णुवृद्धि, तण्डी आ जातुकर्ण। मैथिल ब्राह्मण समाजमे गोत्र वंश-बोधक थीक। समस्त गोत्र पितृ प्रधान थीक- अर्थात् प्रत्येक गोत्र अपन-अपन वंशक प्राचीनतम ज्ञात महापुरुषक नाम अर्थात बीज पुरुष केर नाम थीक।

4. पत्र: पत्र पञ्जी लगभग 500 वर्ष पूर्व सँ प्रचलन मे अछि। एहि मे मूलग्रामक उल्लेख रहए लागल।
5. दूषण
6. उतेढ़ : उतेढ़ पञ्जी मे सपिंडक निवृत्तिक ज्ञान होइत अछि - छह पुरखाक उल्लेख प्राप्त होइत अछि। उतेढ़ छल सात पुरुषक परिचय, जाहि हेतु एहि बत्तीस कुलक परिचय आवश्यक छल- पिता एवं माताक पितामह एवं पितामही आ मातामह एवं मातामही केर पितामह एवं पितामही आ माता एवं मातामही केर पिता। आ एहि बत्तीस पूर्वजसँ विवाहयोग्य व्यक्ति सातम पड़बाक चाही।एहि क्रममे श्रोत्रिय,योग्य आ पञ्जीबद्ध श्रेणीक

विभाजन गेल। जे पञ्जीबद्ध नहि छलाह से जएबार भेलाह। उतेढ़मे श्रोत्रिय मातृपक्षमे पाँच पीढ़ी आ पितृपक्षमे सात पीढ़ी त्यागि विवाह करैत छलाह। पञ्जीबद्ध लोकनि जिनका वंशज सेहो कहल जाइत अछि, मातृ पक्षमे पाँच आ पितृ-पक्षमे छः पीढ़ी त्यागि कय विवाह करैत छलाह। सम्प्रति धर्मशास्त्रसँ श्रोत्रिय-योग्य-पञ्जीबद्ध आ तथाकथित जएबार सभहिक हेतु एकहि व्यवस्था अछि, भिन्न किछु नहि।

7. अस्वाजन्यपत्र: स्मृति सभमे कहल गेल अछि, जे जनिकासँ विवाहक अधिकार नहि हो से स्वजना भेलीह। स्वजनासँ विवाहोपरांत प्राप्त संतान चाण्डाल बूझल जाइत छल। अस्वाजन्यपत्र केर अर्थ भेल पञ्जीकार द्वारा ई प्रमाण पत्र देनाइ जे वर आ कन्या स्वजन केर नहि छथि। हिनक विवाह भऽ सकैत अछि। प्रत्येक विवाह तखनहि स्थिर होइत अछि जखन पञ्जीकार अधिकार जाँचि कए लिखि कऽ देथि, जे अमुक कन्या ओ अमुक वर ‘स्वजना’ नहि छथि। इयैह पत्र ‘अस्वजन पत्र’ वा ‘सिद्धांत पत्र’ कहौलक। आइयो कन्या वरक विवाह पूर्व अधिकार जँचाए सिद्धांत पत्र लेब आवश्यक बूझल जाइत अछि। पञ्जी-प्रबंधमे इएह सभसँ प्रधान नियम भेल जे बिनु सिद्धांत भेने विवाह अशास्त्रीय मानल जायत। ‘अस्वजन पत्र’ देनिहार पञ्जीकार कहओलाह। संगृहित परिचय जाहिमे प्रत्येक नव जन्म

ओ विवाह जोड़ल जाय लागल से भेल पञ्जी। जिनकर पञ्जीमे नाम आएल से भेलाह पञ्जीबद्ध।

पोथी पढ़ैत काल बहुत बातक रहस्य खुजैत छैक। खुजिते रहैत छैक। हमरा हमेशा होइत छल जे:

क) पञ्जी मात्र नीक बातक दस्तावेज अछि, अगर कुनो गलत अथवा अधलाह बात अथवा तथ्य रहल छैक तँ ओकर जनतब कियैक नहि छैक?
ख) पञ्जी मे स्त्रीगण केर नामक उल्लेख कियैक नहि छैक?
ग) ब्राह्मण, क्षत्रिय, कर्ण कायस्थ केर अलावे आन जाति मे एकर चर्चा कियैक नहि छैक?
घ) पञ्जी केर लिपि की छैक?

गजेन्द्र ठाकुर केर विद्वत उद्यम आ खोज बहुत प्रश्नक उत्तर दऽ देलक।

क) पता चलल जे अगर विवाह मे कहियो किनको पूर्वज कुनो गलत ठाम /जाति अर्थात दोषपूर्ण विवाह कएलनि ताहि पर सेहो पञ्जी पोथी लिखल गेल जकर नाम रहैक दूषण पञ्जी। दूषण केर अर्थ भेल दूस जोग विवाह अथवा दोषपूर्ण विवाह।

ख) रसाढ़-अररियाक पञ्जी एकमात्र पञ्जी पोथी अछि (ज्ञात आ उपलब्ध) जाहि मे स्त्रीगणकक नामक उल्लेख पञ्जी भेटैत अछि।

ग) पञ्जीक समस्त पुस्तक मिथिलाक लिपि तिरहुतामे लिखित अछि/ लिखल जा रहल अछि। आ बुझू तँ तिरहुता लिपिक प्राणाधार थिक पञ्जी प्रबन्ध। मिथिलाक पञ्जी केर तुलना कोनो तीर्थस्थल जेना कि गया, सिमरिया घाट, बाबाधाम, अमरकंटक आदि सँ करब केर कोनो औचित्य नहि, कारण तीर्थस्थान केर डाटा बेस मात्र यजमान आ पुरोहित (पण्डा) केर वंशानुगत विवरण होइत छैक। ओहि मे नाम, गोत्र, गाम, मूल, पिताक नाम, जहिया उपस्थित भेलाह से तिथि आदि के अलावे कोनो जानकारी नहि रहैत छैक। सुचना लिखबाक शैली अथवा रजिस्टर सेहो सार्वभौम नहि होइत छैक। मिथिला मे एकर यूनिफार्म पैटर्न छैक, लिखबाक अलग लिपि (तिरहुता लिपि) छैक, कम सँ कम वर अथवा कन्यापक्षक 10 तरहक जानकारी होइत छैक। कन्याक नानीक पिताक नाम, गोत्र, मूल, बीज पुरुष धरि केर जानकारी रहैत छैक। वर पक्ष केर सात पुश्त तँ रहिते छैक। आश्चर्यक बात ई जे सभ जानकारी एक पंक्ति मे रहैत छैक। व्यक्ति विशेष केर शिक्षा, उपाधि, सम्मान सभ किछु

केर जानकारी रहैत छैक। ई बात सभ बहुत हद धरि प्रामाणिक रहैत छैक।

कहबाक तात्पर्य जे पञ्जी केर गहन अन्वेषण सँ सभ बातक उत्तर भेटैत रहैत अछि। बात एतबे जे शोधक दृष्टि रखने रही आ पोथी पढ़ैत रही। चूँकि पोथीक प्रामाणिक लिप्यांतरण देवनागरी मे छैक ताहिं हमरा सनहक अमरुख पाठक लेल ई संजीवनी बूटी केर काज करैत छैक। जे पाण्डुलिपि विधा अथवा विद्या के जानकार छथि, जिनका सभ के अनेक लिपि आ भाषा सभ के जानकारी छनि, हुनका सभ लेल मूल पाण्डुलिपि केर फोलियो संलग्न छैक। लिप्यांतरण केर दोष, ओकर विवेचन आदि पर सेहो सभ प्रकाश द सकैत छथि। एहि पोथी पर अनेक विद्वान संग सार्थक सम्वाद भऽ सकैत अछि। सेमिनार आ कार्यशाला केर आयोजन कएल जा सकैत अछि। सभ सँ पैघ बात ई जे सम्पूर्ण पोथी बिना कोनो राशि के विदेह केर वेबसाइट पर उपलब्ध छैक। ज्ञान सम्पदा केर अमूर्त धरोहर थिक ई काज। एहि पर हमरा लोकनि के संज्ञान लेबाक चाही। मिथिला आ भारत सँ बाहर के लोक, विद्यार्थी, विद्वान, सॉफ्टवेयर इंजीनियर, प्रोफेशनल, साइंटिस्ट्स, भाषा शास्त्री संज्ञान लऽ रहल छथि मुदा हमरा सभक बीच कोनो उचाबच नहि अछि ! एहि पर गंभीरता सँ सोचय पड़त।

चलू अब दूषण पञ्जी पर बात करी। पोथी केर मादे गजेंद्र बाबू बतबैत छथि जे गोत्र पञ्जी मध्य गोत्र व मूलक विवरण, पत्र पञ्जी मध्य अपत्यक ज्ञान तथा दूषण पञ्जी मध्य वंश मे आएल दोषक ज्ञान होइत अछि। प्राचीन पुस्तक मध्य 450 ई। सँ अद्यावधि प्रचलित शैक्षणिक उपाधि संबंधक ज्ञान होइत अछि। कहबाक अर्थ ई जे महाराज हरिसिंहदेव केर पहिने सेहो मिथिला केर लोक अपन पञ्जी केर खाता रखैत छलाह मुदा तकरा हेतु कोनो राजकीय विधान आ व्यवस्था नहि छलनि। यद्यपि हरिसिंहदेव केर बाद ई एक राजकीय अभिलेख केर स्थान प्राप्त केलक।

बात पुनः दूषण पञ्जी पर केंद्रित करैत छी। किछु लोक एहेन छथि जिनका दूषण पञ्जी सँ, एकर विवेचन सँ, शोध सँ बहुत डर लगैत छनि। हिनका सभ के भय रहैत छनि जे एहि पर चर्च करब केर अर्थ भेल प्रचलित लोक मान्यता आ जाति मे एक वर्गक जे पाग बहुत ऊँच छनि तकर अधोगति प्रारम्भ भऽ सकैत छनि। झाँपल-तोपल रहस्य बाहर आबि सकैत अछि। एक दूषण पञ्जी केर पाण्डुलिपि केर उद्धरण दैत विद्वान लिखैत छथि जे ब्राह्मणक आन जाति खास क’ दलित आ मुस्लिमक संग विवाह, वा पतिक मृत्युक बाद विवाहक लिखित दस्तावेज छल। “गंगेशक जन्म पिताक मृत्युक 5 वर्ष बाद आ फेर हुनकर

चर्मकारिणी सँ विवाह एतए वर्णित छैक। ई वएह नव्य-न्यायक जनक गंगेश छथि। आनन्दा चर्मकारिणी सँ विवाह केर सेहो द्रष्टव्य होइत अछि।

ब्राह्मण खाहे श्रोत्रिय होथु वा तथाकथित जैवार विशेषाधिकार, विशेष बंधन किनको हेतु नहि। जे समाज तथा कथित रूपें जयवारक संज्ञा सँ विभूषित मिथिलाक लोक प्राचीन कालहिं सँ भारतक आन-आन सभ्यषता ओ संस्कृतिक अपेक्षा उदार माना ओ नमनशील रहल अछि, एहि ठाम कोनो प्रकारक धार्मिक कट्टरपनक स्थाई भाव नहि। सुधारक गुंजाइश सतत् बनौने रखने अछि, एहि ठाम जँ कखन कोनो काल मे खाहे कोनो प्रकारक जातिक बवंडर उठल हो परंच विद्वेष स्थान ई भाव नहि रखल। अपन अपन कालक पैघ सँ पैध घटना कालातीत भए विस्मृत होइत रहल अछि, तकर प्रमाण थिक मिथिलाक पञ्जी उपांग-दूषण पञ्जी। कोनो कालक दलमलित करएबला घटना थोड़बहि समयक बाद समाज ओ मस्तिष्क सँ हटि जाएत।

पाली मूलक-देवशर्म्मसुत कान्हमक विवाह बुधवाल मूलक गोविन्दपसुत दामूक विवाह सरिसब मूलक श्रीनाथ सुत चक्रपाणिक विवाह दरिहरा मूलक भीम सुत उमापतिक विवाह सोदरपुर मूलक श्रीहरि सुत हरिनाथक विवाह हरिअम वासदेव सुत कृष्णूदेवक विवाह पनिचोभ मूलक मधुकरक विवाह- अज्ञात

वंश ओ जातिमे। सरिसव मूलक भवनाथ पौत्र कमलनयन पुत्र किशाईक विवाह - वलियास चमरु सुत गंगाधरक कन्यामे। चमरूक अपन विवाह अज्ञात कन्यासँ। अर्थात किशाईक सासूक वंशक कोनो ठेकान नहि। एहि किशाईक संतान मिथिलाक अनेक गाम मे पसरल छथि। परंच आइ समाज ओहि तथ्य कैँ उचिते रूपैँ विस्मृरत कए चुकल अछि। एहि रूपक अनेक घटना अछि- यथा बुधवाल मूलक माधवक पौत्री भीमक कन्याक विवाह, जाहि लागिसँ अनेक घर व्याप्त अछि। सतलखा रामनाथसुत जगन्नाथक मात्रिक घुसौत उधोरण सुत रतनूक मात्रिक, पाली होराई सुत रामक मातृक सकराढ़ी मूलक वेणी सुत राधवक मात्रिक, सोदरपुर मूलक पाँखू सुत चान्दीक मात्रिक, अलय मूलक दिनकर सुत हरिकरक मात्रिक, तिलय मूलक श्रीपति सुत विदूक मात्रिक इत्याददि देवदाशी परम्पराक छलीह अस्तुल अज्ञात मानल गेलीह परंच हुनका लोकनिक सन्तान आइ समाजमे समादृत छथि। एहि प्रकारक उदहारण पाँजि मे भरल पड़ल अछि जे आब कालातीत भेला पर कोनो वंश पर कुप्रभाव नहि पड़त अपितु एहिना स्थित मे की निर्णय लेबाक चाही तकरा लेल मार्गदर्शन होएत। अहि प्रसंग मे ई कहब अनिवार्य बुझना जाइत अछि।

स्मृतिकार मनु ओ याज्ञवल्क्यक अनुसार ओहि कन्यासँ विवाहक

अधिकार हो जे- 1. समान गोत्रक नहि होथि, 2. समान प्रवरक नहि होथि, 3. माइक सपिण्ड नहि होथि, 4. पिताक सपिण्ड नहि होथि, 5. पितामह अथवा मातामहक संतान नहि होथि, 6. कठमामक संतान नहि होथि।

मिथिलाक कर्णाट वंशक राजा हरिसिंहदेव (1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन) केर प्रेरणा सँ मिथिलाक पंडित लोकनि शाके 1248 तदनुसार 1326 ई। मे पञ्जी प्रबंधक वर्तमान स्वरुप ब्राहण, कर्ण कायस्थ आ क्षत्रिय वर्ग लेल प्रारम्भ करबाक निर्णय लेल गेल। ब्राह्मण हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि कार्यक निष्पादन हेतु नियुक्त भेलाह।

पुनः वर्तमान स्वरुप मे थोड़े बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंह सँ 1760 ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकार सँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजि मे (कखनो काल वर्णित 1600 शाके माने 1678 ई. वास्तव मे माधव सिंहक बाद मे 1800 ई. क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिला मे उत्पत्ति भेल।

पञ्जी प्रबन्ध पूर्व-मध्य कालमे ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय वर्गक जाति शुद्धताक हेतु निर्मित कएल गेल। कोनो ब्राह्मणक जाति

शुद्धताक हेतु उतेढ़ जानब आवश्यक छल। उतेढ़ छल सात पुरुषक परिचय, जाहि हेतु एहि बत्तीस कुलक परिचय आवश्यक छल-पिता एवं माताक पितामह एवं पितामही आ मातामह एवं मातामही केर पितामह एवं पितामही आ माता एवं मातामही केर पिता। आ एहि बत्तीस पूर्वजसँ विवाह योग्य व्यक्ति सातम पड़बाक चाही। एहि क्रममे श्रोत्रिय, योग्य आ पञ्जीबद्ध श्रेणीक विभाजन गेल। जे पञ्जीबद्ध नहि छलाह से जएबार भेलाह। उतेढ़मे श्रोत्रिय मातृपक्षमे पाँच पीढ़ी आ पितृपक्षमे सात पीढ़ी त्यागि विवाह करैत छलाह।पञ्जीबद्ध लोकनि जिनका वंशज सेहो कहल जाइत अछि, मातृ पक्षमे पाँच आ पितृ-पक्षमे छः पीढ़ी त्यागि कय विवाह करैत छलाह। सम्प्रति धर्मशास्त्रसँ श्रोत्रिय-योग्य-पञ्जीबद्ध आ तथाकथित जएबार सभहिक हेतु एकहि व्यवस्था अछि, भिन्न किछु नहि।

20 प्रकारक गोत्र 167 प्रकारक मूल आ अनेक प्रकारक मूलग्राममे ई सभ विभक्त छल। पुनः कर्मकाण्डक आधार पर सामवेदी आ शुक्ल यजुर्वेदी ब्राह्मणक दू गोट उर्ध्वाधर विभाजन क्रमशः छन्दोग्य आ वाजसनेय ब्राह्मणक रूपमे बनले रहल। 20 गोट गोत्र आ 167 मूल ग्राममे मुख्य मूल 34 टा निर्धारित कएल गेल। एहि 167 मूलसँ सेहो ई सभ विभिन्न क्षेत्र आग्राममे पसरलाह। परवर्ती कालमे फनन्दह मूलक खनाम शाखा 35 म

मूलक रूपमे तथाकथित उच्च वंशक मध्य परिगणित भेल।

मुख्य 35 (34+ फनन्दह मूलक खनाम शाखा) मूल सेहो तीन श्रेणीमे विभक्त अछि।

अयान्त श्रेष्ठ- प्रथम श्रेणीमे 1. खड़ौरय, 2. खौआड़य, 3. बुधबाड़य, 4. मड़रय, 5. दरिहरय, 6. घुसौतय, 7. तिसौतय, 8. करमहय, 9. नरौनय, 10. वभनियामय, 11. हरिअम्मय, 12. सरिसवय, 13. सोदरपुरिये।

द्वितीय श्रेणीमे 1. गंगोलिवार, 2. पवौलिवार, 3. कुजौलिवार, 4. अलेवार, 5. वहिड़वार, 6. सकड़िवार, 7. पलिवार, 8. विसेवार, 9. फनेवार, 10. उचितवार, 11. पंडुलवार, 12. कटैवार, 13. तिलैवार।

मध्यम मूल- 1. दिघवे, 2. बेलौंचै, 3. एकहरे, 4. पंचोभे, 5. वलियासे, 6. जजिवाल, 7. टकवाल, 8. पण्डुए।

प्रवर: मैथिल ब्राह्मणक मध्य 2 वर्गक प्रवर परिवार होइत अछि- त्रिप्रवर आ पाँच प्रवर। जाहि गोत्रक तीन गोट पूर्वज ऋगवेदक सूक्तिक रचना कएल से त्रिप्रवर आ जाहि गोत्रक पाँच गोट पूर्वज लोकनि ऋगवेदक सूक्तक रचना कएल से पाँच प्रवर कहबैत छथि।

एहि प्रकारेँ गोत्रानुसारे प्रवर निम्न प्रकार भेल:-

त्रिप्रवर- 1. शाण्डिल्य, 2. काश्यप, 3. पराशर, 4. भारद्वाज, 5.

कात्यायन, 6. कौशिक, 7. अलाम्बुकाक्ष, 8. कृष्णात्रेय, 9. गौतम, 10. मौदगल्य, 11. वशिष्ठ, 12. कौण्डिन्य, 13. उपमन्यु, 14. कपिल, 15. विष्णुवृद्धि, 16. तण्डी।
पंचप्रवर- 1. वत्स, 2. सावर्ण, 3. गर्ग।

प्रवरक विस्तृत विवरण निम्न प्रकारेँ अछि:
1. शाण्डिल्य- शाण्डिल्य, असित आदेवल। 2. वत्स-ओर्व, च्यवन, भार्गव, जामदगन्य आआप्लवान। 3. सावर्ण- ओर्व, च्यवन, भार्गव, जामदगन्य आआप्लवान। 4. काश्यप-काश्यप, अवत्सार आनै घ्रूव। 5. पराशर-शक्ति, वशिष्ठ आपराशर। 6. भारद्वाज-भारद्वाज, आंगिरस आबार्हस्पत्य। 7. कात्यायन-कात्यायन, विष्णु आआंगिरस। 8. गर्ग-गार्ग्य, घृत, वैशम्पायन, कौशिक आमाण्डव्याथर्वन। 9. कौशिक- कौशिक, अत्रि आजमदग्नि। 10. अलाम्बुकाक्ष-गर्ग, गौतम आवशिष्ठ। 11. कृष्णात्रेय-कृष्णात्रेय, आप्ल्वान आसारस्वत। 12. गौतम-अंगिरा, वशिष्ठ आबार्हस्पत। 13. मौदगल्य-मौदगल्य, आंगिरस आबार्हस्पत्य। 14. वशिष्ठ-वशिष्ठ,अत्रि आसांकृति। 15. कौण्डिन्य-आस्तिक,कौशिक आ कौण्डिन्य। 16. उपमन्यु-उपमन्यु, आंगिरस आबार्हस्पत्य। 17. कपिल-शातातप, कौण्डिल्य आकपिल। 18. विष्णुवृद्धि-विष्णुवृद्धि, कौरपुच्छ आत्रसदस्य 19. तण्डी-तण्डी, सांख्य आअंगीरस 20. जातुकर्ण-

जातुकर्ण, आंगीरस आ भारद्वाज।

एहिमे सावर्ण आ वत्सक पूर्वज एके छथि ताहि हेतु दू गोत्र होइतो हिनका बीच विवाह नहि होइत छन्हि। छानदोग्य आ वाजसनेयक वैदिक युगीन उर्ध्वाधर विभाजन एकर संग रहबे कएल आ यज्ञोपवीत मंत्र/ विवाह विधि दुनूक भिन्न-भिन्न अछि। फेर यज्ञोपवीतमे तीन प्रवर आकि पाँच प्रवर देल जाय ताहि हेतु उपरका सूचीक प्रयोग कएल जाइछ।

भारतवर्षक ब्राह्मण लोकनि सर्वप्रथम वेदक आधार पर विभिन्न वर्गमे विभाजित रहथि। जेना- सामवेदी, यजुर्वेदी, आदि कहाबथि। मुदा समयक प्रभावमे भिन्न क्षेत्र-प्रक्षेत्रमे रहनिहार ब्राह्मण लोकनि भिन्न-भिन्न संस्कृतिसँ प्रभावित भए गेलाह। क्षेत्रीय संस्कृतिसँ प्रभावित होएबाक मुख्य कारण छल विशिष्ट क्षेत्रक विशिष्ट जलवायु, क्षेत्र विशेषक भाषा-विशेष, भिन्न-भिन्न क्षेत्रक भिन्न-भिन्न आहार एवम भेष-भूषा आएक क्षेत्र सँ दोसर क्षेत्र जयबाक हेतु आवागमनक असुविधा आदि। फलतः क्षेत्र विशेषक ब्राह्मण समुदाय, क्षेत्र विशेषक आचार-विचार, खान-पान, वेश-भूषा, भाव-भाषा ओ सभ्यता संस्कृतिसँ प्रभावित भऽ गेलाह।

उपरोक्त कारणे पुरानक युग अबैत-अबैत भारत वर्षक ब्राह्मण

समाज भिन्न-भिन्न क्षेत्रक आधार पर विभिन्न वर्गमे विभाजित भए गेलाह। पुरानक सम्मतिये भारत-वर्षक समस्त ब्राह्मण समाजकेँ दसवर्गमे विभाजित कएल गेल। ब्राह्मणक ई दसो वर्ग थीक-उत्कल, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल, सारस्वत, कर्णाट, गुर्जर, तैलंग, द्रविड़ ओ महाराष्ट्रीय। स्थूल रूपेँ पूर्वोक्त पाँच केँ पञ्च गौड़ आ अपर पाँचकेँ पञ्च द्रविड़ कहल जाइत अछि। एकर सीमांकन भेल विन्ध्याचल पर्वतक उत्तर पञ्च गौड़ ओ विन्ध्याचल पर्वतक दक्षिण पञ्च द्रविड़।

मैथिल ब्राह्मण: पञ्च गौड़ वर्गक मैथिल ब्राहमण लोकनि पुस्त-दर-पुस्त सँ मिथिलामे रहबाक कारणेँ मिथिलाक विशिष्ट संस्कृतिसँ प्रभावित भए गेलाह, तँय अहि कारणेँ पुराणक युगमे मैथिल ब्राह्मण कहाए सुप्रसिद्ध भेलाह।

मैथिल ब्राह्मण मूलतः दुइए गोट वेदक अनुयायी थिकाह: एक, वर्ग यजुर्वेदक माध्यान्दिन शाखाक अनुयायी थिकाह; दोसर, सामवेदक कौथुम शाखाक अनुगमन करैत छथि। यजुर्वेदक माध्यन्दिन शाखाक अनुयायी “वाजसनेयी” कहबैत छथि, एहिना सामवेदक कौथुम शाखाक अनुयायी छन्दोग कहबैत छथि। दुहुक संस्कारमे किछु स्थूल अन्तरो अछि। छन्दोगक उपनयनमे चारि गोट संस्कार- नामकरण, चूड़ाकरण, उपनयन ओ समावर्त्तन, मुदा वाजसनेयीक ई चारू संस्कार थिक,

चूड़ाकरण, उपनयन, वेदारम्भ ओ समावर्त्तन। एहिना छन्दोग विवाह मुख्यतः दू खण्डमे सम्पन्न होइत अछि, पूर्व विवाह आओर उत्तर विवाह। उत्तर विवाह सूर्यास्तक बाद तारा (अरुन्धती) देखि कए होइत अछि। मुदा वाजसनेयी विवाहमे एहन कोनो विभाजन नहि अछि। एकहि क्रममे दिन अथवा रातिमे कखनहुँ भए सकैत अछि।

जखन विवाहक अधिकार जाहि कन्यासँ हो तकरहिसँ विवाह कएला उत्तर प्राप्त संतान आर्य जातिक विवाहक नियम सभ सर्वप्रथम निबंधित भेल विभिन्न स्मृति सभमे। स्मृतिकार मनु ओ याज्ञवल्क्यक अनुसार ओहि कन्यासँ विवाहक अधिकार हो जे- 1. समान गोत्रक नहि होथि, 2. समान प्रवरक नहि होथि, 3. माइक सपिण्ड नहि होथि, 4. पिताक सपिण्ड नहि होथि, 5. पितामह अथवा मातामहक संतान नहि होथि, 6. कठमामक संतान नहि होथि।

एहि वैवाहिक अधिकारक निष्पादनार्थ कमसँ कम मनु ओ याज्ञवल्क्यक समयसँ तँ निश्चये लोक अपन ‘यावतो परिचय’ स्वयं अपनहि रखैत आबि रहल छल, मुदा पश्चातक युगमे ई प्रवृत्ति समाप्तप्राय भऽ गेल। स्मृति सभमे कहल गेल अछि, जे जनिकासँ विवाहक अधिकार नहि हो से स्वजना भेलीह। स्वजनासँ विवाहोपरांत प्राप्त संतान चाण्डाल बूझल जाइत छल।

ओ आर्यत्वक मर्यादासँ बहिष्कृत मानल जाइत छल। अतः विवाहक पहिल चरण अधिकारक निर्णय रहल होयत। वर पक्ष ओकन्या पक्षक लोक परस्पर बैसि अपन-अपन परिचयक आधार पर निर्णय करैत छल होएताह, जे 'अमुक' कन्यासँ 'अमुक' वरक विवाह हो वा नहि। मुदा परिचय रखबाक प्रवृत्तिक ह्रासक कारणेँ अधिकार-निर्णयक हेतु प्रत्येक परिवारक सुयोग्य ओ आस्थावान व्यक्ति अपन यावतो परिचय (32 मूलक उल्लेख) लिखि कए राखय लगलाह। सातम शताब्दीसँ पूर्वहि एहि लिखित कौलिक परिचय 'समूह लेख्य' क उल्लेख सर्वप्रथम विद्वद्वरैण्य कुमारिल भट्ट रचित 'तंत्र वार्त्तिक' मे भेल अछि, जे मीमांसा दर्शनक जैमिनी सूत्रक शबर द्वारा कएल भाष्यक गद्यात्मक 'वार्त्तिक' थीक। तंत्रवार्त्तिक दर्शनक ग्रंथ थीक जाहिमे यथार्थ वस्तुस्थितिक वर्णनसँ जातिक विशुद्धि सिद्ध कएल गेल अछि, जाहि आधार पर धर्मक निरूपण भए सकैत। कुमारिल भट्टक कहब छलन्हि जे "बड़का कुलीन लोक बड़ विशेष प्रयत्नसँ अपन जातिक रक्षा करैत छथि। तँहि तऽ क्षत्रिय ओ ब्राह्मण अपन पिता-पितामहिक परम्परा बिसरि नहि जाए तेँ समूह-लेख्य चलौलन्हि। ओ प्रत्येक कुलमे गुण आ दोष देखि ओहि अनुरूप सम्बंध करबामे प्रवृत्त होइत छथि" ।

मुदा तेरहम शताब्दीक उत्तरार्ध होइत-होइत साधारण लोकक

कोन कथा पण्डित लोकनि सेहो समूह लेख्य राखब छोड़ि देलन्हि। एकर परिणाम ई भेल जे पं हरिनाथ उपाध्याय “स्मृतिसार” सन धर्मशास्त्रक विषयक ग्रंथकर्त्ता परिचयक अभावमे विवाह कए लेल, स्वजनमे अनधिकारमे अपन साक्षात पितयौत भाइक दौहित्रीमे। फलतः चौदहम शताब्दीक तृतीय दशक होइत-होइत एहि कौलिक परिचयकेँ विशिष्ट पण्डितक अधीन कए देबाक आवश्यकताक अनुभव कएल जे विवाहक समय अधिकारक निर्णय कए सकथि। मिथिलाक तत्कालीन शासक राजा हरिसिंहदेवक प्रेरणासँ मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके 1248 तदनुसार 1226 ई। मे निर्णय कएलन्हि, जे “ परिचय राखब लोककेँ अपना पर नहि छोड़ल जाय, प्रत्युत ओकरा संगृहित कए विशिष्ट पण्डितजनक जिम्मा कए देल जाए, ओई राजकीय एक गोट विभाग बना देल जाए, जाहिसँ पण्डित राजाज्ञासँ नियुक्त होथि, सैह संगृहित परिचय राखथि। प्रत्येक विवाह तखनहि स्थिर हो जखन नियुक्त पंडित (पञ्जीकार) अधिकार जाँचि कए लिखिकऽ देथि, जे अमुक कन्या ओ अमुक वर ‘स्वजना’ नहि छथि। अर्थात् शास्त्रीय नियमानुसार कन्याक संग वरकेँ वैवाहिक अधिकार छन्हि। इयैह पत्र ‘अस्वजन पत्र’ वा ‘सिद्धांत पत्र’ कहौलक। आइयो कन्या वरक विवाह पूर्व अधिकार जँचाए सिद्धांत पत्र लेब आवश्यक बूझल जाइत अछि। पञ्जी-प्रबंधमे इएह सभसँ प्रधान नियम भेल जे

बिनु सिद्धांत भेने विवाह अशास्त्रीय मानल जायत। ‘अस्वजन पत्र’ देनिहार राजाज्ञासँ नियुक्त इएह पण्डित पञ्जीकार कहओलाह। संगृहित परिचय जाहिमे प्रत्येक नव जन्म ओ विवाह जोड़ल जाय लागल से भेल पञ्जी। जिनकर पञ्जीमे नाम आएल से भेलाह पञ्जीबद्ध।

महाराज हरिसिंहदेव ओ तत्कालीन पण्डितक संयुक्त निर्णय अनुसार परिचेता लोकनिक नियुक्ति कए समस्त मैथिल ब्राह्मणक सम्पूर्ण परिचय संगृहित कएल गेल। परिचेता लोकनि घुमि-घुमि प्रत्येक परिवारक मुख्य व्यक्तिसँ हुनक परिचय पुछि लिखि लेल करथि। सामान्य रूपे छओ पुरुषक परिचय सभ जनैत रहथि। किछु गोटा एहिसँ बहुतो अधिक परिचय जनैत रहथि। एहिना किछु गोटए मात्र दू वा तीन पुरुषाक ज्ञान रखैत छलाह। जे जतबा जनैत रहथि हुनकासँ ओतबहि संग्रह कए हुनकर पूर्वजक वास-स्थान, गोत्र, प्रवर तथा हुनक वेद ओशाखाक सूचना लिखि लेल जाइत रहए। एहि संग्रहसँ एकहि कुलक अनेक शाखा जे विभिन्न ग्राममे बसैत छलाह, तकर परिचय एकत्र भए गेल। एहि रूपेँ गोत्रक अनुसार भिन्न-भिन्न कुलक सम्पूर्ण परिचय प्राप्त भए गेल। एहि परिचय संकलनक समय सभसँ प्रमुख मानल गेल बीजी पुरुष ओ मूल ग्रामकेँ। कारण कौलिक परिचयक हेतु सर्वाधिक उपयोगी इयैह सूत्र भेल।

विभिन्न गाममे बसैत एकहि कुलक विभिन्न व्यक्तिक कौलिक परिचय एहि मूल ग्रामक आधार पर संगृहित कएल गेल रहए। एहि कारणे पञ्जीमे अनिवार्य रूपसँ मूल ग्रामक उल्लेख भेल अछि। पञ्जी-प्रबंधक समय जे व्यक्ति जतए बसैत रहथि से हुनक भावी संतानक ग्राम कहाओल ओ परिचय लिखौनिहार अपन पूर्वजक प्राचीनतम वास स्थानक जे नाम कहल से ओहि व्यक्तिक मूल भेल। एहिना प्रत्येक कुलक प्राचीनतम ज्ञात पूर्वज ओहि कुलक बीजी पुरुष कहाओल। एकर प्रमाणमे एक गोट उदाहरण देखल जाए सकैत अछि। काश्यप गोत्रीय एक महाकुल जकर चौहत्तरि शाखा मिथिलामे अनुवर्त्तमान अछि, संगृहित परिचयक आधार पर मूलतः माण्डर ग्रामक वासी सिद्ध भेलाह। मुदा पञ्जी-प्रबंधसँ बहुत पहिनहि, एकर दू गोट शाखा स्पष्टतः प्रमाणित भए गेल। एक मँगरौनी गामक आ दोसर गढ़-गामक। अतः पञ्जीमे आदिअहिसँ माण्डरक संग-संग गढ़ ओ मँगरौनी विशेषण जोड़ल जाए लागल। मुदा उपलब्ध परिचयक आधार पर दुनू एकहि कुलक दू शाखा सिद्ध भेल। तँय दुनू कुलक मूल एकहि भेल ओ बीजी पुरुष सेहो एकहि भेलाह।

"अमरकोष" मे गोत्रक हेतु तीन अर्थ देल गेल अछि- पर्वत, वंश आ नाम। "वाचस्पत्य" कोषमे गोत्रक एगारह अर्थ देल गेल अछि- पर्वत, नाम, ज्ञान, जंगल, खेत, क्षत्र, संघ, धन, मार्ग,

वृद्धि आमुनि लोकनिक वंश। प्राचीन संस्कृत साहित्यमे गोत्र शब्दक प्रयोग प्रायः वंश वा पिताक नामक लेल भेल अछि। छान्दोग्य उपनिषद (4/4) मे जीवन गुरु सत्यकामसँ गोत्र पुछैत छथि तँ हुनक अभिप्राय सत्यकामक कुल अथवा पिताक नामसँ छन्हि।मुदा ऋगवेदमे गोत्रक उल्लेख चारि ठाम मेघ अथवा पहाड़क लेल आदू ठाम पशु समूह अथवा जनसमुदाय अथवा पशु रक्षक रूपमे भेल अछि। अंततः वंश अथवा परिवारक अर्थमे गोत्र शब्दक प्रयोग पश्चातक प्रयोग थिक। वंश अथवा परिवारक अर्थमे गोत्रक प्रयोग सर्वप्रथम छान्दोग्य उपनिषदमे भेल अछि। मैथिल ब्राह्मण समाजमे गोत्र वंश-बोधक थीक।

मैथिल ब्राह्मणक समस्त गोत्र पितृ प्रधान थीक। मैथिल ब्राह्मणमे सभ मिलाए 20 गोट गोत्र अछि। सात गोट गोत्रक कुल व्यवस्थित, सुपरिचित ओ बहुसंख्यक अछि। ई सात गोट गोत्र थीक- 1। शाण्डिल्य 2। वत्स 3। काश्यप 4। सावर्ण 5। पराशर 6। भारद्वाज 7। कात्यायन।

प्रत्येक गोत्रमे कतौक मूल अछि। मिथिलामे 167 मूलक ब्राह्मणक परिचय प्राप्त होइत अछि।कतैक मूल एहन अछि, जे एकसँ अधिक गोत्रमे पाओल जाइत अछि। 'ब्रह्मपुरा' एकटा एहने मूल थिक। एहि मूलक ब्राह्मण- शाण्डिल्य, वत्स, काश्यप, अलाम्बुकाक्ष, गौतम ओ गर्ग गोत्रमे पाओल जाइत छथि।

प्रवर- प्रवरक उल्लेख वैदिक युगमे दर्श ओ पौर्णमास नामक इष्टमे भेटैत अछि। ई इष्ट सभ आन सभ प्रकारक यज्ञक आधार थीक। अतः एहिमे प्रवरक पाठ होइत अछि। एहि पाठक प्रयोजन तखनहि होइत अछि जाहि क्षण यज्ञाग्नि उद्दिप्त करएबाली (सामधेनी) ऋचाक पाठक अनंतर अध्वर्यु ओहि अग्नि पर आज्य(घृत) दैत छन्हि। एकर निहितार्थ अछि जे प्रवर, यज्ञमे अग्निकेँ बजएबाक प्रार्थना थीक। प्रवरकेँ बादमे 'आर्षेय' सेहो कहल गेल अछि- जकर अर्थ थिक ऋषिसँ संबंध राखए बला (ऋग्वेद-09/97/51)। शोनक ऋषिक सुविख्यात पूर्वज लोकनि मैथिल ब्राह्मण मध्य प्रवर कहबैत छथि, अर्थात् ऋगवेदक ऋचाक प्रणेता लोकनि प्रवर थिकाह। मैथिल ब्राह्मणक मध्य 2 वर्गक प्रवर परिवार होइत अछि- त्रिप्रवर आ पाँच प्रवर। जाहि गोत्रक तीन गोट पूर्वज ऋगवेदक सूक्तिक रचना कएल से त्रिप्रवर आजाहि गोत्रक पाँच गोट पूर्वज लोकनि ऋगवेदक सूक्तक रचना कएल से पाँच प्रवर कहबैत छथि।

गोत्र आ मूल:

1. शाण्डिल्य- दिर्घोष (दिघवे), सरिसब, महुआ, पर्वपल्ली(पवौली), खण्डबला, गंगोली, यमुशाम, करिअन, मोहरी, सझुआल, मड़ार, पण्डोली, जजिवाल, दहिभत, तिलय, माहब, सिम्मुआल, सिंहाश्रम, सोदरपुर, कड़रिया, अल्लारि,

होइयार, तल्हनपुर, परिसरा, परसड़ा, वीरनाम, उत्तमपुर, कोदरिया, छतिमन, वरेवा, मछेआल, गंगौर, भटोर, बुधौरा, ब्रह्मपुरा, कोइआर, केरहिवार, गंगुआल, घोषियाम, छतौनी, भिगुआल, ननौती, तपनपुर।

2. वत्स- पल्ली (पाली), हरिअम्ब, तिसुरी, राउढ़, टकवाल, घुसौत, जजिवाल, पहद्दी, जल्लकी (जालय), भन्दवाल, कोइयार, केरहिवार, ननौर, डढ़ार, करमहा, बुधवाल, मड़ार, लाही, सौनी, सकौना, फनन्दह, मोहरी, वंठवाल, तिसउँत, बरुआली, पण्डौली, बहेराढ़ी, बरैवा, अलय, भण्डारिसमय, बभनियाम, उचति, तपनपुर, विठुआल, नरवाल, चित्रपल्ली, जरहटिया,रतवाल,ब्रह्मपुरा,सरौनी।

3. काश्यप- ओइनि, खौआल, संकराढ़ी, जगति, दरिहरा, माण्डर, वलियास, पचाउट, कटाइ, सतलखा, पण्डुआ, मालिछ, मेरन्दी, भदुआल, पकलिया, बुधवाल, पिभूया, मौरी, भूतहरी, छादन, विस्फी, थरिया, दोस्ती, भरेहा, कुसुम्बाल, नरवाल, लगुरदह।

4. सावर्ण- सोन्दपुर, पनिचोभ, बरेबा, नन्दोर, मेरन्दी।

5. पराशर- नरौन, सुरगन, सकुरी, सुइरी, सम्मूआल, पिहवाल, नदाम, महेशारि, सकरहोन, सोइनि, तिलय, बरेबा।

6. भारद्वाज- एकहरा, विल्वपञ्चक(बेलोँच), देयाम, कलिगाम, भूतहरी, गोढ़ार, गोधूलि।

7. कात्यायन- कुजौली, ननौती, जल्लकी, वतिगाम।
8. अलाम्बुकाक्ष- बसाम,कटाइ, ब्रह्मपुरा।
9. गर्ग- बसहा, बसाम, ब्रह्मपुरा, सुरौर, वुधौर, उरौर।
10. कौशिक- निखूति
11. कृष्नात्रेय- लोहना, बुसवन, पोदौनी।
12. मौद्गल्य- रतवाल, मालिछ, दिर्घौष, कपिञ्जल, जल्लकी।
13. गौतम- ब्रह्मपुरा, उंतिमपुर, कोइयार।
14. वशिष्ठ- कोथुआ।
15. कौंडिल्य- एकहरा, परौन।
16. जातुकर्ण- देवहार।
17. तण्डि- कटाई।
18. विष्णुवृद्धि- वुसवन।
19. उपमन्यु।
20. कपिल।

श्रोत्रिय ब्राह्मण आठ श्रेणीमे क्रमबद्ध छथि आ योग्य एवम् वंशज पन्द्रह श्रेणीमे। पाँजिक संख्या 185 अछि, जाहिमे 32 पाँजि श्रोत्रिय आ 153 पाँजि योग्य आ वंशजक अछि।

वर्णरत्नाकरमे 72 राजपूत कुलक मध्य 64 केर वर्णन अछि, जाहिमे बएस आ पमार दोहराओल अछि। दोसर ठाम 36 राजपूत कुलक वर्णन अछि। 20 टा नामक पूर्वहुमे चर्च अछि। विद्यापतिक लिखनावलीमे, जे प्रायः हुनकर नेपाल प्रवासक

क्रममे लिखल गेल छल, चन्देल आ चौहानक वर्णन अछि। गाहनवार वा मिथिलाक गंधवरिया राजपूतक दू टा शखा मिथिलामे छल, भीठ भगवानपुर आ पंचमहला (सहर्सा, पूर्णियाँ)। गंधवरिया, पमार, विशेवार, कंचिवाल, चौहान आदि मिथिलाक महत्त्वपूर्ण राजपूत मे। मुदा गंधवरिया मिथिलामे महत्त्वपूर्ण मे आ एखनहु मधुबनीसँ सहरसा-पूर्णियाँ धरि छथि।

वर्णरत्नाकरक राजपूत कुलवर्णनक निम्न लगभग 62 टा कुल अछि। सोमवंश, सूर्यवंश, डोडा, चौसी, चोला, सेन, पाल, यादव, पामार, नन्द, निकुम्भ, पुष्पभूति, श्रिंगार, अरहान, गुपझरझार, सुरुकि, शिखर, बायेकवार, गान्हवार,सुरवार, मेदा, महार, वात, कूल, कछवाह, वायेश, करम्बा, हेयाना, छेवारक, छुरियिज, भोन्ड, भीम, विन्हा, पुन्डीरयन, चौहान, छिन्द, छिकोर, चन्देल, चनुकी, कंचिवाल, रान्चकान्ट, मुंडौट, बिकौत, गुलहौत, चांगल, छहेला, भाटी, मनदत्ता, सिंहवीरभाह्मा, खाती,रघुवंश, पनिहार, सुरभांच, गुमात, गांधार, वर्धन, वह्होम, विशिश्ठ, गुटिया, भाद्र, खुरसाम, वहत्तरी आदि। एखनो गंगा दियारामे राजपूत आ यादव दुनूक मध्य 'बनौत' होइत छथि आ दुनूमे बहुत घनिष्ठता अछि। आइ काल्हि राजपूत मध्य पञ्जी विलुप्त अछि, मुदा तकर निवारण ओ सभ गामकेँ बारि (विवाहक लेल) करैत छथि, जेना दादाक मातृकक गाम छोड़ि कऽ विवाह करब।

पर्वतमे रहनिहार आवनमे रहनिहारक वर्णन सेहो अछि वर्ण रत्नाकरमे। जनक राजाक विरुद जन (कबीला) सँ बनल प्रतीत होइत अछि।

पहिने सभ क्यो अपन-अपन पुरखाक आ वैवाहिक संबंधक लेखा स्वयं रखैत रहथि। हरसिंहदेवजी एहि हेतु एक गोट संस्थाक प्रारम्भ कलन्हि। मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक पञ्जी वैज्ञानिक आधार बला छल आ शुद्ध रूपेँ वंशावली परिचय छल। सभ ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय अपन-अपन जातिक पञ्जीमे बराबर छलाह। मुदा महाराज माधव सिंहक समयमे शाखा पञ्जीक प्रारम्भ भेल आ श्रोत्रिय आदि विभाजन आ क्रमानुसारे छोट-पैघक आ ओहिसँ उपजल सामाजिक कुरीतिक प्रारम्भ भेल।

कर्ण कायस्थमे एकेटा गोत्र काश्यप अछि। मात्र मूलक अनुसारेँ उतेढ़ होइत अछि, मध्यम दर्जाक गृहस्थ कहल जाइत अछि।

मूलसँ गोत्रक सामान्यतः पता चलि जाइत अछि। किछु अपवादो छैक। जेना: ब्रह्मपुरा मूल, काश्यप/गौतम/वत्स/वशिष्ठ।(7 टा) करमहा- शाण्डिल्य (गाउल शाखा)/ बाकी सभ वत्स गोत्री।दुनू

करमहामे विवाह संभव।

श्रोत्रिय लोकनिकेँ पुबारि पार आ शेषकेँ पछबारि पार सेहो कहल जाइत अछि। श्रोत्रियक पाँजि चौगाला (श्रेणी) मे विभक्त अछि। श्रोत्रिय पाँजिकेँ लौकित कहल जाइत अछि। कुल 8 टा चौगोल श्रेणी अछि। 32 टा पाँजि अछि। पाँजि आ पानि अधोगामी होइत अछि। निम्न कुलमे विवाह संबंधक कारणे समय बीतला पर उच्चादि श्रेणी समाप्त होइत जाइत अछि। प्रथम श्रेणी आ द्वितीय श्रेणी ताहि कारणसँ समाप्त भऽ गेल अछि।

शेष ब्राह्मण पछबारि पार कहबैत छथि। एहि मे 15 गोट श्रेणी अछि। 153 टा पञ्जी अछि। एकरा नामसँ जेना नरपति झा पाँजि इत्यादि संबोधित कएल जाइत अछि। पछबारि पारहुमे सम्प्रति महादेव झा सँ उपरका पाँजि अनुपलब्ध जकाँ भए गेल अछि।

कालक प्रभावे क्षत्रिय लोकनिमे पञ्जी समाप्त भए गेल आ ताहि द्वारे हुनका लोकनिमे पूरा गामेकेँ छोड़ि देल जाइत अछि, जाहिसँ सिद्धांतमे भाङठ नहि होए।

उतेढ- सिद्धांत लिखबासँ पहिने वर ओ कन्या पक्षक अधिकार

ताकल जाइत अछि। कन्याक विवाहक 5-10 वर्ष पूर्व कन्याक पिता पञ्जीकारसँ अधिकार माला बनबैत छथि, जाहिमे संभावित आ उपलब्ध वरक सूची रहैत छैक। पञ्जीकार एहि हेतु उतेढ बनबैत छथि। वर कन्या दुनू पक्षक पितृ कुलक 6 पुस्त आ मातृकुलक 5 पुरखाक यावतो परिचय देल जाइत अछि। यावतो परिचयक अर्थ भेल 32 मूलक उतेढ़ जे अधिकार तकबामे प्रयोजनीय थीक। कोनो कन्या वा वर मातृ वा पितृ पुरखा कुलमे 16 व्यक्तिसँ छठम स्थानमे रहैत छथि। एहि 16 मे सँ 16 वा एको व्यक्ति वरक पितृपक्षमे छठम स्थानक अभ्यन्ता अओथिन्ह तँ ओहि कन्या वरक मध्य वैवाहिक अधिकार नहि होएत।ज्योँ ओ 16 व्यक्ति वा एको व्यक्ति मातृ पक्ष (वरक) मे अओथिन्ह तँ अधिकार भए जायत। मुदा एहिमे ई सेहो देखबाक थीक जे वर कन्या समान गोत्र आ समान प्रवरक नहि होथि। ई सेहो देखए पड़त जे कन्या वरक विमाताक भाइक सन्तान नहि होए।

दरभंगा नरेश माधव सिंह शाखा प्रणयन पुस्तकक आदेश देलन्हि। एहिसँ पहिने मूल पञ्जी सभक समान रूपेँ बनैत छल। आब सोति, जोग आ पञ्जीबद्धक हेतु फराक शाखा पञ्जी बनाओल जाए लागल।

गोत्र पञ्जीमे सभ गोत्र आ तकर प्राचीन मूल रहैत अछि। पत्र पञ्जी लगभग 500 वर्ष पूर्वसँ प्रचलनमे अछि। एहिमे मूलग्रामक

उल्लेख रहए लागल।

दूषण पञ्जीमे वंशमे आएल क्षरणक उल्लेख रहैत अछि। बहुत बादमे एकर चर्च संभव होइत अछि, जाहिसँ सम्बन्धित वंश एकर दुष्परिणामसँ बाँचल रहए।

उतेढ़ पञ्जीमे सपिण्डक निवृत्तिक ज्ञान होइत अछि- छह पुरखाक उल्लेख प्राप्त होइत अछि। मात्र रसाढ़-अररियाक पञ्जीमे स्त्रीगणकक नामक उल्लेख पञ्जीमे भेटैत अछि।

वैवाहिक अधिकार निर्णय:-

नियम 1. कोनो कन्या वा वर अपन 16 पुरुषा (पितृकुल आ मातृकुल मिलाकेँ) सँ छठम स्थानमे रहैत छथि- जिनका छठि कहल जाइत छन्हि।

एहि छठिक निर्धारण निम्न प्रकारसँ होइत अछि-

1. कन्याक (वृद्ध प्रपितामह) प्रपितामहक पितामह प्रथम छठि

2. कन्याक (वृद्ध पितामहक स्वसुर) प्रपितामहक मातामह द्वितीय छठि

3. कन्याक पितामहक मातामहक पिता तृतीय छठि

4. कन्याक पितामहक मातामहक स्वसुर चतुर्थ छठि

5. कन्याक पितामहीक प्रपितामह पञ्चम छठि

6. कन्याक पिताक मातामहक मातामह छठम छथि
7. कन्याक पितामहीक प्रमातामह सातम छथि
8. कन्याक पितामहीक मातृमातामह आठम छथि
9. कन्याक मातामहक प्रपितामह नवम छथि
10. कन्याक प्रमातामहक मातामह दसम छथि
11. कन्याक मातामहक प्रमातामह एगारहम छथि
12. कन्याक मातामहक मातृमातामह बारहम छथि
13. कन्याक मातामहीक प्रपितामह तेरहम छथि
14. कन्याक मातामहीक पितृ मातामह चौदहम छथि
15. कन्याक मातामहीक प्रमातामह पन्द्रहम छथि
16. कन्याक मातामहीक मातृ मातामह सोलहम छथि

उपरोक्त समस्त छठिक समान महत्व अछि। एहिमे सँ कोनो छठि वरक पितृ पक्षमे अएला पर उक्त वर कन्याक मध्य वैवाहिक अधिकार नहि होएत। ओ छठि यदि वरक मातृकुलमे अबैत छथि तँ अधिकार होएत। उपरोक्त नियम समान रूपैँ वर ओ कन्यापर लागू होइत अछि। जहिना वरक लेल कहल गेल जे मातृतः पंचमी त्यक्त्वा पितृतः सप्तमी भजेत तहिना कन्या लेल कहल गेल जे असपिण्डा च या मातु – असपिण्डा च या पितुः सा प्रशस्ता द्विजातीनां दार कर्मणि मैथुने।

नियम 2. वर कन्याक गोत्र एक नहि होए।

नियम 3. वर कन्याक प्रवर एक नहि होए।

नियम4. वरक विमाताक भायक सन्तान कन्या नहि होए।
मातृतः पञ्चमीं त्यक्तवा पितृतः सप्तमीं भजेत्- मनुस्मृति
असपिण्डाच या मातुः असपिण्डा च या पितुः सा प्रशस्ता द्विजातीनां दार कर्मणि मैथुने।
पञ्चमात् सप्तमात् उर्ध्वं मातृतः पितृस्तथा।
सपिण्डा निवर्तेत कर्तुम् व्यतितिक्षम्।
संस्कृत श्लोकक अर्थ एहि प्रकारे अछि-

1. वरक मातृकुलक पुरुषसँ कन्या पाँचम पीढ़ी धरिक सन्तान नहि होथि। वरक पितृकुलक सातम पीढ़ी (संशोधित रूपैँ छः पीढ़ी) धरिक सन्तान नहि होथि।
2. जे कन्या वरक मातृ कुल ओ पितृकुलक सपिण्ड नहि होथि से द्विजाति वरक हेतु उद्वाह कर्मक लेल प्रशस्त।
3. मातृकुलमे पाँच आ पितृकुलमे सात पीढ़ी धरि सपिण्ड रहैछ। परञ्च म.म.महाराज महेश ठाकुर पितृपक्षमे सातम पुस्तकेँ विवाहक हेतुएँ ग्राह्य मानलन्हि आ हुनक देल व्यवस्था समाजकेँ मान्य भेल।

कोनो कन्याक छठिक अन्वेषण हेतु 32 मूलक उतेढ बनाबए पड़ैत छैक। ताहिमे सर्वप्रथम उतेढ़क वाम भागमे कन्याक ग्राम, मूल ग्राम लिखल जाइत छैक। तहिसँ अव्यवहित दहिन भागमे मूल आ तकर नीचाँ कन्याक अति वृद्ध प्रपितामह, वृद्ध

प्रपितामह, वृद्ध पितामह, प्रपितामह, पितामह आ तखन पिताक नामोल्लेख अवरोही क्रमसँ लिखल जाइत छैक। एहि मध्य वृद्ध प्रपितामह पहिल छठि कहओताह, जनिकासँ कन्या छठम स्थानमे पड़ैत छैक। कोनहु कथा जँचबाक हेतु पञ्जीकार सभसँ पहिने कन्याक छठिक निर्धारण कए लैत छथि। ततःपर वरक उतेढ बनबैत छथि। तखन देखबाक रहैत छन्हि जे कन्या जिनकासँ छठि छथि से तऽ वरक परिचयमे नहि पवैत छथि। जँ से कोनो छठि भेट गेलाह, तँ देखबाक रहैछ जे वरक कोन पक्ष (पितृ-मातृ)केँ अएलाह। मातृ-पक्ष रहने अधिकार हो आओर पितृ-पक्षमे रहने नहि हो, से वचन पूर्वमे कहि आएल छी। वरक पक्षक पितृकुलमे 6 तक त्याज्य ओ सातमकेँ ग्राह्य आओर मातृकुलमे पाँचम तक त्याज्य आ छठम ग्राह्य।

एतए ईहो देखबामे अबैत अछि जे ई सभ वैज्ञानिक दृष्टिकोण तखन ताखपर राखल रहि जाइत अछि जखन बाल विवाह आ बहु-विवाहक कुरीति एहि मध्य पैसैत अछि। से कतोक गोटे एक दिससँ ससुर जमाए भए जाइत छथि तँ दोसर दिससँ साढ़ू। आ एतए पञ्जीकार विवश भए जाइत छथि कारण नियमतः एहन अनर्गल विवाह शास्त्र विहित भए जाइत अछि।

शाखा पञ्जीक विशेषता: शाखा पञ्जी एक अभूतपूर्व पुस्तक छी। एहि तरहक पुस्तक संसारक कोनो देश कोनो सम्प्रदाय वा

कोनो वर्गमे नहि पाओल गेल अछि। यद्यपि ई वर्ग विशेषक पुस्तक थिक, परञ्च एहि प्रकारक पुस्तक कोनो सम्प्रदाय वा कोनो वर्गक लेल शुरू कएल जा सकैत छैक। मिथिलाक ई अद्वितीय अछि जाहिमे 1000 वर्षसँ परिचयक जाल जकाँ निर्मित कएल गेल अछि। जेना कवि कोकिल विद्यापति ठाकुरक परिचय हुनक पुरुषाक उल्लेख 7 पीढ़ी पहिनेसँ लऽकेँ विद्यापतिक वंशधर वर्तमान धरि, सभक साङ्गोपाङ्ग (विद्या, उपाधि, विशिष्टता, कार्य परिवर्तन, मातृकुलक परिचय) परिचय भेटत। एहन परिचय मात्र विद्यापतिये नहि समस्त मैथिल ब्राह्मणक भेटत, एहि प्रकारक आधारपर विभिन्न विद्वान ब्राह्मणक काल निर्धारण सेहो कएल जा सकैछ।

आब पञ्जीक पुस्ताकमे कएक पीढी सँ यावतो परिचय संगृहित भए गेल अछि तँ फेर श्रोत्रियादित्रय लोकनिक शाखा वाचन हो आ तथा कथित जयवार लोकनिक नहि (परिचय उपलब्ध, रहितौ) तकर की अर्थ? वंश परिचय संगृहित करबाक स्व रूप मे अनेक पड़ाव आएल अछि, पूर्व मे स्मृतिसँ बाद मे (कुमारिल भट्टक समय मे समूह लेख्यर)। पुनः वर्तमान स्वरूप मे (पञ्जीकार लोकनि द्वारा) मिथिलेश महाराज माधव सिंहक (1760 ई.) समयमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि अपन चाटुकारितासँ शाखा पुस्तकक प्रणयन महाराजक आदेशसँ

पञ्जीकारसँ करबओलन्हि। आचारण वृत्ति हेतु तोता-रटंत प्रारंभ भेल। पहिने तऽ मूलहि टाक पुस्तक छल जे वैवाहिक अधिकार निरूपण हेतु यथेष्ट छल- अछि- रहत। उत्तेढक प्रारूप एहि तथ्य कें सिद्ध कए रहल अछि, धर्म शास्त्रक वचन तकरा पुष्ट करैत अछि। जखन पञ्जीकारक अवधारणा नहि छल धर्मशास्त्रज्ञ लोकनि प्रयोजन वाला व्यक्ति सँ हुनक देल वंश परिचय पर अधिकार हो वा नहि तकर निरूपण करैत छलाह तखन ओ उत्तेढक प्रारूप सँ इतर कोन तरहें विचार करैत छलाह, की ओ लोकनि धर्म विरूद्ध आचरण करैत छलाह?

अस्तु, पञ्जीकार अपन अज्ञानताक भार सँ समाज कैँ दलमलित करबाक विचारक परित्याग करथु ओ आर्ष वचनक निर्वाह प्राण-प्रण सँ करथु अपन गढल सूत्रक नहि।प्रत्येक कन्या वा वर जाहि-जाहि व्यक्ति सँ छठम स्थान मे रहैत छथि ओ समस्त छठि समान अधिकारक (सत्ताक) होइछ , मात्र पक्ष देखबाक निर्देश अछि- पितृ कुल वा- मातृ कुल। कोनो छठिकैँ विशेषाधिकार शास्त्रक वचन सँ नहि अछि। तखन ई कहबाक की अभिप्राय जे कन्या जाहि मूल-ग्रामक होथि-वरक मातामहक मूल ओ मूल ग्राम सैह हो तँ मातृ सापिण्ड्य आठम पीढी मे (सातम पुस्तक बाद) निवृत होएत, सर्वथा भ्रान्त धारणा। एकर समर्थनमे धर्मशास्त्रक कोनहुँटा वचन नहि अछि। जँ अछि तँ लिखित

विचारक सप्रमाण खण्डन करू (गल्पसँ नहि)। प्रातः स्मरणिय म.म.प. महेश ठाकुरक देल व्यवस्था संप्रमी त्यजेत सँ...भजैत.. समाज सहर्ष स्वीकार कएलक तँ मान्य। अंततः एकटा विषय ईहो अछि जे पञ्जीकर्म सँ जुड़ल व्यक्ति, समाजक धर्मक रक्षा लेल नियुक्त छथि, जे किछु विदाई वा पारिश्रमिक भेटैत छन्हि से प्रसाद स्वरूप ग्रहण करूथु नहि कि एकै तरहक पाँच टा कार्य लेल एक ठाम सँ दोसर ठाम जएबा हेतु पाँचो व्यक्तिसँ मार्ग व्यय लेल जाय, पाइ बिनु अग्रिम भेटने अधिकार नहि ताकी, ई तँ घोर अनैतिकता थीक। पञ्जीकार संस्कृतिक रक्षकक होथि, गरकट व्यापारी नहि। भावी पीढीक हेतु समय पर शिष्य तैयार करब पञ्जीकारक दायित्व थिकन्हि- पाइये टा कमायब अभिष्ट नहि होयबाक चाही। नहि सम्हरैत छन्हि तँ समय पर समाजकें एतत रूपक सूचना करथु , जे समाज- नव नव व्यक्तिकें दायित्व निर्वहण करैक हेतु तैयार करथि। सम्बद्ध व्यक्तिक अनुपस्थित होएबाक प्रातहि नव पञ्जीकारक प्रयोजन होएत, ताहि हेतु के विचार करताह?

अस्तु, से जँ अधिसंख्य लोकक मध्य प्रचलित लिपि मे ई नहि होएत तँ मिथिलाक विशिष्टता सँ दुनियाँ परिचित कोना होएत। ख्रीष्टाब्दक दशम शताब्दी सँ लऽ कें देशक स्वतंत्रता प्राप्तिक काल धरि मिथिला मे कोनो प्रकारक गमना-गमनक सुविधा नहि

छल, लेखन कला सँ विज्ञ रहितौ लेखन सामग्रीक अभाव मे कागजक स्थान पर तालपत्रक व्यवहार होएत छल जे सुविधा सँ नहि प्राप्त छल तखनहुँ मैथिल समाज अपन वाङ्गमयक रक्षाक हेतु येन-केन प्रकारेण ताल-पत्र उपलब्ध करथि, छाहरिमे सुखाबथि, 14 नाम औ 1.5 सै 2 चाकर ताल पत्र काटि-छटि कऽ तैयार करथि। पातक वाम भाग मे 1.5 भीतर गोलाकार छीद्र कए सुतरी वा कपासक मोट धागासँ पैसाकऽ गाँठ देथि। ई पुस्तक- 500-600 पातक बनैत छल जकर दूनु दिस काष्ठक गत्ता देल जाए आओर डोरी मे गाँठ दए पुस्तक बान्हथि। बान्ह सक्कत पड़ैत छल। पुस्तक ब्रह्मपत्री शैली मे बनाओल जाइत छल। प्रत्येक गुरू अपन शिष्य कें बतावथि जँ- पुस्तकी वदति, स्याहीक हेतु जंगली जडी-बूटी ओ लेखनीक हेतु खद्धहीक व्यवहार करैत छलाह। जलात् रक्ष तैलात् रक्ष, रक्ष स्थूल बन्धनात्- इयैह-सूत्र पाञ्जिक विद्यार्थीकँ सेहो सिखाओल जाइन्ह। अभावग्रस्त समाज एतैक कठिनताक सामना करितहुँ पञ्जीकर्म सँ जुड़ल लोक अपन आश्रितक बिनु चिंता कएने, रौद-पानि बसात सहैत- गामहि-गाम भ्रमण करैत इच्छित विवरण एकत्र करैत छलाह। पुनः समय-समय पर गाम आबि तकर सम्पादन करथि- एहि तरहेँ कार्य शत-शत वर्ष चलल।-समाज सँ सहयोग ओ सम्मान भेटन्हि परञ्च कोनो प्रकारक राजकीय संरक्षण हुनका लोकनि कैँ कहियो नहि रहलन्हि। सम्पादन कार्य

त्रुटि रहित करैत छलाह। अजुका सरकारी कर्मचारी जकाँ, जे घरहि बैसल वेतन ओ सुविधा भोगैत नागरिकता प्रमाण पत्र मे परिचयक स्थान मँ किछु सँ किछु भरैत जाइत छथि, नहि वरन् , पञ्जीकार लोकनि द्वारा संगृहित सूचनासँ समाजक बहुआयामी प्रयोजनक पूर्ति होइत रहल अछि- यथा सपिण्डताक निर्धारण- अशोंचदिक हेतु, वैवाहिक स्वीकृति हेतु, पिण्डदानक हेतु पुरूषाक नामक ज्ञान, विवाहक हेतु अधिकार तकौनाई, वंशक शैक्षणिक, भौगोलिक ज्ञान, आदि-आदि। उपरोक्त सभ पुस्तक कें प्रत्यक्ष राखि 7 वर्ष धरि निरंतर लिप्यंतरण (Transliteration)क कार्य सम्पन्न भेल। पाञ्जिक पुस्तक मे अंक निर्धारणक बड्ड महत्व होइत छैक अंकहि पर आधारित होइत अछि- शाखा पुस्तक। ई कार्य जँ गड़बड़ा गेल तँ बुझु जे धारमे भसिया जएबावाला स्थिति भए जाएत। प्राचीन पञ्जीसँ एकर सूत्र टूटि जाएत। अस्तु अंकन अशुद्ध नहि हो ताहि लेल एकाग्र भए लेखन कार्य कएल गेल।

महाराजाक हेतु निहुछल कन्यासँ अपन पाँजिक रक्षार्थ कन्या चोराकैँ बियाह केलापर राजा द्वारा पञ्जीकार लोकनिकैँ बजाए हुनकर नाममे तस्कर उपाधि जोड़ब, नैय्यायिक गंगेश उपाध्यायक जन्म पिताक मृत्युक 5 सालक बाद होएब, महेश ठाकुरक बहिनक विवाह कूच-बिहारक राजकुमारसँ होएब,

कविशेखर ज्योतिरीश्वरक उपाधिक संग उल्लेख (हुनकर पाण्डुलिपि नेपालक पुस्तकालयसँ प्राप्त होएबासँ पूर्व), ओकर अतिरिक्त ढेर रास ढाकाकवि आ कवि शेखर लोकनिक विवरण, मुस्लिम आ चर्मकारसँ विवाहक विवरण आ समाजमे ओहिसँ भेल सन्ततिक प्रति कोनो दुराग्रहक अभाव, ई सभ पञ्जीमे वर्णित अछि। आर्यभट्टक विवरण-(27) (34/08) महिपतिय: मंगरौनी माण्डैर सै पीताम्ब र सुत दामू दौ माण्ड्र सै वीजी त्रिनयनभट्ट: ए सुतो आर्यभट्ट: ए सुतो उदयभट्ट: ए सुतो विजयभट्ट ए सुतो सुलोचनभट (सुनयनभट्ट) ए सुतो भट्ट ए सुतो धर्मजटीमिश्र ए सुतो धाराजटी मिश्र ए सुतोब्रह्मजरी मिश्र ए सुतो त्रिपुरजटी मिश्र ए सुत विघुजटी मिश्र ए सुतो अजयसिंह: ए सुतो विजयसिंह: ए सुतो ए सुतो आदिवराह: ए सुतो महोवराह: ए सुतो दुर्योधन सिंह: ए सुतो सोढ़र जयसिंहर्काचार्यास्त्रस महास्त्र विद्या पारङ्गत महामहोपाध्या य: नरसिंह:।।

584 (A)। चैतन्य महाप्रभु: रमापति उपाध्याय करमहे तरौनी मूलक छलाह। ओ बंगाल चलि गेलाह, हुकर शिष्य रहथि चैतन्य महाप्रभु। गंगेश उपाध्याय-छादन छादन, उदयनाचार्य-ननौतीवार ननौती (करियन, समस्तीपुर), महेश ठाकुरक मातृक काश्यप गोत्री सकराढ़ी मूलमे रुद झा। रमापति उपाध्याय प्रसिद्ध विष्णुपुरी, परमानन्दपुरी वत्सगोत्री करमहा मूलक तरौनी गामक चैतन्यक गुरु। बल्लाल सेनक समयमे हलायुध आ लक्ष्मणसेन-उद्योतकर। सिंहाश्रम मूलक म.म.हलायुधसँ 12 पुस्त पूर्व माण्डर

मूलक बीजी म.म.त्रिनैन भट्ट (400 ए.डी.लगभग) एहि पोथीक प्रस्थान बिन्दु अछि (पृष्ठ 18)। हलायुध आ नरसिंह समकालीन छलाह। नरसिंह (माण्डर मूल)सँ 12 पुस्त पूर्व त्रिनैन भट्ट मे।

मैथिलक पञ्जीकहैत अछि जे विद्यापति 2 अलग अलग व्यक्ति भेलाह: मैथिली केर आदिकवि विद्यापति संभवतः ज्योतिरीश्वरक (लगभग 1275 -1350) समकक्ष छलाह जिनक चर्च ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे अछि)। ई सम्भवत:बिस्फी गामक हजाम जातिक श्री महेश ठाकुरक पुत्र रहथि। समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि। दोसर छथि महाकवि विद्यापति ठाकुर (1350-1435)। ई विषएवार बिस्फी-काश्यप (राजा शिवसिंहक दरबारी) आ संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल संख्यामे कालजयी रचना। ई मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) सँ भिन्न छथि।
हमरा जनैत ई विवाद केर विषय नहि अपितु शोधक विषय अछि। एहि पर अवश्य काज होबक चाही। एकरा जाति वर्ग केर भावना सँ ऊपर उठि क देखबाक दरकार अछि।

पञ्जी-प्रबन्धमे उपलब्ध किछु आधिकारिक आ सामाजिक

शब्दावली-

पञ्जी-प्रबन्धमे उपलब्ध किछु आधिकारिक आ सामाजिक शब्दावलीक विवरण 11000 पञ्जी तालपत्रक जे.पी.जी। इमेजक अंवेषणक बाद संकलित कएल गेल अछि। ओहि मे किछु केर सम्मिलित करब जरुरी अछि:
सांधिविग्रहिक, धर्माध्यिरक्षक, चतुर्वेदाध्यावयी, याज्ञिक, पार्णागारिक, वार्तिक, महामत्तक, भाण्डावगारिक, स्थाडनान्तभरिक, राजवल्लआभराजवल्लीभ, स्थानान्तरिक, राउल, खनतरी, कापनि, फूलहर, सन्धि बिग्रहिक, पुरोहित, कुल छेत्रोपार्यक, आवस्थिक, कन्टकोद्धार्कारक, ज्योभतिविर्वद, पदांकित, पण्डित राज पदांकित, उपाय कारक, एकान्तरिक, माण्डार सँ वैदिक विश्वनम्भर, सिहौली माण्डरसँ पुरन्द्र सुत वैदिक गोनू झा, नर वलि। सँ घनश्याम सुत वैदिक गणपति मिश्र, खौआलसँ कमल सुत म। गुणाकर वैदिक पिताम्बमर, सिंहौलि माण्डमरसँ वैदिक विश्वाम्भडर सुत म। कुलपति म।चतुर्भुज, दरिहरासँ रघुनाथ सुत म। माधव वैदिक विरेश्वटर, दरिहरासँ म। माधव सुत वैदिक भगीरथ, दरिहरासँ कीर्तिनाथ सुत वैदिक धननाथ, दरिहरासँ रामसुत वैदिक भगीरथ, सकराढ़ीसँ नकटू सुत वैदिक चन्दरक्त, माण्डार सँ वै। अच्छ पति सुत वैदिक जीवपति, सोदरपुरसँ वैदिक होरी, दरिहरा सँ राम द्वौ०विभाकर सुतौ वैदिक विश्वसम्भढर, सकराढ़ीसकराढ़ी सँ हरिश्वर

द्वौ0वैदिक:विश्ववम्भ,र, माण्डोर सँ वैदिक विश्ववम्भलर, कमल सुतो कृष्णिदेव महो गुणाकरौ (109/04) वैदिक (109/04) पीताम्ब रा:, माण्डररसँ माण्डररसँ भैरव द्वौ0वैदिक विधूप्र0, वैदिक युदनाथ:, वैदिकवैदिक विरेश्वंर, वैदिकवैदिक भगीरथ, वैदिक विश्ना(थ, वैदिक घननाथ, वैदिक चन्द्र दत्त, दरिहरा सँ वैदिक जीवनाथ, वैदिक अच्छदपति, वैदिकवैदिक बलदेव, दरिहरा सँ वैदिक जीवनाथ दौहित्र दौ, वैदिकवैदिक कलाघर, दरिहरा सँ राम सुत वैदिक भगीरथ दौ, वैदिक राजा महो गोशाई, वैदिक मुकुन्दि, बेचू सुतो वैयाकरण धरनीघर वैदिक वनखण्डीदकौ, वैदिक नित्या्नन्दै, वैदिक सोनी, वैदिक बद्रीनाथ, वैदिकवैदिक विधु, हरिअम सँ मुक्तिनाथ द्वौ0वैदिक तुलानन्दक, वैदिक चन्द्र दत्त प्रेमदत्त, सोदरपुरसोदरपुर सँ चित्रधर द्वौ0वैदिक धननाथ, वैदिकवैदिक अमोदयानाथ, वैदिक हेमागंद, वैदिक गणपति वैदिक कुलपतिको, बैदिक गुणपति सुता आँखी वैदिक कलाघर, अपरा वैदिक कुलमणि, वैदिकवैदिक आदिनाथ, वैदिक कुलपति, ज्यो,।, वैयाकरणवैयाकरण भैरवदत्तौ, वैयाकरण अमृतनाथ बुद्धिनाथ देवनाथ, वैयाकरण राम:, वैयाकरणवैयाकरण राधनाथ, वैयाकरण परमेश्वार, सरिसबसरिसब सँ झोटह द्वौ0 वैयाकरण नन्दीपति, वैयाकरण गौरीशंकर, वैयाकरणवैयाकरण रज्जे,, खण्ड,बला सँ भगीरथ द्वौ। महा वैयाकरण दिनबन्धुप सुता वैया। जीवनाथ, वैयाकरणवैयाकरण मतिनाथ, सकुरीपाली सँ

वैयाकरण श्रीदत्त सुत वै। मनभरन दौ, वैयाकरण रूपनाथ, वैयाकरणवैयाकरण मतिनाथा:, कविकवि हेमनाथ सुता वैयाकरण महिनाथ, वैयाकरण रामनाथ उँमानाथ:, वैयाकरणवैयाकरण खुशिहाल, वैयाकरण भवानीदत्त देवीदत्ता, वैयाकरण हेमनाथ दौ, वैयाकरण हरिनाथा:, वैयाकरणवैयाकरण ऋद्धि, छक्कथनछक्कणनन वैयाकरण, महो चण्डेैश्वदर सुतो वैयाकरण (276/07) शिवेश्वरर:, खौआल सँ वैयाकरण मोदनाथ दौ, वैयाकरण (201/04) मोदनाथ, वैयाकरण गोपाला:, वैयाकरणवैयाकरण मेघनादौ, वैयाकरण चंलल:, वैयाकरण ईश्वजरीदत्त सुतो, वैयाकरणवैयाकरण हर्षनाथ दौ, वैयाकरण (04/06) ब्रजगोपाल जयगोपालवैयाकरण प्राध्यापक (Calcutta university Maithily Deptt।)

कहबाक तात्पर्य ई जे गजेंद्र जीक ई काज ऐतिहासिक अछि आ ज्ञान परम्परा के बचेबाक एक भागीरथी प्रयास अछि। एकरा पोथी नहि विराट परियोजना कहक चाही। एक व्यक्ति अपन समर्पण आ दृढ निष्ठा सँ कोना कोनो असंभव काजके संभव बना सकैत अछि तकर ई परियोजना जीवंत प्रमाण थिक। एहि कृति पर हमरा जनैत कोनो तरहक समालोचना अथवा आलोचना तँ नहिये लिखल जा सकैत अछि, कम सँ कम हम एकर समालोचना लिखबाक अधिकारी नहि छी। तखन एहि पर की

भऽ सकैत अछि ? एहि पर भविष्यक काज भ सकैत अछि। एकरा आधार पर तिरहुता लिपि के व्यापक प्रचार आ प्रसार भ सकैत अछि, मैथिली के रेयर intangible भाषा केर यूनेस्को लिस्ट मे स्थान भेटि सकैत अछि। एकरापर काज करैत जे पक्ष कमजोर अछि ताहि के सुधारल जा सकैत अछि। स्त्रीगण के उचित स्थान देल जा सकैत अछि। पञ्जी केर भाषा तिरहुता रखैत ओकरा त्रिभाषा फार्मूला के मानैत ओहि के देवनागरी आ रोमन लिपिमे यूनिकोड द्वारा कएल जा सकैत अछि। ईहो स्मरण करबाक बात अछि जे पञ्जी सामाजिक व्यवस्था छैक एहिमे अत्यधिक वैज्ञानिकता ताकब एकर प्रमाणिकतापर प्रश्न ठाढ़ क सकैत अछि। एकरा समयानुकूल बनबैत मिथिलाक आन जाति, समुदाय केर लोक सेहो स्वीकार कऽ सकैत छथि।

संपादकीय टिप्पणी- पाठक एहि आलेखमे देल गेल उद्धरण सभकेँ मूल रूपसँ देखबाक लेल गजेन्द्र ठाकुर द्वारा संपादित "दूषण पञ्जी"केँ एहि लिंकपर जा कऽ पढ़थि-
https://ia601402.us.archive.org/31/items/maithili_202209/Gajendra_Thakur_Dooshan_Panji_The_Black_Book.pdf

मिथिलाक पञ्जी आ ओकर संरक्षणक दिशामे श्री गजेन्द्र ठाकुर

भवनाथ झा

मिथिलाक पञ्जी की थीक, एहि सम्बन्धमे जनसामान्यमे बहुत भ्रान्ति पसरल अछि। ब्राह्मण, क्षत्रिय आ कायस्थ कें छोड़ि अनका पञ्जीसँ कोनो मतलब नै छलनि तें वार्ता नहि लेथि। मिथिलाक गन्धवरिया क्षत्रिय अपन पञ्जी अपनहि सुरक्षित रखने रहलाह, जे विशुद्ध वंशावली अछि, तें विवेच्य व्यापक पञ्जीसँ हुनका कोनो मतलब नहि रहलनि। बचलाह ब्राह्मण आ कायस्थ लोकनि, जिनक पञ्जी सेहो छनि आ ओकर अनुप्रयोगमे रुचि रहलनि, तें ओ यथासाध्य एकर अनुप्रयोग करैत वैवाहिक सम्बन्धमे धर्मशास्त्रीय मर्यादाकें बचबैत रहलाह। ब्राह्मणो समाजमे श्रोत्रिय समूहक समग्र पञ्जी उपलब्ध रहबाक कारणें आ परम्पराक प्रति विशेष दुराग्रहक कारणें वैवाहिक सम्बन्ध स्थिर करबामे एकरा दँतियौने रहलाह। आन-आन ब्राह्मण समूह विशेष परिस्थितिमे एकरासँ दूर होइत गेलाह।

एहने परिस्थितिमे जखन मिथिलाक समाजवादी-चिन्तक लोकनि आ साहित्यकारक एक समूहक लोक प्रगतिशील लेखन दिस झुकलाह तँ बुर्जुआ-विरोध, परम्परा-विरोध आ ब्राह्मणवाद-विरोधक संग मिथिलाक पञ्जी-विरोध सेहो मुखर कएलनि। शून्यता उत्पन्न करबाक फिराकमे संस्कृत-प्राकृत आदि भाषामे

संरक्षित मिथिलाक ज्ञान-परम्पराक विरोध सेहो भेल आ एही संग पञ्जी पिसाइत गेल। विडम्बना ई रहल जे पञ्जी की थीक तकर खोज करबाक किनको रुचि नै रहलनि।

समाज पञ्जीक मूलस्वरूपसँ अवगत नै छल, तें हरिसिंहदेवी व्यवस्था, पञ्जी-व्यवस्था आदि नाम दए एक वर्गक विरोध भेल, ओकर परम्पराक प्रति आस्थाक विरोध भेल आ कहल गेल जे ई पञ्जी जड़ता थीक, ऊँच-नीचक पोषक थीक, विवाहमे बंधनक कारक थीक, एकटा सामाजिक बेड़ी थीक, कुलीनताक पोषक थीक आदि-आदि अपवाह उड़ाओल गेल मुदा पञ्जी की थीक से केओ नै कहलनि।

एहि आन्दोलनसँ पञ्जीक क्षति भेल। प्रगतिशीलताक नाम पर बहुतो गोटे ओहिसँ विमुख भए पञ्जीकारक लग जाएब छोड़लनि। पञ्जीकार जे अपन बहुमूल्य समय दए ओकरा अद्यतन करैत छलाह तनिक आय घटलनि तँ ओहो विमुख होइत गेलाह। हुनक परिवारक लोक आन व्यवसायमे लागि गेलनि आ अद्यतन होएब बंद भए गेल। सौराठ सभा उजड़ि गेल। ओकरा उजड़बाक पाछाँ राज दरभंगाक संरक्षण समाप्त भए जाएब सेहो एक कारण रहल। मात्र श्रोत्रिय वर्गक पञ्जीकार अद्यतन करबाक लेल प्रस्तुत रहलाह।

स्वाभाविक छल जे उपयोग घटि गेलाक कारणें पञ्जीक पाण्डुलिपि झप्पामे बंद होइत गेल आ उदासीनताक कारणें नष्ट सेहो भेल। कोइलखमे पञ्जीकार कीर्तिनाथ झाक विशाल संग्रह नष्ट होइत हमरा देखल अछि।

एहन परिस्थिति मे पञ्जीक संरक्षण हेतु जँ केओ आगाँ आबि ठोस काज कएलनि तँ ओ छथि- गजेन्द्र ठाकुर। विदेह नामक पत्रिकाक माध्यमसँ ओ पूर्णियाक 19म शतीक प्रख्यात पञ्जीकार मोदानन्द झाक पञ्जीक स्कैनिंग कराए ओकर लिप्यन्तरण कराए सार्वजनिक कए देलनि। पञ्जी की थीक, एकर बानगी सोझाँ आएल। पञ्जीसँ सम्बन्धित तीन गोट विशाल पोथी गजेन्द्र ठाकुरजी प्रकाशित कएलनि, जाहिमे तिरहुता आ देवनागरी, दूनूमे पञ्जीक लिप्यन्तरण कएल प्रकाशित भेल-

1. जीनोम मैपिंग (450 ए. डी. सँ 2009 ए. डी.)--मिथिलाक पञ्जीप्रबन्ध (बर्ख-2009)
2. जीनियोलोजिकल मैपिंग (450 ए. डी. सँ 2009 ए. डी.)—मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध -भाग-2 (बर्ख-2012)
3. दूषण पञ्जी (बर्ख-2023)

एहि तीन पोथीक अतिरिक्त पाण्डुलिपिक डिजिटल कापी सेहो

विदेहक वेबसाइट पर सार्वजनिक उपयोगक लेल उपलब्ध करा देलनि। जँ एतए कनेक चामत्कारिक भाषाक प्रयोग करी तँ कहल जा सकैत अछि जे जेना हनुमानजी पूरा संजीवनी पहाड़े उठाए अनलनि तहिना हिनको जे जेना भेटलनि से समाज कें अग्रतर शोधक लेल उपलब्ध कराए देलनि। हिनक पाण्डुलिपिक पीडीएफ (PDF)मे बहुत रास एहनो दस्तावेज अछि जकरा पञ्जीसँ कोनो संबन्ध नै छलै, मुदा जें कि ओ एकरा विख्यात पञ्जीकारक पोथामे राखल छल तें पुरजी-पुरजी स्कैनिंग कराए शोधार्थीक लेल सामग्री उपलब्ध कराए देलनि। एहिमे बसैठी मन्दिरक शिलालेख, मिथिलाक शरयंत्री विद्वानक सूची आदि एहने सामग्री थीक, जे मोदानन्द झाक हाथक लिखल एहिमे अछि। ई परम्परा भारतमे सभठाम रहल अछि। प्राचीन कालक जे पोथी हमरालोकनिकें भेटैत अछि ओकर अधिकांश पाण्डुलिपिक एहने परम्परा रहल अछि। लिपिकार लिखैत रहलाह अछि जे –

यादृशं पुस्तकं दृष्टं तादृशं लिखितं मया।
यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयताम्।।
अर्थात् हमरा जेहन पोथीमे लिखल भेटल से हम लिखलहुँ। जँ शुद्ध अछि वा अशुद्ध, हमर दोष नहि। हमरा जनैत संरक्षणक आदर्श रूप यैह थीक। जे भेटलनि, जेना भेटलनि ओना गजेन्द्र ठाकुर समाज कें उपलब्ध कराए देलनि। एतावता, जीनोम मैपिंग

पोथीक माध्यमसँ पञ्जीक एक अंशक संरक्षण भए सकल अछि आ आगाँ शोधक बहुत दुआरि खुजि गेल अछि। आब जखन कि पञ्जीक वास्तविक नमूना सोझाँ आबि गेल अछि तँ स्पष्ट भए गेल अछि पञ्जी मात्र नाम आ गामक दस्तावेज थीक, जे कोनो प्रकारें ऊँच-नीचक भेद-भाव, आ कि बन्धन प्रस्तुत नै करैए। जेना कि समाजवादी लोकनि एकरा विषयमे भ्रान्ति पसारलनि जे वैवाहिक सम्बन्ध कतए करबाक चाही से पञ्जीसँ निर्धारित होइत अछि- ठीक एकर विपरीत बात अछि जे वैवाहिक सम्बन्ध कतए नै करबाक चाही से निर्धारित करबाक लेल पञ्जीक अनुप्रयोग होइत अछि। श्रेणी, पाँजि आदि पञ्जी नहि थीक ओ सर्वथा भिन्न वस्तु थीक। पञ्जी 10-12 टा सूचना उपलब्ध कराबए वला रेकर्ड मात्र थीक कोने व्यवस्था (System, management) आदि नहिं थीक।

आइ जँ केओ पढए चाहथि तँ हुनका ई सहजहिं बोध भए सकैत छनि जे मिथिलाक पञ्जी एकटा उच्च कोटिक परिचयक लिखित स्वरूप थीक, जकर अनेक प्रयोजन अछि। एकरा लेल ‘पञ्जी-व्यवस्था’ शब्दक प्रयोग सभसँ पैघ भ्रम थीक। कोनो प्रकारक ‘व्यवस्था’ पञ्जीक विषय नहिं ओ धर्मशास्त्रक विषय थीक। एहि व्यवस्था पर वाचस्पतिक “सम्बन्ध-विचार” सनक पृथक् ग्रन्थ अछि जे पञ्जीकें आधार मानि लिखाएल। बिहार रिसर्च

सोसायटी, पटनामे एकटा खण्डित तथा शीर्षकविहीन पाण्डुलिपि (बंडल संख्या 37, पाण्डुलिपि संख्या 91) मात्र 9 पत्रक अछि, जाहिमे व्यक्तिक नाम सभ छैक आ 'क्षेम्यः' आ 'अक्षेम्यः' शब्दसँ दू परिवारक बीचक सम्बन्धकें उचित आ अनुचित कहल गेल अछि। एहि प्रकारक ग्रन्थ आरो लिखाएल होएत, से सम्भव। एहि ग्रन्थक प्रकाशन आवश्यक अछि।

16म शतीमे रघुदेव "पञ्जी-प्रबन्धः कृतः" कहैत छथि। 'प्रबन्ध' शब्दक अर्थ थीक एक सूत्रमे बाँधल ग्रन्थ, मुदा 'प्रबन्ध' शब्दक प्रयोग 'प्रबन्धन' - अंगरेजीक 'मैनेजमेंट' क अर्थमे कएल गेल सेहो भ्रम थीक। ई प्रबन्ध शब्दक अर्थ नहिं लगबाक कारणें आ व्यवस्था शब्दक मानसिकताक कारणें ई भ्रम सभ पसरल। तेसर भ्रम इहो पसरल जे पञ्जी विवाहमे सीमा निर्धारित करैत अछि, अर्थात् विवाह कोन कोन परिवारमे भए सकैत अछि, तकर अनुमति दैत अछि। जखनि की वास्तविकता ई अछि जे पञ्जी मात्र रक्तसम्बन्धक निर्णय दैत अछि जे अमुक वरक विवाह कोन कोन परिवारमे नहि भए सकैत छैक। पञ्जी स्वजनक सीमा निर्धारित करैत अछि। कोनो परिस्थिति मे केओ मैथिल भाइ-बहिन, काका-भतीजी, मामा-भगिनी आदि सनक वैवाहिक सम्बन्ध स्वीकार कए गारि नै सुनए चाहताह। बहुत परिस्थितिमे एहि पंक्तिक लेखकक अनुभव रहल अछि जे जाहि

व्यक्तिक संग कोनो सम्बन्ध ध्यान पर नै अबैत अछि, मुदा जखन जाँचल जाइत छैक तखनि बड़ नजदीक सम्बन्ध ठहरि जाइत छैक। तें पञ्जीकारक द्वारा अस्वजनक निर्णयक बादे वैवाहिक कार्य श्रेयस्कर अछि। एहि प्रकारें पञ्जीक सम्बन्धमे पसरल अनेक भ्रमक कारणें एकर उदात्त परम्पराकें बहुत हानि पहुँचलैक जकरा तोड़ैत मिथिलाक पञ्जीकें अपन स्वरूपमे सोझाँ अनबाक श्रेय गजेन्द्रजी कें देल जेबाक चाही।

यद्यपि समग्र रूपसँ देखल जाए तँ हिनका द्वारा संकलित पञ्जी मिथिलाक सम्पूर्ण पञ्जीक नगण्य भाग थीक। संगहि एकर उत्तर सीमा 1900 ई. धरि मानल जा सकतै अछि। हमरा जाहि-जाहि मूलसँ सम्बन्ध रहल अछि ओहिमे हम इएह पबैत छी। हमर प्रपितामहक नाम एतए भेटैत अछि, मुदा तकर बाद अद्यतन नै भेल छै। एहि प्रसंग हमर मत अछि- जे नहि छैक तकर विवेचने अनुचित होएत; जे छै तकर गप्प होएबाक चाही। आ हम पहिनहि कहि आएल छी जे गजेन्द्रजी हनुमानजकाँ संजीवनी पहाड़ उखाड़ि आनि देने छथि आब हमर-अहाँक काज थीक जे एकरा अधिकसँ अधिक उपयोगी बनाओल जाए आ अग्रतर सामग्रीक खोज कएल जाए।

एतावता, गजेन्द्र ठाकुरजी यथारूप पञ्जीक जतबे भागक संरक्षण कएलनि से महत्त्वपूर्ण रहत आ वर्तमान मे जे केओ एहि

दिशामे प्रयासरत छथि अथवा प्रयास करबाक योजना बनाए रहल छथि ओ पहिने एकरा देखथु, उदाहरण लए आगाँ काज करथु।

अन्त मे किछु सुझाव अछि जे पञ्जीमे जतेक मूल आ शाखा अछि सभटाकेँ शीर्षक आ उपशीर्षकमे बाँटि पोथीक पृष्ठ संख्या दए ओकर Table of Content वैज्ञानिक ढंगसँ बनाओल जाए। बहुत ठाम शाखाक नाम पञ्जीक बीचमे घोंसिया गेल अचि ओकरा सभकेँ स्पष्ट कएल जाए। मोटा-मोटी पोथीक दुर्बोधताक मुख्य कारण अछि जे ठीक ढंगसँ फॉरमेटिंग नहि भेल छैक। शीर्षक, उपशीर्षक आ पाठक फोंट साइजक व्यवस्था नीक ढंगसँ नै भेल छैक। एक कॉलममे मिथिलाक्षरक पाठ पोथीकेँ आर बोझिल बनाए देने अछि। पीडीएफ (PDF) फाइल बनएबामे पता नहि किएक A4 साइज पर राखल गेल, ओकर Document size सेहो राखल जा सकैत छल आ तखनि प्रत्येक पत्र पर जे रिक्तस्थान अछि से नहि रहलासँ हमरा सन लोककेँ मूल मिथिलाक्षरक पाण्डुलिपि पढबामे सुविधा होइत। तालपत्रक पृष्ठ सभ पर कलमसँ संख्या लिखब सेहो बहुत भ्रान्ति उत्पन्न करैत अछि। स्कैन करबासँ पूर्व तालपत्रकेँ पूर्वापर क्रमसँ मिलाए लेब आवश्यक छलैक से नै रहलासँ कोनो सामग्रीक संगत पाण्डुलिपि नै भेटैत छै। वर्तमानमे जे पाण्डुलिपिक

पीडीएफ (PDF) अछि से ततेक पैघ छै जे कोनो मूलक पाण्डुलिपि ताकब असम्भव जकाँ लगैत अछि। हम करमहा मूलक पाण्डुलिपि तकैत रहि गेलहु हमरा भरि दिनमे नहिं भेटि सकल।

अस्तु, आब जखनि कि सभटा वस्तु डिजिटल रूपमे उपलब्ध अछि तँ सभ किछु फेरसँ सम्भव छै। फेरसँ पोथी तैयार भए सकैत छै। कहबी छै जे शुद्ध सोनाक गहनाक काट पर कोनो चर्च नै होएबाक चाही। से सत्ते, पञ्जीक क्षेत्रमे गडजेन्द्र ठाकुरजी सोना उपराए समाजके दए देने छथि, ताहि लेल हुनका अशेष, धन्यवाद!

सौजन्यमूर्ति श्री गजेन्द्र बाबू

भीमनाथ झा

श्री गजेन्द्र ठाकुरजीसँ परिचयक सूत्रधार थिकाह नचिकेताजी। ओ फोनपर कहलनि जे हुनक एक नव नाटक 'नो एंट्रीः मा प्रविश' (2008) गजेन्द्र ठाकुर छपलनि अछि। हुनकासँ अहाँकेँ उपलब्ध होयत। ई मन नहि पड़ैत अछि जे ओ गजेन्द्र बाबूक कंटैक्ट नम्बर हमरा देलनि कि हुनके हमर नम्बर देलथिन। मुदा, दस दिनक भीतरे दस प्रति रजिस्टर्ड पार्सलसँ आबि गेल। चिट्ठीमे छल जे ई प्रबुद्ध पाठक लोकनिक हाथमे चल जाइन। पोथीक प्रस्तुति सत्य पूछी तँ हमरा आकृष्ट नहि कयने छल। मुदा, उपलब्ध करयबा लेल हुनका धन्यवाद देलियनि आ पुछलियनि जे दाम कोना जायत ? कहलनि– दाम नहि लेबनि, ओहिना देबनि।

एहि तरहेँ परिचय गढ़ाइत गेल। कहलनि जे ओ एक बेर हमर डेरापर अयलो रहथि। मुदा, हमरा मन नहि पड़ल, अथवा हिनका हमरासँ भेट नहि भ' सकलनि। क्रमशः ई बुझबामे देरी नहि लागल जे ई तँ पोथी लिखबामे 'गणेश' छथि, छपबामे 'विश्वकर्मा'। दनादन पार्सल भेट' लागल। हम 'मन्द' पाठक, ई 'द्रुत' लेखक। सकब पराभव। से पोथी नाना प्रकारक, नाना

विधाक। ताहिमे किछु तँ पोथा। पाँच सय पेजक, सात सय पेजक। 'कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक', 'जीनोम मैपिंग'। ताहिपरसँ 'विदेह' पत्रिकाक अनेक अंक। तकर संचयन। ओहि पत्रिकाक विशेष आकर्षण छलैक मैथिली साहित्यकारक चित्रक वृहत् एलबम। मैथिली-इंग्लिश डिक्सनरी। किछु पोथी आनो लेखकक, श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी प्रभृतिक सेहो, मुदा बेसी स्वलिखित। दू-तीनटा चित्रात्मक बालकथा-संग्रह हिनक पत्नी श्रीमती प्रीति ठाकुरक लिखल, लिखिया कयल सेहो।

ताहिमे दू ग्रन्थक विशेष उल्लेख कर' चाहब। पहिल नाम लेब ब्रेल लिपिमे 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासक। खूब मोट पोथी। सभ जनैत छी जे ब्रेल लिपिक आविष्कार भेल ओहि दिव्यांग भाइ-बहिन लेल, जे प्रज्ञाचक्षु छथि। स्थानीय 'पूअर होम'मे हुनका लोकनिक विद्यालय चलैत छनि। विद्वान् शिक्षक ओ प्रतिभावान छात्रगण सभ प्रज्ञाचक्षु। ओहि बाटे जयबा-अयबा काल देखियनि तँ बराबरि, मुदा अध्ययन- अध्यापन- शैलीक कोनो जनतब नहि छल। गजेन्द्र बाबूकेँ ओहि विद्यालय द' बुझल छलनि। तेँ ओ हमरा ओहि लिपिमे तैयार 'सहस्रबाढ़नि' दू प्रति पठौलनि। एक ओहि विद्यालय लेल, एक हमरा हेतु।

हम पोथी ल'क' विद्यालय पहुँचलहुँ। हेडमास्टर साहेबक संग सभ शिक्षक ई जानि आश्चर्यचकित भ' गेला जे मैथिलीयोमे ब्रेल

लिपिमे पोथी आबि गेलैक अछि, ई तँ बड़ सौभाग्यक विषय थीक। कहैत गेलाह जे ई घटना हमर कल्पनासँ बाहर छल। ताहूमे सामान्य पोथी नहि– दू सयसँ ऊपर पृष्ठक उपन्यास। के थिकाह ई महानुभाव ? हम जतबा जनैत रही, से गजेन्द्र बाबूक व्यक्तित्व-कृतित्वक प्रसंग कहलियनि। ओ लोकनि कहलनि जे ई पोथी ओना नहि लेब। काल्हि स्कूलमे मीटिंग राखब। ओहिमे हाकिम लोकनि आ संस्थाक पदाधिकारी लोकनिकेँ आमन्त्रित करबनि। ताहि समारोहमे ई प्राप्त करब। ई हमरा लोकनि लेल अभिनव उपहार तँ थीके जे मैथिली साहित्योक हेतु विशेष घटना थिकैक। सैह भेलैक। प्रात भेने औपचारिक समारोह आयोजित भेलैक आ ताहिमे मैथिली साहित्यक एहि काजक भूरि-भूरि प्रशंसा कयल गैलैक, संगहिँ गजेन्द्र बाबूक एहि हेतु अभ्यर्थना कयल गेलनि।
एकर दोसर प्रति हम ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक मैथिली विभागमे, जत' हम पहिने काज करैत रही, उपहृत क' देलिऐक, एहि ल'क' जे भविष्योक छात्र ओ अनुसन्धाता लोकनि मैथिलीक एहि लिपिमे पोथी (वस्तुतः पोथा) केँ देखथि आ गौरवान्वित होथि।

दोसर पोथी थिक 'जीनोम मैपिंग'। ई पञ्जी प्रबन्धक पोथा हार्ड बाउंडमे छपल अछि। सम्पूर्ण पोथा समानान्तर देवाक्षर तथा

मिथिलाक्षमे मुद्रित अछि। मिथिलाक्षरो टाइपेमे अछि। ई 450 ए.डी.सँ 2009 ए.डी. धरि मूल तड़िपतसँ उतारि मुद्रित कयल गेल अछि। एहि प्रसंग एक रोचक विषय सेहो कहबाक मन भ' गेल अछि। से ई जे गजेन्द्र बाबू ई ग्रन्थ तैयार करैत रहथि ताही क्रममे एक राति नौ-साढ़े नौमे फोनक घंटी घनघनायल। कहलनि– एखन अहीँ कुलक पन्ना उनटल अछि। ई कहैत ऊपरसँ धरधराक' हमरा धरिक उतेढ़ सुना देलनि। पुछलनि जे ठीक अछि की नहि ? नहि ठीक होयबाक प्रश्ने ने छलैक। पुन: कहलनि– तखन अगिलो पीढ़ीक नाम लिखा दिय'। हम दुनू बालकक नाम लिखा देलियनि। तकर बाद हमहीँ पुछलियनि– कतहु स्त्रिगणक नाम सेहो भेटल अछि ? कहलनि– भेटल तँ नहि अछि, मुदा किए पुछैत छी ? कहलियनि– हमरा तीन टा कन्यो छथि। तइपर कहलनि– लिखा दिय' हुनको सभक नाम। नहि छैक तेँ की ? रह'क तँ चाहिते छलैक। अहीँसँ शुरू करैत छी। हम तीनू कन्याक नाम लिखा देलियनि। छपलापर पठौलनि तँ देवाक्षर-मिथिलाक्षर दुनू लिपिमे अपन पाँचो सन्तानक नाम मुद्रित देखलहुँ। आनमे की कयलथिन, से तँ नहि कहि, मुदा हमर सन्तानमे तीनू कन्याक नाम सेहो अछि। पञ्जी मे महिलोक नाम रहब कतेक जरूरी छलैक– से आबक समाजवैज्ञानिक लोकनि जनैत छथि। एकर आरम्भ करबाक श्रेय श्री गजेन्द्र ठाकुरेजीकेँ छनि, ईहो तथ्य भविष्यक अन्वेषी समाजवैज्ञानिक लोकनि अवश्य उजागर करताह कहियो-ने-कहियो। हम तँ एहि लेल

हिनक अनुगृहीत रहबे करबनि।

एक बेर हिनक दिल्ली-आवासपर जयबाक आ दिव्य भोजन करबाक सौभाग्य सेहो प्राप्त कयने छी। घटना एना छैक। कोनो कार्यवश पाँच-छौ दिनक हेतु हमरा दिल्ली जाय पड़ल छल। गुरुवर अमरेश पाठकजी, मित्रवर देवेन्द्र झाजी, सुहृद्वर प्रेमशंकर सिंहजी, दू-एक बन्धु (नाम नहि स्मरण अछि) आर रही। एके होटलमे सभक आवास छल। प्रेमशंकरोजी हिनक मित्र– से हमरा नहि बुझल छल। ओ हिनका फोन क' देलथिन। होटलक पता द' देलथिन तँ ओ दोसर साँझ भेट कर' आबि गेलथिन। हुनकासँ गप्पक क्रममे हमरो लोकनि द' पता चललनि। लगले हमर कोठलीमे अयलाह। हम तँ अकचका उठलहुँ। जे-से। हमरा सभ गोटेकेँ अगिला रातिक नोत द' देलनि। हिनके व्यवस्थाक दू कारसँ जाइत गेलहुँ। विलक्षण भूरि भोजन भेलैक। सभ कोठली पोथीसँ भरल देखलियनि। सभकेँ पोथीक मोटका बंडलक उपहार प्राप्त भेलनि। हमरा तँ पूर्वहि पठा देने रहथि। हिनक आदर्श परिवारक सौजन्यसँ सभ गोटे गदगद होइत गेलहुँ।

ओकर बाद 'सगर राति दीप जरय'क कार्यक्रममे ई अनेक नवीन पोथीक संग कबिलपुर (लहेरियासराय) आयल रहथि, जाहिमे तकर लोकार्पण सेहो करौलनि। ओहिमे भेट भेल आ बड़ी काल

संग बैसलहुँ। तकर बाद देहादेही दर्शनसँ आँखि तँ वंचित रहल अछि, किन्तु अनेक मुँहसँ हिनक यशस्विताक बखान सुनि-सुनि दुनू कान लगातार तृप्त होइत रहैत अछि।

संपादकीय टिप्पणी-दरभंगाक पूअर होमक अतिरिक्त All India Confederation Of The Blind सेहो 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासकेँ बिक्री लेल रखने छै।

मिथिलाक धरोहरिक संरक्षक गजेन्द्र ठाकुर

डॉ. शिव कुमार मिश्र

मिथिलाक सांस्कृतिक धरोहरि विश्वविख्यात अछि मुदा एकर संरक्षकक सर्वथा अभाव छैक। अपन समृद्ध परम्पराक बखान सभ ठाम सुनबाक लेल भेटैछ मुदा संरक्षणक चर्चा मात्रसँ अरुचि हएब मिथिलाक लेल दु:खद छैक। अपन समृद्ध परम्परा ओ धरोहरिक प्रति उदासीनताक प्रतिफल छैक जे कतोक निस्सन धरोहरि एकाएकी नष्ट भऽ गेल ओ भऽ रहल छैक। एहना स्थितिमे किछु एहन व्यक्तित्व सेहो मैथिल समाजमे छथि जे अपन परम्परा ओ सांस्कृतिक थातीक संरक्षण कार्यकेँ एकटा मिशनक रूपमे अपन जीवनमे अङ्गीकार कएने छथि, ताहिमे गजेन्द्र ठाकुर जे काज कएलनि एवं कऽ रहलाह अछि से सामान्य काज नहि। हुनक काजक आकलन करबाक लेल विशेष अध्ययन ओ कठिन श्रम आवश्यक। तथापि अपन अनुभवक आधारपर गजेन्द्र ठाकुर द्वारा मिथिलाक धरोहरि एवं एकर लिपिक संरक्षणक लेल कएल जा रहल प्रयासक संबंधमे किछु विचार रखबाक चेष्टा एहि आलेखमे कएल जा रहल अछि।

मिथिलाक दुर्लभ धरोहरि पञ्जी-प्रबंध थिक। एकर लिपि तिरहुता ओ कैथी थिक। दुर्लभ पञ्जीक संरक्षण हेतु गजेन्द्र ठाकुर जे

काज कएलनि से स्तुत्य अछि। जाहि समाजमे अपन पुरखाक थातीकेँ नुका कऽ रखबाक प्रवृति छैक। नुकौने-नुकौने सड़ा देबाक प्रवृति सेहो छैक, ताहि समाजक दुर्लभ पाण्डुलिपिकेँ बाहर आनि स्कैनिंगक सङ्गहि तिरहुता लिपिमे कंपोज कऽ प्रकाशित केनाइ एकगोट अद्भुत काज छैक। जिनोम मैपिंग नामक अपूर्व ग्रंथक प्रकाशनक लेल पजियार विद्यानंद झा सहित जे सभ हुनका सहयोग केलखिन से सभ गोटे प्रणम्य छथि। पञ्जीक संरक्षणक दिशामे जे कोनो प्रयास कएल जाइछ ताहिमे एक गोट भ्रांति सभसँ पहिने अबैछ जे पजियार लोकनिक पूर्ण सहयोग नहि भेटैछ। एहि भ्रांतिमे किछु सत्यता सेहो छैक मुदा गजेन्द्रजी एहि समस्याक समाधान कऽ विद्यानंद झा पजियारसँ सहयोग लेलनि ताहि लेल साधुवाद।

मिथिलाक पांडुलिपि ओ पञ्जीक संरक्षणक लेल अंतरराष्ट्रीय लब्धप्रतिष्ठ संस्थान इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॅार आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज, नई दिल्ली (इन्टैक) द्वारा वर्ष 2021मे 15 लाख टका खर्च करबाक योजना छल। एहि लेल लखनउसँ विशेषज्ञ पठाओल गेल मुदा जे सभ पांडुलिपि ओ पञ्जीक मालिक छथि से सभ अपन थातीकेँ नुका कऽ रखबाक लेल कटिबद्ध छलाह। एहिमे सरकारी ओ सामाजिक दूनू थातीक कर्णधार एकरा नष्ट करबाक लेल कटिबद्ध छथि। कतोक घमर्थन आ नेहोराक बाद सरकारी संस्थानक पदाधिकारीलोकनि तैयार भेलाह। मात्र दुई

गोट पजियार प्रो. जयानंद मिश्र (ननौर, मधुबनी) ओ संजीव प्रभाकर (दरभंगा) अपन पञ्जीक किछु पोथीकेँ संरक्षित करबौलनि। पाण्डुलिपि ओ पञ्जीक संरक्षण लेल जागरुकता उत्पन्न करबाक निमित्तसँ सौराठ, दरभंगा ओ लालगंजमे कार्यक्रम आयोजित कएल गेल तथापि केओ टससँ मस नहि भेलाह। संरक्षण काजक उपहास सेहो कएलनि। एहन सामाजिक हठवादिताकेँ परास्त करैत जे काज करैत छथि से निश्चित रूपें प्रणम्य छथि।

गजेन्द्र ठाकुर कहैत छथि जे ब्राह्मणक पञ्जी तिरहुता ओ कैथी दूनू लिपिमे लिखल छैक। स्वाभाविक छैक जे पञ्जीक प्रकाशनार्थ तिरहुता ओ कैथी दूनूकेँ कंपोज करऽ पड़लनि आ तैं दूनू लिपिक ज्ञान लेबऽ पड़ल छनि। ई दूनू लिपि मैथिल समाजसँ विलुप्त भऽ गेल छैक। विश्वविद्यालयमे पढ़ौनीक व्यवस्था नहि छैक। पूर्वमे जे तिरहुताकेँ पाठ्यक्रममे राखल गेल छल शनैः शनैः ओहो बन्न कऽ देल गेल। ओना किछु संस्था सभ एकर पुनर्स्थापनक लेल प्रयास अवस्स कऽ रहल छैक। एहि अभियानसँ कतोक व्यक्ति तिरहुता लिपि सिखलनि अछि।

मिथिलामे तिरहुता लिपिक प्रायः डेढ़ हजार बर्ख पुरान साक्ष्य भेटैत अछि। प्राचीन नालंदा ओ विक्रमशिला विश्वविद्यालयमे एहि

लिपिक व्यवहार होइत छल जकर प्रमाण तात्कालीन पाण्डुलिपिक फिल्म निगेटिभ अछि। तिब्बतसँ महापंडित राहुल सांकृत्यायन द्वारा किछु ओहन पांडुलिपिक फोटो आनल गेल छल जे ताड़पत्रपर लिखल छल। ई पोथीसभ तिब्बतक मठ सभमे सुरक्षित छल। सातम-आठम शताब्दीमे नालंदा महाविहारक पंडित लोकनि बौद्ध धर्मक प्रचारार्थ एहि पोथीसभकेँ तिब्बत लऽ गेल रहथि। 1929 ईस्वीसँ 1938 धरि राहुलजी द्वारा एहि अमूल्य थातीकेँ तिब्बतसँ फोटो आनि फिल्म निगेटिभ ओ ग्लास निगेटिभ बनबाओल गेल एवं बिहार एंड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, पटनामे राखल गेल। एहिमेसँ कतोक पोथीकेँ वर्तमानक बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना ओ काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना द्वारा प्रकाशित कएल गेल छल। शेष पोथीक प्रकाशन लेल केंद्रीय उच्चतर तिब्बती अध्ययन संस्थान, सारनाथ द्वारा प्रक्रिया चलि रहल अछि। एहि काज लेल उक्त संस्थानक कुलपति ओ एहि आलेखक लेखकक बीच सहमतिपत्र पर हस्ताक्षर भेल अछि।

विक्रमशिला उत्खननमे जे शिलालेख सभ भेटल छैक सेहो तिरहुता लिपिक अछि। एकर समय नवम-दसम शताब्दीक मानल जा सकैछ। एकर अतिरिक्त बिहार-झारखंडक जतेक मूर्ति अभिलेख अछि ओ चाहे बौद्ध प्रतिमापर हो अथवा सनातन धर्मसँ संबंधित मूर्तिपर हो सभ पर तिरहुता अभिलेख भेटैछ।

लखीसरायमे सभसँ बेसी मूर्ति अभिलेख भेटल अछि। एकर अतिरिक्त बिहारक सभ संग्राहलयमे तिरहुता लिपिमे उत्कीर्ण अभिलेख भेटैछ। ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर ओ विद्यापतिक विविध कृति सभक अतिरिक्त आओरो विद्वान सभक कृति सभ तिरहुता लिपिमे छैक। कतोक पाण्डुलिपि नेपालक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे रक्षित अछि। कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयमे प्रायः साढ़े पाँच हजार ग्रंथ सभक पाण्डुलिपि छैक एवं मिथिला शोध संस्थान, दरभंगामे प्रायः साढ़े बारह हजार ग्रंथ छैक। एहि सभमे बेसी तिरहुतामे छैक। तिरहुताक अतिरिक्त कैथी, नेवारी, बंगाली प्रभृति लिपिक पाण्डुलिपि सभ सेहो रक्षित अछि। मुदा एहि थाती सभकेँ पढ़निहारक सर्वथा अभाव छैक।

तिरहुता लिपिक चर्चा करितहि मैथिल विद्वान सभसँ पहिने दरभंगा महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहकेँ तिरहुताक विरोधी एवं देवनागरीक संरक्षक घोषित कऽ दैत छथि, मुदा लक्ष्मीश्वर सिंहक जन्मसँ प्रायः पचास बर्ख पूर्वहि फ्रांसिस बुकानन महोदय अपन भागलपुर रिपोर्टमे कहैत छथि जे मिथिलाक पंडित सभ देवनागरी ग्रंथक उपयोग करैत छथि। ओ तिरहुता लिपिक शिलालेख सभक चर्चा सेहो करैत छथि। एहि स्थितिमे सुगम मार्गक चयन करैत देवनागरीक प्रयोग एहिठाम दू सए बर्ख पहिनेसँ होइत अछि।

तिरहुते जकाँ कैथी लिपिक संरक्षण सेहो गजेन्द्र ठाकुर कऽ रहल छथि। जाहि समय कैथी पढ़नाहरक सर्वथा अभाव छैक ओहन परिस्थितिमे कैथी लिपिक पञ्जीकें सभक सोझाँ आनि ठाकुरजी बड़ पैघ काज कएलनि। अपन पत्रिकामे तिरहुता संगहि कैथीक प्रयोग कऽ ओ सिद्ध कऽ दैत छथि जे ई दूनू लिपि मिथिलाक विलक्षण धरोहर थिक।

कैथी लिपिक प्रमाण मिथिलामे नवम-दसम शताब्दीसँ भेटि रहल अछि। मधुबनी जिलाक अंधराठाढ़ी स्थित कमलादित्य स्थानमे तिरहुताक प्रतिमालेखक संग कैथीक शिलालेख सेहो भेटल छल। श्रीधर दास द्वारा उत्कीर्ण तिरहुताक विष्णु प्रतिमालेख एखनहु मंदिरमे राखल अछि। एकगोट अभिलेख फेर किछु बर्ख पहिने भेटल छल जे बौद्ध देवी ताराक पादपीठपर अंकित छैक। एहिपर बौद्धमंत्र अंकित छैक जकर प्रयोग प्रतिमा स्थापनाक उपलक्ष्यमे बौद्ध लोकनि करैत छलाह। कैथी लिपिक शिलालेखकेँ नव मंदिर निर्माणक समय माटिमे गाड़ि देल गेल, एहिपर "मगरधज जोगी 700" अंकित छल। मधेपुरा जिलाक घैलाढ़ प्रखंडक श्रीनगर गामक प्रसिद्ध पुरास्थलपर सेहो एकगोट शिलालेख पड़ल अछि जाहिपर 'मगरधज जोगी 100' अंकित छैक। एकर समय सेहो नवम-दशम शताब्दीक मानल जा सकैछ। एकर अतिरिक्त मिथिलाक बाहर कैमूर जिलाक बैद्यनाथ मंदिरमे सेहो ई अभिलेख

भेटल अछि। कैथी लिपिमे अंकित "मगरधज जोगी" शब्दक प्रयोग उत्तर प्रदेशक भागलपुर, राजस्थानक चित्तौड़गढ़, उड़ीसाक कटक, महाराष्ट्रक केलोड़, मर्कंड ओ चूरिल, छत्तीसगढ़क पोतेनार, भोरमदेव, कंकाली, देवारगाँव ओ पाली, मध्यप्रदेशक खजुराहो, बिलहरी, हिन्दोरिया, नरसिंघपुर, मन्धाता, अमरकंटक, चंद्रेहे ओ नारायणपुर प्रभृति कतोक ठाम भेल अछि। प्रसिद्ध मैथिली ग्रंथ वर्णरत्नाकरमे चौरासी सिद्धक वर्णनक क्रमे "मगरधज" शब्दक उल्लेख कएल गेल अछि। बादक समयमे जमीनक कागजात एहि लिपिमे लिखल जाए लागल। प्रसिद्ध भाषाविद डा सुभद्र झाक अनुसारें जे व्यक्ति संस्कृत एवं तिरहुता नहि जनैत छलाह से सभ कैथीक प्रयोग करैत छलाह। एहि लिपिक पांडुलिपि चंद्रधारी संग्रहालय, दरभंगा,रामचंद्र शाही संग्रहालय, मुजफ्फरपुर सहित कतोक ठाम संगृहीत छैक।

एहि बीच तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय द्वारा कैथी ओ तिरहुताक प्रशिक्षण हेतु छौ मासक सर्टिफिकेट कोर्स आरंभ कएल गेल अछि। भागलपुरक अतिरिक्त दरभंगा ओ पटनामे पछिला दस बर्खसँ कतोक बेर तिरहुता एवम् कैथी लिपिक प्रशिक्षण लेल कार्यक्रम आयोजित भेल अछि। भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना, इन्डियन नेशनल ट्रस्ट फॅार आर्ट एण्ड कल्चरल हेरिटेज ओ भागलपुर

संग्रहालयक एहि काजमे प्रमुख भूमिका रहल अछि। एहि कार्यक्रम सभमे हजारो लोककेँ दूनू लिपिक प्रशिक्षण भेटल। तिरहुता ओ कैथी लिपिक अतिरिक्त नेवारी लिपिक संरक्षण सेहो गजेन्द्र ठाकुरजी कऽ रहल छथि। नेवारी लिपिक पाण्डुलिपिक भंडार सभसँ बेसी नेपालमे अछि। कतोक मैथिली ग्रंथ नेवारी लिपिमे लिखल अछि। अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त भाषा वैज्ञानिक प्रो. रामावतार यादव महोदय द्वारा कतोक नेवारी लिपिक ग्रंथकेँ संपादन कएल गेल अछि। मिथिला सहित देश-विदेशक आन-आन भागमे सेहो नेवारी लिपिक पांडुलिपि सभ रक्षित छैक। एहि लिपिक पढ़नाहरक सेहो अभाव छैक। मुदा गजेन्द्र ठाकुरजी एहि लिपिक माध्यमसँ अनवरत काज कऽ रहल छथि। अपन पत्रिका सभमे सेहो एकर प्रयोग करैत छथि। त' स्वाभाविक अछि जे एहि लिपिक संरक्षणमे सेहो हुनक प्रमुख योगदान छनि। गजेन्द्र ठाकुरजी मुख्य रूपसँ धरोहरि सेनानी छथि जे सदिखन मिथिलाक धरोहरि संरक्षण-संवर्धनक काजमे प्रवृत रहैत छथि। मिथिलाक लिपि तिरहुता, कैथी ओ नेवारीक अतिरिक्त देवनागरी, ब्रेल, नास्तलिक (उर्दूक लिपि) प्रभृतिक सेहो संरक्षण लेल सदिखन उद्यमशील रहैत छथि। हिनक वेबसाइटपर जतेक ग्रंथ हिनका माध्यमसँ अपलोड कएल गेल अछि ताहिसँ मिथिलाक लिपि, भाषा, साहित्य, इतिहास ओ संस्कृति प्रभृतिक विषयमे अध्ययन केनिहार लोकनिकेँ विशेष लाभ भेटि रहल छनि। कामना अछि जे गजेन्द्र ठाकुरजी दीर्घायु होथि एवं स्वस्थ

रहथि आ एहिना धरोहरिक संरक्षण करैत रहथि।

गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी, अंग्रेजी-मैथिली आ अंग्रेजी-मैथिली कम्प्यूटर शब्दकोशपर

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

जखन सैमुअल जॉनसनक 'अ डिक्शनरी ऑफ द इंग्लिश लैंगुएज' (1755) प्रकाशित भेल तखन जा कऽ अंग्रेजी विद्वान आ विद्यार्थीकेँ यथार्थमे अपन भाषामे एकटा विश्वसनीय आ परिष्कृत कोश भेटलन्हि। अंग्रेजीक अधिकांश पहिलुका प्रयास गंभीरतासँ रहित छल। 1604 ई.क रॉबर्ट काउड्रेक कोश जकर नाम 'अ टेबल अल्फाबेटिकल' आ कतेक आन कृति आ तकर अनुकरण केनिहार आन कृति सभ ओहि मानदण्डक अनुरूप नहि छल जे शेष यूरोपमे कोश निर्माणक परम्पराक अनुरूप होअए। मुदा पहिलुका द्विभाषी कोश सभ जाहिमे विदेशज फ्रेंच, इटालवी वा लैटिन शब्द सभ अंग्रेजीमे परिभाषाक संग सम्मिलित छल एहि सभसँ नीक छल आ ताहिमे 1592क रिचर्ड मुलकास्टरक ग्लॉसरी एकर एकटा उदाहरणक रूपमे राखल जा सकैत अछि। ई सभ तखनहु अरबी कोश सभक समकक्ष नहि छल जे 8म आ 14म शताब्दीक बीचमे संग्रहित भेल विशेषतः सामान्य काजक लेल रचित कोश सभ जेना 'लिसान अल अरब' (तेरहम शताब्दी)।

अंग्रेजी जेना एकरा हम आइ देखैत छी, भाषाक वैश्विक इतिहासमे एकटा सापेक्षतया नूतन घटना अछि संभवतः

मैथिलीसँ किछुए पुरान। ई एहि लेल किएक तँ जखन मैथिलीक सभसँ पुरान उपलब्ध ग्रन्थ ज्योतिरीश्वर द्वारा लिखल जा रहल छल ओ समय रहए अंग्रेजीमे चौसरक। पाश्चात्य कोशमे सभसँ पुरान कोश तखुनका अक्कादी साम्राज्यमे रचित भेल जाहिमे सुमेरी-अक्कादी शब्द सूची रहए (आधुनिक सीरियाक एबलामे प्राप्त) आ एकर समय छल लगभग 2300 ई.पू.। मुदा सभसँ प्राचीन ग्रीक कोश ’एपोलोनियश द सोफिस्ट’ प्रथम शताब्दीक, ई होमरयुगीन शब्दपरिभाषा आ अर्थ सूचीबद्ध करैत अछि आ एकटा उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। द्वितीय सहस्राब्दी ई.पू. उर्रा-हुबुल्लु शब्दार्थसूची जे एहने द्विभाषी शब्द सूचीक संग पुरान कोशीय लेखाक एकटा आर उदाहरण अछि जेकर तुलना तेसर शताब्दीक चीनी परम्परे सँ कएल जा सकैत अछि। प्रारम्भिक जापानी प्रयास 682 ई.क चीनी अक्षरक नीना ग्लॉसरी आ सभसँ पुरान उपलब्ध जापानी कोश तेनरेइ बान्शो मैगी (835 ई.) सेहो महत्त्वपूर्ण प्रयास छल। भारतमे वैदिक साहित्यक संरक्षण व्याकरण आ कोशीय रचनाक लेल सभसँ पैघ उत्प्रेरक छल। संस्कृतक पाणिनीय आ दोसर वैयाकरणिक परम्परामे ई एकटा सामान्य आ पूर्णतः आधारभूत कार्य रहए- वैदिक वाक्यकेँ शब्दमे खण्ड-खण्ड करब आ शब्दकेँ खण्ड करब धातु-प्रत्ययमे। एहि क्रममे शाब्दिक संरचना, भाषायी ध्वनि तन्त्रक संग संरचनात्मक-ध्वन्यात्मक सिद्धांत सभ सेहो विकसित भेल। ई

विश्वास कएल जाइत अछि जे निघण्टु (700 ई.पू.) पर यास्क एकटा निरुक्त नाम्ना भाष्य लिखलन्हि जे आइ सभसँ पुरान ज्ञात कृति अछि आ ई परम्परा सेहो पाली परम्परा धरि चलल। ओ सभटा कोशीय सामग्रीकेँ समानार्थी आ समानह्निजए-ध्वनि अनुसार सजेलन्हि। शास्त्रीय संस्कृतमे सभसँ लोकप्रिय कृति अछि अमरसिंहक अमरकोष (6अम शताब्दी)। कटालोगस कैटालोगोरम मात्र अमरकोषपर कमसँ कम 40 टा भाष्यक सूची दैत अछि जे प्राचीन भारतमे एहि समानार्थी कोशक महत्व आ लोकप्रियता देखबैत अछि। एहि तरहक आर कोश जे कम-बेशी अमरकोषक आधारपर रचित भेल आ एहिमे सम्मिलित अछि (संदर्भ मल्हार कुलकर्णी- TDIL अन्तर्जालपर):-

1.भोजक कृत नाममालिका (11म शताब्दी), 2. सहजकीर्तिक सिद्धशब्दार्नव (17म शताब्दी), 3. हर्षकीर्तिक शारदीयाख्यानाममाला (17म शताब्दी), 4. धनन्जय भट्टक पर्यायशब्दरत्न, 5. कोशकल्पतरु, 6. नानार्थरत्नमाला- इरुगप दण्डाधिनाथ (14म शताब्दी), 7. राघवक नानार्थमञ्जरी, 8. धरनीदासक धरणीकोश (12म शताब्दी), 9. शिवदत्त मिश्रक शिवकोश, 10. सौभरीक एकार्थनाममाला-द्वक्षारनभमाला, 11. मकरन्ददासक परमानन्दीयनाममाला।

पहिल अधुनातन युगक संस्कृत कोश जे पाश्चात्य सिद्धांतकेँ प्रयुक्त कए बनाओल गेल से अछि प्रोफेसर एच.एच.विल्सन

द्वारा संगृहीत आ 1813 ई. मे प्रकाशित संस्कृत-अंग्रेजी कोश। दू टा भारतीय कोश तकर बाद आएल पं. सर राजा राधाकान्त देवक शब्दकल्पद्रुम आ पं. ताराकान्त तर्कवाचस्पतिक वाचस्पत्यम्।

हमर विचारमे प्रयुक्त शब्दकोशशास्त्र आकि कोश संग्रहक विज्ञान वा कला जे अछि कोश सभकेँ विभिन्न कार्यक लेल लिखब आ संपादन करब आ ई सेहो ततबे महत्वपूर्ण अछि जतेक सैद्धांतिक कोशशास्त्र महत्वपूर्ण अछि। शब्दकोशशास्त्र शब्द एकटा कथ्यक रूपमे 1680 ई.मे आबि कए प्रयुक्त भेल जखन कि कोश शब्द अंग्रेजी भाषामे 1526 ई. मे आबि कए प्रयुक्त भेल जेनाकि मेरिअम-वेब्सटर कोश कहैत अछि। हमरा सभकेँ कहल जाइत अछि जे कोशमे ई सभ सम्मिलित होएबाक चाही-

1. प्रिंट वा इलेक्ट्रॉनिक रूपमे संदर्भ स्रोत जाहिमे वर्णमालाक आधारपर सजाओल शब्द रहए, जाहिमे ओकर रूप, उच्चारण, कार्य, व्युत्पत्ति, अर्थ आ वाक्य रचना आ कहबी युक्त प्रयोग होअए।
2. एकटा संदर्भ ग्रंथ जाहिमे संबंधित कार्य-विषयक महत्त्वपूर्ण पदबंध आ नामक वर्णानुसार सूची होअए- संगमे ओकर अर्थ आ अनुप्रयोगक चर्चा सेहो रहए।

3. एकटा संदर्भ ग्रंथ जाहिमे एक भाषाक शब्दक लेल दोसर भाषामे समानार्थ देल रहए।

4. एकटा संगणकीय संशोधित सूची (दत्तांशशब्द वा शब्द पदक) जे सूचना प्राप्ति वा शब्द संसाधकक लेल संदर्भक रूप उपयोग कएल जा सकए।

एहि असाधारण आ समय साध्य कलाक अनुप्रयोगमे सम्मिलित कार्य सभमे ई सभ आवश्यक रूपमे सम्मिलित अछि:-

*प्रयोक्ताक निर्धारण आ ओकर आवश्यकताक निर्धारण।

*सामान्यजनक शब्दशक्तिक आधारपर भाषिक शब्दक संख्याक निर्धारण आ एकटा निश्चित सीमित परिधिमे ओकर निर्णय।

*परिभाषा आ विवरणक सज्जाक विषयमे निर्णय।

*कोशक संदर्भमे सूचना संचरण आ विचार-क्रियाक निर्धारण।

*कोशक विभिन्न अंगक निर्धारण दत्तांशक संग्रह आ प्रदर्शनक लेल उचित संरचनाक चयन (जेना आवरण-संरचना, संवर्गीकरण, वर्गीकरण, प्रसारण आ एकसँ दोसर अंशमे सन्दर्भ-संकेत)।

*प्रधान शब्द आ जोड़एवला शब्दक चयन- पारिभाषिक शब्द बनएबाक लेल।

*समानधर्मिता आ संधिकेँ चिन्हित करब।

*अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक वर्णमाला (आइ.पी.ए.) आ ब्लॉच एण्ड ट्रैगर चिन्हक प्रयोगसँ शब्द उच्चारणक निर्देश।

*सुरुचिपूर्ण आ वर्ग-स्थान-विशेष बोली स्वरूपक योग।
*बहुभाषिक कोशक लक्ष्य भाषाक लेल समानार्थी शब्दक चयन।
*छपल आ इलेक्ट्रॉनिक दुनू तरहक कोशमे उपयोक्ताक लेल प्रवेशमार्ग बटन आ आन सुविधा।

बिहारक गंगाक मैदान आ नेपालमे हिमालयक निचुलका पहाड़ीक तराइ क्षेत्र मिलि कऽ मैथिली आ मिथिलाक सांस्कृतिक क्षेत्रक निर्धारण करैत अछि, जे बहुत पहिने 1908 ई. मे जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन द्वारा चर्चित भेल, ओना ओ मुख्यतः भारतमे स्थित मिथिला क्षेत्रपर केन्द्रित रहल। एहि क्षेत्रमे बहुत रास परिवर्तन आ सीमाक पुनर्निर्धारण भेल। 20म शताब्दीक प्रारम्भमे ग्रियर्सन मैथिली भाषाक क्षेत्र सम्पूर्ण दरभंगा आ भागलपुर जिलाकेँ मानलन्हि। एकर अतिरिक्त ओ मैथिलीकेँ मुजफ्फरपुर, मुंगेर, पूर्णियाँ आ संथाल परगनाक बहुसंख्यक लोक द्वारा बाजल जाएवला भाषाक रूपमे चिन्हित कएलन्हि। मुदा आइ-काल्हि एहिमे सँ किछु अंश झारखण्ड राज्यक अंग भऽ गेल अछि।

एतए ई तथ्य आनब सेहो समीचीन होएत जे एहि बीच राज्यक मान्यताक क्रममे मात्र 17 मे सँ 5 जिला (ई अछि भागलपुर,

पूर्णियाँ, सहरसा, दरभंगा आ मुजफ्फरपुर) बिहारक मैथिली भाषी क्षेत्रक रूपमे सामान्य रूपमे अभिहित भेल। पॉल ब्रास (1974) मैथिली आन्दोलनक अपन वृहत् अध्ययन उत्तर भारतमे भाषा,धर्म आ राजनीति मे एकरा सामान्य रूपमे परिभाषित भौगोलिक क्षेत्रक रूपमे लेलन्हि। 1980 क दशकमे बिहारक 31 जिलामे भेल विभाजनक बाद एकटा प्रोजेक्ट रिपोर्टमे ('द मैथिली लैंगुएज मूवमेन्ट इन नॉर्थ बिहार: अ सोशियो लिंगुइस्टिक इन्वेस्टीगेशन' नामसँ)जे संयुक्त रूपसँ हमरा, एन.राजाराम आ प्रदीप कुमार बोस द्वारा बनाओल गेल, हम सभ एहि निर्णयपर पहुँचल छलहुँ जे 31 मे सँ ई सभ 10 जिलाकेँ मैथिली भाषी क्षेत्र मानल जएबाक चाही: भागलपुर, कटिहार, पूर्णियाँ, सहरसा, मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर आ वैशाली। से एहि भौगोलिक सीमाक परिवर्तन प्राकृतिक परिवर्तन (कोशी धार 200 बरखमे सात बेर अपन दिशा बदलने अछि) आ जिलाक पुनर्गठनक परिणामस्वरूप भेल अछि।

ई ककरो लेल एकटा पैघ चुनौती होएत जे मैथिलीक एकटा भीमकाय कोश बनेबाक प्रयास करताह जेना गजेन्द्र ठाकुर कएने छथि। ई परिस्थिति आर ओझरा जाइत अछि कारण मैथिलीक शब्द चयन अंशतः वा अधिकांशतः एहि सांस्कृतिक क्षेत्रमे बाजल जाएवला 12 टा आन भाषासँ संभवतः प्रभावित होइत

अछि। एतए एहि लगभग 12 टा दोसर भाषाक वर्णन सेहो वर्णन योग्य अछि। मैथिलीक आस-पड़ोसमे भोजपुरी आ मगही अछि आ हिन्दी एहि सभपर ऊपरसँ आच्छादित अछि जे एहि तीनू भाषा समूहक लोक द्वारा बाजल जाइत अछि। मुदा बिहार एकटा बहु-भाषी राज्य अछि आ नेपाली आ बांग्ला भाषी सेहो एतए प्रचुर मात्रामे देखल जा सकैत छथि। एकर अतिरिक्त किएक तँ मैथिली भाषी झारखण्ड क्षेत्रमे सेहो पर्याप्त मात्रामे छथि, ई बुझबाक थिक जे ओराँव, मुण्डारी, हो, बिरहोर, धांगर, संथाली आ संख्यामे कम ऑस्ट्रिक भाषा समूहक वक्ता सेहो हुनका संग निवास करैत छथि। ओना तँ मिथिला क्षेत्रक बहुत रास मुस्लिम अपन मातृभाषा मैथिली देखबैत छथि मुदा बहुत रास एहनो छथि जे अपनाकेँ उर्दूभाषी घोषित करैत छथि। एहि सभ भाषामे मात्र चारि टा केँ सांवैधानिक मान्यता भेटल अछि- हिन्दी, उर्दू, बांग्ला आ नेपाली (पछाति संथालीकेँ सेहो)। हमरा विचारेँ मैथिलीक वाक्य-रचनापर, ऑस्ट्रिक भाषा समूह सहित, विभिन्न कोणसँ प्रभाव पड़ल अछि। मुदा कोशीय स्तरपर योग आ अनुकूलन सीमित स्रोतसँ भेल अछि जेना उर्दू, हिन्दी, भोजपुरी आ मगहीसँ। कोश आत्मसात करैत अछि देशी शब्दावलीकेँ देशज शब्दावलीक संग। ई एहि कारणसँ कारण हमरा विचारेँ बेशीसँ बेशी 25-30% वक्ता मैथिलीकेँ एकभाषीय रूपमे बजैत छथि। कारण शेष दोसर भाषामे सेहो नीक पइठ रखैत छथि। ओ

मैथिली भाषी जे बिहारक पश्चिमी सिमानपर रहैत छथि, भोजपुरी सेहो बजैत छथि आ पटना-राँची-गया-मुंगेर-क्षेत्रमे रहनिहार मगही जनैत छथि आ सेहो हिन्दीक अतिरिक्त। मुदा एकटा अत्यल्प प्रतिशत कहू जे 3-5 % सँ कम्मे, एहन मैथिल छथि जे अंग्रेजीमे सेहो प्रभावी रूपमे बाजि सकैत छथि। मुदा अंग्रेजीसँ मैथिलीमे शब्दक आगम ततबे वृहत अछि जेना ई कोनो दोसर नव भारतीय भाषा (न.भा.भा.) सभमे अछि।

बहुत गोटे ई शंका व्यक्त कऽ सकैत छथि जे कतेक गोटे एहन होएताह जिनका गजेन्द्र जी सनक प्रयाससँ लाभ भेटतन्हि ? ओना तँ मैथिली भाषीक संख्याक आधिकारिक आँकड़ा स्थिर नहि रहल अछि मुदा एहि तथ्यक विस्तारसँ वर्णन आवश्यक अछि। जनसंख्याक आँकड़ा वास्तविक नहि अछि जेना 2001 ई.क जनसंख्याक ई आँकड़ा: (1,21,79,122)। एकरापर अविश्वास पक्का अछि। जखन हम देखैत छी जे मैथिली भाषीक संख्याक संदर्भमे दस बरखक अंतरालमे लेल जनसंख्या आँकड़ामे बहुत बेशी परिवर्तन अछि। ई 1891 सँ दस बरखक अंतरालमे जनसंख्याक आँकड़ामे बढ़ल आ घटल संख्याक तुलनासँ स्पष्ट अछि:

1901-11: +3.12%; 1911-21: -0.77%; 1921-31: +7.68%; 1931-41: +9.13%; 1941-51: गणना नहि

भेल; 1951-61: +22.35%; 1961-71: +20.89%; 1971-81: +24.19%

तार्किक रूपेँ वास्तवमे मैथिली वक्ताक संख्या स्थिर रूपेँ बढ़ल अछि। हमर अनुमानसँ किछु संकेत देल जा सकैत अछि जे अनुमानित 4 करोड़ धरि पहुँचैत अछि। 18911 मे ग्रियर्सन (1908) अनुमान कएलन्हि जे मैथिली भाषीक संख्या 92,89,376 अछि। एकर विरुद्ध 1961क जनसंख्या आँकड़ा एकरा 49,82,615 कऽ दैत अछि। निश्चयरूपेण 1961 क जनसंख्या आँकड़ा वास्तविक नहि अछि। ओना ग्रियर्सनक (1909) जनसंख्या आकलन जे हुनकर 1891 ई. मे कएल सर्वेक्षणपर आधारित अछि, सभक द्वारा सम्मति प्राप्त नहि अछि। वर्तमान शताब्दीक प्रारम्भमे मैथिली निम्न क्षेत्रमे बाजल जाइत छल:-

(i) सम्पूर्ण दरभंगा आ भागलपुर; (ii) मुजफ्फरपुरक 6/7 भाग; (iii) मुंगेरक 1/2 भाग; (iv) पूर्णियाँक 2/3 भाग; (v) संथाल परगनाक 4/5 भाग जे जनगणना आँकड़ामे वर्णित हिन्दी भाषी छथि।

1816 ई. मे उत्तर दिसुका भाषायी क्षेत्र नेपाल राजशाही द्वारा स्थायी रूपसँ नेपालमे सम्मिलित कए लेल गेल। ताहि द्वारे भाषा बजनिहारक संख्या पर पहुँचबाक लेल नेपालक जनसंख्याक

14% हिस्सा आर जोड़ए पड़त। पॉल ब्रास (1974:64-6) क गणना (जनसंख्या वर्ष 1901 ई.) 1885 ई.सँ उपलब्ध विभिन्न दस्तावेजक आधारपर करैत छथि आ 1,65,65,477 संख्यापर पहुँचैत छथि। ई गणना ग्रियर्सनक आकलनकेँ आधार लए आ तकर बादक 8 दशकमे बिहारमे जनसंख्या वृद्धिकेँ आधार लए कएल गेल अछि। 1981 क जनसंख्या आँकड़ाक आधारपर आ मिथिला क्षेत्रक बाहर पसरल मैथिलक संख्याकेँ जोड़ि कऽ आ 10 जिलाक जनसंख्याकेँ (31 जिलामेसँ) ध्यानमे राखि हम आ हमर सहयोगी 1980 क दशकक मध्यमे 2,29,72,807 (सिंह, राजाराम आ बोस 1985) क संख्यापर पहुँचलहुँ। ई संख्या हमर विचारमे जनसंख्याक दसवर्षीय वृद्धिकेँ ध्यानमे रखैत 4 करोड़ धरि पहुँचल अछि आ ताहि द्वारे बहुत रास लोक कोशक एहि भीमकाय प्रयाससँ लाभान्वित होएताह। ई सामान्यतः मानल जाइत अछि जे मैथिली मिथिला क्षेत्रक ब्राह्मण द्वारा बाजल जाइत अछि। ई एकटा पहिलुका कुप्रचार छल जे एकरा हिन्दीक बोलीक रूपमे सिद्ध करए चाहैत रहथि मुख्यतः हिन्दी भाषीक आधिकारिक संख्यामे वृद्धिक उद्देश्यसँ। मुदा उत्तरी बिहारक जाति संरचनाकेँ देखैत मैथिलीक जनसंख्या संबंधी आँकड़ा एकर सत्य कथा कहत। सापेक्षतया मैथिलीक बेस संख्या जे जनगणना रिपोर्टमे आएल, केँ एहि तथ्य मात्रसँ व्याख्यायित कएल जा सकैत अछि जे ओना तँ मैथिली भाषी जिलाक कतोक क्षेत्रमे 46.84% धरि मुस्लिम आ 31.06%

धरि हिन्दू निवास करैत छथि, मैथिलीक लेल जे सहयोग आएल अछि से एहिमे सँ एकटा पैघ संख्या द्वारा मैथिलीकेँ अपन मातृभाषा घोषित कएने बिना संभव नहि छल।

मिथिलामे भाषा प्रयोगक एकटा सर्वेक्षण ई देखा सकैत अछि जे ओना तँ भाषाक औपचारिक क्षेत्र सभमे प्रयोग कम भेल अछि मुदा ई सेहो सत्य अछि जे एकर साहित्यिक उत्पादकता आ उपलब्धि आइ अखिल भारतीय स्तरपर बेशी नीक जकाँ सोझाँ आबि रहल अछि तुलनात्मक रूपेँ जतेक ई आइसँ 20 बरख पूर्व अबैत छल। मधुबनी चित्रकला वा मिथिला कला आइ भरि भारतमे सुप्रसिद्ध भऽ गेल अछि आ विश्व-बजार धरि पहुँचि गेल अछि। मात्र तखने जखन मैथिली भाषी नव-पीढ़ी अपन सांस्कृतिक भाषायी बोधसँ हटबाक निर्णय करताह तखने एकरा कोनो खतरा सोझाँ अएतैक। हमरा विचारेँ सांवैधानिक अधिकार नहि भेटनाइ अप्रत्यक्ष रूपमे मैथिलीक लेल वरदान साबित भेल कारण ई साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधिकेँ बल देलक। ई पहिनहियेँ बहुत रास सांवैधानिक मान्यता प्राप्त भाषा सभकेँ पाछाँ छोड़ि देलक, जेना मणीपुरी, कोंकणी, नेपाली आ सिन्धी सेहो। आ आब जखन की ई अष्टम सूचीमे अछि एकरा सभटा आधिकारिक आ आन तरहक संरक्षण भेटबाक चाही जकर ई अधिकारी अछि। एकरा एकर उपयोगकर्ताक सहयोग सेहो

भेटबाक चाही जे आब आधुनिक अओजार सभक ताकिमे छथि जेना ऑनलाइन पत्रिका, ई-कोश, सुविधाजनक जंगम परिभाषा-कोश सभ आ स्वचालित प्रश्नोत्तर प्रणाली इत्यादि। ताहि स्तरपर मैथिली-अंग्रेजी, अंग्रेजी-मैथिली आ अंग्रेजी-मैथिली कम्प्यूटर शब्दकोशजे अन्तर्जाल आ छपल दुनू संस्करणमे उपलब्ध अछि, से संग्रहकर्त्ता द्वारा एकटा महत्वपूर्ण योगदान होएत। मैथिली भाषी समुदाय आ आन भाषाक अनुवादक-विद्वान द्वारा गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा विशेष प्रशंसाक पात्र छथि। ई सत्य अछि जे मैथिली कोश-विज्ञान बहुत बादमे विकसित भेल, म.म. दीनबन्धु झाक प्रयासक बहुत बाद आ आब जा कए हमरा सभक सोझाँ महत्त्वपूर्ण कार्य सभ आएल अछि जेना पं गोविन्द झा द्वारा कल्याणी कोश वा जयकान्त मिश्रक बृहत् मैथिली शब्दकोश, मतिनाथ मिश्र 'मतंग' क मिथिला शब्द कल्पद्रुम वा अलाइस डेविसक बेसिक कलोक्विअल मैथिली: अ मैथिली-नेपाली-अंग्रेजी वोकाबुलरी। संक्षिप्त मैथिली शब्दकोश आ द्विभाषी मैथिली शब्दकोश जे मैथिली अकादमी द्वारा संकल्पित अछि, अयनाइ एखन बाकी अछि। राष्ट्रीय अनुवाद मिशन द्वारा संकल्पित (देखू www.ntm.org.in) लांगमैन- सी.आइ.आइ.एल. बेसिक इंगलिश- इंगलिश- मैथिली जे कॉर्पोरापर आधारित अछिसेहो एकटा रुचिगर उत्पाद होएत। मुदा सभटा कहला आ केलाक बाद एहि कार्यक महत्त्व समय बितलाक संगे अनुभूत कएल जाएत।

(विदेह पेटारसँ, विदेह केर वर्डप्रेस भर्सनपर 19, जुलाई 2009 कैँ प्रकाशित)

श्री गजेन्द्र ठाकुर: हमर नजरिमे

प्रणव कुमार झा

वर्तमान कालक मैथिली साहित्य आ प्रकाशन जगत मे जखन की मंच-माला आ वाह-वाह क्लबक प्रधानता छैक। कियौ कनी किछु लिखलक नै आ कि वाह-वाह सुनबाक उत्कंठासँ भरि जाइत अछि आ लागि जाइत अछि मंच-मालाक जोगार मे आ मैथिली साहित्यसँ जुड़ल पुरस्कार आ पद पाबै के लालसा मे, ओत्तहि गजेन्द्र ठाकुर मैथिली साहित्य आ प्रकाशन जगत मे एकटा एहन नाम कहल जा सकै अछि जे मैथिली साहित्य आ इतिहास लेखन, अनुवाद आ प्रकाशनक क्षेत्र मे हजार-लाख पन्नाक काज करबाक पश्चातो उपरोक्त प्रवृतिक लेश मात्र हिनका मे देखबा मे नै आबै अछि। मैथिली साहित्य जगत के फॉलो करऽ बला लोक साइते कखनो श्री गजेन्द्र ठाकुर के साहित्यिक आयोजन बला मंच आदि पर देखैत हेथिन। कमसँ कम हम त नै देखै छी। ताहि लेल सच कही तऽ यद्यपि गजेन्द्र ठाकुर जीसँ हम विदेहक माध्यमसँ 2008 सँ परिचित भेल छी तथापि आइ धरि गजेन्द्र ठाकुर जीसँ हमर परिचय मात्र हुनकर साहित्यिक आ प्रकाशकीय काज तक सीमित अछि ओइ के अतिरिक्त हमरा हुनका विषय मे किछ बेसी बुझल नै अछि। आइ के सोशल मीडिया काल मे जखन कि सभ तरहक लोक सोशल मीडियाक माध्यमसँ अपन व्यक्तित्व अपन क्रियाकलाप अपन काज सब

के प्रभावित-प्रसारित करबाक होड़ मे लागल रहै छथि गजेन्द्र जी चुप-चाप मैथिली साहित्य के सेवा मे लागल छथि बिना कोनो रिटर्न के अपेक्षा केने। ऐ मादे ई कहबा मे कोनो अतिश्योक्ति नहि जे ओ वर्तमान मैथिली साहित्य जागत के विदेह छथि जे बिना अपन देह देखेने मैथिली साहित्य सेवा मे लागल छथि।

वर्ष 2007-08 के समय जखन हम विद्यार्थी जीवन मे रही आ मैथिली साहित्य के क्षेत्र मे हमर रुचि नव-नव बनल छल, ओइ समय मे मैथिली पुस्तक आ पत्रिका के उपलब्धता आसान नै छल। दिल्लीक पुस्तकालय मे तऽ एहन पुस्तक-पत्रिका भेटै के कल्पनो नै कैल जा सकैत छल। पुस्तक मेला मे एनबीटी आ साहित्य अकादमी आदि के स्टॉल पर किछु किताब देखबा मे आबै। ओइ समय मे अपन कंप्यूटर लैब मे सर्च केला पर हमरा एकटा डिजिटल मैथिली पत्रिका (e-journal) दृष्टिगोचर भेल छल "विदेह" (http://www.videha.co.in/)। ओइ समय मे जखन भारत डिजिटल युग आ इंटरनेट संसार मे प्रवेश के शुरुआती फेज मे छल हमरा ई देख कऽ बड़ विस्मय मिश्रित प्रसन्नता भेल छल जे 2008 से कोनो मैथिली e-journal एहनो प्रकाशित भऽ रहल छल जकरा आईएसएसएन संख्या सेहो प्राप्त छैक (ISSN 2229-547X)। आईएसएसएन संख्या संयुक्त राष्ट्र संघ के एकटा अंग द्वारा जारी एकटा संख्या

छैक जे प्रिंट आ डिजिटल माध्यमसँ प्रकाशित समाचार-पत्र, पत्रिका आ जर्नलकेँ अंतर्राष्ट्रीय पहचान लेल देल जाइत छैक। ओइ टाइम के समय आजुक समय सन तऽ नै रहै। ओइ समय मे डोमेन रजिस्टर करा आ सर्वर पर लगातार जर्नल पब्लिश केनाय निश्चिते एकटा बड़का काज रहल हेतै। ओइ समय मे कंप्यूटर आ इंटरनेट के ओतेक एक्सेस तऽ रहे नै छलै मुदा हमरा जखन कखनो अवसर भेटै तऽ विदेहक e-copy के डाउनलोड कऽ कऽ पढ़ऽ लेल लऽ जाइत रही। बाद मे पता चलल जे अइ जर्नल के सम्पादन कियौ गजेन्द्र ठाकुर जी करै छथिन। हम सोचै छलहुँ जे ई व्यक्ति समसामयिक मैथिली साहित्य जगत के कोनो बड़का नाम हेता, मुदा कोनो अन्य मंच पर हुनका देखै नै छलियनि (ओइ समय मे समसामयिक मैथिली साहित्य जगतसँ हमर परिचय बहुत कम छल)। आइ “विदेह” के सोलहम वर्ष मे एखन धरि 374 अंक प्रकाशित भऽ चुकल अछि। एतेक लंबा समय तक अनवरत रूपसँ कोनो डिजिटल जर्नल प्रकाशित केनाइ (ओहो मैथिली मे, बिना कोनो विज्ञापन के) एकटा पैघ उपलब्धि मानल जा सकैत अछि। वास्तव मे आइयो धरि गजेन्द्र ठाकुर जीक विषय मे जे हमरा परिचय अछि ओ विदेहे के माध्यमसँ अछि। हुनकर साहित्यिक आ प्रकाशकीय काजक अतिरिक्त हमरा आइयो धरि आर किछु विशेष हुनका विषय मे बुझल नै अछि आ भऽ सकैत अछि एहने सन स्थिति हमरा सन अनेको पाठक सभकेँ हेतनि।

मुदा चमक-दमक आ चर्चासँ दूर रहितो ओ मैथिली साहित्यिक इतिहास एवं प्रकाशन के क्षेत्र मे अतेक किछु कऽ गेलखिन जकरा अनदेखल वा विस्मृत नै कैल जा सकैत अछि। ई कहनाइ अतिशयोक्ति नै हेतै जे लेखन अनुवाद आ प्रकाशनक माध्यमसँ ओ जतेक काज कऽ देने छथिन से हमरा सन साधारण पाठक जीवन भरि पढ़तै तइयो नै सधतै। विदेह के माध्यमसँ ओ साधारण पाठक सब के लेल अनेको मैथिली साहित्यकारक चर्चित आ भुलल-बिसरल पुस्तक सब सेहो डिजिटली उपलब्ध करेलखिन। शेफालिका वर्मा, जगदीश चंद्र मण्डल, आशीष अनचिन्हार, शरदिन्दु चौधरी, अरविंद ठाकुर, कालीकान्त झा "बूच", कैलाश कुमार मिश्र, गंगेश गुंजन, डॉ0 शशिधर कुमार, जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल आदि अनेको रचनाकारक पुस्तक/लेख/कविता / गजल आदिकेँ हमरा सनक साधारण पाठक तक पहुँचाबय के काज, आ ओइ मे रुचि लेबऽ के काज विदेह द्वारा कैल गेल जेकर श्रेय गजेन्द्र ठाकुर जी के देल जा सकैत अछि। एतबे नै विदेह के माध्यमसँ गोटेक सै स्थापित-अस्थापित, नवतुरिया फुल-टाइम, पार्ट-टाइम लेखक सब के अपन रचना प्रकाशित करेबाक लेल प्लेटफॉर्म सेहो उपलब्ध कराओल गेल। श्री गजेन्द्र ठाकुर जी केर सम्पादन मे ई स्कीम मैथिली साहित्यसँ नवतुरिया के जोड़ए मे आ हुनका सब मे सृजनात्मकताक बीया

रोपऽ मे बहुत सफल रहल अछि, ई हमर मानब अछि। आइ कैक टा एहन स्थापित लेखक छथि जे अपन लेखन गतिविधिक शुरुआत विदेहक माध्यमसँ केलाह आ आइ मैथिली साहित्य जगत मे अपन स्थान बनेलाह अछि। विदेह के ई स्कीम आ नित नव अंक मे विविध प्रकारक लेखक के लेख, कहानी-कविता आदि छपैत देखि हमरो प्रेरणा भेटल आ भेल जे हमरो मैथिली मे किछु लिखबाक चाही। अइसँ पहिने हम शौकिया तौर पर हिंदी आ अङ्ग्रेज़ी मे किछु-किछु लिखैत रही मुदा मैथिली लिखबाक हिस्सक नै छल। कहियो औपचारिक रूपसँ मैथिली पढ़नेहो नै रही। व्याकरण आ वर्तनी मे हाथ एक्दम्मे खिज्जा छल तथापि विदेहसँ जे प्रेरणा भेटल छल ओइ बले हम मैथिली मे पहिल कहानी लिखने रही “तेसर प्रण”। जनवरी 2015 के अंक मे छपल छल। अइसँ हमरा बहुत संतोष आ प्रेरणा भेटल जकरा बाद यदा-कदा हम मैथिली मे कथा-कविता आ लेख लिखनाइ शुरू केलहुँ। जइ मेसँ बहुत समय-समय पर विदेह के अंक मे प्रकाशित होइत रहल अछि। निश्चित रूपसँ खुदरे-खुदरी सही मुदा हमरा भीतर मैथिली मे लिखबाक सृजनात्मकता जनमाबऽ के श्रेय विदेह टीम आ गजेन्द्र ठाकुरकेँ सेहो जाइत छनि।

विदेहक माध्यमसँ मैथिली साहित्य केर अकादमिक सामाग्री उपलब्ध कराबऽ मे सेहो हिनकर अग्रणी भूमिका देखल जा सकैत अछि। हमरा याद अछि जखन हम बी.पी.एस.सी मे

मैथिली के प्रश्न-पत्र आदिक खोज करैत रही तऽ सर्वप्रथम ई सामग्री हमरा विदेहक माध्यमेसँ प्राप्त भेल छल। बाद मे बी.पी.एस.सी/यू.पी.एस.सी/यू.जी.सी आदि परीक्षा हेतु अध्ययन सामग्रीक संकलन सेहो विदेहक माध्यमसँ श्री गजेन्द्र ठाकुर द्वारा कैल गेलै आ सर्वसाधारणकेँ उपलब्ध कराओल गेल। हमरा लग कोनो आंकड़ा या उदाहरण नै अछि मुदा उम्मीद अछि जे निश्चिते ई सामाग्री सबसँ किछु तैयारी करऽ बला सबकेँ लाभ भेटल हेतै। अनुवादक क्षेत्र मे मैथिली-अङ्ग्रेज़ी शब्दकोशक निर्माण, अङ्ग्रेज़ी , हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा साहित्यक सामग्री सब के सेहो अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर द्वारा कैल गेल अछि जकर एकटा लंबा लिस्ट छैक। ई सब “विदेह” (www.videha.co.in) के पेटार पर उपलब्ध अछि।

मैथिली इतिहास आ परंपरा पर हुनका द्वारा कैल गेल एकटा अविस्मरणीय काज छैक मैथिली विवाह-पञ्जी सबकेँ जीनोम मैपिंग नामसँ सार्वजनिक करब। मैथिली भाषाक तिरहुता लिपिमे लिखल दस हजारसँ बेसी तालपत्र-बसहा पत्रपर लिखल अभिलेखक देवनागरीमे लिप्यंतरण केने छथि। ई पञ्जी सभ मिथिला क्षेत्रक मैथिल ब्राह्मण समुदायक आनुवंशिक लेख थिक आ अइमे लगभग सौ सँ बेसी अन्तर्जातीय विवाह सेहो लिखित रूपमे वर्णित अछि। अखन धरि पौराणिक बुझल जाए बला

व्यक्तित्व सभक लिखित प्रमाण पहिल बेर अइ मे उपलब्ध भेल अछि, जे देवनागरी मे उपलब्ध करा कऽ एकटा वृहत्त audience तक पहुँचेबाक एकटा नीक प्रयास पूर्ण केलाह अछि। अंतर्जाल लेल तिरहुता आ कैथी यूनीकोडक विकासमे योगदान, मैथिली भाषामे अंतर्जाल आ संगणकक शब्दावलीक विकास, मैथिली विकीपीडियाक स्थापना मे भूमिका, गूगलमैथिली ट्रान्सलेटमे योगदान आ शब्दकोषक वृहत संकलन ओ प्रकाशन आदि गजेन्द्र जी के किछु एहन उपलब्धि छैक जे मैथिली साहित्य के इतिहास आ डिजिटाइजेशन मे मील के पाथर छैक।

विदेहक पेटार मे धिया-पूता आ बच्चा-बुतरु लेल सेहो पोथी एवं आन सामग्री छैक। अर्थात नव पीढ़ी मे मैथिलीक प्रति रुचि जगाबऽ लेल सामग्री सेहो उपलब्ध करेबाक प्रयास रहैत छैक। श्री आशीष अनचिन्हारक बाल-गजल, डॉ0 शशीधर कुमारक प्रकृति आ विज्ञानसँ जुड़ल बाल-कविता सब बहुत मनोरंजक आ ज्ञानवर्धक रहै छैक। विदेहक माध्यमसँ गजेन्द्र ठाकुर एवं प्रीति ठाकुर जी एकटा प्रयास केलाह अछि किछु अङ्ग्रेज़ी फेरी स्टोरीक सचित्र मैथिली अनुवाद के द्वारा बच्चा सबकेँ मैथिलीसँ अङ्ग्रेज़ी वा अङ्ग्रेज़ीसँ मैथिली सिखेबाक। किछु कहानी हम पढ़लहुँ- अनुवाद सब बहुत नीक भेल अछि। हमारा लगैत अछि जे ई प्रयोग धिया-पूता लेल बेस उपयोगी भऽ सकैत अछि।

अधिकांशतः बच्चा सब मैथिलीसँ अङ्ग्रेज़ी वा अङ्ग्रेज़ीसँ मैथिलीक यात्रा हिंदीक माध्यमसँ होइत करै छथि, अइ तरहक पुस्तक गाम-घरक छोट बच्चाकेँ मैथिलीसँ सीधे अङ्ग्रेज़ी आ विदेश मे वा अङ्ग्रेज़ी समाज मे पैघ होइत बच्चाकेँ अङ्ग्रेज़ीसँ सीधे मैथिली सिखेबा मे सहायक भऽ सकैत अछि।

बेसी हम की लीखी। गजेन्द्र ठाकुरक विषय मे जे किछ जानकारी आ अनुभव अछि से विदेहक माध्यमसँ अछि वैह पाठक सब के बीच राखि रहल छी।

मिथिला मिहिर आ विदेह वेब पत्रिका

लक्ष्मण झा 'सागर'

नि:संदेह मिथिला मिहिर मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे अपन विशिष्ट स्थान बनौने अछि। एहिमे दू मत नै अछि। मैथिली साहित्यक जतेक महान साहित्यकार सभ भेलाह (छठमसँ नवम दशक धरि) से मिथिले मिहिरक देन थिक। एहि खाढ़ीमे आचार्य रमानाथ झा, उमानाथ झा, तंत्रनाथ झा, ईशनाथ झा, हरिमोहन झा, किरण जी, मधुप जी, सुमन जी, अमर जी, रामदेव झा, गोविन्द झासँ लऽ कऽ आरसी प्रसाद सिंह, राधाकृष्ण चौधरी, मणिपद्म जी, ललित, राजकमल, मायानन्द मिश्र होइत प्रभास कुमार चौधरी, कीर्तिनारायण मिश्र, जीवकांत, मोहन भारद्वाज, राजमोहन झा, धुमकेतु, डा धीरेन्द्र, गंगेश गुंजन, मार्कण्डेय प्रवासी, गौरीकांत चौधरी कांत, गोपेश जी, सुभाष चन्द्र यादव, महाप्रकाश, सुकांत सोम आ तकर बाद विभूति आनंद, केदार कानन, प्रदीप बिहारी, अशोक, शैलेन्द्र आनन्द, राज, रमेश, नारायणजी आदि लोकनि मिथिला मिहिरेक उत्पाद छथि।

मिहिरक अपन मानक लेखन शैली छल जे मैथिलीक समकालीन साहित्यकार सभ अङ्गीकार केने छलाह सिवाय रमानाथ झा आ डॉ. सुभद्र झाक। मिहिर राज दरभंगासँ सम्पोषित साप्ताहिक पत्रिका छल तैँ सोति समाजक खिद्धांस नै छापैत छल। मिहिरक

प्रति साल कथा अंक, फगुआ अंक आ आनो आन अंक सभ पाठक लोकनिक मध्य बेस चर्चित आ ख्याति अर्जन केने छल। मिहिरक प्रधान सम्पादक सुधांशु कुमार चौधरी रहथि। सहयोगी सम्पादनक काज उपेन्द्र ठाकुर मोहन, हंसराज, भीमनाथ झा, शरदिंदु चौधरी आदि करैत रहथि। मिहिर अग्निजीवी साहित्यकार (रामलोचन ठाकुर, नरेन्द्र, अग्निपुष्प, कुणाल आदि) कैँ ब्लैक लिस्ट केने छल। कोनो रचना नै छापैत छल। मिहिर साप्ताहिकसँ दैनिक अखबार रूपमे छपल छल। नारी लेखनकेँ प्रोत्साहित करबाक लेल एकटा स्तम्भ छापैत छल स्त्रीगण समाज। बाल साहित्यके समुन्नत करबाक लेल एकटा फराक स्तम्भ रहैत छल नेना भुटकाक चौपाड़ि। संक्षित समाचार मैथिलीक गतिविधि लेल सेहो छापैत छल। पाठकीय प्रतिक्रिया छापैत छल। कहि सकैत छी जे मैथिली साहित्यक निर्माण लेल ओ स्वर्णिम काल छल।

वर्तमानमे विदेह पत्रिका जकरा वेब पोर्टल वा ई-पत्रिका सेहो कहि सकैत छी एकटा नितांत व्यक्तिगत उद्यम अछि मुदा एकर विस्तार मिथिला मिहिरे सन अछि। विदेहक सेहो अपन एकटा नियम-कानून अछि। काज करबाक अपन अद्भुत पद्धति अछि। पहिल तऽ उल्लेखनीय काज ई अछि जे विदेह समयक पक्का अछि। निरंतरता एकर नियति अछि। एतेक अल्प समयमे रचनाक जोगाड़ कय ससमय सम्पादित कय अपन वेब पोर्टल पर

अपलोड कय देब अपन पाठक लेल ई कोनो कम पैघ बात नै भेलै। साहित्यक प्राय: सब विधाक रचना रहैत अछि विदेहमे। बहुत पहिने विदेह सदेह रूपमे सेहो निकलैत रहैत छल माने प्रिंट रूपमे। बीहनि कथाक आरम्भ तऽ नै मुदा असल विकास विदेहेसँ भेल अछि। गजलक व्याकरण छै से उद्घोष विदेहसँ भेल अछि।

विदेह सभ लेखकक वर्तनीकेँ स्वीकार करैत अछि जाहि कारणसँ एहिमे हरेक विचार ओ हरेक क्षमताक लेखकक प्रवेश अछि। आ जेना मिथिला मिहिरसँ एकटा विशाल लेखक-पाठक वर्ग तैयार भेलै तेनाहिते विदेहक सेहो एकटा अपन लेखक एवं पाठक वर्ग छै।

विदेहक एकटा अनुपम प्रकल्प अछि जे जीवित साहित्यकार लोकनिक अंक निकालिकें हुनका लोकनिक समुचित मूल्यांकन करैत अछि। किछु साहित्यकार लोकनिक समस्त साहित्यिक कृतिकें गूगल पर अपलोड करबाक सेहो महती काज करैत अछि विदेहक टीम। हम कहि सकैत छी आ से पूर्ण दृढ़ताक संग जे आबय वाला समयमे विदेहक प्रति लोकक आकर्षण आऽ अभिरुचि आर बढ़तै।

विदेहक संपादक 25 साल पहिने देखि लेने छलाह जे आबय वाला समयमे कागज विहीन (पेपर लेस) युग आयत। लोक सभ

ततेक ने व्यस्त रहय लागत जे पोथी, पत्रिका आ अखबार देखबाक समय नै निकालि सकत। समाजमे संवादहीनताक घोर संकट उत्पन्न भऽ जायत। मुदा एहि संवादहीनतासँ पहिने विदेह इंटरनेटक माध्यमसँ देश-विदेशक मैथिल समाजक लेल अंतर्जाल शब्दक सेतु बनि गेल। साहित्यिक समाजमे कोनो संवाद शून्यता नै आबय देलक विदेह पत्रिका आ एकदम नियत समय पर पक्षिक रूपमे लोक सभ घर बैसल अपन लैपटॉप आ स्मार्ट फोन पर साहित्य विज्ञान खेल वाणिज्य आदि विषयक सम्बन्धमे जानकारी आ ज्ञान प्राप्त कय रहल छथि पछिला 25 वर्षसँ सेहो की तऽ नि:शुल्क। एखनुका समयमे जहन सगर विश्व संचार क्रांतिसँ प्रभावित आ लाभान्वित भऽ रहल अछि अपन मिथिलाक बुद्धिजीवी समाज अवंच नै छथि आ तकर सम्पूर्ण श्रेय विदेहक समस्त टीम मेम्बरके जाइत छनि। जेबाक चाही।

विदेह केर संपादक छथि श्री गजेन्द्र ठाकुर।

हिनकर गाम छनि झंझारपुर लग मेंहथ जाहि गामक माटिमे एक सँ एक मैथिल पुत्रक जन्म देबाक क्षमता अछि। अही गामक रहथि स्व. गोपालजी झा 'गोपेश' आ हुनक धर्मपत्नी स्व. प्रभावती झा। श्री सियाराम झा सरस आ श्री रमेश (दुनू सहोदर भाय) अही गामक छथि। नाटककार श्री आनन्द कुमार झा आ

आयुष्मान अभिनव आनन्द (दुनू बापुत) सेहो अही गामक छथि। मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथाकार संदीप कुमार साफी सेहो अही गामक छथि। ई सभ साहित्यकार अपन-अपन लेखनीसँ अपना-अपना क्षेत्रक प्रसिद्ध आ नामी लोक सभ छथि।

श्री गजेन्द्र ठाकुरजी हिनका सभसँ अलग मैथिली साहित्यक एकटा विरल आ अभिनव दुनियाँ बनेलनि। एहन दुनियाँ जकर कल्पना कोनो कवि अपन कवितामे नै कय सकैत छथि। कोनो कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार अपन कथ्यक शिल्पमे नै बुनि सकैत छथि। अपन नायकक अभिनय लेल उपयुक्त स्पेस नै बना सकैत छथि। मैथिली साहित्यक आन कोनो विधाक माध्यमसँ अपन विचारक अभिव्यक्ति समाजक सामने नै राखि सकैत छथि। तेहन दुनियाँ बनेलनि ठाकुरजी।

ई यदि चाहितथि तऽ अपन साहित्यिक कृतिक बल पर मैथिली साहित्यमे बेस नाम-गाम कमेने रहितथि। कय टा सम्मान आ पुरस्कारसँ सम्मानित भेल रहितथि। बहुत सोरहा लुटने रहितथि। मुदा, ठाकुरजी ताहि सभक भूखल ने कहियो छलाह आ ने आगुओ रहताह। हुनक चिन्ताधारा आरम्भेसँ रहलनि जे अपन मातृभाषा मैथिलीक लेल एहन किछु ठोस काज करी जाहि दिस तत्कालीन समाज आ साहित्यकार लोकनि जागरुक नै छलाह। ई पहिल एहन मैथिल युवा सामने अयलाह देशक राजधानी

दिल्लीसँ जे मैथिली भाषाके डिजिटलाइज्ड केलनि। एहि माध्यमसँ एहि सदीक पहिल दशकसँ पाक्षिक ई-पत्रिका विदेह http://videha.co.in/ नामक वेबसाइट बनेलनि आ चलायब प्रारम्भ केलनि जे निर्बाध रूपेँ एखनो प्रकाशित भऽ रहल अछि।। सेहो 11 टा लिपिमे। आ मैथिली विश्वक आन भाषाक समकक्ष ठाढ़ अछि। विश्वक कोनो कोनमे रहय वाला मैथिली प्रेमी अपन मैथिली पत्रिका देखि सकैत छथि सिर्फ अपन स्मार्ट मोबाइल फोनक नेट चालू कय कऽ आ देल गेल लिंकके आंगुरसँ दाबि कऽ। ई सुविधा ठाकुरजी नि:शुल्क उपलब्ध कराय रहल छथि हमरा सभकें। पहिने विदेह पत्रिका सदेह सेहो अबैत छल आ से बिना कोनो सुचनाक। बिना कोनो पाइकेँ रामायणोसँ बेसी गतगर।

अपने भारत सरकारक कोनो उपक्रममे शीर्ष पदपर दिल्लीमे अधिकारी छथि। व्यस्त जीनगीक क्षणसँ समय निकालि कऽ मैथिलीक सेवा लेल तत्पर आ मुस्तैद रहैत छथि। अपन घरसँ मैथिलीक लेल चिक्कस गील केनिहार किछु महत्वपूर्ण हस्तीमे गजेन्द्र जी सेहो एकटा मैथिलीक सपूत छथि, से कहयमे हमरा कोनो संकोच आ धाख नै होइत अछि। हिनकर विभिन्न मुद्दा आ विधाक दर्जनाधिक पोथी सभ प्रकाशित छनि, प्रशंसित छनि। से मैथिलीक अतिरिक्त अंग्रेजीमे सेहो।

ई धोल-पखारल लोक छथि। पारदर्शी सोच छनि। कोनो लाइ-लपटाइ वाला काज ने तऽ अपने करताह आ ने दोसरसँ अपेक्षा रखताह। साहित्य अकादेमीक पुरस्कारक पद्धति आ प्रणालीसँ हिनका नफरत भऽ गेलनि अछि आ से आइसँ नै बहुत पहिनेसँ। हिनक जीवट देखू जे ई अपन एकटा समानांतर साहित्य अकादेमीक पुरस्कार देब शुरू कय देने छलाह। दोसर तऽ हमरा जानकारीमे नै अछि मुदा से पुरस्कार रामलोचन ठाकुरजी (आब स्व.)कें देने छलाह। गजेन्द्र ठाकुरजी उपेक्षित साहित्यकारक एकटा मंच बनेलनि। हुनका सभकें चिन्हित केलनि। जाहि साहित्यकारक रचना मैथिलीक मुख्य पत्रिका सभ नै छापैत छल ताहि साहित्यकारक रचना विदेह छापय लागल। हम पूर्ण निर्भीकता आ सजगताक संग कहब जे आइ श्री जगदीश प्रासद मंडलजी जे एकटा मैथिली साहित्यक प्रतिष्ठित साहित्यकार छथि तऽ से विदेहक देन थिक।

एहि संग हम आरो किछु नाम जोड़य चाहब जेना श्री रवीन्द्र नारायण मिश्र, उमेश मंडल, लालदेव कामत, प्रदीप पुष्प, राजीव रंजन मिश्र, अभिलाष ठाकुर, मनोज कर्ण, आशीष अनचिन्हार आदि। गजेन्द्र जीक एकटा योजना बनलनि जे जाहि साहित्यकारके अनदेखी कैल जाइत अछि तिनका पर केन्द्रित विशेषांक निकाली आ से ओहि साहित्यकारक जीविते। से विदेह

निकाललक अछि अरविंद ठाकुर विशेषांक (जे बादमे 'स्वतन्त्रचेता' नामसँ पोथी रूपमे आयल आ बेस सराहल गेल), जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' विशेषांक रामलोचन ठाकुर विशेषांक, राजनन्दन लाल दास विशेषांक, शरदिन्दु चौधरी विशेषांक, कथाकार अशोक विशेषांक, आ रामभरोस कापरि भ्रमर विशेषांक आदि आ से सभ विदेह पर अपलोड अछि। एतबे नै गजेन्द्र जी खोज कयलनि अछि मैथिलीक पुरान उपन्यासकार आ कथाकार सुशील जीक कृतिकेँ आ लिखलनि अछि नित नवल सुशील।

हमरा गजेन्द्र ठाकुर जीक संग भेंट नै अछि मुदा एकटा समय रहै 2008 आ 2012 केर बीचक। ओहि समय फोन पर खूब गप होइत रहैत छल। आपसी विचारक आदान-प्रदान होइत रहैत छल। हमर पहिल काव्य संग्रह उचरि बैसू कौआ जे 2010 ई. मे गुआहाटीसँ प्रकाशित भेल छल से हम हुनका पठेने रहियनि। फोन केलनि आ कहलनि जे हम सत्य कहैत छी एहि तरहक पोथी हम पिछला पाँच-छह सालमे नै देखल अछि। हमरा बहुत नीक लागल छल सुनि कऽ। एक बेर हमरा ओ एक गेंट पोथी डाकसँ पठेने छलाह जाहिमे हुनकर अपन पोथीक संग श्रीमती प्रीति ठाकुर जीक दू-तीन टा पोथी सेहो रहनि। हमरा प्रीति ठाकुर जीक एकटा बाल पोथी बड़ नीक लागल छल। फोन केलियनि जे

प्रीति जीक एहि पोथीके तऽ बाल पुरस्कार भेटबाक चाही छल। नेना सभक कोर्समे लागल रहबाक छल। बड़ उपयोगी पोथी अछि। मुदा, गजेन्द्र जी हमरा कहलनि जे श्रीमान ई गप छोड़ि दोसर गप कैल जाय। मैथिलीक एहन एकांत सेवी व्यक्तित्व सहीमे मिथिलाक अनमोल रत्न छथि।

हम अपन मिथिलाक एहेन साधक आ सिपाहीके सैल्यूट करैत छी आ माँ अम्बासँ प्रार्थना करैत छी जे हिनका अजर-अमर बना कऽ रखथुन्ह! इन्टरनेटकेँ अन्तर्जाल कहनिहार पहिल मैथिल युवा जे 24 साल पहिने बुझि गेल छल जे भारत सरकारक एहन एकटा उजहिया एतैक जे हमरा सभ डिजिटल इंडियामे रहबाक लेल विवश भऽ जायब। आ से साहित्यमे जे ई सुविधा एतेक सहज़ रूपेँ सभकेँ भेटल ताहि लेल सभ गोटे अपन मिथिलाक लालकेँ आशीर्वाद आ शुभकामना दियनि।

मैथिलीक पत्रिकामे विशेषांक (विशेष संदर्भ-व्यक्तिपरक विशेषांक)

शिवशंकर श्रीनिवास

कोनो रचनाकेँ पढ़ब-बूझब आनंददायक होइत अछि, तहिना कोनो रचनाकारकेँ बूझब सेहो आनंददायक अछि। कोनो रचनाकेँ हम देखैत छी, बूझैत छी तकर बाद जे हमरा ओहि रचनाक लेल भाव होइत अछि वएह दोसरोकेँ ओही स्थिति तकक भाव हेतैक से नहि होइत अछि। मोटा-मोटी एक रंग बुझितो सभकेँ अपन प्रज्ञाक अनुसार भाव बनैत अछि। से कखनो एहनो होइत अछि जे हम ओहि कोनो रचनाकेँ पढ़ि नहि बुझि पबैत छी ओ कोनो दोसर दृष्टिक विवेचनसँ, विवेचनाकेँ पढ़ि आनंदित भऽ उठैत छी। एहि क्रममे यदि कोनो रचनाकारक रचना सभक वा स्वयं हुनक जीवनक विभिन्न पक्षक विश्लेषण जँ एकठाम भेटि जाइत अछि तऽ ओ कइएक तरहें महत्वपूर्ण होइत अछि। एहि क्रममे कोनो अभिनंदन ग्रंथ वा मूल्याकंन ग्रंथ उपयोगी होइतो सजह ओ सरल नहि अछि। कारण अभिनंदनग्रंथ ओ मूल्याकंनग्रंथमे निष्पक्षता नहि देखल जाइत अछि। ओना एकर अपवाद भऽ सकैए किंतु सेहो अभिनंदनग्रंथमे नहि।

एहि लेल सभसँ उपयुक्त अछि पत्रिका। कोनो एक रचनाकारक

जीवन ओ साहित्यपर केंद्रित पत्रिका बेसी निष्पक्ष होयबाक संभावना रखैत अछि। कोनो अभिनंदन ग्रंथक प्रकाशनक पाछू व्यक्तिपरक भक्ति ओ स्वयं अभिनन्दीय प्रयास सेहो देखल जाइत अछि, किंतु पत्रिका विशेषांक अधिकांशतः उक्त बात सभसँ मुक्त होइत अछि। मैथिली भाषामे कतेको पत्रिका फगुआ विशेषांक रूपमे आएल, जाहिमे मिथिला मिहिर अग्रगणी रहल अछि। कोनो अन्य खास पर्वपर विशेषांक प्रकाशित हएत से नहि देखल अछि जेना बंगला, उड़िया, असमी ओ अन्य भाषामे शारदीय नवरात्रिक अवसरपर कतेको विशेषांक प्रकाशित होइत अछि। तेना मैथिलीमे नहि देखल अछि (अपवादमे एकमात्र कोलकातासँ प्रकाशित कर्णामृत पत्रिका अछि जे अपन शारदीय विशेषांक हरेक वर्ष प्रकाशित करैत छल)। अही क्रममे सड़रा-मदना, जिला-मधुबनी गामसँ सरस्वती पूजा समिति द्वारा सेहो विशेषांक नहि स्मारिका प्रकाशित होइत अछि। आनो संस्था सभक स्मारिका प्रकाशित होइत अछि।

साहित्यकारपर केंद्रित कोनो प्रकाशित होइत पत्रिका कहिया-कोन प्रकाशित भेल से ठीकसँ हमरा जनतब नहि अछि, तथापि हमरा जे ज्ञात अछि ओ हम एतए उल्लेख करैत छी। 1968 ई. मे कलकत्तासँ प्रकाशित 'आखर' पत्रिका राजकमल चौधरीपर हुनक देहांत (19 जून 1967) क बाद विशेषांक रूपमे प्रकाशित भेल। एकर संपादक- श्री कीर्तिनारायण मिश्र ओ श्री वीरेन्द्र

मल्लिक रहथि। 1993-94 मे 'धार' पत्रिका मंत्रेश्वर झा, महाप्रकाश ओ उपेन्द्र दोषीपर केंद्रित फूट-फूट तीन अंकमे प्रकाशित भेल। तकर बाद ओ पत्रिका प्रकाशित नहि भेल। एहि पत्रिकाक खूबी ई छल जे ई तीनू जीवित साहित्यकारपर केंद्रित छल। डॉ. धीरेन्द्रक जीवित समयमे केदार काननक संपादनमे 1994 ई. मे 'संकल्प' पत्रिका धीरेन्द्र विशेष छपने छल। प्रभाष कुमार चौधरीक मृत्यु (22 फरवरी 1998)क बाद हुनकापर विशेषांक रूपमे ओही साल कथाकार अशोकक संपादनमे 'संधान' पत्रिकाक प्रकाशन भेल। ओही साल (1998) मे इलाहाबादसँ श्री अखिलेश झाक संपादनमे 'प्रवासी' प्रकाशित भेल। 1999 ई. मे केदार काननक संपादनमे भारती-मंडन पत्रिका यात्रीजीपर केंद्रित विशेषांक प्रकाशित भेल। ओकर बाद जीवित साहित्यकारपर जुलाई-सितंबर 2001 ई. मे राजमोहन झापर केंद्रित 'अंतिका' पत्रिकाक अंक आएल जाहिमे राजमोहन झासँ लेल गेल साक्षात्कार सेहो प्रकाशित भेल छल। राजमोहन झाजीक समेत 'अंतिका' पत्रिकामे प्रकाशित सात टा विशेषांक अछि जकर सूची एना अछि-

1) यात्री प्रसंग (अप्रैल-जून 2000 ई.)
2) धूमकेतु प्रसंग (जुलाई-सितंबर 2000)
3) कुलानंद मिश्र प्रसंग (अप्रैल-जून 2001)

4) राजमोहन झा प्रसंग (जुलाई-सितंबर 2001)
5) राजकमल प्रसंग (अक्टूबर 2001-मार्च 2002)
6) किरण प्रसंग (जनवरी-मार्च 2007)
7) हरिमोहन झा प्रसंग (जुलाई-सितंबर 2008)

कलकत्तासँ राजनंदन लाल दासक संपादनमे प्रकाशित कर्णामृत पत्रिकामे किरण विशेषांक, बाबू साहेब विशेषांक, पीताम्बर पाठक विशेषांक तकर बाद प्रबोध विशेषांक सभ प्रकाशित भेल। मुदा कर्णामृतक उक्त विशेषांक सभ संदर्भित व्यक्तिक मृत्युक बाद छपल। एकर अतरिक्त आरो विशेषांक सभ प्रकाशित भेल हएत।

एहन व्यक्तिपरक विशेषांक रूपमे विदेह पत्रिका द्वारा जे कार्य 2015 सँ आद्यावधि भऽ रहल अछि ओ उल्लेखनीय अछि। उल्लेखनीय एहि कारणसँ सेहो जे एहि पत्रिकाक विशेषांक जीवित लेखकपर केंद्रित रहैत अछि। कोनो जीवित लेखक जँ अपन जीवन कालमे अपन मूल्यांकन कोनो पत्रिकामे देखैत-पढ़ैत अछि तँ हुनका लेल कोनो पुरस्कारसँ ओ पैघ होइत अछि। एक तँ ओ खास पत्रिकाक अंक हुनकहि रचना ओ जीवनपर केंद्रित रहैत अछि, दोसर जे ओ जे काज केलनि से केहन भेल से बुझि आनंदसँ अपन पथ आर प्रशस्त करथि, एहन जीवन उत्साह सहजहि प्राप्त भऽ जाइत छनि। तँइ हमरा लगैत रहल जे बेसीसँ

बेसी जँ जीवित लेखकपर कोनो विशेषांक प्रकाशित हएत तँ लेखक द्वारा साहित्यक लाभ बेसी हेबाक संभावना बनतै। ओना विदेह द्वारा विशेषांक घोषणाक बाद प्रायः दू वा तीन लेखकक मृत्यु सेहो भेलनि किंतु विदेहक उद्येश्य मुख्य रूपसँ जीवित लेखकपर केंद्रित अंक प्रकाशित करब अछि। एहि पत्रिका द्वारा एखन तक जे विशेषांक प्रकाशित अछि जे निम्नलिखित अछि-

1) अरविन्द ठाकुर विशेषांक 01 नवम्बर 2015 अंक 189
2) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक 01 दिसम्बर 2015 अंक 191
3) रामलोचन ठाकुर विशेषांक 01 अप्रैल 2021 अंक 319
4) राजनन्दन लाल दास विशेषांक 01 नवम्बर 2021 अंक 333
5) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक 15 जून 2022 अंक 348
6) केदारनाथ चौधरी विशेषांक 15 अगस्त 2022 अंक 352
7) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक 01 नवम्बर 2022 अंक 357
8) शरदिन्दु चौधरी विशेषांक 15 नवम्बर 2022 अंक 358
9) अशोक विशेषांक 1 मइ 2023 अंक 369
10) रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक 15 मइ 2023 अंक 370
11) लक्ष्मण झा सागर विशेषांक (15 नवम्बर 2023 अंक

382)

ऊपरमे देल सूचीक अतिरिक्त विदेहक मधुप विशेषांक, वेब पत्रकारिता विशेषांक, संस्था विशेषांक सहित आन-आन विषयपर कुल 19 टा आरो विशेषांक प्रकाशित भेल अछि। संगहि एहि सूचीमे जे अशोक विशेषांक अछि से कथाकार अशोक विशेषांक अछि। विदेह पत्रिकाक एहन तरहक कार्य गजलकार आशीष अनचिन्हार द्वारा संयोजित आ पत्रिकाक संपादक गजेन्द्र ठाकुर द्वारा संपादित भऽ रहल अछि। हमरा आशा अछि जे विदेह पत्रिका आगुओ एहि तरहक कार्य करैत रहत।

विदेहक अतिरिक्त 'नवारंभ' पत्रिका कथाकार अशोकक अतिथि संपादनमे नवंबर 2019 ई. मे सोमदेव विशेषांक छपने अछि। सोमदेवहिपर हुनक मृत्युक बाद नेपालसँ रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' केर संपादनमे प्रकाशित 'आँजुर' सेहो सोमदेव विशेषांक छपलक (दिसंबर 2022-जनवरी 2023)। एहि आलेख लिखैत कालमे हम जाहि सभ पत्रिकाक उल्लेख कएल अछि ओ मात्र हमर तात्कालिक ज्ञानक आधारपर, एहिसँ बेसी आरो विशेषांक अवश्य हएत जकर उल्लेख अन्वेषी विद्वतजन करताह।

संपादकीय टिप्पणी- प्रस्तुत आलेख केर मूल शीर्षक छल

'पत्रिका विशेषांक'। हम अपन फैंटेसी पूरा करबाक चक्करमे एहि शीर्षककेँ नमारि देलहुँ। उम्मेद जे श्रीनिवासजी एहि लेल माफ करताह आ पाठककेँ सेहो बुझबाकमे किछु सुविधा हेतनि। प्रस्तुत आलेखमे विदेह द्वारा जे जीवैत लेखक ऊपर विशेषांक अछि ताहिपर चर्चा भेल मुदा पत्रिका सभमे संस्थापर जे विशेषांक निकलल छै ताहिपर हमरा कोनो आलेख नहि भेटि सकल। पाठककेँ सूचनार्थ जे विदेह मिथिला स्टूडेंट यूनियन (MSU) पर विशेषांक 1 जून 2023 अंक 371 केँ विशेषांक प्रकाशित केने छल। विदेहक जीवित विशेषांक या संस्था विशेषांक शृंखलामे किनकर चयन हो ताहि लेल मोटा-मोटी निच्चाक किछु बिंदुक पालन कएल जाइत अछि-

1) लगभग पाँच-छह मास पहिनेसँ विदेह अपन पाठककेँ सुझाव देबा लेल लेल सूचना दैत अछि।
2) आएल सुझावमेसँ विदेह मात्र जीवित लेखककेँ चयन करैत अछि। संस्था सेहो वर्तामनमे जीवंत हेबाक चाही।
3) सभ जीवित मैथिलकर्मी, संगीतकर्मी, साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी-रंगमंच-निर्देशकक बीचमे हुनकर लेखन/ काज एवं आचरणक साम्यता देखल जाइत अछि। जाहि लेखकक लेखन/ काज ओ आचरणमे बेसी साम्यता (कम फाँक) भेटैए तेहन छह टा नाम चयनित होइत अछि।

4) छह नाम एलापर ई तुलना कएल जाइत छै जे ई छहो मैथिलकर्मी, संगीतकर्मी, साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी-रंगमंच-निर्देशक अथवा संस्थाकेँ रचना लिखबाक वा समाजिक काज केलाक एवजमे समाजसँ की भेटलनि।

5) जिनका सभसँ कम भेटल बुझाइत अछि ताहि तीन मैथिलकर्मी, संगीतकर्मी, साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी-रंगमंच-निर्देशक,-संस्थाकेँ अगिला चरण लेल राखि लैत छी।

6) एहि तीन चयनित जीबित मैथिलकर्मी, संगीतकर्मी, साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी-रंगमंच-निर्देशकक वा संस्थाक रचना, काज, हुनक उद्येश्य आदिक बीचमे परस्पर तुलना कएल जाइत अछि आ,

7) अंतिम रूपसँ विदेह द्वारा नाम चुनि सालक अंतमे घोषणा कएल जाइत अछि आ नियत समयपर ई विशेषांक निकालबाक प्रयास करैत छी। एकर मतलब ई भेल जे पाठककेँ सुझाव देबाक सूचना हरेक बर्खक अप्रैल-मइ धरिमे चलि जाइत छनि।

प्रश्न उठि सकैए जे कि उपरक नियम एहन छै जाहिमे अंतिम रूपसँ सभ सुयोग्य जीवित लेखक केर चयन समयपर भ़ऽ जेतनि? तऽ एकर उत्तर छै नै। विदेहक पाठक, विदेहक लेखक आ विदेह तीनू लग अपन-अपन सीमा छै। मुदा अही सीमाक संगे हमरा सभकेँ अपन यथासाध्य श्रेष्ठ देबाक छै आ मैथिली लेल एकटा एहन रस्ता बना देबाक छै जाहिसँ आबए बला 500-600

बर्खक साहित्य विदेहक लीकसँ प्रेरणा पाबए। अही विचारक संग विदेह ओहन जीवित लेखकपर अपन धेआन सेहो केंद्रित कऽ रहल अछि जे कि सुयोग्य छथि मुदा जिनकापर विदेहक विशेषांक कोनो कारणवश नहि प्रकाशित भऽ सकल। एकर नाम भेल विदेहक "नित नवल सिरीज"। एहि नव विचारक मुख्य बिंदु एना अछि-

1) विदेहक संपादक गजेन्द्र ठाकुर एकटा कोनो जीवित लेखक वा कलाकारपर एकाग्र आलोचना करता मने ओहि लेखक केर उपल्बध सभ साहित्यपर। एहि पोथीक भाषा मैथिली अथवा अंग्रेजी कोनो एक भाषामे रहत। एहि पोथीक पहिल रूप ई-बुक केर रूपमे आएत आ प्रयास रहत जे एकर प्रिंट सेहो आबए जे कि परिस्थितिपर निर्भर करतै।
2) लेखक वा कलाकार केर चुनाव संपादक अपन रुचि वा विदेह टीमक रुचि केर हिसाबें करता।
3) एहिमे ओहने लेखक वा कलाकार केर चयन संभव हएत जिनकर उपल्बध हरेक पोथीक PDF रूपमे विदेहक माध्यमसँ सार्वजनिक भेल छनि। कलाकार लेल यूट्यूब एवं आन साइट सेहो मान्य हेतै।
4) एहि परियोजनाक लेल चयनित लेखक वा कलाकारपर काज संपादक केर समय केर अनुसारे हेतै। तँइ एकर समय सीमा

कहब संभव नहि।

नित नवल सिरीजमे एखन धरि प्रकाशित पोथीक सूची एना अछि-

1) Rajdeo Mandal-Maithili Writer (ई प्रिंट रूपमे सेहो प्रकाशित भेल अछि)

2) नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (ई प्रिंट रूपमे सेहो प्रकाशित भेल अछि, संगे-संग ई प्रिंट ऑॅन डिमांड रूपमे सेहो अछि) https://store.pothi.com/book/गजेन्द्र-ठाकुर-नित-नवल-सुभाष-चन्द्र-यादव/

एकर अतिरिक्त विदेहक वर्तमान अंक सभमे धारावाहिक रूपें "नित नवल सुशील" आ "नित नवल दिनेश मिश्र" सेहो प्रकाशित भऽ रहल अछि आ दूनूक पोथी रूप जल्दिये आएत।

श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक मैथिलीक हेतु अमूल्य योगदान: विदेह ई पत्रिका

रबीन्द्र नारायण मिश्र

हम सभ जखन बच्चा रही तखन मिथिला मिहिर बहुत प्रचलनमे छल। सभ सप्ताह अखबारक संग-संग मिथिला मिहिर गामे-गाम पहुँचि जाइत छल। विभिन्न प्रकारक सामग्रीसँ परिपूर्ण एहि साप्ताहिक पत्रिकामे नव-पुरान सभ तरहक रचनाकारक समावेश होइत छल। हुनका लोकनिक रचना प्रकाशित होइत छल। परिणामतः ओहि समयमे बहुत रास लेखक सभ मिथिला मिहिरक सौजन्यसँ विकसित भेलाह। बादमे जखन मिथिला मिहिर बंद भए गेल तँ एकटा बड़ पैघ शून्यता आबि गेल। मैथिलीमे कोनो एहन पत्रिका नहि निकलि सकल। जे निकलबो कएल से किछु दिनक बाद बंद भए गेल। विदेह-ई पत्रिका बहुत सफलतापूर्वक ओहि अभावकेँ पूर्ण केलक अछि।

श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक दृष्टि सदिखन मैथिलीक नव-नव लेखक सभकेँ प्रोत्साहित करबाक रहलनि। इएह कारण थिक जे विदेह ई पत्रिकाक माध्यमसँ अनेक नव लेखक/रचनाकारकेँ मैथिलीमे एकटा प्लेटफार्म भेटलैक जाहिसँ ओ अपन रचना बहुत आसानीसँ प्रकाशित करबा सकैत अछि। हमरा ई लिखबामे

कनीको संकोच नहि भए रहल अछि जे आइ-काल्हि मैथिलीमे एहन कोनो आन पत्रिका उपलब्ध नहि अछि जतए एतेक आसानीसँ महिनामे दू बेर रचनाकार अपन रचनाकेँ प्रकाशित होइत देखि सकैत छथि। ततबे नहि,बिना कोनो खर्चाकेँ हजारों पाठक धरि ई पत्रिका नियमित रूपसँ महिनामे दू बेर पहुँचि जाइत अछि। विदेह पत्रिकाक विशेषताक वर्णन करबाक प्रयोजन नहि अछि कारण एहिसँ जुड़ल हजारो पाठक/लेखक एहि सभसँ पूर्ण अवगत छथिहे। तथापि प्रसंगवश एतबा तँ कहहे पड़त जे एहि पत्रिकाक माध्यमसँ सैकड़ों नव लेखकक निर्माण भेल आ भइए रहल अछि।

पछिला चौदह सालसँ हम विदेह ई पत्रिकाक संपर्कमे छी। सन 2009मे आदरणीय जयकान्त बाबूक निधनक बाद हम हुनकापर संस्मरण लिखने रही। ओ हस्तलिखित संस्मरण हम विदेहमे पठा देने रही। तकर उत्तरमेमे हमरा श्री गजेन्द्र ठाकुरजी यूनीनागरीक साफ्टवेयर पठओने रहथि जे हम ओहि हस्तलिखित संस्मरणकेँ ओहिसँ टाइप कए पठा दिअनि। हम से तँ नहि कए सकलहुँ, मुदा ओ यूनीनागरीक साफ्टवेयर बहुत काजक सिद्ध भेल। बादमे जखन डाक्टर उमेश मण्डलजी हमर रचना सभकेँ टाइप कए पुस्तकाकार दए रहल छलाह तखन बीच-बीचमे ओकरा शुद्ध करबाक हेतु एहि साफ्टवेयरक सहयोग लैत रही। शुरुमे हमर पाँचटा किताब उमेशजीक सहयोगसँ टंकित/प्रकाशित भेल छल।

तकर बाद तँ हमरा यूनीनागरीपर टंकित करबाक ततेक नीक अभ्यास होइत गेल जे बादमे बाइसटा किताब स्वयं सोझे लैपटापपर लिखैत गेलहुँ। एहिमे ठाकुरजीक पठाओल यूनीनागरीक बहुत योगदान रहल। आइ-काल्हि जे हम एतेक जल्दी किताब प्रकाशित कए लैत छी ताहूमे एहि साफ्टवेयरक बहुत योगदान अछि। सोझे लैपटापपर यूनीनागरीमे टाइप कए लेलाक बाद बहुत रास समय,परिश्रम आ खर्चाक बचत भए जाइत अछि आ नीक गुणवेत्ताक संग पुस्तकक प्रकाशन संभव होइत अछि।

हम स्वयं विदेह ई पत्रिकासँ बहुत लाभान्वित भेल छी। पछिला कतेको सालसँ हमर अनेक रचना एहिमे प्रकाशित होइत रहल अछि। हमर आत्मकथा, भोरसँ साँझ धरि,यात्रा प्रसंग (स्वर्ग एतहि अछि) अनेक कथा सभ एहिमे प्रकाशित होइत रहल अछि। हमर उपन्यास, नमस्तस्यै, लजकोटर, मातृभूमि, महराजक धारावाहिक प्रकाशन कतेको साल धरि विदेहमे होइत रहल अछि। वर्तमानोमे हमर उपन्यास,बदलि रहल अछि सभ किछुक धारावाहिक पुनर्प्रकाशन विदेहमे भए रहल अछि। से कोनो हमरे भए रहल अछि से बात नहि अछि। अनेक रचनाकारकेँ एहिना सुविधा विदेहमे भेटैत रहलनि अछि आ भेटिए रहल छनि जाहिमे आदरणीय जगदीश प्रसाद मण्डलजीक

नाम प्रमुखतासँ लेल जा सकैत अछि। अखनहु हुनकर उपन्यासक धारावाहिक प्रकाशन विदेहमे धारावाहिक भए रहल अछि।

एमहर बहुत दिनसँ विदेहक अनेक विशेषांक निकालल गेल अछि जाहिमे मिथिला, मैथिलीसँ जुड़ल साहित्यकारक लोकनिक योगदानपर गंभीर चर्चा भेल अछि। एहन कतेको रचनाकार जिनका उचित सम्मान/पुरस्कार नहि भेटि सकलनि, तिनका सभपर विदेह विशेषांक निकालि कए अद्भुत काज केलक अछि।

विदेहक संपादकक रूपमे श्री गजेन्द्र ठाकुरक योगदान अमूल्य अछि। ओ अत्यंत निष्पक्षता आ निर्भीकतासँ अपन संपादकीय दायित्वक निर्वाह करैत रहलाह अछि। बिना कोनो अपेक्षाकेँ सालक-साल एहि काजमे निरंतर नियमित रूपसँ लागल रहब कोनो मामूली बात नहि अछि।। देश-विदेशमे रहि रहल हजारों मैथिलीभाषी लोकनि एहि पत्रिकासँ लाभान्वित होइत छथि। एहि लेल श्री गजेन्द्र ठाकुरजी आ हुनकर सहयोगी लोकनिक अमूल्य योगदानक जतेक प्रशंसा कएल जाए से कम होएत।

विदेह पत्रिकाक पेटारमे अनेक रचनाकारक पुस्तक सभक पीडीएफ (PDF) फाइल उपलब्ध अछि। एहिसँ मैथिलीक पाठक बिना कोनो खर्चा आ असुविधाकेँ मैथिलीक दुर्लभ ग्रंथ

सभक अध्ययन कए सकैत छथि। शोधार्थी आ प्रतियोगिता परीक्षा सभक तैयारी कए रहल विद्यार्थी सभक लेल तँ ई एकटा विशाल पुस्तकालयक काज कए रहल अछि। सभसँ महत्वपूर्ण तँ भेल जे ई काज केलासँ मैथिलीक पुस्तक सभ युग-युग धरि सुरक्षित रहि सकत।

मैथिलीमे एहि अमूल्य योगदानक हेतु श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक जतेक प्रशंसा कएल जाए से कमे होएत। आशा करैत छी जे कालक्रमे आर-आर रचनाकार,समाजसेवी सभ एहि पत्रिकासँ जुड़ैत रहताह आ एकरा आर अधिक उपयोगी बनेबामे अपन-अपन योगदान करताह। साहित्यिक क्षेत्रमे हिनकर महत्वपूर्ण योगदान अछि। हिनकर लिखित पोथीक सूचीसँ पन्नाक -पन्ना भरि जाएत। साहित्यक कोनो विधा नहि अछि जाहिमे ई नहि लिखने होथि। हालेमे हिनकर मैथिलीक लघु, दीर्घ आ बीहनि कथा-संग्रह प्रकाशित भेल अछि ‘पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल’। एहिमे शामिल सभ कथा उद्धुत अछि। पढ़लासँ बहुत प्रेरणा भेटैत अछि। बहुत किछु जानकारी भेटैत अछि। निश्चित रूपसँ श्री गजेन्द्र ठाकुरजी मैथिली साहित्य आ भाषाक हेतु अद्भुत काज केलनि अछि। मैथिलीमे ई पत्रिकाक निरंतर प्रकशन कए मैथिलीक लेखक आ पाठककेँ बहुत लाभान्वित केलनि अछि। हमरा लोकनिक दायित्व थिक जे हिनका सन विद्वान,कर्मठ आ

मैथिली प्रेमीकेँ यथोचित सम्मानित करी जाहिसँ ओ आर उत्साहसँ मैथिलीक सेवामे लागल रहथि।

विदेह ओ गजेन्द्र

धनाकर ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर विदेह नहि छथि नहिए विदेह गजेन्द्र छलाह वा अछि। मिथिलाक लेल विदेह बिना देहक बिना कागजक ई-पत्रिका भेल "विदेह" जकर 2008 ईस्वीसँ लगातार पाक्षिक (हरेक मासक 1 आओर 15 अंग्रेजीक तारीखक निकलैत) 377 अंक निकलि गेल अछि। एतेक पाक्षिक समयानुसार अंक निकालि लेब मजाक नहि।

हालक एक अंकमे गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादकीय एक मंडलजीक पहिला गद्य उपन्यास पर छल जकर कथानक पूर्णरूपेण सम्पादकीयमे लिखनाइ हमरा ठीक नहि लागल जकर अर्थ लेखक वा सम्पादकक त्रुटि हो से बात नहि कारण हम स्वयं सारस्वत ओ विष्णुकान्त मिश्रक काव्यक समीक्षा लिखि एक परम्पराक सृजन कंय चुकल छी। बूझल जाय जे हमर पूर्वाग्रह हो वा समयक कमी जे ठीकसँ कहियो नहि विदेह पढ़लहुँ नहिए गजेन्द्र ठाकुरकें बूझबाक प्रयास कएल जे ई एक नीक सरकारी पदाधिकारी होइतहुँ मैथिलीमे एतेक किएक डूबल छथि सेहो स्थापित मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारक समानान्तर पूस्स्कार स्थापित करैत आइ तक के स्थापनाक विरूद्ध ठाढ़ करैत

जे पूर्णतः गलतहुँ नहि कारण मैथिली जिनक भाषा ओ बहुमतधारी अछूत जकाँ मानल गेल वा स्वयंके अछूत बुझैत मैथिली बजैत किन्तु अपनाकें अलग-थलग बूझैत ताहि वर्ग लेल गजेन्द्रक चिन्तनशीलता प्रशंसनीय अछि।

हुनक सतत प्रयाससँ कम-सँ-कम एक एहनकें मूल पुरस्कार सेहो भेटलन्हि ओना ओहिमे अन्तरराष्ट्रिय मैथिली परिषदक एक कार्यकर्ताक सेहो भूमिका नीक रहलन्हि। हमरा कहियो समानान्तर पुरस्कार ठीक नहि लागल। ओ यदि केवल विदेह रहैत तऽ नीक। कतेक मुश्किलसँ मैथिली ओतय आयल से लोक बिसरि जाइत अछि। पुरस्कार सदैव योग्यहिंकेँ भेटय से संभव नहि जखन इनारहिमे भाँग घोंटल हो। गजेन्द्र एक नीक मैनेजर छथि जिनका लग एक नीक टीम छन्हि चाहे उमेश मंडल वा अनचिन्हार सन युवा जे एतेक आक्रोशित जे व्यक्ति विशेष वा छोट समूहक स्वस्थ आलोचनाक जगह ओकर पैघ व्यापक एवं वामसेफी आन्दोलनक जकाँ गरियबैत सेहो रहलाह अछि किन्तु ताहिसँ गजेन्द्र-समूह जे विदेह रूप लैत अछि मुदा तें मैथिलीक प्रति हिनक सभक धनात्मक योगदान कम नहि भय जाइत अछि आओर ई केवल पत्रिका विदेह तक सीमित नहीं अछि एकर पेटारमे बहुत किछु उपलब्ध अछि जे हमरा सन हड़बड़िया लेल कखनहुँ काल बहुत उपयोगी। जेना तकैत छलहुँ जे कोलकाताक किशोरीकान्त मिश्रक फोटो से भेटल ओना पूरा गैलरीमे वैह

सभसँ खराब तथापि यावत् हूनक लड़का साँझमे नहि पठौलक वैह मैथिली संदेशमे लगौने छलहुँ।

हमर एक फ़ोटो गैलरीमे कतहुसँ जमा कंय मिथिलारत्न सेहो घोषित केने ताहि लेल आभार व्यक्त करैत छी किन्तु कहियो हम हिनक सभकें सलाह देने छलहुँ से फेर दोहरबैत छी व्यक्तिक जन्मतिथि वा कालक अनुसार सजाओल जाय, से एखन धरि नहि ठीक-ठाक भेल हमरा लागल। साहित्यिक प्रस्तुति यावत् वैज्ञानिक नहि होयत ताबत व्यापक ओ सटीक रूप नहि लेत आओर विज्ञान एक क्रमबद्धता अछि ताल, छन्द जकाँ जँ देखि सकी आओर यैह देखनाइ सत्यानुभूति आओर जखन ओहि स्तर पर पहुंचि जायब तखन विद्यापति ब्राह्मण छलथि वा हजाम, गजेन्द्रक पञ्जी क वृहत्तर व्योमसँ बाहर भय जायत कारण जे विद्यापति अनेकानेक संस्कृत ग्रंथ लिखलन्हि ओ सामान्य गीत सेहो लीखि कंठमे रमि चिरंजीविता पाबि सकैत छथि एकरा जातिक चश्मासँ देखनाइ पूर्वाग्रह वा मूढ़ता मात्र।

एहि बीच व्यक्ति केन्द्रित अनेक अंक निकालनाइ से ठीक-ठाक ओना ओतहु समानान्तरता मोनमे जे ओतेक आपत्तिजनक नहि कारण लेखक तऽ लेखक अछि किन्तु एहिमे एक संगठन विशेष पर चर्चाक औचित्य नहि यदि अनेक समकालीन संगठन पर चर्चा

सूची नहि देल गेल जे प्रकाशकीय निरपेक्षताक तकादा अछि। ओना मोटा-मोटी हम विदेह ओ गजेन्द्रक अनेकानेक कार्यक प्रशंसक सेहो छी तखन 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' क सलाहक संग शुभकामना।

संपादकीय टिप्पणी- मैथिली मुख्यधारामे आलोचना एवं असहमतिकेँ गारि किएक मानल जाइत छै ताहिपर हम लिखने छी। जे विदेहक अंक 383, 1 दिसंबर 2023 केँ "की अप्रमाणिक आलोचना एवं इतिहास केर लेखन करै छथि तारानंद वियोगी?" शीर्षकसँ प्रकाशित भेलै। पाठक ओकरा पढ़ि सकै छथि। आने आलेख जकाँ ईहो आलेख जसकेँ तस प्रकाशित भऽ रहल अछि।

मैथिली साहित्यक साधक-अराधक श्री गजेन्द्र ठाकुर

डॉ. योगानन्द झा

श्री गजेन्द्र ठाकुर मैथिलीक अनन्य उपासक छथि। हिनक कारियत्री ओ भावयित्री प्रतिभाक प्रसादात् मैथिलीक विविध विधाक निरंतर संरक्षण ओ संवर्धन संकलित भऽ रहल अछि। शब्दकोश निर्माण, ई-पत्रिका विदेहक संचालन, श्रुति प्रकाशनक माध्यमे नित नूतन प्रयोग ओ मैथिलीक अगिला पीढ़ीक निर्माणक संगहि मैथिलीक विलक्षण आर्काइभक निर्माण द्वारा वैश्विक स्तरपर मैथिलीक प्रतिष्ठापनमे दत्तचित्त छथि। "कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक" हिनक विविध विधाक पुष्पवाटिका थिक जाहिमे एके संग हिनक प्रबंध-निबंध-समालोचना, सहस्त्रबाढ़नि उपन्यास, आधुनिक कविता, कथा-गल्प, नाटक, दू टा महाकाव्य आ प्रचुर बालसाहित्य ओ लोकसाहित्य संकलित अछि। डॉ. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' एहि ग्रंथकेँ एकटा नूतन प्रयोग ओ आधुनिक महाकाव्य कहलनि अछि जाहिमे प्रचुर पाठ्य सामग्री उपल्बध अछि। आधुनिक मैथिली लेखनकेँ मार्गदर्शनक दृष्टियें हिनक ई ग्रंथ उच्च कोटिक अछि। मैथिलीक लिपिक संरक्षण ओ चित्र-कथाक माध्यमे नेना लोकनिकेँ अपन मातृभाषा दिस औत्सुक्य जगेबामे हिनक प्रयास सभ नियामक अछि। मुक्त छंदक माध्यमे रचित हिनक महाभारतीय कथापर आधारित

महाकाव्य 'त्वञ्चाहञ्च' सेहो मुग्धकारी अछि जाहिमे युगसंदर्भकेँ निरूपित करैत आप्तवाक्य एहि शब्दमे अभिव्यक्त भेल अछि-

त्वञ्चाहञ्च सभ आपसक लड़ाइ
अछि एखनो पसरल ई महामारि
जाति-धर्म, परिवार-पुत्र केर मोह
यावत् रहत प्रतिभा पिचायत आह
त्वञ्चाहञ्च मचत धृतराष्ट्र जतए करत अराड़ि
दुर्योधन करत प्रारंभ युधिष्ठिरक दोष की थोड़

तथापि अन्वेषण-अनुसंधानपर आधारित हिनक जे किछु निबंध सभ विवेच्य ग्रंथमे अनुगुंफित अछि, से मैथिलीक संरक्षण-संवर्धनक दिशामे हिनक स्फीत दृष्टि ओ मौलिक चिंतनक परिचायक अछि यथा- खिस्सा शीत-बसंत, प्राचीन मैथिली शब्दक अर्थ निरूपण, कृषि-मत्स्य शब्दावली, विद्यापतिक विदेशिया, विस्मृत कवि :पं. राम जी चौधरी, मिथिलाक खोज आदि। उक्ति प्रसिद्ध अछि "एक: शब्द: सम्यक् ज्ञाता: सुष्ठु प्रयुक्त: स्वर्गे लोके च कामधुक् भवति"

वस्तुतः कोनो भाषाक हेतु शब्दे ओकर एकाइ होइत छैक। जाहि भाषामे जतेक अधिक शब्द रहैत छैक ओहि भाषाकेँ ओतेक अधिक समृद्ध किंवा सम्पतिवान बुझल जाइत छैक। मुदा शब्द

राशि निरंतर परिवर्तनशील होइत अछि। ई परिवर्तन ओकर स्वरूपोमे होइत रहैत छैक आ अर्थमे सेहो। कालक्रमे अनेक शब्दक प्रयोग बहिष्कृत भेला उत्तर क्रमशः विलोपनक स्थितिमे आबि जाइत छैक। स्वाभावतः प्राचीन साहित्यमे प्रयुक्त अनेक शब्द अपन अर्थ-निर्वचनमे असमर्थ भऽ जाइत अछि। तें आवश्यक छैक जे संदर्भक आधारपर एहन शब्दक अर्थ निरूपित कऽ ओकरा पुनर्जीवित कऽ लेल जाए। अन्यथा एहन प्राचीन शब्द सभसँ भाषाकेँ हाथ धो लेबऽ पड़ैत छैक। श्री ठाकुरजी, प्राचीन साहित्यक बहुतो शब्दक अर्थ निर्वचन कऽ मैथिलीक ओहन शब्दकेँ पुनर्जीवित करबाक श्लाघ्य प्रयास केलनि अछि जे मैथिली भाषाक संरक्षणक दिशामे हुनक स्तुत्य प्रयास कहल जा सकैत अछि। इएह स्थिति लोकसाहित्योक छैक जे क्रमिक वैज्ञानिक प्रगति ओ अन्य कारणसँ प्रयोग बहिष्कृत होइत-होइत विलोपनक स्थितिमे आबि जाइत अछि किएक तऽ ई साहित्य सामान्यतः लोककण्ठेमे जीवित रहैत अछि आ पीढ़ी दर पीढ़ी कण्ठान्तरित होइत रहल अछि। मुदा आब जनरुचिक अभावमे मैथिलीक ई संपदा विलोपनक स्थितिमे आबि गेल अछि। तें एकरा सभक संरक्षणपूर्वक मैथिली साहित्यिक एहि बहुमूल्य संपदाकेँ कालकवलित हेबासँ बचेबाक हेतु ओकरा सभकेँ लिपिबद्ध कऽ लेब आवश्यक छैक। मुदा क्षेत्र परिभ्रमण ओ ज्ञाताक अन्वेषण कार्य दुरूह होइत छैक। सीत-बसंतक कथाकेँ

लोककण्ठसँ निकालि ओकरा लिपिबद्ध करबाक प्रयासक माध्यमे श्री ठाकुरजी एहि साहित्यिक संपदाक संरक्षणक दिशाबोध करौलनि अछि।

तहिना कोनो भाषा-साहित्यक ओ अंश जे रचनाकार द्वारा लिपिबद्ध रहितो पाण्डुलिपिएटामे बाँचल रहैछ आ ओकर प्रकाशन नहि भऽ पबैत छै किंवा जँ अति प्राचीन कालमे कतहुँ प्रकाशितो रहैत छैक तऽ कालक्रमे अनुपलब्ध भऽ जा सकैत छैक जकर संरक्षण ओकर पुनःप्रकाशने द्वारा संभव छैक। तें विद्वान लोकनि पाण्डुलिपिक अन्वेषण कऽ ओकर प्रकाशन-पुनःप्रकाशन द्वारा ओकरा जीवित साहित्यक स्वरूप प्रदान करबाक चेष्टा करैत छथि आ अपन भाषाक ओहि सम्पदाक संरक्षण करबामे समर्थ होइत छथि। श्री ठाकुरजी आधुनिक कालक एकटा विशिष्ट भक्त कवि पं. रामजी चौधरीक गीतावलीक संरक्षणक दिशामे प्रयत्नशील भऽ एहू कोटिक साहित्य-संरक्षणक दिशानिर्देश प्रदान केलनि अछि। मैथिली भाषा-साहित्यक संरक्षण-संवर्धनक दिशामे कृत एहि प्रकारक प्रयास सभ उन्नैसम शताब्दीक आरम्भहिसँ प्रारम्भ भऽ गेल छल। एकर श्रेय यूरोपीय ओ बंगाली विद्वान सभकेँ जाइत अछि। मैथिली भाषाक स्वरूपक अध्ययनक हेतु कतिपय यूरोपीय विद्वान यथा कोलब्रुक, कैम्पवेल, फालेन, बीम्स आदि एकर शब्द, मोहावरा, लोकोक्ति, आदिक संकलन करैत गेलाह। डॉ.

ग्रियर्सन एहि दिशामे स्तुत्य प्रयास सभ केलनि। ओ मैथिलीमे ग्रामरक रचना केलनि, मैथिली क्रिस्टोमैथी प्रकाशित केलनि, एक्कैस वैष्णव गीत, दीनाभद्रीक ओ नेवारक गीत, सलहेस गाथा आदिक संचयन केलनि, उमापतिक परिजातहरण, मनबोधक कृष्णजन्म आदिक प्रकाशनपूर्वक मैथिलीक भाषिक क्षमताक ओ प्राचीनताक स्थापना केलनि। डॉ. नागेन्द्रनाथ गुप्त, डॉ. हर प्रसाद शास्त्री, डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, डॉ. विमान बिहारी मजूमदार आदि लोकनि मैथिलीसँ संबंधित बहुविध अन्वेषण-संकलनक काज केलनि जकर फलस्वरूप विद्यापतिक पदावली, वर्णरत्नाकर सदृश ग्रंथक अन्वेषण भऽ सकल। मिथिलाक विद्वान मध्य युगप्रवर्तक चन्दा झा समस्त मिथिलामे घूमि-घूमि विद्यापतिक पदावलीक संचय केलनि। हुनका द्वारा महेश ठाकुरक गीत, सैंतालीस गोट मैथिली कविक नाम, साहेबराम दासक पदावलीक अन्वेषण कएल गेल तथा गोविन्द दासोक रचनावलीक संकलन कएल गेल। संगहि ई लोचनक रागतरंगिणीक परिचय उपस्थित केलनि। यदुनाथ झा 'यदुवर' ओ मुंशी रघुनंदन दास सेहो अनेक मैथिली कवि लोकनिक परिचय उपस्थापित केलनि। परवर्ती कालमे डॉ. जयकांत मिश्र अनेक नेपालीय मैथिली नाटकक प्रकाशन करौलनि तथा मैथिली लोकसाहित्यक विद्वतापूर्ण अध्ययन प्रस्तुत केलनि। डॉ. रामदेव झा सेहो हरगौरी विवाह ओ अन्य अनेक नाटक ओ नृत्यनाटिका

सभक अन्वेषणक संगहि कविवर जीवन झाक नाटक सभकेँ पुनःप्रकाशित करा ओकरा सभकेँ जनसुलभ बनौलनि। पं. रामजी चौधरीक परिचय सहित हुनक पदावलीक प्रकाशन करा श्री गजेन्द्र ठाकुरजी साहित्य संरक्षणक दिशामे एहने महत्वपूर्ण कार्य केलनि अछि। एहिना विद्यापतिक विदेशियाकेँ हुनक पदक आधारपर स्थापित करबाक हिनक प्रयास अत्यंत मौलिक, चिन्तनपरक अछि तथा 'मिथिलाक खोज'मे मिथिलाक अनेक ऐतिहासिक ओ पुरात्तविक स्थलक परिचय प्रस्तुत कएल गेल अछि।

"विस्मृत कवि पं. रामजी चौधरी" निबंध वस्तुतः अन्वेषण-अनुसन्धानक दिशामे श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक अन्यतम अवदान थिकनि। तदनुसार ई कवि अन्धराठाढ़ी थानान्तर्गत रुद्रपुर गामक निवासी छलाह तथा हिनक उपस्थिति काल छलनि 1878-1952 ई.। ई भक्त कवि छलाह आ मिथिलक परंपरानुसार पंचदेवोपासक छलाह। हिनक एक गोट पोथी प्रकाशित छलनि। तकरे सभक आधारपर ठाकुरजी हिनक पैंतालीस गोट गीतकेँ प्रकाशन-पुनःप्रकाशन पथपर आनि एहि मैथिली कविक अस्तित्वकेँ जीवंत करैत हिनक रचनावलीक आस्वादनक मार्ग तऽ प्रशस्त करबे केलनि अछि मैथिलीक एहि बहुमूल्य सम्पदाक संरक्षण कऽ मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धिक प्रति अपन सचेष्टता ओ अन्वेषी वृतिक परिचय प्रस्तुत केलनि अछि।रामजी

चौधरीजीक गीत सभमे समान्यतः शरणागति भक्तिक अनुगायण भेल अछि। ई गणपति, शिव, विष्णु, भगवती सीता, राम, कृष्ण आदिसँ सम्बद्ध पदक रचना करैत छलाह। सभटा गीत भजन-कीर्तनक स्वरूप अछि जाहिमे सम्बद्ध देवताक नाम, रूप, आयुध, वेषादिक संग भक्तक दीनता, विवशता ओ शरणागतिक वर्णन भेल अछि। गीत सभक भास मिथिला संगीतक अनुसरण करैत अछि। एकटा समदाओन गीतमे जीवक संस्कारसँ प्रस्थानकालक भाव केर वर्णन करैत कहल गेल अछि-

गौनाके दिन हमर लगचाएल सखि हे मिलि लिअ सकल समाज॥
बहुरिनि हम फेर आयब एहि जग दूर देश सासुरके राज॥
निसे दिन भूलि रहलौँ सखिके संग नहि कएल अपन किछु काज।
अवचित चित्त चंचल भेल बुझि मोरा कोना करब हम काज।
कहि संग जाए संदेश संबल किछु दूर देश अछि बाट॥
ऋण पैंच एको नहि भेटत मारगमे कुश काँट॥
हमरा पर अब कृपा करब सभ क्षमब शेष अपराध
रामजी की पछताए करब अब हम दूर देश कोना जाएब॥

वृन्दावनक वर्णन करैत कवि ओहिठामक छवि-छटाकेँ प्रस्तुत करैत कहलनि अछि-

वृन्दावन देखि लिअ चहु ओर॥

काली दह वंशीवट देखू, कुंज गली सभ ठौर,
सेवा कुंजमे ठाकुर दर्शन, नाचि लिअ एक बेर॥
जमुना तटमे घाट मनोहर, पथिक रहे कत ठौर,
कदम गाछके झुकल देखू, चीर धरे बहु ठौर॥
रामजी वैकुण्ठ वृन्दावन घूमि देखु सभ ठौर,
रासमण्ड ल’ के शोभा देखू, रहू दिवस किछु और।।

सर्वाधिक संख्यामे ई महेशवाणीक रचना केने छथि। एहि सभमे शिवक विवाह विषयक प्रधानता अछि। एकटा गीतमे शिव शरणागतिक वर्णन एहि स्वरूपक अछि-

हमरो जीवन व्यर्थ बीति गेल।
कहियो बिल्बपत्र नहि तोड़ल, फूल रोपि नहि भेल।
अक्षत धूप, दीपलै, चानन शंकर पूजि नहि भेल॥
कतेक वासना मनमे करि-करि दिवस रैन बिति गेल।
कवहुँ ध्यान शान्त चित्त भए बम-बम कहियो न भेल॥
सुत बनितादि विषय बस कवहुँ, मन बिश्राम न भेल।
चिन्ता करति करति दिन बीतल, अब जर्जर तन भेल॥
कहथि रामजी सकल आश तजि शिव सेबू अलबेल।
शिब बिनु दोसरके हरत दुसहदुःख निश्चय मन करि लेल॥

एकटा चैतावर गीतमे रामकथाक सुन्दरकाण्डक प्रसंगक वर्णन

भेल अछि-

आबि गेल सियाक खोजनमा हो रामा पवन सुअनमा॥
वरजि वरजि हारे सब निसिचर लड़त कौ न सयनमा॥
उपवन नास रिसाय लंकपति मेघवासे कहत बयेनमा॥
मारसि जनि सुत बान्हिके लाऊ रामजी बुझत कारनमा हो रामा॥

एहि तरहें आधुनिक मैथिली साहित्यक एहि परम्परित गीत सभक कवि पं. रामजी चौधरीक अन्वेषण कऽ श्री ठाकुरजी मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे अनुसन्धान-आलोचनाक प्रति जे अनुराग देखौलनि अछि से अनुसन्धित्सुक लोकनिक हेतु प्रेरणाक अक्ष्य स्रोत बनल रहत। हिनकासँ प्रेरित-प्रभावित भऽ शोधार्थी लोकनि जँ मैथिलीक बिलटैत सम्पदाक प्रति संरक्षणक भावनासँ संपृक्त होथि तऽ मैथिलीक शब्द सम्पदे आ लोकसाहित्य नहि अपितु समस्त सम्पदा कालबाध्य हेबाकसँ बचि सकैत अछि आ मुख्यधारामे समाहित भऽ सकैछ। ओना श्री ठाकुरजी तऽ अभिलेखालयक माध्यमे समस्त उपलब्ध साहित्यक आंगुलिक सूत्रबद्धता (Digitalization) मे सन्नद्ध छथिहे, जे मैथिलीक आराधनामे हुनक अन्यतम योगदान छनि।

गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

उदय नारायण सिंह "नचिकेता"

गजेन्द्र ठाकुरक सात खण्डमे विभाजित कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक मे एकहि संग कठिनसँ कठिन विषयपर सुचिन्तित विश्लेषण भेटत आ उपन्यासक जटिल कथा केर गुत्थी सेहो भेटत सुलझाएल आ संगहि प्रेमक कविता आ प्रकृतिक गीत सेहो। सात खण्ड एहि प्रकार छन्हि-

खण्ड-1.प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, खण्ड-2.उपन्यास-सहस्रबाढ़नि, खण्ड-3.पद्य-संग्रह-सहस्त्राब्दीक चौपड़पर, खण्ड-4.कथा-गल्प सग्रह-गल्प गुच्छ, खण्ड-5.नाटक-संकर्षण, खण्ड-6.महाकाव्य-1.त्वञ्चाहञ्च, आ 2.असञ्जाति मन, खण्ड-7.बालमंडली /किशोर जगत।

सभसँ महत्त्वपूर्ण बात ई जे सभ विषयक पाठकक आ पाठिकाक लेल एतए किछु ने किछु भेटबे करत। पुछलियन्हि जे एहन संरचना किएक तँ जे किछु कहलन्हि ताहिसँ लागल जे ई हिन्दी केर तार-सप्तक आ तमिलक कुरुक्षेत्रम् केर बीच मे कतहु अपन जगह बनेबाक प्रयास कऽ रहल छथि। फराक एतबे जे हिन्दी आ तमिल मे कएक गोटे मिलि कए संकलित भेल छथि एकटा जिल्दमे, आ एतए कएक लेखकक द्वारा विभिन्न विधा केर रचना नहि रहि हिनके अपन रचना पोथीमे उपलब्ध कराओल

गेल अछि।

कतेको पंक्ति भरिसक पाठकक मोनमे ग्रंथित-मुद्रित भऽ जएतन्हि, जेना कि –

“ढहैत भावनाक देबाल
खाम्ह अदृढ़ताक ठाढ़
आकांक्षाक बखारी अछि भरल
प्रतीक बनि ठाढ़।”

अथवा, निम्नोक्त पंक्ति-येकेँ लऽ लिअ :

“सुनैत शून्यक दृश्य
प्रकृतिक कैनवासक
हहाइत समुद्रक चित्र
अन्हार खोहक चित्रकलाक पात्रक शब्द
क्यो नहि देखत हमर ई चित्र अन्हार मे...”

मिथिलेक नहि अपितु भारतक कतेको संस्कृतिक प्रभाव देखल जा सकैछ हिनक कथा कवितामे। एहिसँ मैथिली क्रियाशील रचनाक परिदृश्य आर बढ़ि जाइछ, आ नव-नव चित्र, ध्वनि आ कथानक सामने आबि जाइत अछि। कवि कोन मन्दाकिनी केर

खोजमे छथि जे कहैत छथि-

“मन्दाकिनी जे आकाश मध्य
देखल आइ पृथ्वीक ऊपर...”

अपन विशाल भ्रमणक छाप लगैछ रचनामे नीक जकाँ प्रतीत होइत अछि। आ आर एकटा बात स्पष्ट अछि – कोषकार गजेन्द्र ठाकुर आ रचनाकार गजेन्द्र ठाकुर भिन्न व्यक्ति छथि , व्यक्तित्त्वमे सेहो फराक... जतए कोशकारितामे सम्पादकत्व तथा टेक्नोलोजीसँ सम्बन्धित व्यक्तिक छाया भेटिते अछि , मुदा सृजनक मुहुर्तमे से सभटा हेरा जाइत छथि।

एहिमे सँ कतेको टेक्स्ट ओ रखने छथि इन्टरनेटमे मैथिलीक बढ़ैत पाठककेँ ध्यानमे राखए, जेना कि विदेह-सदेह अछि http://videha.co.in/archive.htm मे, आ देवनागरी आ तिरहुता दुन्नु लिपिमे। जे क्यो मिथिलाक्षरक प्रेमी छथि तनिका सब लेखेँ तँ ई विरल उपहारे रहत।

अनेको रचनामे मात्र गोल-मटोल कथे नहि, राजनीतिक भाष्य सेहो लखा दैत अछि। ताहिमे हिनका कोनो हिचकिचाहटि नहि छन्हि। ओना देखल जाए तँ कुरुक्षेत्र क कतेको महारथी छलाह-प्रत्येक वीर-योद्धा अपन-अपन क्षेत्र आ विधाक प्रसिद्ध पारंगद

व्यक्ति छलाह- क्यो कतेको अक्षौहिणी सेनाक संचालनमे, तँ क्यो तीरन्दाजीमे, आदि आदि। सभ जनैत छलाह जे धर्म आ अधर्मक भेद की होइछ मुदा तैयो सभ क्यो जेना आसन्न विपर्यायिक सामने निरुपाय भऽ गेल छलाह। आजुक सन्दर्भमे सेहो कथा मे तथा व्याख्यामे एहन परिस्थितिक झलक देखल जाइत अछि। सैह एहि महा-पाठ- क (मेटाटेक्सट) खूबी कहब। नहि तँ ओ कियेक लिखताह-

“देखैत देशवासीकेँ पछाड़ैत
मन्त्रतंत्रयुक्त दुपहरियामे जागल, गुनधुनी बला स्वप्न
बनैत अछि सभसँ तीव्र धावक, अखरहाक सभसँ फुर्तिगर पहलमान
दमसैत मालिकक स्वर तोड़ैत छैक ओकर एकान्त
कारिख-चित्रित रातिक निन्न,
टुटैत-अबैत-टूटैत निन्न आ स्वप्नक तारतम्य...”

एहि महापाठकेँ एकटा एक्सपेरीमेन्ट केर रूपमे देखी तँ सेहो ठीक, आ सप्तर्षि-मंडलक निचोड़ अथवा सप्त-काण्डमे विभाजित आधुनिक महा काव्य रूपमे देखी तँ सेहो ठीक हएत। जेना पढ़ी, सामग्री एहिमे भरपूर अछि, भरिसक किछु अतिउच्च मानक लागत, आ किछु किनको तत्तेक नहि पसिन्न पड़तन्हि।

मुदा एहि ग्रन्थ निचयकेँ पाठक अवश्य स्वागत करताह , आ नवीन लेखक वर्गकेँ एकटा नव दिशा सेहो भेटतन्हि।

(विदेह पेटारसँ, विदेह केर वर्डप्रेस भर्सनपर 9 जून 2009 केँ प्रकाशित)

गजेन्द्र ठाकुर आ हुनक उपन्यास

अशोक

गजेन्द्र ठाकुर अपन सम्पूर्ण ऊर्जा, प्रतिभा आ संसाधनसँ मिथिलाक संस्कृति, भाषा ओ साहित्यक विकास लेल सतत प्रयत्नशील रहल छथि। हुनक चिन्तन आ लेखनमे मैथिल समाजक प्रतिष्ठा बढ़ेबाक दृष्टि देखबामे आओत। प्राचीन धरोहर सभकेँ आधुनिक तकनीकी संसाधनसँ संरक्षित करबा लेल शुरुहेसँ ओ तत्पर रहलाह अछि। गजेन्द्र ठाकुर प्रबंध-निबंध-समालोचना, पद्य, गल्प, महाकाव्य, बाल कविता आदि विभिन्न विधामे अपन योगदान देने छथि। पत्रिकाक संपादनक अतिरिक्त अंतर्जाल लेल तिरहुता यूनीकोडक विकासमे योगदान आ मैथिली भाषामे अंतर्जाल ओ संगणकक शब्दावलीक विकास आदि विभिन्न काज केने छथि। आशीष अनचिन्हारक 'मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास'क अनुसार 'इंटरनेटपर मैथिलीक पहिल उपस्थिति अछि भालसरिक गाछ' जे बर्ख 2000 सँ छल आ जकर संचालक छलाह गजेन्द्र ठाकुर। समदिया मैथिलीक पहिल समादपरक ब्लाग अछि जकरा गजेन्द्र ठाकुर 2004 मे बनौने छलाह। विदेह मैथिलीक पहिल ई-पत्रिका अछि, जे बर्ख 2008 सँ एखन धरि अछि आ जकर संस्थापक गजेन्द्र ठाकुर छथि। मैथिलीक पहिल डिजिटल पुस्तकालय विदेह द्वारा बर्ख 2008 मे

शुरू भेलै। एकर अतिरिक्त आर बहुतो काज जेना इंटरनेटपर अनुवाद लेल पहिल ब्लाग, बाल साहित्य लेल 'नेना-भुटका' ब्लाग, विकीपीडिया लेल पहिल प्रयास, गूगल ट्रांसलेशन लेल पहिल प्रयास आदि एहन काज सभ अछि जे गजेन्द्र ठाकुरक उपल्बधि अछि। एहि प्रकारक विभिन्न काज मिथिला, मैथिली लेल बहुत महत्वपूर्ण रहल अछि। गजेन्द्र ठाकुर सन दोसर कोनो व्यक्ति हमरा नहि देखाइ छथि जे एतेक विभिन्न प्रकारक काज केने होथि।

गजेन्द्र ठाकुरक दू टा उपन्यास प्रकाशित अछि। 'सहस्रबाढ़नि' 2009 ई. मे प्रकाशित भेलनि आ 'सहस्रशीर्षा' 2010 ई. मे। 'सहस्रबाढ़नि' उपन्यासमे देशक सरकारीतंत्रमे व्याप्त भ्रष्टाचार ओ ओहिसँ जुझैत दू पीढ़ीक सरकारी सेवक आ पिता-पुत्रक कथा कहल गेल अछि। एहि क्रममे सरकारीतंत्रक बहुतो आन्तरिक कार्य-व्यवस्थापर प्रकाश पड़ल अछि। ओना ई उपन्यास तीन-चारि पीढ़ीक समयकेँ अपनामे समेटने अछि। ओहि समयक विवरण सभ आएल अछि। उपन्यास मुख्यतः विजिलेंस विभागमे कार्यरत आरुणिक जीवन ओ विभागीय कार्यसँ संबंधित अनुभूति ओ घटना सभपर आधारित अछि मुदा एहिमे हुनक पिता नंद जे सरकारीय अभियंता छथि आ गंगाब्रिज निर्माणमे काज करैत रहथि, हुनको कथा आएल अछि। दूनू पिता-पुत्र इमानदार छथि। पिताक मृत्यु एक्सीडेंटमे भेल छनि।

सरकारी यात्राक बाद आरुणिक सेहो एक्सीडेंट होइत छनि मुदा ओ बचि जाइत छथि। उपन्यासक अंतमे आएल अछि जे ई एक्सीडेंट भेल नहि छल वरन् करबाओल गेल छल। ई उपन्यास सरकारीतंत्रक भीतर चलैत भ्रष्ट आचरण सभकेँ बहुत बारीकीसँ उघार करैत अछि।

दोसर उपन्यास 'सहस्रशीर्षा' एक अनवरत चलैत कथा सन अछि। ई उपन्यास देशक स्वाधीनता आन्दोलनक गतिविधि ओ स्वाधीनता बादक राजनीतिसँ परिचित करबैत अछि। ई उपन्यास चौंतीस कल्लोलमे विभाजित अछि। मुख्य रूपसँ गढ़ नारिकेल गाम आ ममतोड़, मुखदेवक आसरासँ एक व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्यकेँ सोझाँ अनैत अछि। एहिमे कहन शैलीक विशेषता अछि। विभिन्न जातिक टोल सभक वर्णन अछि। जाति कोना बनल सेहो खिस्सा सभक माध्यमे कहल गेल अछि। एहि उपन्यासमे विभिन्न प्रकारक सूचना अछि। कबीर मठक सूचना अछि तऽ आम सभक नाम, धान सभक प्रकार सभ सेहो लिखल अछि। विभिन्न प्रकारक सूचना सभक कारणे उपन्यास शिक्षाप्रद बनि गेल अछि। एहिमे बहुतो लोकगीत सभ अछि, लोकगाथा सभ अछि। गोनू झाक खिस्सा अछि। गाममे धोबीसँ भाड़ापर कपड़ा लेल जाइत अछि। गढ़ नारिकेलमे सभ चीज लेल एकटा खिस्सा अछि। ई मात्र खिस्सा नहि, एक सामाजिक इतिहास

अछि। मौखिक इतिहास सभकेँ लिपिबद्ध करबाक दृष्टिसँ ई उपन्यास अपन एक फराक विशेषता रखैत अछि। गढ़ नारिकेलमे मनुष्य जातिसँ बेसी गाछ-वृक्ष, फल, अन्न आ तरकारीक प्रकार विद्यमान अछि। उपन्यासक अंतमे आएल अछि जे गढ़ नारिकेल उपन्यास त्रयीक पहिल उपन्यास थिक। गीत, गाथा, आन्दोलन, खिस्सा, इतिहास सभकेँ अपनामे समेटने ई उपन्यास एक संग्रहणीय उपन्यास बनि गेल अछि।

सहस्त्रबाढनि: हमर दृष्टि मे (किछु टिप्पणी)

अरविन्द ठाकुर

[1]

“सहस्त्रबाढनि” मूलतः एक परिवारक चारि पीढीक क्रमिक विकासक (इवोल्युशन) कथा कहैत अछि।
झिंगुर ठाकुर पेशा सँ परम्परागत खेतिहर छथि, किन्तु शिक्षाक महत्व बूझए छथि आ से आधुनिक शिक्षाक। संस्कृत शिक्षाक युगीन अप्रासंगिकता हुनक संज्ञान मे छनि आ तें ओ परम्परागत संस्कृत शिक्षाक मोह त्यागि अपन पुत्र कलित लेल आधुनिक शिक्षाक व्यवस्था करए छथि। हुनक निर्णयक सुपरिणामस्वरूप कलित दरभंगा राजक वसूली पदाधिकारीक पद पर नियुक्त होइ छथि आ अपन कार्यक्षेत्र मे पूर्वक वसूली पदाधिकारी सभक भ्रष्ट तरीका सभ कें बदलि दए छथि। कलितक पुत्र नन्द इंजीनियरिंगक पढाइ करए छथि आ बिहार सरकारक सिंचाई विभाग मे इंजीनियरिंग असिस्टेंटक पद पर बहाल होइ छथि। नन्द कें सेहो भ्रष्टाचार सँ विरक्ति छनि आ विभिन्न क्षतिक रूप मे ओ तेकर मोल चुकबए छथि। अंततः ओ परिस्थिति सँ हारि मानि तंत्र-मंत्र आ कर्मकांडक शरण मे चलि जाइ छथि। नन्दक पुत्र आरुणि अपन पिताक परिणाम देखने छथि, किन्तु अपन

ईमानदारीक पालन करितहुँ विपरीत परिस्थिति सँ संघर्ष करए छथि आ अंततः विजयी होइ छथि।

अहि मूल कथाक संग अनेक प्रसंग सभक सुगठित संयोजन सँ ई उपन्यास रचल गेल अछि।

[2]

“कुरुक्षेत्रम अन्तर्मनक“ समर्पण मे रचनाकार लिखए छथि –

(पिताक सत्य कें लिबैत देखने रही स्थितप्रज्ञता मे
तहिये बुझने रही जे
त्याग नहि कएल होएत
रस्ता ई अछि जे जिदियाहवला
पिताक प्रिय-अप्रिय सभटा स्मृतिकें समर्पित)

“सहस्त्रबाढनि“ उपन्यासक बीज-रूप उपरोक्त समर्पणक शब्द सभ मे उपस्थित छै।

[3]

“सहस्त्रबाढनि“क संरचना आदर्शवाद सँ प्रभावित छै। कथानायक अपन पिता जकाँ संघर्ष सँ विमुख भए तंत्र-विद्या आ पूजा-पाठक कर्मकांड दिस जएबाक पलायनवादी रस्ता अपनएबाक सत्ती विपरीत परिस्थिति मे धैर्य राखैत आ अवसर अएला पर प्रतिकार करैत अंततः विजयी होइत अछि।

“ईमानदार रहब, विपरीत परिस्थिति मे हारि नहि मानब, संघर्ष

करब“– इएह अहि उपन्यासक मूल संदेश अछि।

[4]

उपन्यासक बुनावट बहुत महीन छै। उपन्यासकार कोनो तरहक हड़बड़ी मे नहि छथि। ओ खूब इतमीनान आ धैर्य सँ उपन्यासक कथाक तानी-भरनी बुनए छथि। संरचनात्मक स्तर पर उपन्यास मे वर्णन, इतिवृत्त आ ब्यौरा सभक बाहुल्य छै। सामान्यतया ई बाहुल्य कोनो उपन्यासक मूल कथ्य कें नेपथ्य मे राखि दए छै, कथा-प्रवाह कें विचलित (डेविएट) करए छै आ कथानक कें बोझिल बनबए छै। किन्तु उपन्यासकारक दक्षता छनि जे अहि उपन्यास मे ओ सभ नकारात्मक पक्ष गौण छै आ सभ किछु खूब सहज, स्वाभाविक आ वाजिब त बुझाइतहि छै, अहिसभ सँ एकर रोचकता आ पठनीयता मे कोनो व्यवधान नहि आबए छै।
“आरुणि कें अप्पन पुरना बात सभ कें मोन राखबाक धुनि जेकाँ छलन्हि। कोन ईस्वी मे की भेल, कोन ईस्वी सँ की-की भेल से कोना याद होएत।----- बहुत दिनुका बाद एक दिन नन्द कें आरुणिक डायरी हाथ लागि गेलन्हि जाहि मे आरुणि अपन स्मृतिक घटनाक्रमक इतिहासकार जेकाँ वर्णन देने रहथि।“ (2-18)
अपन कथानायक आरुणिए जकाँ उपन्यासकारक स्मृति बहुत तीव्र छनि आ स्मृतिक इएह तीव्रता अहि उपन्यासक महीन

विवरण आ ब्यौरा सभक पृष्ठभूमि मे छै। मनुष्यक स्मृति मे बहुत रास वांछित-अवांछित तत्त्व, घटनाक्रम सभ थकिआएल रहए छै आ रचनाकार ओहि थकिआएल ढेरी मे सँ अपन बेगरता मात्रक वस्तु चुनि अपन विभिन्न रचना मे उपयोग करैत अछि। “सहस्त्रबाढनि” मे एहनहु स्मृति सभ छै, प्रकटतः जेकर आवश्यकता अहि उपन्यासक उपस्थापन लेल नहि रहए। किन्तु ई व्यायाम यथार्थवादी साहित्य-सृजनक एकटा आवश्यक अंग मानि लेल गेल छै। वक्तव्य वस्तुक लग-पासक प्रत्येक बातक ब्यौरावार विवरण उपस्थित करब, समसामयिक घटना तथा रीति-नीतिक विस्तारपूर्वक उल्लेख करब, वक्तव्य वस्तुक संग अत्यंत क्षीण सूत्र सँ संबद्ध नगण्यहु लोकक चर्चा करब, घटनाक सत्यताक वातावरण उपस्थित करबाक हेतु चिट्ठी, चिट्ठा, सनद एवं अन्य प्रामाणिक बूझल जाइबला बात कें उपस्थित करब आदि कें आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी यथार्थवादी लेखकक कौशल मे सम्मिलित कएने छथि। ब्रेख्त सेहो अहि बातक पैरोकारी करए छथि जे लेखक लोकनि कें प्रत्येक माध्यम, चाहे ओ नव हुअए वा पुरान, प्रयोग भेल हुअए वा नहि, कला सँ बहराएल हुअए वा कोनो अन्य स्रोत सँ, जँ यथार्थक संवहन मे सहयोग प्रदान करए छै त ओकर आधार लेबाक चाही।

[5]

एतय कोनो रचनाकारक ई असहायताक ध्यान सेहो राखल

जएबाक चाही जे एक बेर लिखब शुरू कए देलाक बाद कथाक घटना आ पात्रक गतिविधि पर पूर्ण नियंत्रण राखब प्रसिद्ध आ सिद्धहस्त कथाकारहु सभक लेल कठिन भए जाइ छै, होइत रहल छै। इएह ठाम पर जाए कए रचनाकारक प्रस्तुतिक कलात्मकता आ सुगढपन महत्वपूर्ण भए जाइ छै जे ओ अहिसभ कें कतेक सुपाच्य, बोधगम्य, सहज आ सुसंगत बनाए पाबए छै। गजेन्द्र ठाकुरक ई दक्षता प्रशंसनीय छनि जे ओ वांछित-अवांछित सभटा विवरण कें अपन कथाक सूत्र मे एतेक नीक जकाँ समावेशित करए छथि, मिझराए दए छथि जे सामान्य पाठक कें कतहु सँ किछु खटकबाक गुंजाइश नहि रहि जाइ छै। ई बहुत स्पष्ट छै जे कोनो संगत –असंगत घटना वा विवरण अहि उपन्यासक तारतम्यता कें भंग नहि करए छै। एतय उपन्यासकार पूर्वज उपन्यासकार प्रेमचंदक उक्तिक पालन करैत देखाइ छथि – ‘हम उपन्यास कें मानव जीवनक चित्र मात्र बूझए छिऐ। मानव पर प्रकाश ढारब आ ओकर रहस्य खोलनाइए उपन्यासक मूल तत्त्व छिऐ।‘ गजेन्द्र ठाकुर ‘सहस्त्रबाढनि’ कें जीवनक सूक्ष्मतम विवरणसभ सँ समृद्ध करबाक संग-संग अपन प्रस्तुति मे बेस विश्वसनीय बनल रहल छथि। उपन्यासक भाषा, शिल्प, शैली, कथावस्तु मे कतहु कोनो कृत्रिमता वा बनावटीपन नहि छै।

[6]

साहित्यिक आलोचना मे जीवनक आन-आन क्षेत्रहि जकाँ विशेषज्ञताक दौर चलल छै। अहि मे उपन्यासक अन्तर्वस्तुक आधार पर ओकरा विभिन्न कोटि मे राखबाक चलन बढल छै। ओहि विभिन्न कोटिसभक ध्यान राखैत 'सहस्त्रबाढनि' पर विचार करी त एकरा आत्मकथात्मक जोड़(+) संस्मरणात्मक उपन्यासक मिश्रित श्रेणी मे राखि सकए छी। 'सहस्त्रबाढनि' अहि मिश्रित शैलीक सहयोग लैत कखनिओ डायरी, त कखनिओ यात्रा-वृतांत आ कखनिओ इतिहास आदिक विविध विधा मे आवागमन करैत अपन पूर्णता प्राप्त करैत अछि।

सामान्यतया ई मानल जाइ छै जे उपन्यास अथवा गल्प वैयक्तिक अथवा आत्मपरक (सब्जेक्टिव) विधा छिऐ आ अहिना संस्मरण कें वस्तुपरक (आब्जेक्टिव) विधाक रूप मे देखल-मानल जाइ छै। 'सहस्त्रबाढनि' मे संस्मरण विधाक समावेश कए गजेन्द्र ठाकुर एकटा एहन विरल आ सफल प्रयोग कएने छथि जे एकरा आत्मपरक आ वस्तुपरकक सम्मिलित शक्ति सँ रोचक बनबए छै आ व्यापकताक पसार करैत कथा कें व्यष्टि सँ समष्टि दिसक उच्चतर सोपान पर लए जाए कए ठाढ कए दए छै। मैथिली उपन्यास मे ई प्रायः अपन तरहक पहिल प्रयोग छै। ई प्रयोग मैथिली उपन्यास साहित्यक अंतर्मुखी चरित्र, विशुद्ध कलावादी शब्दजाल आ पारंपरिक अभिव्यंजनावादी अभिव्यक्तिकरणक समानान्तर जीवनक दृढ भित्ति पर ठाढ भेल प्रगतिशीलताक स्थापन-आवाहन करैत बहिर्मुखी चरित्र प्रदान

करए छै।

[7]

‘सहस्त्रबाढनि’ मे अतीत आ वर्तमान, परम्परा आ आधुनिकताक सहज समन्वय छै। उपन्यासक अन्तर्वस्तु अहि सहज समन्वयक माँग करैत रहए आ उपन्यासकार अहि मांगक संज्ञान लैत ओकर पालन कएने छथि। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी सन विचारक “एक दिस आगू बढैत ज्ञान आ दोसर दिस परम्परित आदर्श सँ जुड़ल आचार-परम्परा आ दुनूक व्यवधान कें दूर करैत रहबाक निरन्तर प्रयत्न“ कें यथार्थवादक वास्तविक मर्म मानबाक आग्रही छथि। से प्रयत्न अहि उपन्यास मे सफलतापूर्वक भेल छै।

अतीत, परम्पराक प्रति दू टा विशिष्ट आ आधुनिक अवधारणा छै।पहिल धारणा, जे उत्तरोत्तर पूर्णत्वक विकास पर आधारित छै, के अनुसार अतीत वर्तमानक मात्र पृष्ठभूमि छिऐ, जे वर्तमानक आगमन लेल आवश्यक स्थितिक रचना करए छै। दोसर धारणा, जे कालक उत्तरोत्तर उद्घाटनक सिद्धान्त सँ जुड़ल छै, के अनुसार अतीत मात्र वर्तमानक विशिष्ट प्रवृतिक अपन गर्भ मे सम्पोषण करए छै।

‘सहस्त्रबाढनि’क चारि पीढीक कथा अतीत, परम्पराक पहिल धारणाक पुष्टि करए छै, जे उत्तरोत्तर पूर्णत्वक विश्वास पर आधारित छै।

[8]

मैथिली मे दुराग्रहपूर्वक ई धारणा बनाए देल गेल छै जे मैथिली साहित्य मे मात्र ओतबे क्षेत्र आ ओहि क्षेत्र मे रहनिहारक (तहू मे एकटा विशेष वर्ग) चर्चा अथवा प्रसंग हएबाक चाही जे मैथिली भाषा-भाषी छै। एकटा खास आँखि सँ समाज कें देखबाक अहि आग्रह मे अनेक रास झोल सभ छै। एक तँ मैथिलीएक कोनो सर्वसम्मत, सर्वस्वीकृत स्वरूप नहि छै, एकर नामकरण तक पर सर्वानुमति नहि छै; दोसर एकर बहुविज्ञापित, बहुविस्तारित भौगोलिक क्षेत्र सेहो विवादित छै। जे से !

भाषा कोनो हुअए, ओकर साहित्य कें कोनो जाति वा क्षेत्रक संकीर्ण-सीमा मे सिकड़ी सँ बान्हि बंदी नहि बनाएल जाए सकए छै। 'सहस्त्रबाढनि' अहि संकुचित क्षुद्रता कें साफ-साफ चुनौती भनहि नहि दैत हुअए, एकरा नकारैत अवश्य अछि। एकर पात्र सभ मधुबनी जिलाक (कथाक सूत्र अही दिस संकेत करैत अछि) होइतहुँ पटना, दिल्ली, कलकत्ताक भ्रमण करैत अछि। उपन्यास मैथिली भाषी क्षेत्र-विशेषक सुख-दुख कहैत अछि तँ अहि भौगोलिक सीमा कें पार करैत भ्रष्टाचार आ भारतीय समाजक आन-आन समस्या दिस सेहो सजग अछि। एकर भाषा भनहि मैथिली हुअए, ई उपन्यास भारतीय समाजक गाथा कहैत अछि आ अहि बातक पैरोकारी करैत अछि जे साहित्यक सन्दर्भ मे मूल्य, अवधारणा आ मानदण्ड आदि पर चर्चाक हमर सभक

बौद्धिक आ अकादमीक दायरा वैश्विक हएबाक चाही।

अहि दृष्टि सँ गजेन्द्र ठाकुर ओहि प्रगतिशील पीढीक प्रवक्ता बनए छथि जे खिस्सागोई, चरित्र, भाषा आ वस्तुक पूर्वनिर्धारित, पूर्वप्रचलित एकांगी मैथिल मानदण्डसभ कें अस्वीकार करए छथि आ अहि सभक लेल एकटा नव प्रभावान्वितिक लेखकीय डगर बनबए छथि। अपन अहि उपन्यासक माध्यम सँ ओ रचना कें समग्रता मे पाठ (कम्प्लीट टेक्स्ट) कएल जएबाक आग्रही सेहो होइ छथि आ ओहि अकादमीक पद्धति कें नकारए छथि जे कोनो कथा वा उपन्यासक चरित्र, वस्तु अथवा भाषा कें कथा वा उपन्यासक संरचनाक अलग-अलग घटक मानि ओकरा टुकड़ी-टुकड़ी मे पढल जएबाक, आलोचित कएल जएबाक हिस्सक बनएने अछि।

‘सहस्त्रबाढनि’क मूल्यांकन, विश्लेषण अथवा समीक्षा लेल आलोचनाक “बीध पूरब पद्धति“ यथेष्ट नहि छै।

[9]

मैथिल समाज अतीतक खोह मे सन्हिआएल पुरोहितीय स्थापना सभ पर कट्टर स्थैर्यक संग ठमकल समाज रहल छै आ यत्नपूर्वक जिज्ञासा, नवाचार आ कोनो तरहक आधुनिकता सं परहेज करैत रहल छै। स्वाभाविक छै जे एहन जड़-समाज मे प्रश्नाकुलताक लेल कोनो स्थान नहि होइ छै। कतहुँ जँ कोनो प्रश्न-सन वस्तु

देखाइअहु देत तँ ईहो देखाएत जे ओ प्रश्न पहिने सँ उपस्थित / स्थापित कोनो उत्तरक सुविधा लेल अथवा नवीकरण लेल भेल अछि। स्वाभाविक छै जे मैथिलीक साहित्यक बहुलांश एहने सुविधा आ नवीकरणक उत्पत्ति छै।

गजेन्द्र ठाकुर अपन लेखन सँ मैथिलीक यथास्थितिक जबकल पानि कें हिलोरए छथि। ओ आ हुनक लेखन दुनू प्रश्नातुरता सँ लबलब भरल देखाइ छथि। हुनक अनुसंधानकर्ता व्यक्तित्व लोकगीतक विद्यापति आ दरबारी विद्यापति कें दू अलग-अलग व्यक्तिक रूप मे देखैत अछि तँ हुनक उपन्यासकार सेहो स्थापना आ व्यवस्थाक विवेक-बुद्धिक पोस्टमार्टम करबाक लेल उद्धत अछि। हुनक कथानायक आरुणि पटनाक चिड़ियांघर घुमबाक बेर पूछि सकैत अछि जे "हमसभ त चिड़ियाघर घुमए आएल रही। एतय 'बोटेनिकल गार्डेन' आ ' बायोलोजिकल गार्डेन' किऐ लिखल छै? "(2-31)

उपन्यास मे एहन अनेको प्रश्न सभ पर अंगुरी राखल गेल छै जे लोक-समाज कें अदौं-अदौं सँ व्याकुल करैत रहल छै, व्यथित करैत रहल छै आ जेकरा अध्यात्म आ धर्मक नाम पर कर्मकाण्डीय बेहोशीक खुराक दए-दए बेर-बेर सूति रहबाक लेल विवश कएल गेल छै। सभटा प्रश्नक उत्तर अहि उपन्यासहु मे नहि छै, किन्तु नवीकृत रूप मे अथवा वर्तमानक प्रसंग मे ओहि प्रश्न सभक जागल रहबहु कम महत्वपूर्ण आ हितकारी नहि छै।

कथानायक जीवन आ मृत्युक अंतरंग रहस्य सेहो जानए चाहए

छै आ तहि लेल ओ स्वयं सँ प्रश्न करए छै – ‘पिताक पिता आ तकर जन्मदाता के? भगवान ज्यों सभक पूर्वज तखन हुनकर पूर्वज के? ‘(2-31) अथवा ‘ कखनोकें हमरा ईहो होइत अछि जे एहिमे सँ किछु पूर्व जन्मक कोनो घटनाक्रम त नहि अछि? ‘(2-18)

सार्वजनिक स्थल अथवा वस्तुसभ पर भाषायी भ्रष्टताक जे प्रदर्शसभ उपस्थित रहए छै से सामान्यतया अर्थक अनर्थ त करितहि छै, नवसिखुआ सभ कें भ्रमित करैत गलत प्रयोगक कुशिक्षा सेहो प्रदान करए छै। स्कूलक रिक्शा पर लिखल ‘सावधान बच्चे‘ अपन अर्थक जे भ्रम उत्पन्न करए छै, तहू पर कथानायक आरुणिक प्रश्नाकुल दृष्टि छै आ उचित समाधान नहि भेला पर अपन असंतोष व्यक्त करए छै। (2-20)

[10]

शासन-सत्ता पर वृहद समाजक नहि, ओकर एकटा समर्थ-समृद्ध अल्पतम हिस्साक नियंत्रण होइ छै। अपन सभक लोकतंत्रीय व्यवस्थाक ई दुर्भाग्य छै जे एतय सक्षम वर्ग अथवा जातिक सहमति कें बहुमत मानि लेल जाइ छै। इएह तथाकथित बहुमत हमरसभक मूल्य, आचार-विचार आ विधानक निर्धारण करए छै आ वएह एकर विघटनहुक निर्णय करए छै। अहि सभक परिणामस्वरूप भ्रष्टाचार एकदम सँ सर्वव्यापी जकाँ भए गेल छै

आ दुर्भाग्य ई जे अल्पसंख्यक शासक वर्गक प्रभाव मे बहुसंख्यक जनमानस कें भ्रष्टाचार सँ संबंधित कोनो घटना मूल्य-विघटनक घटना नहि लागए छै।

‘सहस्त्रबाढनि’ अहि दुर्भाग्यक कथा कहए छै जे विभिन्न क्षेत्र (एतय सिंचाई आ विजिलेंस विभाग) मे पसरल भ्रष्टाचारक आधिक्य मे कोनो सज्जन आ ईमानदार व्यक्ति केना पिसाइ छै आ अनेक बेर तँ ईमानदारहि व्यक्ति कें बेईमानीक आरोप लगाए कए षड्यंत्रपूर्वक फँसाए देल जाइ छै। गंगा ब्रिजक चर्चा सँ अनुमान कएल जाए सकए छै जे उपन्यासकारक दृष्टि मे 1982 ईस्वीक लग पासक समय रहल हेतए। अहि ईस्वीक आगू-पाछूक दशक बिहारक सर्वाधिक भ्रष्टाचारक दशक रहए। कोसी, गंगा, गंडक सभ प्रोजेक्ट मे लूटक तांडव मचल रहए आ ठेकेदार, इंजीनियर सँ लए कए सत्ताधारी दलक नेतालोकनि निरंकुश भए अहि भ्रष्टाचारक गंगा मे खूब नांगट भए-भए नहएलनि।

उपन्यासक निर्णायक तत्व भ्रष्टाचार आ ओकर शिकार होइत ईमानदारी छिअए, किन्तु अहि तत्वक चित्रण मात्र चटनी जकाँ भेल छै आ कनी छुछौन जकाँ लागए छै। पाठकक स्वाभाविक अपेक्षा होइ छै जे अहि सँ संबंधित प्रसंग कनी विस्तार मे आबितए। पाठकीयक संग-संग सामाजिक दृष्टिकोण सँ सेहो अहि विस्तारक बेगरता रहए। कोनो समाजक संदर्भ मे प्रगतिशील भविष्यक परिदृश्य वर्तमान कठिनाइसभक गहन मूल्यांकन सँ आकार लए छै। एकटा नीक भविष्यक सपनाक

बीच हमरा सभ कें वर्तमान वास्तविकता आ परिस्थिति सभक गंभीर संज्ञान लेबाक चाही। ध्यातव्य जे गड़बड़ी सभ कें चिन्हब, चिन्हित करब आ ओकरा सभ कें सुधारबाक लेल प्रयासरत रहनाइए कोनो सभ्य समाजक लेल पहिल आवश्यक डेग होइ छै। 'सहस्त्रबाढनि' मे भ्रष्टाचारक विभीषिका कें नीक जकां अभरएबाक गुंजाइश रहए। ई अहि उपन्यासक कमजोरी छै जे भ्रष्टाचारक वीभत्स व्यापकता आ ओकर सार्वजनिक जीवन पर जानमारू प्रभावक ठाम पर ई जेना एकटा व्यक्तिगत आ पारिवारिक क्षतिक मामला मात्र बनि कए रहि गेल छै।

[11]

अहि उपन्यास मे शासनतंत्रक एकटा विद्रुप बहुत महीन स्वर मे आएल छै, एहन जकाँ आएल छै जहि पर प्रायः सामान्य पाठकक ध्यान जाएब कठिन छै आ जे कंपित करए छै। कलित दरभंगा राजक वसूली पदाधिकारीक रूप मे विभागीय भ्रष्टाचार कें दुरुस्त करए छथि आ सफल होइ छथि। अर्थात राजतंत्र काल मे एकटा पदाधिकारी ईमानदार रहि, भ्रष्टाचारक विरुद्ध सक्रिय रहि सुरक्षित रहि सकैत अछि। एकर उलट नन्द बिहार सरकारक इंजीनियरक रूप मे अपन ईमानदारीक मोल व्यक्तिगत क्षतिक रूप मे चुकबए छथि। अर्थात लोकतंत्र ईमानदार लोकनि कें सुरक्षा दए मे विफल अछि। ई यथार्थ छै आ भयावह छै !

[12]

‘सहस्त्रबाढनि’क माध्यम सँ गजेन्द्र ठाकुर एहन उपन्यासकारक रूप मे (ई देखैत जे प्रस्तुत रचना हुनक प्रथम औपन्यासिक कृति छनि) सोझाँ आबए छथि जे अपन अध्ययन आ अनुभवक सामर्थ्य सँ युक्त आत्मनिर्भर आ आधुनिक सोच सँ लैस छथि आ जिनका अपन अभिव्यक्तिक लेल कोनो पारम्परिक बैशाखीक दरकार नहि छनि।

जेना अहि उपन्यासक नायक आरुणि दुर्घटनाक बाद छड़ी (बैशाखी अथवा सहारा) सँ चलब छोड़ि रसे-रसे अपन शक्ति मे क्रमशः वृद्धि करैत स्वाभाविक चालि पकड़ि लैत अछि, तहिना पुरनका लेखकीय ढर्रा सँ सर्वथा मुक्त उपन्यासकार अपन निज पैर पर ठाढ भए अपन आँखि सँ दुनियाँ देखबाक हौंसलाक संग अपन विवेक आ बुद्धि सँ ओकरा बुझबाक आ व्यक्त करबाक जोखिम लैत अपन शक्ति आ सामर्थ्य सँ भिज्ञ देखाइ पड़ए छथि। अपन यथार्थक प्रत्यक्ष निरीक्षण आ ओकर आत्मविश्वस्त अभिव्यक्तिबला स्वाबलंबन मैथिलीक विरल लेखक लग छनि आ गजेन्द्र ठाकुर तहि विरल पाँति मे अपन उपस्थिति दर्ज करए छथि।

[13]

कथा आ उपन्यास अनेक दृष्टि सँ अभिव्यक्तिक भिन्न माध्यम

होइतहु एकटा आंतरिक संबंध सँ जुड़ल छै। एकटाक आकार छोट होइ छै, दोसरक नम्हर। किन्तु धैर्य आ शिल्पकारी दुनू मे वांछित होइ छै। रचनाकारक सोझाँ अनुभव, अध्ययन आ आलोकनक प्राप्तिक रूप मे एकटा वृहदाकार पहाड़ सम्मुख रहए छै। कथा लिखब अहि पहाड़ मे कोनो छोट-सन ताखा वा झरोखा बनाएब अथवा कोनो लघु आकृति उकेरब छिऐ तँ उपन्यास लेखन अहि पहाड़ मे गुफा अथवा गुंबद तराशबाक काज छिऐ। दुनू मे अपन अर्जित औजारक संतुलित प्रयोग वांछित छै। ‘सहस्त्रबाढनि’ मे गजेन्द्र ठाकुरक शिल्पकारी भनहि उत्कृष्टक श्रेणी मे नहि आबओ, हुनक शिल्पदक्षता प्रशंसनीय अवश्य छनि। ओ पहाड़ मे सँ गुफा आ गुंबदहि टा नहि तराशलनि अछि, ओहि मे प्रशंसनीय नक्काशीक काज सेहो कएने छथि।

[14]

कथा दिआ कतिपय युरोपियन पंडित लोकनिकहु धारणा छनि जे समस्त विश्व मे कथा भारतवर्षहि सँ गेल छै। एकर बरक्स उपन्यासक स्थिति विपरीत छै। एकर प्रकृति कें अभारतीय मानल गेल छै। दोसर शब्द मे उपन्यास विदेशी विधा छिऐ। अहि विधाक भारतीयकरण करबा मे अनेक उपन्यासकारक योगदान रहल छै आ आब एकर रूपाकार शुद्ध स्थानीय भुंइयाँ पकड़ि लेने छै। गजेन्द्र ठाकुर अहि उपन्यासक माध्यम सँ हमरा बुझने एकटा

अलगहि बाट बनाबए छथि। हुनक उपन्यासक अन्तर्वस्तु शुद्ध भारतीय छनि किन्तु एकर प्रस्तुतिकरणक शैली पर विदेशी / अभारतीय प्रभाव देखाइ दए छै। संभव छै जे विद्वान आलोचक लोकनि हमर अहि बूझब सँ सहमत नहि होथि, किन्तु मैथिली रूप मे 'सहस्त्रबाढनि' आ अंग्रेजी रूप मे 'द कामेट' दुनू कें पढबाक अवसर हमरा भेटल अछि आ दुनूक पाठ कएलाक उपरान्त हमरा इएह निष्कर्ष प्राप्त होइत अछि। एक डेग और आगू बढि कए कही त एकर मैथिली पाठक तुलना मे एकर अंग्रेजी पाठ हमरा बेसी रम्य आ प्रभावशाली लागल।

[15]

विख्यात कथाकार मोपासांक अपेक्षा रहनि – 'पाठक चाहए छथि, कलाकार सँ, जे ओ हँसए आ कानए। ओ गाबए, उछलए आ कूदए। ओ हमरा हँसाबए आ कनाबए। ओ हमरा मद-विह्वल कए दिअए। ओ अपन अंतरक तह-तह सँ बाजए। फेर, चाहे एना किऐ ने बुझाबए लागए जे कहीं प्रमादग्रस्त त नहि भए गेल छी।' गजेन्द्र ठाकुरक कलाकार मोपासांक उपरोक्त अपेक्षा पर उत्तीर्ण हएबाक लेल यथेष्ट अंक प्राप्त करए छथि। प्रमादग्रस्त सन अवस्था आबए, नहि आबए, अहि औपन्यासिक कृतिक विभिन्न मोड़ पर हँसए, कानए, गाबए, उछलए, कूदए आदिक क्रिया संग पाठक सेहो ओकर सहभागी बनैत ओहने मनोभावक संग-संग चलए छथि। कोनो कृतिक अहि सँ बढि कए की सफलता भए

सकए छै?

[16]

कखनिओ काल हमरा मन मे ई प्रश्न उठैत रहल ए जे हम सभ (रचनाकार समुदाय) अपन अहमन्यता, अपन साहित्यिक वर्गवाद वा वाद-पक्षता वा अपन कला-दक्षता प्रदर्शन आदि-आदिक चलते अपन पाठकहुक चुनाव त नहि कए लेने छी अथवा रचना लेल पाठकक बेगरता कें नकारि त नहि देने छी?

मैथिली मे पाठकक अरुचि कोनो नुकाएल गप नहि छै। किन्तु पाठकलोकनि हमरा सभ कें नकारलनि वा नहि, हम्हीं सभ अपन लेखन आ लेखकीय गतिविधि सँ पाठक-विमुख हएबाक सरंजाम कए बचल-खुचल, गिनल-गुथल पाठकहु कें तँ नहि हड़काए देने छिऐ?

गजेन्द्र ठाकुर अहि मामला मे सचेत बुझाइ छथि। ओ रचना लेल पाठकक अनिवार्यताक महत्व बूझैत अपन रचना मे पठनीयताक उपस्थिति सुनिश्चित करबाक लेल प्रत्येक संभव जतन करए छथि।

अतिशय तार्किकता आ रुक्षता जीवनहि जकाँ साहित्य कें आक्रांत करए छै। अनावश्यक प्रदर्शन जीवन आ साहित्य कें कृत्रिमता दिस लए जाइ छै। गजेन्द्र ठाकुर ‘सहस्त्रबाढनि’ कें एहन अतिरेकसभ सँ बचैने रहल छथि।

[17]

कतिपय आलोचक कें अहि उपन्यास मे 'नास्टेल्जिया'क दर्शन भए सकए छनि। ठाम-ठाम पर हमरहु भेल अछि। किन्तु ई स्वीकार कएल जएबाक चाही जे अपन जड़िक प्रति नास्टेल्जिक भेने बिना अथवा अपन उपजीव्यक प्रति सक्कत इन्वाल्वमेंटक अभाव मे एहन अन्तर्वस्तुबला उपन्यास रचब संभव नहि छै। नास्टेल्जियाक अति कोनो रचनाक ऋृणात्मक पक्ष अवश्य भए जाइ छै। किन्तु जेना कि पहिनहि कहल जे गजेन्द्र ठाकुर सजगतापूर्वक कोनो प्रकारक अतिरेक सँ बचए छथि। हुनक ईहो हुनर रेखांकित करबा जोग अछि जे ओ अपन आंतरिक लेखकीय अनुशासन आ तटस्थ स्व-संपादनक बदौलत अपन अहि औपन्यासिक कृतिक प्रत्येक तंतु कें एकर स्वाभाविक समाहार बनबैत एकरा अनावश्यक स्फीति सँ बचाए लए छथि।

[18]

सैद्धांतिक दृष्टि सँ ब्रेख्तियन अवधारणा मे आधुनिक उपन्यासक तीन महत्वपूर्ण लक्षण अछि – पोलिफोनिक, डायलोजिज्म आ कारनिवलाइजेशन। अनुवाद रूप मे एकरा बहुस्वरता, संवादोन्मुखता आ उत्सवीकरण कहि सकए छी। अपन अन्तर्वस्तु आ ओकर प्रस्तुतिकरण मे 'सहस्त्रबाढनि' अहि तीनू अवधारणाक कसबट्टी पर कम-बेस शुद्ध उतरैत अछि।

[19]

धूमकेतु अथवा पुच्छल तारा लेल ‘सहस्त्रबाढनि’ संज्ञाक प्रयोग शुद्ध रूप सँ मैथिलाग्रह बुझाइ छै। आन कोनो समूह द्वारा अहि शब्दक प्रयोग हमरा देखल-सुनल नहि अछि। (ई हमर अज्ञान अथवा सीमित ज्ञान सेहो भए सकैत अछि)। जँ हमरा अहि उपन्यासक अंग्रेजी टेक्स्ट ‘द कामेट’ नहि पढल रहितए तँ हमरा ई बुझलहु नहि होइतए जे ई संज्ञा धूमकेतु अथवा पुच्छल तारा लेल प्रयोग कएल गेल अछि।

‘सहस्त्रबाढनि’क खाँटी आ मुड़कटुआ शाब्दिक अर्थ भेल – एक हजार बाढनि अथवा झाड़ू! अहि शब्द अथवा संज्ञाक आविर्भावकर्ता वा निर्माता वा उपयोगकर्ता कें धूमकेतु एक हजार बाढनि जकाँ किऐ लागलनि, से अनुसंधान आ शोधक विषय थिक। किन्तु ई बात बहुत स्पष्ट छै जे ई नामकरण कोनो श्रद्धाक फलस्वरूप नहि भेल हेतए, ई उपहासक परिणति बुझाइ छै। से जँ नहि होइतए त ‘अगुरबान’क रचयिता कोइलख निवासी भोलानाथ झा अपन उपनाम “धूमकेतु’क ठाम पर ‘सहस्त्रबाढनि’ राखने रहितथि।

उपन्यासक कथाक्रम मे अहि संज्ञाक प्रयोग दू महत्वपूर्ण ठाम भेल छै। पहिल, कथानायकक पिता नन्दक मृत देह कें गाम लए जाइत बेर – ‘रस्ता मे एकटा प्रकाश खण्ड टूटि कए खसल

सहस्त्रबाढनि नहि ओकर न्यून रूप, छाड़नि।‘ दोसर, उपन्यासक अंत मे-‘कैकटा आपरेशन भेलन्हि आ अनेस्थिशिया सँ बाहर अबैत काल आरुणि कें लागन्हि जे ओ झोंटाबला सहस्त्रबाढनि झमारि कए एहि विश्व मे फेंकि दैत छन्हि हुनका। मृत्यु पर विजय कएलन्हि आरुणि।‘

कथानायकक पिताक मृत्युक उपरांत एक हजार बाढनिक प्रतीक ग्रहक (सहस्त्रबाढनि) न्यून रूप मे, जेकरा उपन्यासकार ‘छाड़नि’ कहए छथि, प्रकट हएबाक प्रसंग आ अनेस्थिशियाक बेहोशी सँ बाहर आबैत काल इएह एक हजार बाढनिक प्रतीक ग्रह, जेकरा झोंटा सेहो छै, द्वारा कथानायक कें झमारि कए पुनः विश्व मे फेंकि देबाक प्रसंग / प्रयोग चमत्कृत आ अचंभित करए छै।

एकटा प्रसंग ‘मृत्युक विजय’ छिऐ तँ दोसर प्रसंग कें ‘मृत्यु पर विजय’ कहल गेल छै।

एकर निहितार्थ की?

‘सहस्त्रबाढनि’ शब्दक पहिल प्रयोग जेतय कत्तहु जहि कोनो भावना सँ कएल गेल हुअए, अहि बात मे कोनो संशय नहि जे अहि उपन्यास मे ओकर प्रयोग श्रद्धापूर्वक कएल गेल छै।

‘सहस्त्रबाढनि’ कें प्रतीक चुनए मे उपन्यासकार सँ कोनो चूक भेल छनि, अथवा एकर प्रतीकार्थ बूझए मे हम चूकि रहल छी !!!

कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)

राजदेव मंडल

प्रिय बन्धु,

अहाँक दीर्घकाय ग्रंथ “कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक” पढ़बाक सुयोग प्राप्त भेल। कतेको साहित्यिक कृति (उपन्यास, कविता, कथा-गल्प संग्रह, नाटक, महाकाव्य, बाल नाटक, बाल कथा, बाल कविता, प्रबन्ध-निबन्ध समालोचना आदि)केँ एकहि पुस्तकमे संग्रहित कए अहाँ पाठकक लेल एकटा तेहेन पुष्पमाला बना देलिएक जाहिमे लगैत अछि जे विभिन्न रंगक पुष्प एकहि जगह गाँथल हो। आ पाठक वृन्द साहित्यक कोनहु स्वाद एहि दीर्घ पोथीसँ प्राप्त कए सकैत छथि। निश्चय अपनेक ई प्रयास साहित्यक लेल नवीन अछि संगहि कर्मठताक साक्ष्य....।

हम कोनहु पैघ समीक्षक नहि छी तेँ समीक्षा करबाक दायित्वपूर्ण कार्यक लेल अक्षम छी। तथापि अहाँक पुस्तक पढ़लाक उपरान्त मनमे जे विचारक उद्भव होएत ताहिसँ अवगत करा देब एकटा दायित्व सन बुझैत छी। तेँ किछु अपन विचार पठा रहल छी।

बन्धु, प्रथमत: ई कहबामे हमरा कनियो संकोच नहि होइत अछि

जे मैथिली साहित्यक लेल जे अपने साहित्य आन्दोलनक कार्य कऽ रहल छी से साहित्यक लेल तँ ऐतिहासिक अछिए संगहि मैथिली प्रेमी, मिथिलावासी सेहो अहाँक एहि सुकार्यकेँ कहियो नहि भूलत-बिसरत।

बालकथा

अहाँ मिथिलांचलमे पसरल छोट-पैघ कथा सभकेँ नवीन रूपेँ संग्रहित कएने छी। अहाँक एहि प्रयाससँ विलुप्त होइत कथा सभ पुन: जीवन्त भऽ उठल अछि। बगियाक गाछ बचपनावस्थामे दादीक मुँहसँ सुनने रही। आइ पुन: पढ़बाक अवसर भेटल। राजा सलहेस, महुआ घटवारिन, नैका-बनिजारा, जट-जटिन इत्यादि कथा सभ पढ़लासँ लगैत अछि जे ऐतिहासिक बहुत गूढ़, तथ्यपूर्ण बात सभ सोझा आएल अछि। क्षिप्रताक साथ अग्रसर होइतो सब बातक संकेत धरि आबि गेल अछि आ ओहि प्राचीन समएक दशा आ दिशाक ज्ञान सहजहिं परिलक्षित भऽ रहल अछि। सामाजिक जिनगीक क्रिया-कलापक वर्णन करैत अहाँ जे चित्र उपस्थित कएने छी ताहिमे ओहि काल-विशेषक प्रेम-घृणा, संयोग-वियोग, उन्नति-अवनति, बैर-प्रीत, शांति-अशांति, वीरता-कायरता, मुर्खता-विद्वता सबटा भिन्न-भिन्न रूपेँ प्रगट भेल अछि। पढ़ैत काल लगैत अछि जे हम दोसर संसारमे प्रवेश कएने छी। ओहि समएकेँ जँ एखुनका समएसँ तुलना करैत छी तँ बुझि पड़ैत अछि जे विकास कते तीब्र गतिसँ भऽ रहल अछि। आ एहि

पुरान भेल जिनगीक कथापर कलम चलौनाइ कोनो साधारण गप्प नहि अछि। विषए-वस्तु सभपर जे अहाँ संतुलन बनौने छी से समए आ परिस्थितिक अनुकूल अछि।

संकर्षण-नाटक- अपाला आत्रेयी-दानवीर दधीची

अपाला आत्रेयी आर दानवीर दधीची-एहि दुनू बाल नाटकमे अहाँ कथा किछु नव रूपे प्रकट कएने छी। से पात्रक अनुरूपे अछि। कथोप-कथनमे प्रवाह अछि आर छोट-छोट वाक्यक प्रयोग अछि, जे नाटकीयतामे प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। जेना दानवीर दधीचीक एकटा कथोपकथन: “दधीची- इन्द्र। कुरूक्षेत्र लग एकटा जलाशय अछि जकर नाम अछि, शर्यणा। अहाँ ओतय जाउ। ओतय घोड़ाक मुड़ी राखल अछि.....। ओहिसँ नाना प्रकारक शस्त्र बनाउ।” बाल नाटक- बालकेँ ज्ञान बृद्धिक लेल सेहो उपयोगी अछि। संकर्षण नाटक एकटा नवीन चरित्रसँ परिचित करबैत अछि। जे गामक लोककेँ ठकनाइकेँ नीक बुझैत अछि। ईएह अवगुणकेँ प्रतिभा बुझैत रहैत अछि। अवगुणक प्रतिफलपर कनेको विचार नहि करैत अछि। वएह बेकती जखन दिल्ली सन महानगर जाइत अछि तँ रास्तामे स्वगं ठका जाइत अछि। लालकिलामे जूता किनबा काल ओकरा पता चलि जाइत अछि जे ओ ठक विद्यामे कतेक पाछू अछि, उदाहरण रूपेँ एकटा कथोपकथन: “गोनर- अहाँकेँ ठकि लेलक। अहाँक नाम तँ

बुझनुक लोकमे अबैत अछि। संकर्षण- मित्र की कहू?......। एहि लालकिलाक चोर बजारक लोक सभ तँ कतेको महोमहापाध्यायक बुद्धिकेँ गरदामे मिला देतन्हि।”

छोट छीन कथोपकथन द्वारा व्यंग्य, हँसी आ गम्भीर बातकेँ सहज ढंगसँ कहि देब अहाँक लेखनीक विशेषता थीक। नाटकक आकार लघु अछि जे नवीनताक सूचक अछि। तथा मिथिलामे पसरल बहुत रास बातकेँ समेटबाक प्रयास निश्चय सराहनीय अछि। मंचित करबाक लेल दिशा निर्देश नीक ढंगे कएल गेल अछि।नाटक पठनीयता संगे नाटकीयतासँ परिपूर्ण अछि। आर संकर्षण आकर्षणसँ भरल अछि।

गल्प गुच्छ- (कथा संग्रह)- कथा सभकेँ पढ़लहुँ जे गल्प गुच्छमे संग्रहित अछि। पढ़ैत काल स्मरण भेल- एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिकाक किछु शब्द- कथा स्वतंत्र विधा अछि। एहिमे संक्षिप्ताक संगहि अत्यधिक संगठित तथा पूर्ण कथा रूप हेबाक चाही।ओना जिनगी कथा अछि आ कथा जिनगी अछि। आ जिनगी जे निरन्तर नवीनताकेँ प्राप्त कऽ रहल अछि।गल्प गुच्छ पढ़ैत काल जे कथा वा पाँति बेसी प्रभावित कएलक ओहि सबहक विषयमे कहब आवश्यक बुझाइत अछि। नीक-अधलाह कहबाक अधिकार तँ पाठककेँ होइते अछि।

नव सामन्त- आब सामन्तवादी युग नहि रहल। किन्तु सामन्ती

प्रवृति एखनो जीअते अछि। हँ, ओकरा रूपमे परिर्वन भऽ गेल अछि। आ ओ भिन्न-भिन्न रूपे समाजमे आइयो दृष्टिगोचर भऽ गेल अछि। एहि कथामे एकटा नव सामन्तक नवीन रूप लक्षित भऽ रहल अछि।

सर्वशिक्षा अभियान- कथाक माध्यमसँ दलित आ गरीबक धीया-पुताकेँ पढ़ेबाक लेल उदासीनताक भावना व्यक्त भेल अछि, सरकार द्वारा मुफ्तमे देल गेल पोथी अदहरमे बेचि लैत अछि। कथाक पाँति- “आ दुसाधटोली, चमरटोली आ धोवियाटोलीसँ सभटा किताब सहटि कऽ निकलि गेल।”
थेथर मनुक्ख- एहि कथासँ स्पष्ट होइत अछि जे मनुक्खक पूर्ण अद्य:पतन भऽ गेल अछि। एतेक जे मनुक्ख चिड़ै-चुनमुनी, परबा पौरकी धरिसँ नीचा उतरि थेथर भऽ गेल अछि।

स्त्री-बेटी- एहिमे समाजमे स्त्रीगणक महत्वहीनता आ संगहि करवट लैत सामाजिक स्थिति-परिस्थितिक चित्रण भेल अछि।
बिआह आ गोरलगाइ- क्षण-क्षणमे मनुक्खक बदलैत रंग गिरगिट जकाँ...... आ दहेजक लोभी बेकती संतोषी सन बेवहार देखा कऽ स्वयं लज्जित होइत छथि। आइयो कोन कोन रूपेँ दहेज लोभी दबकल अछि समाजमे आ कोन-कोन प्रपंची चालि चलि रहल अछि। से एहि कथासँ बुझाइत अछि। नीक चित्रण भेल

अछि।

प्रतिभा- चालाकी आ प्रतिभा दुनू अलग-अलग बात छैक। प्राप्तिक लेल दुनूमे सँ कोन महत्वपूर्ण सएह देखेबाक यत्न भेल अछि।

मिथिलाक उद्योग- किछु कथाक कोनो गप्प पाठककेँ दीर्घकाल तक झंकृत कएने रहैत अछि। एहि कथामे गदहापर लादल जे संदेश भेटि रहल अछि से बहुत दिन धरि पाठककेँ स्मरणमे रहत।

रकटल छलहुँ कोहबर लय- स्त्री-पुरूषक बीच बनैत-बिगड़ैत सम्बन्ध आ छल-प्रपंच अपने-आपकेँ ठकइ आ ठकाइबला गप्पक मार्मिक विश्लेषण एहि कथा द्वारा भेल।

हम नहि जाएब विदेश- कोन बेकतीकेँ हृदयमे कतेक कष्ट-पीड़ा आ हँसी-खुशी भरल अछि। ओकरा पूर्णतया उत्खनन करनाइ सम्भवो नहि अछि तथापि कथाकार तँ प्रयास करबे करता। एहि कथामे द्विजेन्द्रक मोनक व्यथाक कथा पूर्णरूपेण उजागर भेल अछि। एकटा पाँति- “कोन सरोकार माएसँ पैघ छल यौ लाल। जे अहाँ कहैत छी जे हम ककरोसँ सरोकार नहि रखने छी।”

राग बैदेही भेरवी- एहि कथामे एकटा कलाकारक जिनगीपर

रोशनी देल गेल अछि। कोना एकटा साधारण गामक गबैया सुख-दुख, सफलता आ विफलतासँ लड़ैत उच्चताकेँ प्राप्त कएलक तकर विशद वर्णन भेटैत अछि।
बाढ़ि भूख आ प्रवास- हास्य-व्यंग्यसँ पूर्ण कथा अछि। लघु आकारक रहितहुँ ई कथा बहुत रास गप्पकेँ समेटने अछि। भूख आ भूखक कारणे उठैत मनक तरंग आ ओहि कारणे बेकती कतऽ सँ कतए प्रवास करैले जाइत अछि। आ ओहू स्थानपर कोना आशापर तुषारपात होइत अछि। एहि पाँतिकेँ पढ़लासँ स्वत: हास्य उपस्थित भऽ जाइत अछि। “सरकार हम तँ ट्रेनसँ आएल छी मुदा अहाँ कोन सवारीसँ अएलहुँ जे हमरासँ पहिनहिसँ विराजमान छी?”- बैदिक जी अल्हुआसँ हाथ जोड़ि कहैत अछि।

नूतन मीडिया- आधुनिक मिडिया कोन तरहेँ चलि रहल अछि। से उजागर भेल अछि।

जाति-पाति- एहि कथाकेँ पढ़लाक बाद पाँति याद अबैत अछि- “देखनमे छोटन लागै जाति पातिक दंश।”

बहुपत्नी बियाह आ हिजड़ा- एहि कथामे एकसँ अधिक पत्नी कएलासँ जे समाजमे सड़ांध पैदा भऽ रहल अछि, कोन-कोन रूपेँ ओकर बिकार निकलैत अछि तकर वर्णन भेल अछि। किछु

पाँति- "...भातिज सभकेँ नहि मानैत छिऐक तैं भगवान बच्चा नहि देलन्हि।"

बाणवीर- एहि कथामे बाणवीरक मनोविश्लेषण नीक जकाँ भेल अछि। समूहसँ कटल बाणवीर कतेक अथाह पीड़ामे संघर्ष करैत जिनगीक एक-एक पल कटैत रहैत अछि से कथासँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि। बाणवीरक एहि कथनमे कतेक मर्म छिपल अछि- "माए बाबू! हमरा बुझल अछि जे हमर बियाह दान नहि होएत। मुदा अपन पेट तँ कोहुना हम गाममे भरिए लैत छी। गुजर तँ कइए लैत छी। लोक सभ कहैत रहए जे तोहर माए-बाप तोरा बेचि देलकउ। से ठीके अछि की?"....कन्नारोहट उठि गेल।

अनुकप्पाक नोकरी- लोककेँ बाप मरलापर नोकरी भेटैत छैक। हुनका भाएक मरलापर भेटलन्हि। एहि कथाक सार अछि।

मृत्युदंड- कथा द्वारा देखाओल गेल अछि जे कोना बालिका आर्याकेँ मृत्युदंड मिल जाइत अछि जेकर कोनो दोष नहि छल। बेगुनाहकेँ दण्ड। सेहो मृत्युदंड। एहेन अछि एहिठामक समाज। जेकरा सहजताक संग स्वीकारो कऽ लेल जाइत अछि। एखनुक समाजक दर्पण जकाँ कथा लगैत अछि।
एहि तरहेँ गल्प गुच्छक कथा सभक बाद बुझाइत अछि जे वर्तमान समस्याक यर्थाथ रूप प्रगट भेल अछि। छोट-छोट दृश्य

खंड काव्यात्मक रूपसँ सोझा आएल अछि। कथावस्तुमे मिथिलाक माट-पानिक गंध अछि। किछु कथा अत्यन्त लघु तथापि उदेश्य प्रकट भऽ गेल अछि जे सम्पूर्ण देशक यथार्थकेँ समेटने अछि।

सहस्रबाढ़नि (उपन्यास)- प्राचीनकालहिसँ सहस्त्रबाढ़निक विषयमे उत्सुकताक संगहि अनुमान कएल जाइत रहल अछि। अनुमानित व्याख्या आ समीक्षा होइत रहल अछि। विज्ञान द्वारा अलग ढंगसँ आ साहित्य तथा आध्यात्म द्वारा अलग-अलग ढंगसँ। अहाँक उपन्यासक पात्र एहि सम्बन्धमे कहैत अछि- “खसैत लहास, कनैत हुनकर सबहक परिवार। सपनामे अबैत रहल ई सभ सहस्रबाढ़निक रूप बनि कए। हमरे सन कोनो शापित आत्मा अछि ओ सहस्रबाढ़नि जे अपन संघर्ष अधखिज्जू छोड़ि मरि गेल होएत आ आब ब्रहमाण्डमे घुरिया रहल अछि। आब देखू तीनू बच्चाक परीक्षा परिणाम सभदिन प्रथम करैत अबैत रहथि, आब की भऽ गेलन्हि। हम जे संघर्ष बीचमे छोड़लहुँ तकर छी ई परिणाम।” नन्द हबोढ़कार भऽ कानए लगलाह।
एहि पाँतिकेँ जँ गम्भीरतासँ आत्मसात करए लगलहुँ तँ मात्र नामेटा नहि संगहि उपन्यासक सारतत्व एवं उद्देश्यो प्रगट भऽ गेल। नन्दक चरित्र आर हुनका द्वारा कएल गेल संघर्षक रूप तथा मनक मनोविज्ञान स्पष्ट भऽ जाइत अछि। उपन्यासक भाषा शैली

नवीन ढंगक अछि। वर्णनात्मक शैलीमे आरम्भ भेल अछि। भाषामे चित्रात्मकताक एकटा उदाहरण- “एकदिन कलितकेँ देखलहुँ जे ठेहुनियाँ दैत आगू जा रहल छथि। आंगनसँ बाहर भेलापर जतए आँकर-पाथर देखलन्हि ततए ठेहुन उठा कऽ मात्र हाथ आ पएरपर आगू बढ़ए लगलाह।”

किछु एहि तरहक शब्दक प्रयोगसँ भाषामे आकर्षण आबि गेल अछि। जेना थाम्ह-थोम्ह, कानब-खीजब, काज-उद्यम, जान-पहचान, बूढ़-पुरान, घुमब-फिरब, टोका-टोकी, संगी-साथी, झगड़ा-झाँटी, तंत्र-मंत्र, पढ़ाइ-लिखाइ इत्यादि। उपन्यासक भाषा मैथिली पाठककअनुकूल अछि जहिना लोक बजैत छथि तहिना सहज ढंगसँ वर्णित अछि।

झिंगुर बाबू, नन्द आ नन्दक भैया, भातिज, बेटा, नवल, आरूणि आ हुनक माए-बाबू, बहिन, कलित आ हुनक पत्नी, शशांक, मणीन्द्र,भौजी, शोभा बाबू, बुचिया इत्यादि पात्रक माध्यमसँ कथावस्तुक संगहि चरित्रक विकास भेल अछि। जाहिमे मौलिकताक संगहि स्वाभाविकता अछि। नव दृष्टिकोणसँ सहजताक संग चरित्र सबहक विकास भेल अछि। जे उपन्यासक अनुकूल अछि। मिथिलाक नदी-कमला, कोशी, बलान आदिक वर्णन भेल अछि। संगहि एहिठामक गाम घर- झंझारपुर, मेंहथ, गढ़िया, नरुआर, कछवी आदिक वर्णनसँ सहजहि कथामे मिथिलाक माटि-पानिक गंध आबि गेल अछि। कथोपकथनमे संक्षिप्ता आ सहजता अछि। उदाहरण स्वरूप किछु अंश देखल

जा सकैत अछि।

आरूणि दू-तीन कौर खा कऽ उठि गेलाह। हुनकर संगी करण पुछलखिन्ह-“पता नहि। घबराहटि भऽ रहल अछि।”

“काल्हि ट्रेनिंगपर जएबाक अछि ने। ताहि द्वारे।”

“पता नहि।”

ताबत भीतरसँ अबाज आएल। सभ क्यो दौगलाह।

कथोपकथन जीनगी आ पात्रानुकूल अछि।

“की बजलहुँ बेटा”- माए पुछलखिन्ह।

“नहि। ई कॉलोनी देखि कऽ किछु मोन पड़ि गेल।”

“नहि देखू ई पपियाहा कॉलोनीकेँ।”

उपन्यास मनोविश्लेषणक संगहि दर्शनसँ सेहो पुष्ट अछि।

“पृथ्वी विशाल अछि आ काल निस्सीम, अनंत। एहि हेतु विश्वास अछि जे आइ नहि तँ काल्हि क्यो ने क्यो हमर प्रयासकेँ सार्थक बनाएत।”

आशाक संचार करएबला ई वाक्य बारम्बार मनमे उठैत अछि। जिनगीक संचालित करबाक लेल तँ आवश्यक अछि जिनगीक रस। वएह रस थिक- आशा। जँ जिनगीमे आशा, अभीप्सा नहि होइ तँ जीवन निरर्थक।

“आरूणिकेँ लगलन्हि जे ओ झोंटाबला सहस्त्रबाढ़नि झमारि कए एहि विश्वमे फेक दैत छन्हि हुनका।”

कथीले किछु किएक से प्रश्न उठैत अछि मनमे। यएह प्रश्न

पाठककेँ बेर-बेर सोचैले मजबूर करैत अछि- बहुत रास गप्प। आ एक प्रश्नसँ जन्मैत अछि बहुत प्रश्न जे पाठककेँ एकटा अलग संसारमे लऽ जाइत अछि।

मनुष्यक प्रवृतिक सम्बन्धमे ई पाँति देखल जा सकैत अछि- “मनुष्यक प्रवृत्तिये होइछ, समानता आ तुलना करबाक, साम्य आ वैषम्यक समालोचना आ विवेचनामे कतेक गोटे अपन जिनगी बिता दैत छथि। आरूणि आ नन्दक बीच सेहो अनायासहि साम्य देखल जा सकैत अछि।”

उपरसँ मानव भिन्न-भिन्न प्रवृत्तिक होइत अछि। किन्तु मूलमे गहराइसँ अन्वेषण कएल जाए तँ किछु तलपर सभ मनुष्य लगभग साम्य होइत अछि। अन्तमे वएह रस नि:सृत होइत रहैत अछि। किन्तु ओतेक शान्त भाव आ ओतेक गम्भीरतासँ स्वंयकेँ देखनाइ सहज गप्प तँ नहि थिक। उपन्यासक आकार लघु रहितहुँ कथा वस्तुक पूर्ण विकास भेल अछि। कथाक अनुकूल भाषाक संतुलित ढंगसँ प्रयोग भेल अछि। नव वस्तुक नवीन दृष्टिकोणसँ अभिव्यक्ति भेल अछि। मौलिकतासँ पूर्ण अछि।

वर्तमानमे मैथिली साहित्यक प्रगतिक लेल अहाँ सन बेकतीक आवश्यकता अछि। जे एकभगाह होइत मैथिलीकेँ संतुलित करता आ संगहि स्वयं तँ अग्रसर होएबे करताह दोसरोकेँ आगू बढ़बाक सुअवसर देताह। एहि दृष्टिकोणसँ अहाँक प्रयास अवर्ण्य अछि।

एकटा पाँति स्मरण भऽ गेल-

अहीं सन मैथिली सेवकपर
अछि हमरा सबहक आस
भरब भण्डार मैथिलीक
अछि पूर्ण विश्वास।

सहस्त्राब्दी क चौपड़पर

सहस्त्राब्दी क चौपड़पर बैसल अहाँ जिनगीक खेल देखा रहल छी। गहन अन्वेंषण करैत एक-एकटा चित्रक रचना कऽ रहल छी आ ओइ उमंगमे डूबि रहल छी।

“असीम समुद्रक कातक दृश्यर
हृदय भेल उमंगसँ पूरित....। ”

अहाँक अन्तमरक कवि रविक चित्र उपस्थिैत करैत कहैत अछि-

“सूर्य किरण पसरि छल गेल
कतेक रहस्यक बिलाएल
तिमिरक धुँध भेल अछि कातर
मुदा ई की.......। ”

संग्रहमे किछु हैकू पढ़बाक सुअवसर भेटल। किछु सुआद बदलबाक लेल....।

मिथिलांचलक गमकसँ अहाँक कविता हमरा सबहक मोनकेँ गमका रहल अछि :

“मोन पाड़ैत छी धानक खेत
झिल्ली कचौड़ी
लोढ़ैत काटल धानक झट्टा
ओहि बीछल शीसक पाइसँ कीनल
लालझड़ी
जेकरे नाओं लाल छड़ी आ
सतघरिआ खेल....।”

प्रवासमे रहैत स्मरण होइत गाम घर। ऐ पाँतिमे वियोगक ओइ व्या थाक वर्णन भेटैत अछि। एकटा नवीन लयक संग-

“पता नहि घुरि कऽ जाएब
आकि एतहि मरि-खपि
बिलाएब.....।”

ऐ व्यंमग्यतमे स्पिष्टख दृष्टि गोचर भऽ रहल अछि।

“लाठी मारबामे कोनो देरी नहि
बाछी भेलापर शोको थोड़ नहि
परन्तु छी पूजनीया अहाँ....। ”

बाढ़सँ उत्प न्न भेल समस्या आ ओकरा छोट-छीन पाँतिमे समेटनाइ गागरमे सागर भरबाक प्रयास ऐ पाँतिमे परिलक्षित भऽ रहल अछि -

“ठाम-ठाम कटल छल छहर
ऊपरसँ बुन्नी पड़ि रहल
सभटा धान चाउर भीतक कोठी

टूटि खसल पानिक भेल ग्रास...। ”
नव-नव बिम्ब सँ कविता सभ पूरित अछि -
“सहस्रबाढ़नि जकाँ दानवाकार
घटनाक्रमक जंजाल
फूलि गेल साँस
हड़बड़ा कऽ उठलहुँ हम....। ”

हड़बड़ा कऽ नै बल्किम अहाँ सचेत भऽ कऽ उठलहुँ। नव-नव चित्र ध्वगनि लऽ कऽ नवीन दृष्टिक संगे। पता नै कतऽ धरि जाएब। कतऽ गंतव्य. अछि अहाँक।

“विश्वमक मंथनमे
होएत किछु बहार आब....
पथक पथ ताकब.....
प्रयाण दीर्घ भेल आब....। ”

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना

प्रारंम्भरमे फील्ड. वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत अछि। ई लोक कथा मार्मिक अछि संगहि शिक्षा आ उपदेशसँ भरल। सतमाएक चरित्र केहेन होइत अछि आ केहेन होएबाक चाही से स्प ष्ट भेल अछि। समाज द्वारा बिसरल जा रहल ऐ कथाकेँ अहाँ पुन: जीवन्तकएने छी जइमे माए-बाप बेटा आ सतमाएक मर्मस्प्र्शी वर्णन भेल अछि। वर्तमानमे सीत-बसंत नाच बिहारक

गाम-गाममे लोक मानसकेँ आनन्दित कऽ रहल अछि।

दोसर अछि मायानन्द- मिश्रक प्रथमं शैल पुत्री च, मंत्रपुत्र, पुरोहित आ स्त्रीमधन। जे वेदकालीन इतिहासपर आधारित अछि। जेकर समीक्षा इतिहास आ साहित्यक दुनू आधार लऽ अहाँ नीक जकाँ प्रस्तु।त कएने छी।
एकर बाद अछि केदान नाथ चौधरी जीक दूटा उपन्यादस, चमेली रानी आ माहुर। ई पाठक द्वारा समादृत उपन्या ेस अछि। एकर समीक्षा अहाँ नीक तरहेँ कएने छी। अहाँ कहने छी जे- नव समीक्षा कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि।

नो एंट्री : मा प्रविश नचिकेता जीक नाटक अछि। जकर अहाँ किछु नव तरहेँ समीक्षा करबाक प्रयत्नर कएने छी।

कविशेखर ज्योतिरीश्वर शब्दावली, विद्यापति शब्दावली, कवि चतुर्भुज शब्दा वली आ बद्रीनाथ झा शब्दा वली द्वारा मैथिली शब्द भंडारक विशद वर्णन कएल गेल अछि।

मैथिली हैकू आ क्षणिकाक सिद्धांत पढ़बाक अवसर भेटल।

मिथिलाक बाढ़ि जे एतुक्का रहनिहारक लेल प्रलय बनि अबैत अछि। ऐ समस्या आ सरकारी प्रयासक वर्णन नीक जकाँ भेल

अछि।

विस्मृत कवि पं. रामजी चौधरीक रचनाकेँ पाठकक सोझा रखबाक प्रयास। वास्त।वमे ई अहाँक अविस्म रणीय कार्य अछि।

विद्यापतिक बिदेशिया- पिआ देसाँतर- ऐमे किछु नव तथ्यस सभ सोझा आएल अछि।

बनैत-बिगड़ैत सुभाष चन्द्रश यादवक कथा संग्रहक समीक्षामे अहाँ द्वारा सार्थक प्रयास भेल अछि। ई कथन जे “ओ कथाक माध्यटमसँ जीवनकेँ रूप दैत छथि। शिल्पं आ कथ्यअ दुनूसँ कथाकेँ अलंकृत कए कथाकेँ सार्थक बनबैत छथि।”ऐ कथा संग्रहक अहाँ विशद रूपेँ समीक्षा कएने छी।

अन्तरर्जालपर मैथिली- ऐमे नवीन एवं ज्ञानवर्द्धक तथ्य् सभ पाठकक लेल परोसने छी। आजुक समएमे एकर ज्ञान आ अनुभव बड्ड आवश्याक भऽ गेल अछि।
लोरिकक गाथामे समाज ओ संस्कृछति- ऐ गाथामे ओइकालक समाज ओ संस्कृति एवं राजनीतिक पक्षकेँ अहाँ उजागर कएने छी।

मिथिलाक खोज- अहाँ करैत रहलहुँ गाम-गाम। संगहि पाठककेँ स्थाएन सभसँ परिचित करबैत सराहनीय कार्य कएलहुँ।

त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन (गीत प्रबन्ध)- गीत प्रबन्धमे जीवनक अत्यन्त व्यापक चित्रण उदात्त मानवीय अनुभूतिक रूपमे प्रगट कएल गेल अछि।
अहाँ प्रारम्भिमे लिखने छी-
"ई भारत ग्रंथ
जयक जाहिमे गान
तखन कहिया सँ भेलाह एतुक्का लोक
कर्महीन, संकीर्ण.....। "
अहाँ अन्तत ऐ पाँतिसँ कएने छी-
"असञ्जाति मनक ई सम्बँल
देलहुँ अहाँ हे बुद्ध
हे बुद्ध- हे बुद्ध। "

ओना आब महाकाव्य कम लिखल जा रहल अछि। किन्तु साहित्यक सभ विधा जीअत रहबाक चाही। ऐ परम्पकराकेँ अहाँ द्वारा आगू बढ़ेबाक प्रयास भेल अछि। धर्म-उपदेशपर आधारित पौराणिक कथाकेँ अहाँ कथावस्तु क रूपेँ किछु नूतन तरहेँ सजेबाक प्रयास कएने छी। अभिव्यक्ति लेल तत्सम शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि। ओना पात्रानुकूल ओहन शब्द

आनब आवश्यकके छल। शीर्षक कहबामे काठिन्य सन अनुभव भेल। ताद्यपि रचना आदर करबाक योग्य अछि।

बाल कविता- ऐमे उपदेशक संगहि मनकेँ रंजित करबाक क्षमता होएबाक चाही। जे उत्सुोकता बनौने रहए। नव-नव मोहक दृश्यक देखबैत अहाँ बच्चा सभकेँ नव संसारसँ परिचित करबाक प्रयास कएने छी। जेना-

“मेहनति अहाँ करू

फल हमरा दिअ.....। ”

दोसर पाँति -

“मुइलपर भाबहु की भैंसुर केलहुँ अततह समए बदलल नहि बदलल ई गाम हमर।। ”

निश्चुय एतेक रास बाल कविता रचि अहाँ बाल साहित्यहक भण्डाएर भरबाक सराहनीय प्रयास कएने छी।

अन्तममे, यएह जे साहित्यिक सभ विधाकेँ एक्केठाम संग्रहित करबाक एकटा नव प्रयोग भेल अछि। व्याकरण आ भाषाक शुद्धता अछि। पोथीक लेल यएह कहब जे अहाँ भिन्न-भिन्न प्रकारक पुष्पिसँ सुसज्जित एहेन पुष्पवाटिका बनेलहुँ जइमे प्रवेश कऽ पाठक जेहने आकांक्षा करत तेहने रूप, गंध प्राप्ति करत आ हमरे जकाँ आनन्दिपत भऽ कहत- “धन्यवाद। ”

(विदेह पेटारसँ, विदेह द्वारा संचालित ब्लाग 'मैथिली समालोचना'पर 7 अप्रैल 2012 कैँ प्रकाशित)

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

शिव कुमार झा 'टिल्लू'

किछु लोकक ई प्रवृति होइत अछि जे सदिखन अपन चल जीवनमे नव-नव प्रकारक प्रयोग करैत रहैत अछि। एहि नव प्रयोगक कारण जहानमे अपवर्गक विहान देखएमे अबैत अछि। प्रयोग धर्मिता व्यक्तिक इच्छासँ नहि जन्म लऽ सकैछ, ई तँ नैसर्गिक प्रतिभाक परिणाम थिक। मैथिली साहित्यमे प्रयोग धर्मी सरस्वती पुत्रक अभाव नहि परंच वर्तमान कालमे एकटा एहेन प्रयोगधर्मी मिथिला पुत्रकेँ माँ मिथिले अपन आँचरमे सक्रिय कएलनि, जे तत्कालिक मैथिलीक दशा वदलबाक प्रयास कऽ रहल छथि। क्रांतिवादी आ सम्यक विचार धाराक सम्पोषक ओ व्यक्ति केओ अनचिन्हार नहि- मैथिली साहित्यक प्रथम अंतर्जाल पाक्षिक पत्रिका विदेहक सम्पादक- श्री गजेन्द्र ठाकुर छथि। भऽ सकैत अछि जे किछु लोक मैथिली साहित्यकेँ अन्तर्जालसँ जोड़बाक प्रयास कए रहल हएताह परंच एकटा मूर्त्त रूप दऽ 371 अंक नॉट अउट धरि पहुँचेबाक कार्य गजेन्द्रे जी कएलन्हि। साहित्यक नव-नव विधा आ समाजक वेमात्र वर्गकेँ मैथिलीक आलिंगनमे आबद्ध कऽ साम्यवाद आ समाजवादकेँ वैदेहीक माटिपर आनि हमरा सबहक माथपर लागल अनसोहांत कलंककेँ धो देलनि। 371 अंकमे जे कार्य भेल अछि ओ कतऽ-कतऽ

पहिने भेल छल, आत्म अवलोकन करबाक पश्चात् जानल जा सकैत अछि। समाजक फूजल, बेछप्प आ उदासीन वर्गकेँ अपन बयनाक मानस पटलपर आच्छादित करबाक लेल साहस सभ केओ नहि जुटा सकैत अछि। मात्र भाँज पुरयबाक लेल मानस पुत्र एहेन कार्य नहि कएलनि, ओहि उपेक्षित वर्गक रचनाकारक रचनामे विषए-वस्तुक गतिशीलता आ तादात्म्य बोध ककरोसँ कम नहि अछि। प्रयोगधर्मी गजेन्द्र जीक कर्मक दोसर आमुख थिक हिनक लेखनीक धारसँ निकलल इन्द्रधनुषक सतरंगी गुलालसँ भरल भावक आत्मउद्बोधन- “कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनक”।

एहि पोथीकेँ की कहल जाए, उपन्यास, गल्प, बाल साहित्य, समालोचना, प्रबन्ध वा काव्य? साहित्यक सभ विधाक अमिर रसकेँ घोरि वंगोपखाड़ी वना देलनि जतए ई कहब असंभव अछि जे गंगा, कोशी, यमुना वा हुगली ककर नीर कतए अछि?

शीर्षक देखि अकचका गेल छलहुँ, ई महाभारत मचौता की! मुदा अपन हृदएसँ सोचल जाए प्रत्येक मानवक हृदएक दूटा रूप होइत अछि, मुदा अन्तर्मन सदिखन सत्य बजैत अछि ओहिठाँ मिथ्याक स्थान नहि।

कुरूक्षेत्र रणभूमि अवश्य छल परंच ओहिठाँ सत्यक विजयक लेल युद्ध भेल। ओहिठाँ धर्मसंस्थापनार्थ विनाश लीला मचल

छल। हमरा सभकेँ अपन अन्तरआत्मामे कुरूक्षेत्रक दर्शन करएबाक लेल दिशा निर्देशन कऽ रहल छथि गजेन्द्र जी।

मैथिली साहित्यक कोन असत्यकेँ त्याग करबाक चाही? किअए सुमधुर बयनाक एहेन दशा भेल? नव पथक निर्माण नवल दृष्टिकोणसँ हएत। हमरा बुझने एहि पोथीमे साहित्य समागमक लेल दृष्टिकोणकेँ प्राथमिकता देल गेल अछि। एहेन विलक्षण साहित्यपर आलेख लिखब हमरा लेल आसान नहि अछि- मुदा दु:साहस कऽ रहल छी-

भऽ रहल वर्ण-वर्ण नि:शेष
शब्दसँ प्रकटल नहि उद्देश्य
मोनमे रहल मनक सभ बात
अछिंजलसँ सध: स्नात

सात खण्डमे विभक्त एहि पोथीकेँ सम्पूर्ण परिवारक लेल सनेश कहि सकैत छी।

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना: एहि खण्डक आदि लोकगाथापर आधारित कथा सीत-बसंतसँ कएल गेल अछि। उत्तर मध्यकालीन इतिहासमे अल्हा-ऊदल, शीत वसंत सन कतेक

कथा प्रचलित छल, जकर मंचन पद्यक रूपमे वर्तमानकालमे बिहारक गाम-गाममे भऽ रहल अछि। एक राज परिवारक विषय-वस्तुक चित्रण करैत लेखक सतमाएक सिनेहपर प्रश्न चिन्ह लगैबाक प्रयास कएलनि अछि? कथाक आरंभसँ इति धरि मर्मस्पर्शक अनुभव होइत अछि। कथाक अंतमे विमाताकेँ ओहि पुत्रक छाया भेटलनि जकर पराभव ओ कऽ देने छलीह।

श्री मायानन्द मिश्र मैथिली साहित्यक सभ विधाक मांजल साहित्यकार मानल जाइत छथि। हुनक इतिहास बोधक चारू प्रमुख स्तंभ प्रथमं शैलपुत्री च, मंत्रपुत्र, पुरोहित आ स्त्रीधनपर सम्यक आलेख प्रस्तुत कऽ गजेन्द्र जी पूर्वमे लिखल गेल प्रबंधक दृष्टकोणकेँ चुनौती दऽ रहल छथि। ऋग्वैदिक कालीन इतिहासपर आधारित मंत्रपुत्र मायानन्द जीक प्रमुख कृति मानल जाइत अछि। एहि पोथीक लेल माया जीकेँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल अछि। मंत्रपुत्र पाश्चात्य इतिहाससँ प्रभावित अछि। मंत्रपुत्रक संग-संग पुरोहितमे सेहो पाश्चात्य संस्कृतिक झलकी देखए मे अबैत अछि। अपन समालोचनाकेँ गजेन्द्र जी अक्षरश: प्रमाणित कऽ देने छथि, मुदा मायाबाबूक रचना संसारपर कोनो तरह प्रश्न चिन्ह नहि ठाढ़ कएलनि। समीक्षाक रूप एहने होएबाक चाही। समीक्षककेँ पूर्वाग्रह रहित रहलासँ साहित्यिक कृतिक मर्यादा भंग नहि होइत अछि।

केदारनाथ चौधरी जीक दू गोट उपन्यास ‘चमेली रानी’ आ ‘माहुर’पर गजेन्द्र जीक समीक्षा पूर्णत: सत्य मानल जा सकैत अछि। मैथिली साहित्यमे बहुत रास रचनाक बिक्री सम्पूर्ण मैथिल समाजमे जतेक नहि भऽ सकल, ‘चमेली रानी’क ओतेक बिक्री मात्र जनकपुरमे भेल। एहिसँ एहि साहित्यक प्रति पाठकक श्रद्धाकेँ देखल जा सकैत अछि। ‘माहुर’ मैथिली साहित्यक लेल क्रांतिकारी उपन्यास थिक। अरविन्द अडिगक कृतिक चरित्रसँ एहि उपन्यासक एक पात्रक तुलना लेखकक भाषायी समृद्धताकेँ प्रदर्शित करैत अछि।

विदेह-सदेहक सौजन्यसँ नचिकेता जीक एकटा नाटक ‘नो एण्ट्री मा प्रविश’ प्रकाशित भेल अछि। एहि नाटकक लेखनपर नचिकेता जीकेँ कीर्ति नारायण मिश्र सम्मान देल गेल अछि। नाटकक चारू कल्लोलक तर्क पूर्ण विश्लेषण कऽ गजेन्द्र जी समीक्षाक रूप बदलबाक प्रयास कएलनि अछि। एहि नाटकमे तार्किकता आ आधुनिकताक विषय वस्तु निष्ठताकेँ ठाम-ठाम नकारल गेल अछि।

रचना लिखबासँ पहिने अध्यायमे गजेन्द्र जी मैथिली साहित्यमे भाषा सम्पादनपर विशेष ध्यान देबाक प्रयास कएलनि। अपन साहित्यमे भाषायी त्रुटिपर पूर्णरूपसँ ध्यान नहि देल जा रहल

अछि।

कविशेखर ज्योतिरीश्वर, विद्यापति शब्दावली, रसमय कवि चतुर्भुज शब्दावली आ बद्रीनाथ शब्दावली द्वारा मिथिला-मैथिलीक सर्वकालीन शब्द विन्यासक आ शब्द भंडारक विस्तृत वर्णन कएल गेल अछि। एहिसँ निश्चय भाषा सम्पादनमे सहायता भेटत। कतेक रास एहेन शब्द अछि जकर विषयमे हम की साहित्यक पैघ-पैघ वेत्ता पहिने नहि जनैत होएताह। निश्चित रूपसँ ई अध्याय पाठकक संग-संग साहित्यकार आ असैनिक सेवाक ओहि प्रतियोगीक लेल उपयोगी हएत जे मैथिलीकेँ मुख्य विषयक रूपे लऽ प्रतियोगितामे सम्मिलित होएबाक लेल प्रयत्नशील छथि। समीक्षक हमरा सबहक मध्य एकटा नव पद्य विधाक चर्च कऽ रहल छथि- हाइकू। एहि विधापर मैथिलीमे पहिनहुँ रचना होइत छल, मुदा एहि विधाकेँ क्षणिका नाओँसँ जानल जाइत छल। जापानी साहित्य द्वारा सृजित एहि पद्य रूपक वास्तविक चित्रण मैथिली साहित्यमे गजेन्द्र जी कएलनि अछि।

मिथिलाक लेल प्रलय कहल जाए वा विभीषिका ‘बाढ़ि’ ई शब्द सुनितहि कोशी, कमला, बलान, गंडकी, बागमती आ करेहक आँतसँ ओझराएल लोक सभ काँपि जाइत छथि। एहि समस्याक स्थिति, सरकारी प्रयासक गति आ दिशाक संग-संग बचबाक उपाएपर लेखकक दृष्टिकोण नीक बुझना जाइत अछि।

कोनो ठाम आ कोनो आन धाममे जौं हमरा लोकनिक विषयमे पता चलए कि मैथिल छथि, लोकक दृष्टकोण स्पष्ट भऽ जाइत अछि- हम सभ मछगिद्धा छी। एकर कारण जे धारक कातमे रहनिहार जीवक जीवन जलचरे जकाँ होइत अछि। जलीय जीवक भक्षण अधिकांश व्यक्ति करैत छथि। तैँ ने हमरा सभकेँ माँछ आ मखानक प्रेमी बुझल जाइत अछि, आ वास्तवमे हम सभ माँछक प्रेमी छी। अधिकांश मैथिल ब्राह्मण परिवारमे सोइरीसँ श्राद्ध धरि माँछक भक्षण अनिवार्य अछि। आन जातिमे अनिवार्य तँ नहि अछि, मुदा ओहु वर्गक अधिकांश लोक माँछक प्रेमी छथि। लेखक एहि लोकक भक्षण-धारकेँ ध्यान धरैत कृषि मत्स्य शब्दावली लिखलन्हि अछि। एहिमे सभ प्रकार माँछक आकार, रंग-रूपक विश्लेषण कएल गेल अछि। कृषिकार्यक लेल जोड़ा बड़दक संग हर पालो इत्यादिक ज्वलन्त व्यवस्थापर लेखकक विचार नीक मानल जा सकैत अछि। करैल, तारूज आ खीराक विविध प्रकारक नाओ सुनि गामक जिनगी स्मरण आवि जाइत अछि।

एहि खण्डक सभसँ नीक विषय जे हमरा अन्तर्मनकेँ हिलकोरि देलक ओ अछि विस्मृति कवि पंडित रामजी चौधरीक रचना संसारपर प्रवाहमय आ विस्तृत प्रस्तुति। हमरा सबहक भाखाक

संग किछु विषमता रहल जे एहिमे कतेक रास एहेन रचनाकार भेल छथि जे अपने संग अपन रचनाकेँ गेंठ बन्हने विदा भऽ गेलाह। एकर कारण एहिमे सँ किछु रचनाकारक रचनाक संकलन नहि भऽ सकल वा भेबो कएल तँ पाठक धरि नहि पहुँचल। एहि लेल ककरा दोष देल जाए, रचनाकारकेँ वा हमरा सबहक भाषाक तत्कालीन रक्षक लोकनिकेँ? एहि भीड़मे रामजी चौधरीक नाओ सेहो अछि। मैथिली साहित्यमे रागपर लिखल रचनामे रामजी बाबूक रचना सेहो अछि। भक्तिमय राग विनय विहाग, महेशवाणी, ठुमरी, तिरहुता, ध्रुपद, चैती आ समदाओनक रूपमे हुनक लेखनीसँ निकलैत गीत सभ अलभ्य अछि। शास्त्रीय शैलीक मैथिली गायनमे वर्तमान पिरहीक लेल अत्यन्त उपयोगी रचना सभकेँ प्रकाशमे आनि गजेन्द्र जी मिथिला, मैथिली आ मैथिलपर पैघ उपकार कएलनि अछि। सत्यकेँ स्वीकार करबाक सामर्थ्य मात्र किछुए लोकमे होइत अछि। गजेन्द्र जी ओहि लोकक पातरिमे ठाढ़ एक व्यक्ति छथि। परिमाणत: मैथिली साहित्य भोजपुरीसँ आगाँ मानल जाइत अछि मुदा गुणवत्ताक दृष्टिए भोजपुरी रास परिमार्जित अछि। भोजपुरी साहित्यक काल पुरूष भिखारी ठाकुरक मर्मस्पर्शी बिदेसियाक माध्यमसँ एहि भाषाकेँ अलग पहिचान भेटल। मैथिली भाषामे बिदेसियाक कमीक मुख्य कारण रहल प्रवासक प्रति उदासीनता। जौं लिखलो गेल तँ महाकाव्यक रूप दऽ देल गेल। बिदेशिया पद्य आ विद्यापतिक लिखल? हमरो विश्वास नहि भेल छल। विद्यापतिकेँ

मुख्यत: श्रैंगारिक कवि मानल जाइत अछि। ओना हुनक रचनाकेँ भक्ति रससँ सेहो जोड़ल जाइत अछि। कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनक पोथी पढ़लासँ नव सोच मोनमे आबि गेल। जकरा भोजपुरी साहित्यमे बिदेसिया कहल गेल वास्तवमे मैथिलीमे ओ अछि-पिआ-देशान्तर।

विद्यापतिक नेपाल पदावलीमे एहि प्रकार रचना सभ संकलित अछि, मुदा कहियो एहि रूपे महिमा मंडित नहि कएल गेल। कारण स्पष्ट अछि पिआ-देशान्तरक नाटय रूप मिथिलाक पिछड़ल जातिक मध्य प्रदर्शित कएल जाइत अछि। तेँ अग्रसोची लोकनि एकरासँ दूरे रहब उचित बुझैत छथि। एहिसँ मैथिलीक दशा-दिशाकेँ नव गति कोना भेटि सकैत अछि। मैथिली लोकभाषा अछि, लोक संस्कृतिकेँ बढ़यबाक प्रयास करबाक चाही। गजेन्द्र जीक सोझ दृष्टिकोणकेँ बिम्बित करबाक चाही। "एतहि जानिअ सखि प्रियतम व्यथा"– श्रैंगारिक-विरह व्यथाक वर्णन मुदा अछि पिआ-देशान्तर।
श्री सुभाष चन्द्र यादव जीक कथा संग्रह 'बनैत-बिगड़ैत'पर गजेन्द्र जीक समीक्षा अपूर्व अछि। प्रवेशिकामे हुनक कथा 'काठक बनल लोक' पढ़ने छलहुँ। काठक बनल लोकक नायक बदरियाक मर्म देखि पाथरो पिघलि जा सकैत अछि। वास्तवमे सुभाष जी मैथिली साहित्यक फणीश्वर नाथ रेणु छथि। महिमा

मंडनक कालमे मात्र भाँज पुरएबाक लेल हिनक कथा पाठ्यक्रममे दऽ देल जाइत अछि। आंचलिक रचनाकेँ कहिया धरि उपहासक पथियामे झाँपि कऽ राखल जाएत? एक नहि एक दिन छीप उधिया जाएत आ सत्यक सामना करए पड़त। लोक धर्मी साहित्यकार चाहे ओ धूमकेतु, कुमार पवन, कमला चौधरी, सुभाष चन्द्र यादव, जगदीश प्रसाद मंडल वा कोनो आन होथु-हुनका सबहक रचनाक उपेक्षा नहि होएबाक चाही। सुभाष जीक कथा कनियाँ-पुतरा, बनैत-बिगड़ैत आ दृष्टिक समीक्षा देखि समए-कालक दशाक अविरल द्वन्द्व उपस्थित भऽ जाइत अछि। ऋृणी छी जे गजेन्द्र बाबू एहि पोथीपर समीक्षा लिखलन्हि। इंटरनेटक लेल अन्तर्जाल प्रयोग, नीक लागल। वेबसाइट बनएबाक तकनीकसँ गजेन्द्र जीक उद्बोधन आ नियमन नहि बुझि सकलहुँ। तीन बेरि पढ़लहुँ मुदा जेठक तेज बिहारि जकाँ माथपरसँ उड़ि गेल। नव-नव नेना भुटका बुझि जएताह। तकनीकी युगक नेनाक स्मरण शक्तिक आंगन पैघ होइत अछि तेँ हुनके सबहक लेल एहि अध्यायकेँ छोड़ि देलहुँ।

लोरिक गाथा समाजक उपेक्षित वर्गक संस्कृतिपर आधारित अछि। सहरसा-सुपौलक वीर आदि पुरूष लोकिकक परिचए-पातमे पौराणिक मैथिल संस्कृतिक दर्शन होइत अछि।

मिथिलाक खोजमे जनकपुर, सुग्गा धनुषा सन नेपालक स्थलसँ

लऽ कऽ मधुबनी जिलाक कतेको उत्तर मैथिल गामसँ दक्षिणमे जयमंगलागढ़ (बेगूसराय)क चर्च कएल गेल अछि। पूबमे पूर्णिया किशन गंजक कतेक स्थलसँ लऽ पश्चिममे चामुण्डा (मुजफ्फरपुर)क माँ दुर्गाक मंदिरक चर्च कएल गेल अछि।

मिथिलाक किछु स्थानक वर्णन एहि सुचीमे नहि भेटल जेना- सती स्थान (गाम-शासन प्रखंड-हसनपुर जिला- समस्तीपुर) आ उदयनाचार्यक जन्म स्थली (गाम-करियन जिला- समस्तीपुर)। एहि लेल लेखककेँ दोष नहि देल जा सकैत अछि, किएक तँ मिथिलाक खोज विदेहसँ लेल गेल अछि, जाहिमे गजेन्द्र जी आवाहन कएने छथि, जे जिनका लग कोनो प्रसिद्ध स्थलक विषएमे जानकारी हुअए जे एहिमे सम्मिलित नहि अछि तँ ओकर छाया चित्रक संग सूचना पठाओल जाए। किछु स्थल आर छूटल भऽ सकैत अछि, प्रबुद्ध पाठक एहि विषएपर कार्य कऽ सकैत छी।

सहस्त्रबाढ़नि उपन्यास: सहस्त्रबाढ़नि एकटा आकाशीय पिण्ड होइत अछि, जकर दर्शन आर्यक धार्मिक दृष्टिकोणमे अछोप बुझना जाइत अछि, मुदा उपन्यासकार एक अछोप पिण्डकेँ आत्मसात् करैत एकरा सावित्री बना देलनि। सावित्री अपन पातिव्रत्य आ दृढ़ निश्चयसँ सत्यवानक प्राण यमराजसँ छीनि लेने

छलीह। एहि उपन्यासक दृष्टिकोण तँ एहन नहि अछि परंच उपन्यासक नायक आरूणिक मृत्युपर विजयमे सहस्त्रबाढ़निक उत्प्रेरणक उद्बोधन कएल गेल अछि। कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक मूल पृष्ठपर सहस्त्रबाढ़निक चित्र देल गेल अछि। एहिसँ प्रमाणित होइत अछि जे रचनाकारक दृष्टिमे सम्पूर्ण पोथीक सातो खण्डमे एहि उपन्यासक विशेष महत्व अछि। सहस्त्रबाढ़निक अध्ययन कएलापर उन्नैसम शताब्दीक उत्तरांशसँ वर्तमानकाल धरिक वर्णन कएल गेल अछि।

एक परिवारक एक सए पंद्रह बरखक कथाक वर्णनकेँ कल्प कथा मानब निश्चित रूपसँ रचनाकारक भावनापर कुठाराघात मानल जाएत। सद्यः ई कथा रचनाकारक पाँजड़िक कथा अछि। जौं एकरा गजेन्द्र बाबूक आत्मकथा मानल जाए तँ संभवत: अतिशयोक्ति नहि हएत। उपन्यासक आदि पुरूष झिंगुर बाब एकटा किसान छथि। जनिक घरमे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक स्थापना बर्ख सन् 1885 ई.मे एकटा बालक जन्म लेलन्हि- कलित। कलितक नेनपनसँ एहि उपन्यासक श्री गणेश कएल गेल। कलितक ओहि कालमे, बंगाली शिक्षकसँ, अंग्रेजीक शिक्षण व्यवस्था दरिभंगामे कएल गेल। एहिसँ दू प्रकारक भावक बोध होइत अछि। पहिल जे झिंगुर बाबू समृद्ध लोक छलाह। ओहि कालमे अवहट्ठक शिक्षा सेहो गनल गुथल परिवारमे देल जाइत छल, अंग्रेजीक कथा तँ अति विरल छल। दोसर जे बंगाली

लोक हमरा सभसँ शिक्षाक दृष्टिमे आगाँ छलाह। बंगाली जातिक अंग्रेजी शिक्षक, हम सभ कतेक पाछाँ छलहुँ जे हमरा सबहक संस्कृतिक राजधानी दरिभंगामे कोनो मैथिल अंग्रेजी शिक्षक झिंगुर बाबूकेँ नहि भेटलन्हि।

सौराठ आ ससौलाक सभा गाछीक चर्च तँ बेरि-बेरि कएल जाइत अछि, मुदा एहि पोथीमे विलुप्त सभा बलान कातक गाम परतापुरक सभा गाछीसँ कथाकेँ जोड़बाक दृष्टिकोण अलग मुदा नीक बुझना जाइत अछि। कलितक विवाहमे वरक महफामे, बूढ़ बरियातीक कटही गाड़ीमे आ जवान लोकक पैदल जाएब वर्तमान पीढ़ीक लेल अजगुत लागत मुदा अपन पुरातन संस्कृतिसँ नेना-भुटकाकेँ आत्मसात कराएब आवश्यक अछि। कलितक मृत्युक पश्चातक कथा हुनक छोट पुत्र नंदक परिधिमे धूमए लागल। नंदक पारदर्शी सोच, अपन कनियासँ प्रत्यक्षत: गप्प करब, तृतीय पुरूषक रूपे संबोधन नहि। मिथिलामे वर-कनिया, सासु-पुतोहु, साहु जमाएक गप्पमे तृतीय पुरूषक संबोधन अनिवार्य होइत अछि। एहि प्रकारक व्यवस्थाक विरूद्ध नंदजी अपन नवल सोचकेँ केन्द्रित कएलन्हि। वर-कनियाँक संबंध स्वाभाविक रूपेँ तँ समझौता मात्र होइत अछि परंच संसारक व्यवस्थामे सभसँ पवित्र आ अपूर्व संबंध यएह होइत अछि। जीवन भरि निर्वहनमे कोनो एक जनक संग छूटलापर

दोसरमे व्यथा..... अकथ्य व्यथा। तेँ एहि संबंधमे प्रत्यक्ष संबोधन होएबाक चाही। हमर दृष्टिकोण ई नहि जे अपन संस्कृतिक पराभव कऽ देबाक चाही, मुदा संस्कृति आ व्यवस्थामे सेहो कालक गति सन परिवर्तनक अनिवार्यता प्रतीत होइत अछि।

आर्यावर्त्त न्याय, कर्म, मीमांसा सन प्रांजल दर्शनक आविर्भाव भूमि मानल जाइत अछि। एहि खण्डमे एकटा नव दर्शनसँ मिथिलाक भूमिकेँ वैशिष्ट्यता प्रदान कएल गेल ओ अछि इमान आ मर्मक बिम्बमे संबंधक मर्यादा। नंद बाबू इंजीनियर छलाह। जौं अपन धर्ममे किछु ढील दऽ दैतथि तँ भौतिकताक बाढ़िसँ परिवार ओत-प्रोत भऽ सकैत छल। मुदा एना नहि कऽ सतत अपन कर्मकेँ साकार सत्यसँ बान्हि लेलन्हि। स्वाभाविक अछि अर्थयुगमे इमानक प्रासंगिकता बड़ ओछ भऽ जाइत अछि। असमए मृत्युक पश्चात् परिवारक दशाक विवेचन मर्मस्पर्शी लागल। हुनक सत् कर्मक प्रभाव यएह भेल जे संतान सभ विशेषत: आरूणि भौतिक रूपसँ रास संपन्न तँ नहि भऽ सकलाह मुदा पिताक छत्र-छायाक आंगनमे मनुक्ख भऽ गेलाह। कर्मक गतिसँ लोक राज भोगकेँ प्राप्त तँ कए सकैत अछि, मुदा मनुक्ख बनबाक लेल नैसर्गिक संस्कार बेशी महत्वपूर्ण होइत अछि। तेँ कहलो गेल अछि- “बढ़ए पूत पिताक धर्मे।” कतहु-कतहु नीच विचारक मानवक संतान मनुसंतान भऽ जाइत अछि, एहिमे दैहिक संस्कार आ प्रकृतिक लीला होइत अछि। आरूणिक दृढ़

विश्वासपर केन्द्रित एहि उपन्यासक कथामे सतत प्रवाहक गंगधारा खहखह आ शीतल बुझना गेल। जँ कथाकेँ आत्मसात् कएल जाए तँ कोनो अर्थमे एकरा काल्पनिक नहि मानल जा सकैछ। एकरा आत्मकथा स्पष्टत: नहि मानि सकैत छी, किएक तँ उपन्यासकार कोनो रूपेँ एकर उद्‌बोधन नहि कएलनि अछि। भऽ सकैत अछि समाजक अगल-बगलक रेखाचित्र हो, मुदा हमरा मतेँ ई कल्पना नहि, सत्य घटनापर आधारित अछि।

उपन्यासमे एकटा कमी सेहो देखलहुँ। अंग्रेजी आखरक ठाम-ठाम प्रयोग कएल गेल जेना- एनेश्थेशिया, ओपिनियन, इम्प्रेशन आदि। एहि सभ शब्दक स्थानपर अपन शब्दक प्रयोग कएल जा सकैत छल, मुदा नहि कएल गेल। हमरा बुझने हम दोसर भाखाक ओहि शब्द सभकेँ मात्र आत्मसात करी जकर स्थानपर हमर अपन भाखामे शब्दक अभाव अछि।

सहस्राब्दीक चौपड़पर: कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनकक तेसर खण्ड कविता संग्रहक रूपमे अछि, जकर शीर्षक ‘सहस्राब्दीक चौपड़पर’ देल गेल। मात्र तैंतालीस गोट कविताक सम्मिलनमे शृंगार, विरह हैकू, विचार मूलक कविताक संग-संग एकटा ध्वज गीत सेहो अछि। इन्द्रधनुषक आसमानी रंग जकाँ प्रथम कविता ‘शामिल बाजाक दुन्दभी वादक’मे क्षणिक प्रकृतिक आवरणमे

स्वर-सरगमक भान होइत अछि, मुदा अन्तरक अवलोकनक पश्चात् दशा पूर्णत: विलग। राजस्थानक वाद्य संस्कृतिमे एकटा दर्शक वाद्य यंत्रक प्रासंगिकताक केन्द्रनमे कविक भाव अस्पष्ट लागल। सहज अछि 'जतऽ' नहि पहुँचथि रवि, ओतऽ गएलनि कवि'। कवि स्वयं दुन्दभी वादक छथि तेँ स्पष्ट दर्शन कोना हएत। हिन्दी साहित्यमे एकटा कविता पढ़ने छलहुँ 'गोरैयो की मजलिसमे कोयल है मुजरिम'। संभवत: समाजक पथ प्रदर्शकक मूक दृष्टकोणकेँ कविताक केन्द्र बिन्दु बनाओल गेल अछि। बहुआयामी व्यक्तित्वक धनी व्यक्ति सेहो जीवनक गतिमे दवाबक अनुभव करैत कतहु-कतहु अपन संवेदनाकेँ दबा कऽ दुन्दभी वादक सन नाटक करैत छथि। केओ-केओ दोसरकेँ संतुष्ट करबाक लेल अपन विचारधारा बाह्य मनसँ बदलि दैत छथि। संतुष्टीकरणक प्रवृत्ति वा कोनो प्रकारक मजबूरी हो, हमरा सभकेँ परिस्थितिसँ सामंजस करबाक बहाने अपन सम्यक विचारकेँ माटिक तरमे नहि झँपबाक चाही। समाज जौं एकरा पूर्वाग्रह मानए तँ अपन पक्षक विवेचन कएल जाए, मुदा अनर्गल प्रलापकेँ मूक समर्थन नहि देबाक चाही।

मोनक रंगक अदृश्य देवालमे परिस्थितिजन्य विषमताक विषय वस्तुक दर्शन आशातीत अछि। मन्दाकिनी.... आ पक्का जाठि शीर्षक कवितामे प्रकृति आ समाजक स्थितिक मध्य विगलित मानवतापर मूक प्रहारमे कविक नैसर्गिक मुदा अदृश्य सोच हमरा सन साधारण समीक्षक लेल अनबूझ पहेली जकाँ अछि। अपन

पुरातन इतिहासक ओहि दिवसकेँ लोक स्मरण नहि करए चाहैत छथि, जाहिसँ अतुल पीड़ाक अनुभव होइत अछि। त्रेता युगक घटना, कलियुग धरि पाछाँ धेने अछि। सीता जीक बियाह अगहन शुक्ल पक्ष पंचमीकेँ भेलनि, परिणाम सोझाँ अछि। तखन शतानंद पुरोहित जी खरड़ख वाली काकीक बिआह ओही तिथिमे किएक करौलन्हि? भऽ सकैत अछि हुनक भाग्यमे सीताजी जकाँ गृहस्थ सुख नहि लिखल मुदा कलंक तँ ‘वियाह पंचमी’ तिथिकेँ देल गेल। एहि कवितामे कविक दृष्टकोण तँ विधवा बिआहक समर्थन करबाक अछि, मुदा सवर्ण मैथिल से नहि स्वीकार कऽ रहल छथि। अपन पुरान साँगह लऽ कऽ हम सभ हवड़ाक पुल बनाएबाक कल्पनामे कहिया धरि ओझराएल रहब? एहि कविता संग्रहमे जे नव विषय बुझना गेल ओ अछि ‘बारह टा हैकू’। गिदरक निरैठ, राकश थान, शाहीक मौस आ बिधक लेल शब्द-शब्द बजैत अछि।

हैकूक सार्थक अर्थ लगाएब अत्यन्त कठिन होइत अछि, मुदा हमरा बुझने जौं एहेन हैकू लिखल जाए तँ नेनो सभ जे मैथिलीमे माए परिवार कुटुम्बक संग बजैत छथि अवश्य बूझि जएताह।

मिथिलाक ध्वज गीतमे मातृभूमिसँ कर्मक सार्थक गति मांगल गेल अछि। जेना गायत्री परिवारक प्रार्थना ’वह शक्ति हमे दो

दयानिधि’ मे गाओल जाइत अछि। मातृ वंदनाकेँ कविता संग्रहमे देबाक हिनक दृष्टिकोण रचनाक्रममे उपयुक्त हो मुदा हमरा मते एकरा कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक प्रथम पृष्ठपर वंदनाक रूपमे देल गेल रहिते तँ बेसी सुन्नर होइतए।

‘बड़का सड़क छह लेन बला’मे मिथिलाक विकासक क्रमित स्थितिक वर्णन कएल गेल अछि।

सम्पूर्ण कविता संग्रहक अवलोकनक बाद कोनो पद्य अकच्छ करैबला नहि लागल। ‘पुत्र प्राप्ति’ शीर्षक कवितामे लुधियानामे हमरा सबहक समूहक एकटा पंडितक ठकपचीसीक चर्च कएल गेल अछि। एहने ठकक कारण ‘बिहारी’ व्यक्तिकेँ आठ ठाम लोक शंकाक दृष्टिसँ देखैत छथि। मुदा गजेन्द्रजी सँ हमर आग्रह जे एहि कविताक पंजाबी भाषामे अनुवादक अनुमति नहि देल जाए नहि तँ कतेको भलमानुष बनल मैथिल घुरि कऽ गाम आबि जएताह आ हमरा सबहक समाजमे कुचक्र आरो बढ़ि जाएत।

गल्प गुच्छ: 23 गोट कथा-लघुकथाक सम्मिलन कऽ गल्प गुच्छक नाओ देल गेल। चौंसठि पृष्ठक एहि खण्डमे समए-सालक सभ रूपकेँ बिम्बित करैत कथाकार साहित्यक समग्र विधापर लेखनक प्रयास कएलनि अछि। सर समाज कथामे अर्थनीतिक मौन प्रस्तुति नीक लागल मुदा कलात्मक शैलीक अभाव बुझना गेल। घरक मरम्मतिक बिम्बित खिस्सामे कनेक रस-प्रवाह रहितए तँ कथा आर नीक भऽ सकैत छल। हम नहि जाएब

विदेशमे पलायनवादक विरोध कएल गेल अछि बिम्ब तँ नीक अछि मुदा विश्लेषणमे अलंकारक तादात्म्य नहि भेटल। एहेन मार्मिक विषय-वस्तुक कथा तँ ओहि प्रकारक होएबाक चाही जाहिसँ हियमे हिलकोरि उत्पन्न भऽ जाए। राग भैरवी छोट मुदा संस्कृतिकेँ छूबैत अछि। काल स्थान विस्थापन आ वैशाखीपर जिनगीकेँ औसत मानल जा सकैत छैक।

कोनो साहित्यकेँ ता धरि पूर्ण नहि मानल जा सकैछ जा धरि समाजक अंतिम व्यक्तिसँ संबंधत भाषा साहित्यकेँ जोड़ल नहि गेल हुअए। “सर्व शिक्षा अभियान” कथाकेँ पढ़लाक वाद मैथिली साहित्यमे दलित, पिछड़ा आदि वर्गक प्रति सरकारी योजनाक निष्फल होएबाक कारण केर स्पष्टीकरण वास्तविक लगैत अछि। पेटमे अन्नक फक्का नहि हो आ पोथी मुफ्तमे भेटए, एहेन शिक्षाक स्थितिपर प्रश्न चिन्ह ठाढ़ करब स्वाभाविक अछि। साम्यवादी सोच राखएबला कथाकार कथाक बहाने स्पष्ट करए चाहैत छथि जे गरीबक मध्य जातिक आधारपर विभाजन हमरा सबहक समाजक कलुष रूप थिक। छोट उद्देश्यपूर्ण कविताकेँ क्षणिका वा हाइकूक नाओ देल गेल मुदा लघुकथाकेँ की कहल जाए? लघुकथामे बिम्बक विश्लेषण अति क्लिष्ट होइत अछि मुदा “जातिवादी मराठी”मे मैथिली भाषाक अस्तित्वपर लागल जातिक कलंकक प्रस्तुति सराहनीय अछि।

थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा, स्त्री-बेटी बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, अनुकम्पाक नौकरी सभक विषय-वस्तु छोट-छीन परंच सारगर्भित लागल। जेना हिन्दी साहित्यक पत्र-पत्रिकामे चर्चित लेखक खुशवन्त सिंह मात्र दू पाँतिमे बहुत-रास गप्प लिखि जाइत छथि ठीक ओहिना एहि सभ लघुकथाकेँ पढ़ि बुझना गेल।

जाति-पाति लघुकथा तँ पूर्णत: बेच्छप लागल। एकटा डोम जातिक आइ.पी.एस. परिवीक्षाधीन अधिकारीमे जातिक गरानि कोनो आत्मीय मनुक्खकेँ मर्माहत कऽ सकैत अछि। मृत्युदंड आ वाणवीरक सामाजिक बिम्बक संग-संग सामन्तवादी, मीडियासँ संबंधित कथा सभकेँ बेजोड़ तँ नहि मुदा मैथिली साहित्यक लेल नूतन-धाराकेँ स्पर्श करैबला कथा जौं मानल जाए तँ कोनो दोख नहि। आब प्रश्न उठैत अछि जे गल्प-गुच्छकेँ कोन रूपक मानल जाए। हमरा सबहक भाषाक संग दुर्भाग्य रहल जे कथाक विषय वस्तुसँ बेशी भाषा विज्ञान, बिम्बक विश्लेषण आ शब्द विन्यासक कलाकारीपर विशेष ध्यान देल जाइत अछि। साहित्यक अधिकांश अधिष्ठाता एकटा गप्पपर नहि ध्यान देबए चाहैत छथि जे रचनासँ समाजक परिदृश्यमे सम्यक जीवनक सनेश जाएत वा नहि। जातिक संग-संग संतुष्टीकरण केर छद्मसँ ऊपर उठब अनिवार्य अछि नहि तँ मैथिलीक अस्तित्वपर प्रश्न चिन्ह ठाढ़ भऽ जाएत। भौगोलिकीकरणक परिधिमे मैथिली सभसँ बेसी

प्रभावित भेल छथि। सौतिन भाषाक संग-संग पाश्चात्य संस्कृतिक प्रभावसँ वैदेही टिम टिमा गेली। एहि भाषामे नवल अर्चिस जड़एबाक लेल वर्ग संघर्षक स्थितिसँ ऊपर उठि कऽ कार्य करबाक चाही। पागक बजाय जौं मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक संग-संग बहुल झाँपल मुदा जनभाषाक संरक्षक वर्ग धरि पहुँचबाक प्रयास कएल जाए तँ मैथिलीक दशामे फेर चारि नहि आठ गोट चान लागि जाएत।

एहि कथा सबहक कथाकारक कथाक शैलीक विवेचन जे हुअए एकर निर्णए पाठकपर छोड़ि देबाक चाही मुदा रचनाक उद्देश्य स्पष्ट अछि। गजेन्द्र जी निश्चित रूपेँ एहि कथा संग्रहक माध्यमसँ समाजमे अपन संस्कृतिक रक्षा करैत नूतन सम्यक ज्योति जड़ाबए चाहैत छथि, जतऽ डोम, चमार, ब्राह्मण, राजपूत, मुसलमान ओ कायस्थ नहि मात्र "मैथिल" शब्दक व्योमक परिधिमे मिथिलाक चर्च कएल जाए। दुर्भाग्य अछि जे मैथिली पोथीक समीक्षा करबामे आलोचना-प्रत्यालोचनाकेँ मूल बिम्ब मानल जाइत छैक जखन की आन भाषामे रचनाकारक मनोवृति आ दृष्टिकोणपर ध्यान देल जाइत अछि।

लेखकक "पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल" कथा संग्रहमे गल्प-गुच्छक लगभग सभटा कथाक परिवर्द्धित रूप आयल अछि आ

आलोचनाक सभ बिन्दु ओतऽ समाप्त भऽ गेल अछि। “पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल”क ’पाठकक लेल किछु निर्देश बा सुझाव’ मे गजेन्द्र ठाकुर लिखै छथि-
“ऐ पोथी(’पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल’)क किछु कथा हमर सन् 2023 सँ पूर्वमे प्रकाशित/ ई-प्रकाशित कथाक परिवर्धित रूप अछि, ऐ पोथीक कथा सभकेँ ओइ कथा सभक प्रामाणिक संस्करण घोषित कएल जा रहल अछि (जँ कियो ऐ कथा सभक कोनो संग्रहमे संकलन बा उल्लेख बा अनुवाद करऽ चाहि रहल होथि, तिनको लेल ई लागू अछि)।”

नाटक- संकर्षण:मात्र 16 पृष्ठक नाटक, सुनबामे कनेक अनसोहाँत जकाँ लगैत अछि मुदा जौं तन्मय भऽ कऽ पढ़ल जाए तँ स्पष्ट भऽ जाएत जे हिन्दी साहित्यमे मात्र किछु कथाक कथाकार श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जीकेँ कोना आ किए आत्मसात कऽ लेल गेल?

संकर्षण सन अभिनेता जाहि नाटकमे हुअए ओहिमे विशेष भावक उपस्थिति स्वाभाविक अछि। अभिनेताक कोनो गुण नहि मुदा गजेन्द्र जी एकरा प्रधान नायक बना देलनि। समाजक कुहरैत अवस्थाक यएह सत्य रूप थिक एक दिस महीसक चरवाह आ दोसर दिस कलक्टरक चाटुकार। मिथिलाक समाजिक बिम्बकेँ स्पर्श करैत छोट नाटक संकर्षणमे नुक्कड़

नाटकक रूप अछि। “हौ गोनर! पानि कोना लागए देबैक एकरा। पएरक चमड़ा सड़त तँ फेर नवका आबि जाएत। मुदा ई सड़ि जाएत तखन कतएसँ आएत।” कहबाक तात्पर्य जे जाहि व्यक्तिकेँ शरीरसँ बेसी किछु कैंचाक जुत्ता विशेष महत्वपूर्ण लगैत हुअए ओहि व्यक्तिमे जीवनक तादात्म्यक कोन प्रयोजन?

धर्मनीतिसँ अर्थनीति बेसी महत्वपूर्ण अछि। कालक बदलैत स्वरूपक चिन्तन करबाक योग्य, संभवत: एहि नाटकक यएह उद्देश्य थिक। मंचन करबाक लेल एकरा कोनो अर्थमे उपयुक्त नहि मानल जा सकैछ। किएक तँ पर्दा उठत आ आधा धंटामे नाटक समाप्त। मुदा जीवनक नाटकमंडलीकेँ केन्द्रित करएबला संकर्षण चिन्तन करबाक योग्य अवश्य लागल। सभटा नाटकमे कोनो ने कोनो रूपेँ हास्य आ शृंगारक सम्मिलन होइत अछि मुदा एहिठाँ अभाव किएक तँ समाजक मनोवृत्तिकेँ छुबैत एहि नाटककेँ पढ़ि कोनो कविक एकटा कविताक एक पाँति मोन पड़ि गेल-

“ठोप-ठोप चारक चुआठकेँ आंगुरसँ उपछैत रहल छी”

गजेन्द्र जीक प्रयास छोट परंच अनुकरणीय लागल।

त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन: जेना कि नाओसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे दुनू काव्य ऐतिहासिक घटनाकेँ बिम्बित कऽ

लिखल गेल। धर्म आ कर्मक्षेत्रक परिधिमे आर्य संस्कृतिक विवेचन नीक लागल। एहि महाकाव्यक विषयमे मात्र यएह कहल जा सकैत अछि जे सुरेन्द्र झा सुमन, वैद्यनाथ मल्लिक विधु आ मार्कण्डेय प्रवासी जीक काव्य लेखन द्वारा परम्पराकेँ जीवंत रखबाक प्रयास कएल गेल।

बालमंडली आ किशोर जगत: हम सभ गौरवान्वित छी जे मैथिली भाषा समग्र आर्य परिवारक भाषा समूहमे सभसँ सरस भाषा मानल जाइत अछि। साहित्य चिन्तन सेहो पाठकक गणनाकेँ देखैत ककरोसँ कम नहि। मुदा एकटा पक्ष जे सभसँ कमजोर रहल ओ थिक मैथिली भाषा साहित्यमे बाल साहित्यक दरिद्रता। कहबाक लेल तँ बहुत रास लेखक वा कवि अपनाकेँ बाल साहित्यसँ जोड़बाक सतत वाक-पटुता देखबैत छथि मुदा जौं पूर्ण रूपसँ बाल साहित्यक रचनाक गणना कएल जाए तँ जीवकांत जी सन मात्र किछु साहित्यकार छथि जिनक लेखनी एहि दिशामे क्रियाशील रहल। जखन कि बाल साहित्य जौं परिमार्जित नहि हएत तँ निकट भविष्यमे मातृभाषाक स्वरूप विगलित भऽ सकैत अछि।एहि दिशामे गजेन्द्र जीक प्रयाससँ कृतज्ञ होएबाक चाही। कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक सातो खण्डमे सभसँ नीक खण्ड अछि बाल मंडली। किशोर जगतपर अपन लेखनीकेँ हाथसँ नहि हृदयसँ लिखलन्हि। एहि खण्डमे दू गोट बाल नाटक तैइस गोट बाल कथा, वर्णमाला शिक्षा आ एक सएसँ ऊपर बाल

कविता देल गेल अछि। सभ बिम्बकेँ केन्द्रित करैत लिखल गेल रचना सभक भाषा अत्यन्त सरल अछि। नेना-भुटकाकेँ एहने रचना चाही। जौं तत्सम मे बाल साहित्य लिखल जाए तँ ओकर कोन प्रयोजन? कविता सभ तँ खूब नीक मानल जा सकैत अछि-

आइ छुट्टी
काल्हि छुट्टी
घूमब फिरब जाएब गाम......।

बाल बोधक लेल अलंकारसँ बेसी मनक चंचलता उपयोगी होइत छैक तँए एहि खण्डकेँ आलोचनात्मक स्वरूपसँ देखब उचित नहि।

निष्कर्ष: सात खण्डमे विभक्त एहि पोथीमे साहित्यक समग्र रसक स्वादन करएबाक प्रयास कएल गेल। मुदा एकर सभसँ पैघ नकारात्मक स्वरूप जे एकरा की मानल जाए? भऽ सकैत अछि सभ धाराकेँ छूबि गजेन्द्र जी मैथिली साहित्यमे एकटा नव रूपक धारा केन्द्रित करए चाहैत होथि।

एकटा पोथीमे प्रबन्ध, समालोचना, उपन्यास, गल्प, कविता संग्रह, महाकाव्यक संग-संग बाल साहित्य पोथीकेँ विशाल बना देलक। भऽ सकैत अछि समीक्षक लोकनिक संग-संग किछु

पाठककेँ नीक नहि लागनि मुदा हम एहि प्रकारक प्रयोगक स्वागत करब उचित बुझैत छी। ओना पाठकक सुविधाक लेल ई अलग-अलग सेहो प्रकाशित कएल गेल अछि। भाषा सम्पादन सेहो नीक लागल, शाब्दिक आ व्याकरणीय अशुद्धता अत्यन्त न्यून अछि।

(विदेह पेटारसँ, विदेह द्वारा संचालित ब्लाग 'मैथिली समालोचना'पर 7 अप्रैल 2012 केँ प्रकाशित)

मैथिली बाल काव्यधारा

प्रोफेसर प्रेमशंकर सिंह

वर्तमान दशकमे मैथिली बाल-काव्यधारामे बहुविधावादी प्रतिभासम्पन्न युवा कवि सशक्त हस्ताक्षर कयलनि ओ थिकाह गजेन्द्र ठाकुर (1971) जे प्रवासी रहितहुँ मातृभाषानुरागसँ उत्प्रेरित भऽ एहि क्षेत्रमे अपन उपस्थिति दर्ज करौलनि जनिक शताधिक बाल कवितादि “कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक” (2009) मे संकलित अछि। एहिमे संग्रहित समस्त कवितादिक विषय-वैविध्यकेँ उद्घाटित करैत अछि। बालमनक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, ओकर नानाविध औत्सुक्य, प्रसन्नता, टीस, वेदना, प्राकृतिक सुषमा, बालोचित चांचल्य, वर्षा, रौद-बसात, खेलकूद, बाल श्रमिकक वेदना, किंडर गार्डन स्कूलक क्रिया-कलाप, अवकाश भेलापर प्रसन्नता, खूजल रहलापर अप्रसन्नता तथा स्कूल जयबामे हनछिन करब आदि-आदि भावक विश्लेषण कवि अत्यन्त सूक्ष्मताक संग विलक्षण ढंगे कयलनि अछि। शिशुकेँ पितामह आ मातामहक अधिक स्नेह भेटैछ, जाहि कारणेँ हुनका सभक लग रहबाक ओ बेसी आकांक्षी रहैछ, कारण ओ दुलार-मलार ओकरा समयाभावक कारणेँ पारिवारिक परिवेशमे अन्य सदस्यसँ नहि भेटि पबैछ। ओकर विविध जिज्ञासाक यथोचित उत्तर ओकरा ओतहि भेटैछ, जाहि कारणेँ ओ सतत हुनका सभक

समीप रहब पसिन्न करैछ।

बालमन एतेक बेसी सेनसेटिभ होइछ जे सामाजिक परिवेशकेँ देखि ओकरा आत्मबोध भऽ जाइछ सम्पन्नताक आ विपन्नताक। तकर यथार्थ स्थितिक चित्रण निम्नांकित पंक्तिमे कवि कयलनि अछि यथा-

गत्र-गत्र अछि पाँजर सन
हड्डी निकलल बाहर भेल
भात धानक नहि भेटय तँ
गद्दरियोक किए नहि देल
औ बाबू गहूमक नहि पूछू
अछि ओकर दाम बेशी भेल
गेल ओ जमाना बड़का
बात गप्पक नहि खेलत खेल
(कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, पृ. 7.137)

बालमनक प्रसन्नताक भाव कवि व्यक्त कयलनि अछि जखन ओकरा स्कूल जयबासँ छुट्टी भेटि जाइछ, तकर दिग्दर्शन तँ करू:

आइ छुट्टी
काल्हि छुट्टी

घूमब-फिरब जाएब गाम
नाना-नानी मामा-मामी
चिड़ै-चुनमुनी सभसँ मिलान
बरखा बुन्नी आएल
मेघ दहोदिस भागल
कारी मेघ उज्जर मेघ
घटा पसरल
चिड़ै-चुनमुनी आएल
(कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, पृ. 7.85)

हाथीकेँ जखन शिशु प्रथमे प्रथम देखैछ तँ ओ आश्चर्यित भऽ अकस्मात प्रफुल्लित भऽ जाइछ ओ सहसा बाजि उठैछ, हाथीक सूप सन कान" (कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, पृ. 7.84) आ "हाथीक मुँहमे लागल पाइप" (कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, पृ. 7.71)।

बाल श्रमिकक व्यथा सेहो सोझाँ आएल अछि। जेना-
फेर आएल जाड़
कड़कराइत अछि हार
बिहारी!!
लागए-ये भेल भोर
गारिसँ फेर शुरू भेल प्रात

बिनु तैय्यारी
(कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, पृ. 7.90)

जतेक दूर धरि भाषा प्रयोगक प्रश्न अछि एहिमे युवा कवि अपन उदार प्रवृत्तिक परिचय देलनि। भूमण्डलीकरणक फलस्वरूप भिन्न-भिन्न भाषादिक बहुप्रचलित हल्लुक शब्दादि मैथिलीमे धुड़झाड़ प्रयोग भऽ रहल अछि तकरा शिशु कोना आत्मसात कऽ अन्तर्राष्ट्रीय भाषा सीखि जाइछ, तकर कतिपय उदाहरण एहि कवितादिमे यत्र-तत्र उपलब्ध होइत अछि। शिशु अपन तोतराइत बोलीमे एहन-एहन शब्दकेँ अनुकरण करबाक प्रयास करैछ जकर फलस्वरूप ओकर भाषा ज्ञानक विस्तार अनायासे भऽ जाइछ तकर कतिपय उदाहरण एहिमे भेटि जाइछ, यथा:

ट्रेन गाड़ी धारक कातमे
आएल स्टेशन छुटल बातमे
ट्रेन चलल दौगल भरि राति
सुतल गाछ बृच्छ भेल परात
(कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, पृ. 7.63)

अत्याधुनिक परिवेशमे शिशुकेँ अत्यधिक लगाव खेल-कूदमे भऽ गेलैक अछि जे ओ अपन पुश्तैनी खेल सर्वथा बिसरि गेल अछि

आ पाश्चात्य खेलक प्रति आकर्षित भऽ गेल अछि। कवि बालकक एहि चंचलताक विश्लेषण एहि प्रकारेँ कयलनि अछि:

हम बाबा करू की पहिने
बॉलिंग आकि बैटिंग
बॉलिंग कय हम जायब थाकि
बैटिंग करि हम खायब मारि?
पहिले दिन तूँ भाँसि गेलह
से सूनह ई बात बौआ
बैटिंग बॉलिंग छोड़ि छाड़ि
पहिने करह गऽ फील्डिंग हथौआ
(कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, पृ. 7.121)

हिनक काव्य भाषा अत्यन्त विस्तृत आ व्यापक अछि जकर प्रयोग ओ कयलनि अछि। महानगरीय परिवेशमे रहितहुँ मैथिलीक ठेंठसँ ठेंठ शब्दादिक प्रयोग ओ अत्यन्त निपुणताक संग कयलनि अछि यथा गाछ-पात, भोरे-सकाल, झहराउ, हियाउ, फुसिये, लुक्खी, खिखीर, पीचल, सुन्न, ढहनाइत, झलफल, सूप, इयार, चाली, छागर, बुरबक, खगता, जलखै, बोन, घटक, गरिपढ़ुआ, थलथल, औंटब, मसौसि, पुरखा, अधखिजू, कोपर, सटका, खौंझाइ, लजकोटर, मुहचुरु, कथूक,

दीयाबाती, घटकैती, झड़कलि, धमगिज्जर, चोरुक्का आदि-आदि।

युवा कविक गतिशीलताकेँ देखि लगैछ जे भविष्यमे हिनक कवित्व शक्ति आर अधिक विकसित होयतनि, कारण ओ एखन पुष्पक कली सदृश मैथिली बाल-काव्यक संगहि संग वयस्कोक हेतु पर्याप्त मात्रामे काव्य सृजन कयलनि अछि जे आलोकमय थिक।

(विदेह पेटारसँ, विदेह 70 अंक, 15 नवम्बर 2010)

सामाजिक विषमताक तह धरि पैसैत कथा

आभा झा

गजेन्द्र ठाकुरजीकेँ हम विदेह पत्रिकाक प्रधान संपादकक रूपमे जनैत छियनि। बीच-बीचमे अवश्य साहित्यिक लेखन-सम्बद्ध किछु संदेशक आदान-प्रदान भेल अछि, मुदा सोद्देश्य संदेश-प्रेषणक क्रममे कोनो व्यक्तिकेँ जानब संभव नहि। साहित्यिक परिचिति लेल ओ बहुत आवश्यको नहि। आइ हमरा हाथमे अछि हुनक एकटा एहन कथा-संग्रह जे नामक विलक्षणताक संग-संग आकार-प्रकारमे सेहो विविधता समेटने अछि, ओ संग्रह अछि 'पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल'। एक त' रसलोलुप भ्रमर फूल छाड़ि कठिन कठोर पहाड़ पर की करए गेल आ दोसर ओत्तहु जा क' सूतल किएक -एहि तरहक बहुत रास प्रश्न अवश्य हमरा सन सन पाठकक म'नमे कतोक जिज्ञासा उत्पन्न करैत अछि आ ओहि जिज्ञासाक शमन लेल पोथीक अध्ययने टा बाट! अध्ययनक क्रममे दीर्घ कथाखण्डमे 'शब्दशास्त्रम्' धरि पहुँचैत-पहुँचैत शीर्षकक स्रोत गीत रूपसँ परिचय होइत अछि आ शब्दक महिरम बुझबाक लगीच धरि डेग जाइत अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक लेखनक ई विविधता मात्र एहि पोथिएटामे नहि, अपितु समग्र लेखनमे देखल जाइछ। गजल, समालोचना, उपन्यास, पद्य- संग्रह, गल्प-गुच्छ (बीहनि आ लघु कथा संग्रह)

नाटक, गीत, प्रबन्ध, बाल- नाटक, कथा, कविता, इतिहास, जीवनी आदिक लेखनक संग संग देवनागरी, तिरहुता, ब्रेल लिपि पर उल्लेखनीय काजक चर्चा होयब ई अवश्य प्रमाणित करैछ जे हिनक प्रतिभा बहुमुखी छनि, दृष्टि व्यापक, प्रकृति नवोन्मेषी आ शैली बहुरंगी! आइ त' बहुतो ई पत्रिका बहराइ लागल अछि, मुदा विदेह मैथिलीक प्रसिद्ध ओ पहिल पाक्षिक ई पत्रिका अछि जे कि गजेन्द्र ठाकुरजीक संपादनमे कइएक बर्ख सँ एखन धरि निरंतर निर्बाध रूपें प्रकाशित भऽ रहल अछि। लेखकक अभिनव सोच आ ओकर विविध सांस्कृतिक दृष्टिकोण रचनात्मकता आ विविध नवाचारकेँ प्रेरित कए सकैत अछि। विविध क्षेत्रीय अध्ययन, समसामयिक जरूरतिक बोध आ औचित्य-अनौचित्यक कसौटीक चिन्तन स्तरीय साहित्यक सृजनक हेतु बनैत छैक। गजेन्द्र ठाकुरक ई संग्रह पढ़ला उत्तर हिनक पुरातन प्राच्य साहित्यक अध्ययन, वैश्विक साहित्यक परिचिति, मैथिल-समाज आ परम्पराक सूक्ष्म अवलोकन, गुण-दोषादिक निरपेक्ष विवेचन आ कोनो घटना विशेषक मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक परिचय भेटैत अछि। एहि पोथीमे तीन तरहक कथाक संग्रह अछि -दीर्घ कथा,लघु कथा आ बीहनि कथा। एतए तीनू प्रकारक कथा एकहि ठाम देबाक उद्देश्य संभवतः लघु कथा आ बीहनि कथाक ऊपर भए रहल घमर्थनक स्पष्टीकरण सेहो लेखकक मोनमे रहल होनि, ई अनुमान लगाओल जा सकैछ। मुदा बीहनि कथाक समर्थक शब्दक जाहि सीमाक ओकालति करैत छथि, ओ गजेन्द्र

ठाकुर नहि स्वीकारने छथि।

एकर अतिरिक्त किछु कथा अंग्रेजीमे सेहो अछि जे लेखक द्वारा स्वयं अनूदित अछि। सभसँ पहिने विचार करैत छी किछु लघुकथा पर, जे सामाजिक तानी-भरनीमे जड़ि जमेने स्वार्थ, परधन लोलुपता आ कमजोरकेँ दबैबाक स्वाभाविक प्रवृत्तिक शल्यक्रिया करैत आगू बढ़ैत अछि। एकटा एसकरुआ स्त्रीक लेल अपनहु संपत्तिक इच्छानुरूप उपयोग कतेक कठिन होइत छैक, डेग-डेग पर ओकर संपत्ति हड़पै लेल नीक लोकक बाना धए आ स्वजन होयबाक दावा करैत लोक मासु पर चील जकाँ मंडराइत रहैत अछि आ साम-दाम-दण्ड कोनहु बिधि सफल भए जाइत अछि। एतए धरि प्रेमचंदक प्रसिद्ध कथा 'पंच परमेश्वर' सँ मेल खाइत कथा अछि 'सिद्ध महावीर', मुदा प्रेमचंद दायित्वक संग विवेक जाग्रत होयबाक चेतना जगबैत कथाक अंत करैत छथि आ गजेन्द्र ठाकुर मनुक्खक प्रकृतिक स्वार्थ एन-मेन सोझाँ रखलनि अछि। कोनो अपराध- बोध नहि, कोनो ग्लानि नहि बस स्वार्थक नग्न रूप! मुदा लेखक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करैत बढ़ैत छथि- लोकक एहन किरदानी देखि प्रतिक्रिया स्वरूप अनमना दीदीक नैहरक प्रति मोहभंग, बजरंगबलीक प्रति आस्थाक समाप्ति होइत छनि!

'नवी मुम्बै' कथामे मिथिलाक सहज सामाजिक व्यवस्थाक वर्णन सहज रूपेँ भेल अछि। एक-दोसरासँ संपर्कक सहज इच्छा, सहज-सरल हास-परिहास सहजेँ मिथिला-माटिक सुवास दैत अछि। मुदा मूल कथ्य छैक परस्पर कोरोना कालक भयावहता, परिवार-जनक दुश्चिंता, संपूर्ण दुनियांक चिकित्सकीय अक्षमता आ ताहू पर हावी परस्पर अविश्वास आ मानव-निर्मित अभाव!कथा ओहि कराल कालक स्मरण दिया रोंइयां भुटका दैत अछि।

'नई दिल्ली' कथामे पलायनक दर्द आ ओहि दर्दक असह स्थिति देखल जा सकैछ एहि पांतीमे - 'एकटा परिवार फेरसँ बनत आ तीस बर्खक बाद देखब ओकर परिणाम। ताधरि हाड़मे ढुकल रहत ई सर्द कनकनी, ऐ बसातक कनकनीसँ बड्ड बेसी सर्द। सभ ऐ दिल्लीयेमे रहता, दिल्लीसँ लड़बा लेल एकरा नई दिल्ली बनेबा लेल। आ इण्डियाकेँ महाशक्ति बनेबा लेल अपन प्रगतिक आशामे, अगिला खाढ़ी लेल एतेक त' बलिदान देबैए पड़त...'आ दिल्लीक भीतर कइएक टा दिल्ली रहैछ, लुटियंस दिल्ली सेहो आ झुग्गी बस्ती सेहो। ओना विषमताक ई नमहर देबार दिल्लीएटा किऐक, सगरो देशेमे ठाढ़ अछि, जेम्हरसँ दृष्टि हटा लेबाक प्रवृत्ति सत्ता-प्रतिष्ठानक सेहो रहल अछि आ सुविधा-भोगीक सेहो। एखने 'जी ट्वेंटी मीटक' मध्य अहाँकेँ ने त' कोनो रेडलाइट पर भीख मँगैत, गाड़ीक सीसा पोछैत, लोहाक रॉडक

बीच सर्कस देखबैत किंवा गुलाबक फूल बेचैत कंकालप्राय बच्चा भेटत आ ने फुटपाथ पर राति बितबैत गृहहीन! तैं की विदेशी पाहुन सभक गेलाक बाद ओकर सभहक भाग्य बदलि जेतै? कथामे यद्यपि एकटा युवा विधवा आ अनाथ दुधमुँहा बच्चाक अन्हार भविष्यक प्रति निर्लिप्त यन्त्रवत् कर्मकाण्ड संपन्न करैत-करबैत लोकक प्रवृत्ति मुख्य कथ्य अछि, मुदा संगहि छद्म चमक-दमकक नीचाँ नाङट यथार्थ सेहो देखार होइत अछि।

'तस्कर' राजा लेल निहुँछल कन्याक प्रेम-प्रसंग वश अपहरणक कथा अछि, जाहिमे मात्र वरक नहि अपितु वरक पिताक सम्मति सेहो प्राप्त अछि। मुदा ई सम्मति एहि द्वारेँ नहि जे वरक पिता बहुत प्रगतिशील विचारधाराक छलाह किंवा पुत्रक ममत्वमे घेरायल! उद्देश्य एकमात्र छल अपन पाँजिक रक्षा, श्रोत्रिय-श्रेणीक रक्षा! एतए समाजमे सहज रूपेँ स्वीकृति पाओल ओहि यथास्थितिवादी चिंतनसँ तरे-तर विरोध करैत ई कथा बढ़ैत अछि, जे तेरह बरखक कन्याक वृद्ध वरक संग विवाहकेँ देखैत-सुनैत निर्विकार रहैत अछि।

'संघर्ष' एकटा विधवा सोहागोक कथा अछि, जे एकमात्र पुत्रक रूपमे जीबाक भरोस पौने अछि। मुदा बेटाक हत्याकेँ आत्महत्या साबित करबाक विभागीय कुचक्रक विरुद्ध अथक संघर्ष करैत अछि। लोक ओकरा बताहि कहैत छैक, मुदा ओकरा छै जिद

अपन बेटाक मूर्ति सरकारी कालोनीक गेट पर लगैबाक। ई संघर्षक टेमी ओ अपनहि टा लेल नहि बारैत अछि, अपितु न्याय-व्यवस्थाक चक्रचालिमे हारि मानि लै बला प्रत्येक व्यक्तिकेँ अप्रत्यक्ष रूपेँ उमेदक बाट देखबैत छैक।

'लेटरबक्समे आयल चिट्ठी' ड्रग, आतंकवादक जालमे ओझरायल ओहि युवा सभहक कथा अछि जे नीक वा बेजायक परिभाषा बिसरि, नैतिक आ अनैतिकक खेरहासँ जान छोड़ा एकटा एहन नेटवर्क तैयार कएने अछि, जाहिमे हारि वा जीत अर्थ नहि रखैत छैक, महत्त्व रखैत छैक अपन गढ़ल समानताक दुनियाँ लेल बाटमे अबैत सभ तरहक काँट-कूसक उन्मूलन, खाहे ओहिमे निर्दोषे किऐक नहि शिकार होमए! एहि जालमे लोक स्वेच्छासँ अथवा कोनो अपन लोकक रक्षाक लेल फँसल, ई प्रश्न अपना जगह, मुदा असंतुष्ट लोकक एक्सट्रीमिस्ट डेग एकटा भयंकर बिड़रो ठाढ़ कएने अछि, ई असंदिग्ध सत्य!

जाति आ जाति-व्यवस्थाक विश्लेषण करैत कथा अछि 'डोमा, बुधन आ..'। ऊपरसँ बुझाइत अछि जे ई खिस्सा एकटा निम्न जातिक जीवनमे होइत परिवर्तनक कथा अछि जे शिक्षा आ मेहनतिक बदौलति उच्च पद सेहो प्राप्त करैत अछि, संगहि ब्राह्मणक बेटीसँ विवाहो, मुदा तैंयों आत्मसम्मानक एकटा अतृप्त क्षुधा ओकरा भीतर रहिते छैक। एहि कथामे लेखक अपन

तार्किक बुद्धि आ गहन अध्ययनक प्रमाण दैत वैदिक कालक, उपनिषद् कालक रामायण कालक उद्धरण अपना हिसाबें जस्टीफाइ करैत चलैत छथि, गार्गी -याज्ञवल्क्यक शास्त्रार्थक भावार्थ दैत बढ़ैत छथि आ महाभारतक बर्बरीकक गुरुक देल वचनकेँ सामाजिक सौहार्दक मूल मानैत खिस्सा खतम करैत छथि। यद्यपि चिन्तनपरक एहि कथाक स्तर बहुत ऊँच आ प्रस्तुति फराक छैक, तथापि विचारक घनगर मेघक तर रोचकताक बिजुरी झँपा गेल छैक।

'आत्महत्या' आइ काल्हुक बच्चा सभहक मोनमे जन्म लैत अवसादक कथा अछि जकर समय रहैत इलाजक खगता छैक। मुदा आइयो हम-अहाँ शारीरिक रोगक उपचार जाहि शीघ्रताक संग करबैत छी, मानसिक व्याधिक प्रति ओतेक सचेष्ट नहि छी।

'गंधर्व लेटरबम' खिस्सा शुरूह होइत अछि एहि वाक्यसँ- 'दोसरकेँ सम्मान देनाइ भेल ओकर विचार, ओकर भावनाकेँ सम्मान देनाइ। आ तइसँ सम्मान भेटत ओइ व्यक्तिकेँ आ ओइ व्यक्तिक अपना लेल निर्धारित आ निर्मित अकासकेँ ....
हँ, कोनो 'विशेष लोक(दिव्यांग)' क प्रति सामाजिक सोचमे बदलावक खगता आइयो अछि। हम सभ अपनासँ फराक देह-दशा बला लोकक स्वीकृतिमे औखन अनुदार छी। आन्हर लोक

लेल गीत गायब वा भीख माँगब, बौन लोकक भविष्य सर्कसमे देखब, उभयलिंगीक लेल शिक्षा आ प्रगतिक सभ द्वार बन्न करब स्वाभाविके जेना मानि नेने छी।
एतए परिवर्तनक उदाहरण दैत लेखक लेटरबमकेँ समाज द्वारा आरोपित जीविकासँ लए जाइत छथि ओकर क्षमताक दुनियाँ मे आ एकटा सफल गबैया बना ओकर जीवन सार्थक बनबैत छथि। इयैह एकटा साहित्यकारक दायित्व होयबाक चाही जे आदर्श समाजक परिकल्पना आ ओकर सम्भाव्यता पाठकक मोनमे बैसाबथि आ अप्रत्यक्ष रूपेँ सामाजिक बदलावक नेओं राखथि। लेखक ओहि उद्देश्यमे सफल भेल छथि।

एहि संग्रहमे नौटा विचारक नौटा खिस्सा अछि जाहिमे गाम-घर, हीत-मीत त' छथिहे, संगहि अछि विचार लेल एकटा पैघ प्लेटफार्म, जतए अहाँ परम्परा आ आधुनिकताक द्वन्द्व देखि सकैत छी, दलितक अंतर्मनक संघर्ष आ तथाकथित अभिजातक वैचारिक संकीर्णताक परिचय पाबि सकैत छी, अपन लग-पासमे होइत अनाचारक सुदीर्घ गाथा दिससँ अपन कुम्भकर्णी निन्न तोड़ि सकैत छी, विशेष योग्यता (विथ डिफरेंट एब्लिटी) बला लोकक प्रति सहानुभूति (इम्पैथी) सनक मानवीय मूल्य जागृत कए सकैत छी आ समाजमे बढ़ैत असंतोष आ अतिवादक मूल कारण बूझि ओहि समस्याकेँ यथाशक्ति दूर कए सकैत छी।

'लेटरबाक्समे आयल चिट्ठी'क भाव पर आधारित अछि दीर्घकथा 'मधुबनी मॉड्यूल' आ ओहिमे नायकक नामो छै मुतालिफे,जे व्यवस्था-परिवर्तनक अपन कानून बनबैत अछि। एतए आतंकवादी गतिविधिसँ बेशी ओकर कारण, सामाजिक संजालक माध्यमसँ होइत ब्रेनवाश आ एकटा घटनाक फलस्वरूप संपूर्ण समुदायक प्रति जन्म लैत दुर्भावनाक दुर्भाग्यपूर्ण कथात्मक विश्लेषण अछि।

संग्रहमे किछु टिपिकल शब्द बेर- बेर अबैत अछि- पीयर बच्चा, महिसबार ब्राह्मणक गाम, गढ़ नारिकेल, दूषण पञ्जी आदि।

एकर अतिरिक्त 'शब्दशास्त्रम्' आ 'महिसबार ब्राह्मणक गाम' शीर्षकसँ दूटा दीर्घ कथा अछि जाहिमे प्रेम, सामाजिक मान्यता आ जनमानसमे व्याप्त अशरीरी प्रेमक शाब्दिक प्रभावक खिस्सा अछि। ओहिमे विद्या आ अविद्या, तर्क आ मीमांसा, द्वैत आ अद्वैतक चर्चा होइत कथा भरिगर जकाँ होइत बुझाइत अछि, कि बीच-बीचमे गीतक समावेश सरसता अनबाक उपक्रम करए लगैत अछि। 'शब्दशास्त्रम्' कथे मे एकटा गीत अछि जकर पहिल पंक्ति पोथीक शीर्षक बनल अछि। एहि दूनू कथाक अंग्रेजीमे अनुवाद सेहो पोथीमे समाहित अछि आ एकर लोकप्रियताक प्रमाण विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशन आ

अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सवमे प्रदर्शन अछि।

कथाक तेसर भागमे 36 टा बीहनि कथा अछि जाहिमे स्त्री-विमर्श, जाति-पाति, पैरवी-पैगाम, पीत-पत्रिकारिता, वाद आ प्रांतक भिन्न-भिन्न पैमाना, भूख आ प्रवास, नवसामन्तवाद, पर्यावरण विमर्श, शिक्षा-व्यवस्थामे पैसल बाजारवाद आदि सामयिक विषय सफल रूपेँ उठाओल गेल अछि आ पाठककेँ चिंतन लेल एकटा सॉलिड प्लॉट देने अछि।

चारिम अंश परिशिष्टक रूपमे अछि जाहिमे स्वयं लेखक द्वारा अपनहि दू टा लघु कथा आ दू टा दीर्घ कथाक अंग्रेजीमे अनुवाद देल गेल अछि। अंग्रेजीमे रूपान्तरक प्रयोजन निस्संदेह लेखकक मोनमे रहल होयतनि जे मैथिली कथाक व्याप्ति मात्र मैथिलीभाषी पाठक धरि सीमित नहि रहौ अपितु एकर वैश्विक परिचिति आ प्रसिद्धि भेटओ। आ से अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सवमे प्रदर्शित भेलो अछि।

संक्षेपमे एतबहि जे ई कथासंग्रह बहुत रूप-रंग, आकार आ रसक काकटेल अछि, विविध भावभूमि पर आधारित अछि आ चिंतन लेल एकटा पैघ कैनवास नेने अछि। हँ, विचार-गाम्भीर्य, तार्किक तीक्ष्णता, शास्त्रीय आ लोक प्रचलित उद्धरणक उपस्थापन आ निष्कर्षक प्रति सावधान सजगता अवश्य कथाक सहज सरस

प्रवाहकेँ ठाम- ठीम बाधित करैछ, मुदा कथ्य-सम्प्रेषणक स्पष्टता लेल बहुधा लेखक ई खतरा उठबैत रहैत छथि। सामाजिक विषमताक तह धरि पैसैत कथा लेल लेखककेँ साधुवाद एवं हार्दिक बधाई।

साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर: व्यक्तित्व आ कृतित्व

आचार्य रामानंद मंडल

समानान्तर मैथिली साहित्य आन्दोलन के प्रणेता साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर एकटा विरला साहित्यकार हतन। वो एगो खोजी साहित्यकार हतन। हिनका साहित्य मे सत्य के उद्घाटन होइत हय। मैथिली साहित्य मे दू गो धारा हय। पहिल मूल धारा। जै मे ब्राह्मणवादी आ नव ब्राह्मणवादी साहित्यकार के साहित्य हय। ब्राह्मणवादी माने मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ के साहित्यकार आ नव ब्राह्मणवादी मे गैर ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ के साहित्य। दोसर समानान्तर धारा। जै मे विशुद्ध रूप से सोल्हकन/रार माने कि संवैधानिक रुप से एससी/ओबीसी के मैथिली साहित्य हय। जे वंचित आ उपेक्षित हय। जेकरा मैथिली साहित्य के मूल मैथिली साहित्य मे न मानल आ राखल जाइ हय। ई आदि कालि से चल आ रहल हय। जेना कि आदिकवि विद्यापति नाई। जे कविशेखर जोतिश्वर से पहिले भेल रहे। वो पदावली के रचना कैले रहलन आ हुनकर विदापत नाच वोइ समय मे प्रसिद्ध रहै। जिनकर चर्चा कवि जोतिश्वर अप्पन रचना वर्णरत्नाकर मे कैले रहलन। परंतु आइ के समय मे आदिकवि विद्यापति नाई से लोग अनजान हय। हुनका मैथिली साहित्य इतिहास मे छुपा देल गेल वा उपेक्षित कैल गेल। परंतु चर्चित साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर अप्पन मैथिली विदेह ई पत्रिका के लोगो आदिकवि विद्यापति

नाई के बनैलन। हुनकर व्यक्तित्व आ कृतित्व के अप्पन साहित्य -नित नवल सुभाष चन्द्र यादव मे कैलन। आदिकवि विद्यापति नाई के चित्र विदेह सम्मान से सम्मानित पनक लाल मंडल बनैले हतन।

मैथिली साहित्यकार आंदोलनकारी गजेन्द्र ठाकुर आइ समानान्तर मैथिली साहित्य आन्दोलन के माध्यम से दलित, उपेक्षित वर्ग के साहित्यकार के प्रोत्साहित क रहल हतन। हुनका साहित्य मे दबल-कुचल समाज के व्यक्ति के साहित्य मे मान दे रहल हतन। परंतु ब्राह्मणवादी साहित्य मे वर्चस्ववादी के मानबर्द्धन आ दबल-कुचल समाज के जाति वा व्यक्ति के मान मर्दन कैल जाइत हय। जौं कि साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर साहित्यकार राजदेव मंडल पर पोथी लिखैत हतन -राजदेव मंडल -मैथिली राइटर आ जगदीश प्रसाद मंडल -एकटा बायोग्राफी लिखैत हतन। मैथिली समीक्षाशास्त्र मे कवि रामदेव प्रसाद मंडल झाड़ूदार के मैथिली के पहिल जनकवि के उपमा देइत हतन। हुनकर कविता संग्रह अम्बरा के 21 वीं शताब्दी के सर्वश्रेष्ठ मैथिली कविता संग्रह बताबैत हतन। खोजी साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर अप्पन साहित्य मे समानान्तर धारा के साहित्यकार के चर्चा करैत हतन जे मूल धारा के साहित्य मे दुर्लभ हय। जेना -संदीप कुमार साफी , उमेश पासवान, बेचन ठाकुर, कपिलेश्वर

राउत, उमेश मंडल , रामविलास साहु, राजदेव मंडल, नंदविलास राय, जगदीश प्रसाद मंडल, दुर्गानंद मंडल, आचार्य रामानंद मंडल, ललन कुमार कामत, नारायण यादव , मुन्नी कामत, शिव कुमार प्रसाद, धीरेन्द्र कुमार, रामदेव प्रसाद मंडल झाड़ूदार, सुभाष चन्द्र यादव आ किशन कारीगर आदि।

कथाकार आ उपन्यासकार गजेन्द्र ठाकुर मैथिली लेखक कोश निर्माता आ विदेह (मिथिला) इतिहास के जानकार हतन। ओ मैथिली भाषा के तिरहुता लिपि मे लिखल 1100(एगारह सौ) ताल पत्र -बसहा पत्र पर लिखल अभिलेख के देवनागरी लिपि में लिखलन। ओ पञ्जी सभ मिथिला क्षेत्र के मैथिल ब्राह्मण समुदाय के आनुवंशिक लेखक हतन। आ अइमे लगभग 100 अंतर्जातीय विवाह सेहो लिखित रूप मे वर्णित हय। आइ तक पौराणिक बुझल जाए वाला व्यक्तित्व सभ के लिखित प्रमाण पहिले बेर उपलब्ध भेल हय।

पिता कृपानन्द ठाकुर आ माता लक्ष्मी ठाकुर के कुल दीपक ओजस्वी गजेन्द्र ठाकुर हतन। हिनकर जन्म 30 मार्च 1971के भेल रहय। हिनकर मूल गाम मधुबनी जिलान्तर्गत मेंहथ हय। वर्तमान मे गजेन्द्र ठाकुर विदेह-ई पत्रिका के संपादक सेहो हतन। पत्रिका के विदेह-ई लर्निंग माध्यम से संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोग के परीक्षा लेल मैथिली

(अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) संगे एन टी ए-यूजीसी -नेट मैथिली लेल सामग्री प्रस्तुत करैत हतन जे प्रतियोगी विद्यार्थी लाभन्वित करैत हतन। विदेह पेटार मे लगभग हजार पोथी संग्रहित हय।जे पाठक वा विद्यार्थी पढ सकैत हय वा पीडीएफ (PDF) डाउन लोड कर सकैत हतन। विदेह सम्मान के तहत समानांतर साहित्य अकादमी, समानान्तर ललित कला अकादमी आ समानान्तर संगीत -नाटक अकादमी सम्मान आ पुरस्कार देल जाइ हय जै से समानान्तर धारा के व्यक्ति अप्पन क्षेत्र में बेहतर करे के लेल प्रोत्साहित होइत हतन। साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर मैथिली साहित्य जगत के युगपुरुष हतन। हिनकर व्यक्तित्व आ कृतित्व मिशाल हय।

संपादकीय टिप्पणी- रामानंदजी जातिक आधारपर ब्राह्मणवादकेँ बाँटि देने छथि जखन कि विदेह मात्र मानसिकता केर बात करै छै। विदेह लेल ने तऽ सभ ब्राह्मण ब्राह्मणवादी छै आ ने सभ दलित सहानुभूतिक पात्र। गजेन्द्र ठाकुरक आलोचनामे रमानंद झा 'रमण' ब्राह्मणवादी छथि तँ तारानंद वियोगी नव ब्राह्मणवादी। जखन कि रमानंद झा 'रमण' ब्राह्मण जाति केर छथि तँ तारानंद वियोगी गैर ब्राह्मण-गैर कायस्थ जातिक।

मैथिलीक सुच्चा सेवक : श्रीमान् गजेन्द्र ठाकुर जी

अजित कुमार झा

श्रीमान् गजेन्द्र ठाकुर जी पर किछु लिखनाइ हमर सामर्थ्य सँ बाहर अछि। सवाल उठनाइ स्वाभाविक छैक जे तखन किएक लीखि रहल छी? आखिर एहन कोन बाध्यता अछि जे हुनका पर किछु लिखबाक दुस्साहस क' रहल छी? सवाल त' उचित अछि आ तकर संक्षिप्त जवाब इएह अछि जे ज्ञानक अभाव मे भाषा ओ व्याकरण संबंधित त्रुटि भेटत तकरा प्रबुद्ध पाठक गण परिमार्जित कय पढ़ि लेब से हमर निवेदन। पछिला पन्द्रह वर्षक अपन मिथिला मैथिली पत्रिका सँ जुड़ल रहबाक अनुभव केँ आधार पर मोनक गप्प साझा क' रहल छी। 'मिथिला दर्शन', 'कर्णामृत' एवं 'भारती मंडन' के अलावे किछु अन्य अल्पकालिक पत्रिका मुजफ्फरपुर शहर मे वितरण करबाक जिम्मेवारी हमरा देल गेल छल। नौकरिहारा व्यक्ति हम कहुना छुट्टी दिन क' बड्ड उत्साह सँ निकलैत छलहुँ माँ मैथिलीक हेतु श्रमदान करबा लेल मुदा घर घुरैत काल मोन मे जे कूही होइत छल से की कहू? अहि शहर मे मैथिली भाषी केर जनसंख्या केर हिसाब सँ हमरा पास बहुत सीमित संख्या मे मैथिली पत्रिका वितरण लेल अबैत छल मुदा सिहन्ता लागले रहि गेल जे कहियो पत्रिका पूर्णरूपेण वितरित भेल होइत। खैर अनजान शहर मे बहुत गोटे सँ परिचय भेल आ बहुत रास अनुभव भेल, किछु मीठ

आ किछु तीत। हमर अहि अनुभवकेँ 'मिथिला दर्शन' केर एक अंक मे स्थान भेटल छलै जकर शीर्षक छल - 'सखि कि पूछसि अनुभव मोर?' किछु गोटे पढ़ने छलथि आ हमर उत्साहवर्धन सेहो केने छलथि। निस्संदेह हमरा अहि सँ ऊर्जा भेटल छल से कहबा मे कनिको संकोच नहि भ' रहल अछि। अपने सब सोचि रहल होएब जे ई कहाँ सँ अपन कथा ल' क' बैसि रहलाह? हमर अभीष्ट अपन कथा कहब नहि, हमर अभीष्ट अछि श्रीमान् गजेन्द्र ठाकुर जी केँ प्रति अपन मोनक उद्गार प्रकट करब।

देसिल बयना सभ जन मिट्ठा नहि अपितु दूरक ढ़ोल बड्ड सोहाओन लगैत अछि हमरा सब केँ। अपन मातृभाषा केँ प्रति बड्ड उदासीन छी हम सब जे कि हमर सबहक हीन भावना केर परिचायक अछि। भाषा त' जतेक सीखि सकैत छी से उत्तम मुदा अपन मातृभाषाक बलि द' क' नहि। मैथिली मे लेखक ओ कवि केर कोनो अभाव नहि अछि मुदा पाठक वर्ग केँ ल' क' चिन्ता भेनाइ स्वाभाविक अछि। अहि के लेल कारण एक नहि अनेक अछि। कोनो पोथी कतेक संख्या मे छपैत अछि? सुगमतापूर्वक एकर उपलब्धता सेहो चिन्ता केर विषय अछि। गाम घर सँ ल' क' शहर धरि एकर वितरण प्रणाली लगभग ध्वस्त भेटत। एहन मे विदेश मे बसल मैथिली साहित्य मे अभिरुचि राखय वाला पाठक केँ हाथ मे पोथी पहुँचनाइ असंभव। सबहक रुचि सेहो

एक समान नहि भ' सकैत अछि। किनको कथा पसन्द हेतनि त' किनको कविता? किनको सुंदर आलेख पढ़बा मे रुचि हेतन त' किनको नाटक कैँ प्रति लगाव। रुचिक हिसाब सँ पाठक वर्ग कैँ पोथीक उपलब्धता सत्य पुछू त' एत्तह नहि छैक। विशेष काल पाठक कैँ ऊपर कोनो भी विधाक पोथी लादि देल जाइत छैक जाहि सँ हुनका कनियो लगाव नहि छन्हि, से चाहे मँगनीए मे किएक नहि होइक? सच कहू जे पुस्तकालय कतेक ठाम जीवंत अछि आ कतेक ठाम पुस्तकालय मे मैथिली पोथी उपलब्ध अछि? एकर संख्या आँगुर पर गनि सकैत छी। पोथीक उपलब्धता के प्रश्न छोड़ू आ कहू जे एकर संरक्षण कि सहजता सँ भ' सकैत अछि? हलाँकि पुरना लोक सब पोथिए पढ़य चाहैत छथि सेहो प्रिंट माध्यम बला। हुनका सब कैँ वएह आदत बनल छन्हि त' कि करबै? एक समय केर उपरांत बाजार मे पोथी कत्तहु नहि भेटत। परिवर्तन प्रकृति केर नियम छैक। विज्ञान बहुत तेजी सँ प्रगति कय रहल अछि। नित्य नवीन अविष्कार भ' रहल अछि आ समय कैँ साथ चलब जररी अछि। जौँ समय केर साथ ताल-सँ-ताल मिला क' नहि चलब तखन वएह गति होएत जे अपन मातृभाषा विलुप्त भ' जाएत।

अंबानी बंधुक नारा छलनि - 'कर लो दुनिया मुट्ठी में'। हुनकर सबहक स्वप्न बहुत हद तक साकार सेहो भेलनि। हमरा कोनो राजनीतिक चर्चा मे नहि जयबाक अछि तैँ अहि नारा केर

पोस्टमार्टम करबाक कोनो प्रयोजन नहि। सकारात्मक सोच के साथ अगर हम किछु कही त' इएह कहब जे एखन लगभग हर भारतीय के हाथ मे दुनिया छैक। कहबाक तात्पर्य जे मात्र एक क्लिक पर दुनियाक समस्त जानकारी उपलब्ध भ' जाइत अछि, हँ अन्तर्जाल केर माध्यम सँ। जे मोन करय से चुटकी मे हाजिर। विज्ञानक विकास जौँ सकारात्मक कार्य हेतु कएल जाय त' दुनियाक रूपे-रंग बदलि जेतैक। एक समय हस्तलिखित पोथी होइत छल आ फेर आयल प्रिंट मीडिया केर जमाना आ सच पुछू त' एखनहु ओकर क्रेज अछि मुदा पुरना जमानाक लोग सब लेल। एखन त' सब काज ई-माध्यम सँ होइत अछि। कोरोना काल केर बाद त' एकर आओर विस्तार देखबा लेल भेटल आ सब कार्य ई-माध्यम सँ होबए लागल। हरेक अभिशाप मे किछु-न-किछु वरदान अवश्य छुपल रहैत छैक। कवि सम्मेलन सँ ल' क' विविध विषय पर गोष्ठी सेहो ई-माध्यम सँ भेल। कोरोना एक तरहें बुझू त' ई क्रांति आनि देलक मुदा कोनो क्रांति राता-राती संभव नहि छैक। एकर जड़ि मे जायब त' निस्संदेह बहुत गोटेक अदृश्य मेहनत नजर आओत।

एहन एक व्यक्ति श्रीमान् गजेन्द्र ठाकुर जी छथि जे निरंतर अपन मातृभाषा मैथिली केर संरक्षण एवं संवर्धन हेतु जी-जान सँ लागल छथि। समय के साथ ताल-सँ-ताल मिला क' अपन

सबहक मैथिली कैँ अन्तर्जाल पर स्थापित करय सन महत्वपूर्ण कार्य कयलनि। लगभग सोलह साल सँ मैथिली ई-पत्रिका विदेह कैँ सफल संचालन क' रहल छथि। मैथिली केर पहिल निःशुल्क डिजिटल पुस्तकालय विदेह पर अछि आ लगभग 1500 पोथी अहि पर उपलब्ध अछि। ई संख्या बहुत कम अछि तकर कारण अछि जे बहुत रास रचनाकार अथवा हुनक परिवारक लोक रॉयल्टी केर चक्कर मे अपन पोथी अहि माध्यम सँ पाठक केर समक्ष नहि राखय चाहैत छथि। अहि सँ नोकसान हुनको छनि आ मैथिली साहित्य कैँ सेहो। जौँ अपन रचना हर वर्ग केर पाठक तक पहुँचाबय केर अछि तखन ई-माध्यम अपनाबहि पड़त। अहि मे समस्या रॉयल्टी कैँ ल' क' छैक। अहि लेल हम किनको खिधांस नहि क' रहल छी। तखन विदेह पर रॉयल्टी त' नहि भेटि सकैत अछि। ' किंडल ' केर नाम सुनने होएब। अहि पर बहुत रास पोथी उपलब्ध अछि तखन अहि पर पाठक कैँ किछु शुल्क देबए पड़ैत छैक। मैथिली पोथी संभवतः ' किंडल ' पर उपलब्ध नहि अछि। रॉयल्टी कैँ कारण जे अन्तर्जाल पर अपन पोथी अपलोड नहि क' रहल छथि तिनका सब कैँ 'किंडल' सन व्यवस्था मैथिली पोथी लेल सेहो करबाक चाही। अहि सँ मैथिली साहित्य केर विकास एवं पाठक वर्ग केर संख्या मे वृद्धि अवश्य हेतैक। किनको आगू आबय पड़त अहि तरहक व्यवस्था केर संचालन लेल।

ईमानदारी सँ कहैत छी जे श्रीमान् गजेन्द्र ठाकुर जी कैँ विषय मे हमरा एतबहि बूझल छल मुदा हाल मे श्रीमान् आशीष अनचिन्हार जी अपन पोथी - "मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास" पठौलनि आ ओहि कैँ पढ़लाक उपरान्त माँ मैथिली केर सेवा मे श्रीमान् गजेन्द्र ठाकुर जी केर योगदान अकल्पनीय बुझना जाइत अछि। अपन सबहक एकटा पैघ समस्या अछि जे किनको प्रशंसा हमरा सब कैँ नहि पचैत अछि। केओ केहनो अभूतपूर्व कार्य केने होइथ, हम सब ओहि मे मीन-मेख निकालय मे प्रवीण छी। खैर जे इतिहास रचैत छथि हुनका केहनो बाधा विचलित नहि क' सकैत अछि आ तैँ हुनकर उपलब्धि इतिहासक पन्ना मे स्वर्णाक्षर सँ अंकित होइत अछि। सन् 2000 मे 'भालसरिक गाछ' सँ अपन यात्रा शुरू कयलनि आ ताहि कैँ बाद एक पर एक उपलब्धि हासिल करैत चलि गेलाह। सन् 2008 मे मैथिलीक पहिल ई-पत्रिका सेहो International Standard Serial Number (ISSN) केर साथ, मैथिलीक पहिल डिजिटल पुस्तकालय सेहो निःशुल्क, 2009 मे बाल साहित्यक क्षेत्र मे 'नेना भुटका ब्लॉग, 2014 मे मैथिली विकीपीडियाक मंजूरी, 2011 मे गूगल ट्रांसलेशन, तिरहुता (मिथिलाक्षर) मे ' विदेह सदेह ब्लॉग, ब्रेल लिपि मे मैथिलीक पहिल ब्लॉग ' विदेह ब्रेल', मैथिलीक पहिल पॉडकास्ट साइट 'विदेह रेडियो', पहिल बेर एक सँ अधिक लिपि मे कोनो मैथिली पत्रिका विदेह, ब्रेल लिपि मे

मैथिलीक पहिल पोथी समेत अनेकानेक उत्कृष्ट कार्य निरंतर करैत आबि रहल छथि। हिनकर समस्त कार्य एक सँ बढ़ि एक अनमोल रत्न जँका हिनकर मुकुट कैँ सुशोभित क' रहल अछि। एखन त' बहुत किछु योजना छन्हि आ बिना थकने ई माँ मैथिलीक सेवा मे अहर्निश लागल छथि एवं लागल रहताह। माँ मैथिलीक संरक्षण एवं संवर्धन हेतु हिनकर भगीरथ प्रयास लेल हिनका प्रति अपन मोनक उद्गार व्यक्त करबाक सौभाग्य आखिर हम कोना त्यागि सकैत छलहुँ?

संपादकीय टिप्पणी- शुरूआती समयमे Kindle (किंडल)पर पोथी विदेह द्वारा देल गेल रहै जाहिमे जगदीश प्रास मंडल आ राजदेव मंडलजीक पोथी रहनि। मुदा तकर बाद विदेह Kindle पर आन पोथी नै देलकै कारण समय केर कमी छै। बीच-बीचमे कोनो पोथी एखनो दऽ देल जाइत छै। प्रसंगवश पाठक लग ईहो सूचना रहबाक चाही जे Kindle पर पोथी देबाक लेल भारतमे किछुए भाषा छै जाहिमे मैथिली नै छै। Kindle पर हिंदी छै से चाहे विदेह द्वारा शुरूमे पोथी देल गेल हो वा कि एहन कियो Kindle पर पोथी दैत होथि से हिंदी भाषा कहि कऽ दैत छथिन। मानि लिअ जहिया Kindle कैँ पता लगतै जे ई हिंदी भाषा नै छै ओ ओकरा हटा देतै। एकटा ईहो कारण छै जे विदेह लगातार पोथी किंडलपर नै देलकै।

मैथिली वेब पत्रिकारिता केर नव आयाम दैत गजेन्द्र ठाकुर

मुकेश दत्त

बात 2010 केर अछि हमर पिताजी कर्णामृत आ मिथिलांगन पत्रिका बाँटबा लेल दिल्ली स्थित किछु मैथिलजन ओहिठाम गेल छलाह (कारण कर्णामृत पत्रिका दिल्लीमे वितरण हेतु हमरा ओहिठाम आबैत छल आ मिथिलांगन पत्रिकाक वितरण व्यवस्था पिताजी स्वयं देखैत छलाह)। एहि क्रममे ओ पहिल बेर गजेन्द्र ठाकुर जीसँ मिललाह आ घुरैत काल हुनका दिससँ हमरा लेल उपहार स्वरूप किछु पोथी लेने एलाह। जाहिमे प्रीति ठाकुर, जगदीश प्रसाद मण्डल आ स्वयं गजेन्द्र जीक किछु पोथीक संग विदेहक किछु पोथी छल, ओकर बाद ई क्रम लागल रहल। एहि पोथीसँ हमरा मैथिली साहित्यक आन विधा, व्याकरण आ मैथिली वेब पत्रकारिताक जानकारी मिलल। आभार श्रीमान गजेन्द्र ठाकुर जीक।

गजेन्द्रजीक जन्म बिहारक भागलपुरमे 30 मार्च 1971 मे कृपानन्द ठाकुर आ लक्ष्मी ठाकुरक घरमे भेल। ओना मूल गाम झंझारपुर लगीच मेंहथ, छैन्ह। फाइनेन्ससँ एम.बी.ए., सी.आइ.सी., सी.एल.डी., कोविद। बहुभाषाविद् ठाकुरजीक कार्यक्षेत्र आ काज एतेक विस्तृत अछि जे ओकरा एक लेखमे

पूर्ण नहि कएल जा सकत आ हम कयौ नै पायब। मुख्य रूपसँ इतिहासकार, गजलकार, नाटककार, शिक्षाविद्, विदेह (पहिल मैथिली अन्तर्राष्ट्रीय पाक्षिक ई-पत्रिका)क प्रधान संपादक सहित अनेको वेबसाइटक संचालक आ पथप्रदर्शक छथि। मिथिलाक पञ्जी प्रबन्धपर हिनका द्वारा कएल काज जीनोम मैपिंग (450 ए.डी. सँ 2009 ए.डी.) एकटा माइल स्टोन सिद्ध भेल, जकर चर्चा चहुँदिस होइत रहल अछि। पञ्जी प्रबंधन पर हिनक विशेष काज कएल अछि, यथा -

1. पञ्जी (मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र)
2. दूषण पञ्जी
3. मोदानन्द झा शाखा पञ्जी
4. मंडार- मरड़े कश्यप-प्राचीन
5. प्राचीन पञ्जी (लेमीनेट कएल)
6. उतेढ़ पञ्जी
7. पनिचोभे बीरपुर
8. दरभंगा राज आदेश उतेढ आदि
9. छोटी झा पुस्तक निर्देशिका
10. पत्र पञ्जी
11. मूलग्राम पञ्जी
12. मूलग्राम परगना हिसाबे पञ्जी
13. मूल पञ्जी -2
14. मूल पञ्जी -3

15. मूल पञ्जी -4
16. मूल पञ्जी -5
17. मूल पञ्जी -6
18. मूल पञ्जी -7

एतेक काज कऽ मिथिला-मैथिलीकेँ धन्य करयवाला ठाकुरजीक एहिठाम हम जाहि काजक विशेष उल्लेख करय चाहब ओ अछि हिनक तिरहुता आ कैथी यूनीकोडक विकासमे योगदान, मैथिली भाषामे अंतर्जाल आ संगणकक शब्दावलीक विकास, मैथिली विकीपीडियाक स्थापना अओर गूगल मैथिली ट्रान्सलेटमे योगदानसँ शब्दकोषक वृहत संकलन ओ प्रकाशन। संगहिं हिनका माध्यमे मात्र दशक भरिमे लगभग 400 नवलेखक आ कतिआएल लेखक आगाँ अएलाह। ओना हिनक विशद परिचयकेँ पाठकवृंद विकीपीडिया पर पढ़ि सकैत छथि।

भारतमे इंटरनेट 15 अगस्त 1995मे आ मैथिली भाषाक इंटरनेट पर उपस्थिति 2000 ई. मे भेल मानल जाइत अछि। लगभग 5 बर्खक बाद मैथिलीमे इंटरनेटक क्रांति आयल जकर श्रेय 'गजेन्द्र ठाकुर' जीकेँ जाइत छैन्ह। गजेन्द्र ठाकुरजी याहूसिटीजपर बहुत रास मैथिलीक साइट बनेने छलाह, इंटरनेटपर ई मैथिलीक पहिल उपस्थिति छल। याहूसिटीज बंद भेलाक बाद 2004मे एहिनामसँ ठाकुर जी द्वारा ब्लाग बनाएल

गेल आ जनवरी 2009मे एकरा विदेहक संग जोड़ि देल गेल जतय वर्तमान धरि विदेहक सभ अंक प्रकाशित अछि। मैथिलीकेँ डिजिटलीकरणमे हिनक योगदान (विदेहक माध्यमे) देखल जा सकैत अछि, जाहि आधार पर हिनका मैथिली वेब पत्रकारिताक जनक आ पोषक कहल जा सकैत अछि। वेब पत्रकारिता पर हिनक कएल काजकेँ आशीष अनचिन्हार जीक नव प्रकाशित पोथी ‘मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास’ सँ पूर्ण रूपेण जानल जा सकैत अछि।

पञ्जी प्रबंधक प्रकाशन बहन्ने श्रुति प्रकाशन एवं नागेद्र कुमार झाक चर्चा

आशीष अनचिन्हार

जेना कि हम पहिने सूचित केने छी जे गजेन्द्र ठाकुर (क्रियेटिभ आइडिया) एवं नागेन्द्र कुमार झा (संसाधन+टेक्निकल एप्रोच) केर संयुक्त प्रयास केर प्रतिफल अछि "श्रुति प्रकाशन"। श्रुति प्रकाशन (Shruti Publication) मैथिलीक पहिल मानक प्रकाशक अछि। मानक प्रकाशक माने जे कि बिना पाइ लेने पोथी प्रकाशित करै छै आ ओइ के बाबजूद कापीराइट लेखके लग रहैत छनि। एक-दू पोथीमे असावधानीवश कापीराइट "श्रुति प्रकाशन" लग छपि गेल रहै। ओहन लेखक गजेन्द्र ठाकुर लग अपन कापीराइट लेल संपर्क कऽ ओकरा अपना नामे आम प्रकाशनसँ प्रकाशित कऽ लेने छथि।

श्रुति प्रकाशन किए? पहिनेसँ मैथिलीमे तीन तरहक प्रकाशन सक्रिय अछि-

1) लेखक अपन पोथी अपने पाइसँ छपबै छथि आ प्रकाशकमे अपने कोनो नाम दऽ दै छथि। कापीराइट लेखकक हिसाबसँ होइ छै।

2) लेखक अपन पोथी अपन पाइसँ छपबै छथि, प्रकाशक दोसर होइ छै। कापीराइट लेखकक हिसाबसँ होइ छै।
3) लेखककेँ पोथी बदला किछु टका दऽ देल जाइत छनि मुदा कापीराइट प्रकाशकक रहै छै।

एहि तीनू तरहक प्रकाशन तरीकामे मुँहगरहा सभ आगू रहैए। जिनकर जते पैरवी, पाइ, संबंध तिनकर पोथी खूब बजारमे भेटत। मुदा जकरा लग ने पाइ छै आ ने पैरवी तकर पोथी कोना छपतै आ एही विचारक संग शुरू भेल श्रुति प्रकाशन जे बिना पाइ लेने पोथी छापै छै आ कापीराइट लेखक लग रहै छै।

श्रुति प्रकाशनक इतिहास-श्रुति प्रकाशनसँ पहिल पोथी 2008मे प्रकाशित भेल जे कि डॉ. उदय नारायण सिंह नचिकेता रचित नाटक "नो इन्ट्री: मा प्रविश" छल।

श्रुति प्रकाशनक प्रकाशन-एखन धरि श्रुति प्रकाशनसँ कुल 100सँ बेसी पोथी छपि चुकल अछि। जाहिमे बहुत रास पोथी लेखक केर पहिल पोथी छलनि। किछु पोथी अंग्रेजी भाषामे सेहो अछि जे कि प्रायः मिथिलाक इतिहास, मैथिली साहित्यिक इतिहाससँ संबंधित अछि। मैथिलीक पोथीक तिरहुता लिपि आ ब्रेल लिपिमे अनुवाद सेहो श्रुति प्रकाशनसँ प्रकाशित भेल अछि। एकर अतिरिक्त विदेह-सदेह सेहो दस खंडमे प्रकाशित भेल

अछि। एहि क्रममे हम सभसँ पहिने पञ्जी प्रबंधपर चर्चा करब। पञ्जी प्रबंध दूनू भाग केर प्रकाशनमे कुल खर्चा 11-12 लाख भेल छल (2009सँ लऽ 2012 धरिमे)। एकर पहिल खंड केर मूल्य 5000 आ दोसर खंड केर मूल्य-12500 राखल गेल। कुल दू-दू सौ प्रति छपल आ 150-150 कॅापी पञ्जीकार विद्यानंद झाजीकेँ देल गेलनि जकर ओ अपन बेचि सकै छलाह आ से ओ बेचलाहो। बाँकी बचल 50-50 कॅापीमेसँ भारतक 25-30 प्रतिष्ठित पुस्तकालयमे देल गेल आ शेष गजेन्द्र ठाकुरजी लग बाँचल छनि।

एकर अतिरिक्त आन पोथी सभमे लगभग 17000 हजार प्रति पोथीक खर्चा एलै। माने जँ मोटका पोथी सभकेँ छोड़ि दी तऽ लगभग 16-17 लाख टका केर आन पोथी सभ भेल। मोटा-मोटी 30 लाख टका केर पोथी प्रकाशित भेलै श्रुति प्रकाशनसँ आ से देलाह नागेन्द्र कुमार झा। पोथीक लिस्ट एहि लेखक अंतमे भेटत।

आब अहाँ सभ सोचैत हेबै जे एहिमे नागेद्र कुमार झाकेँ रिटर्न कतेक भेलनि तऽ से हम अहाँ सभपर छोड़ै छी। मैथिली पोथीक जे बजार छनि ताहिमे एकटा मानक प्रकाशक (मुद्रक नै) जतेक रिटर्न जनता लग सबूत सहित देखा सकताह सएह रिटर्न श्रुति

प्रकाशनकेँ मानि सकैत छी।

हँ, एकटा रिटर्न ई मानि सकैत छी जे मैथिलीमे दलित लेखक केर, गरीब लेखक केर पोथी नै छलै से मैथिलीमे एलै आ तेना एलै जे मैथिलीक एकटा अलगे संसार रचा गेलै। पहिनेहो कहने छी आ एहू ठाम कहि रहल छी हमरो पहिल पोथी अही "श्रुति प्रकाशन"सँ 2011 मे प्रकाशित भेल। अहाँ सभ लिस्ट देखि जानि सकै छी जे कोन-कोन लेखक केर पहिल पोथी एहि प्रकाशनसँ प्रकाशित भेलै। एकटा रिटर्न ईहो मानि सकैत छी जे सुभाष चंद्र यादव केर प्रकाशन एवं लेखकीय ब्लौककेँ मात्र श्रुति प्रकाशन तोड़ि सकल। सुभाष चंद्र यादवजीक पहिल पोथी 'घरदेखिया' 1983 ई. मे मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित भेलै आ तकर बाद सीधे हिनक दोसर पोथी 'बनैत-बिगड़ैत' 2009 ई. मे, अर्थात 26-27 बर्ख बाद। की एहि 26-27 बर्खमे सुभाषजी रचना लिखबे नहि केलाह वा कि मैथिलीमे कियो सुभाषजीकेँ कतिएबाक लेल व्यग्र छल? जे-से एहि दोसर पोथीक बाद सुभाष चंद्रजीक साहित्यिक सक्रियता एहन बढ़ल जे अहाँ सभहक समक्ष अछि। श्रुति प्रकाशन केर संपूर्ण सूची (एहि सूचीमे देल गेल पोथी सभमे लिंक जानि-बूझि कऽ नहि देल गेल अछि। एहि उम्मेदसँ जे पाठक कनेक मेहनति कऽ विदेहक साइटपर जेता एवं पोथीकेँ ताकि कऽ पढ़ताह)-

01. नो इन्ट्रीः मा प्रविश (नाटक), लेखक-डॉ. उदय नारायण सिंह नचिकेता, प्रकाशन बर्ख- 2008, मूल्य-75, ISBN NO.978-81-907729-0-7 (hardbound), ISBN NO.978-81-907729-1-4 (paperback)

(ऊपरमे जाहि हिसाबें पोथीक विवरण अछि पाठक ताही हिसाबें नीचा देल आनो पोथी लेल मानथि. किछुमे किछु विवरण नहियो भेटि सकै छनि पाठककेँ)।

02. गोनू झा आ आन मैथिली चित्र-कथा- प्रीति ठाकुर 2008 100 ISBN NO.978-81-907729-9-0

03. कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक (उपन्यास, कथा, कविता आदि) गजेन्द्र ठाकुर 2009 100 ISBN NO.978-81-907729-7-6

04. जीनोम मैपिंग (मिथिलाक पञ्जी -प्रबंध) भाग-1- गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा 2009 5000 ISBN NO.978-81-907729-6-9

05. नताशा (कॉमिक्स) देवांशु वत्स 2009 150 ISBN NO.978-93-80538-04-4

06. बनैत-बिगड़ैत (कथा-संग्रह) सुभाष चन्द्र यादव 2009 100 ISBN NO.978-81-907729-8-3

07. गामक जिनगी (कथा संग्रह) जगदीश प्रसाद मंडल 2009 200 ISBN NO.978-81-907729-4-5

08. मौलाइल गाछक फूल (उपन्यास) जगदीश प्रसाद मंडल 2009 250 ISBN NO.978-93-80538-02-0

09. जिनगीक जीत (उपन्यास) जगदीश प्रसाद मंडल 2009 250 ISBN NO.978-93-80538-10-5

10. उत्थान-पतन (उपन्यास) जगदीश प्रसाद मंडल 2009 250 ISBN NO.978-93-80538-11-2

11. मिथिलाक बेटी (नाटक) जगदीश प्रसाद मंडल 2009 160 ISBN NO.978-93-80538-03-7

12. भाग रौ आ बलचन्दा (नाटक) विभा रानी 2009 100 ISBN NO.978-93-80538-01-3

13. हम पुछैत छी (कविता संग्रह) विनीत उत्पल 2009 160 ISBN NO.978-93-80538-05-1

14. मैथिली चित्रकथा -प्रीति ठाकुर 2009 100 ISBN NO.978-93-80538-13-6

15. मैथिली भाषा साहित्य: 20म शताब्दी (आलोचना) प्रेम शंकर सिंह - 2009 400 ISBN NO.978-93-80538-12-9

16. मैथिली चित्रकथा- नीतू कुमारी 2009 100 ISBN NO.978-93-80538-14-3

17. बांगक बंगौड़ा (बाल पद्य संग्रह) गजेन्द्र ठाकुर 2009 50

ISBN NO.978-93-80538-61-7

18. मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोश खण्ड-1 , नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा 2009 500 ISBN NO.978-81-907729-2-1

19. मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोश खण्ड -2 , नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा 2009 500 ISBN NO.978-81-907729-2-1

20. विदेह: सदेह: 1 (Devanagari) (विदेह ई-पत्रिकाक 1 सँ 25 अंकसँ बीछल) सं. गजेन्द्र ठाकुर 2009 100 ISBN NO.978-81-907729-5-2 ISSN 2229-547X VIDEHA

21. विदेह: सदेह: 1 (Tirhuta) (विदेह ई-पत्रिकाक 1 सँ 25 अंकसँ बीछल) सं. गजेन्द्र ठाकुर 2009 200 ISBN NO.978-81-907729-5-2 ISSN 2229-547X VIDEHA

22. त्वंचाहंच आ असंजाति मन (गीत-प्रबन्ध) गजेन्द्र ठाकुर 2009 50 ISBN NO.978-93-80538-20-4

23. सहस्त्रबाढ़नि (उपन्यास) गजेन्द्र ठाकुर 2009 50 ISBN NO.978-93-80538-16-7

24. सहस्त्राब्दीक चौपड़पर (पद्य संग्रह) गजेन्द्र ठाकुर 2009 50 ISBN NO.978-93-80538-17-4

25. गल्पगुच्छ (कथा संग्रह) गजेन्द्र ठाकुर 2009 50 ISBN NO.978-93-80538-18-1

26. संकर्षण (नाटक) गजेन्द्र ठाकुर 2009 50 ISBN NO.978-93-80538-19-8

27. प्रबन्ध- निबंध-समालोचना- गजेन्द्र ठाकुर 2009 50 ISBN NO.978-93-80538-15-0

28. बालमंडली/ किशोर-जगत (बालनाटक–कथा- कविता)- गजेन्द्र ठाकुर 2009 50 ISBN NO.978-93-80538-21-1

29. विदेह कथा 2009-10 (कथा संग्रह)[विदेह:सदेह;4] (विदेह ई-पत्रिकाक 26 सँ 50 अंकसँ बीछल) सं. गजेन्द्र ठाकुर 2010 100 ISBN NO.978-93-80538-07-5 ISSN 2229-547X VIDEHA

30. विदेह पद्य 2009-10 (कविता संग्रह)[विदेह:सदेह:3] (विदेह ई-पत्रिकाक 26 सँ 50 अंकसँ बीछल) सं. गजेन्द्र ठाकुर 2010 100 ISBN NO.978-93-80538-08-2 ISSN 2229-547X VIDEHA

31. विदेह प्रबन्ध-समालोचना 2009-10 (निबंध संग्रह)[विदेह:सदेह:2] (विदेह ई-पत्रिकाक 26 सँ 50 अंकसँ बीछल) -सं. गजेन्द्र ठाकुर 2010 100 ISBN NO.978-93-80538-09-9 ISSN 2229-547X VIDEHA

32. अक्षरमुष्टिका (बाल खिस्सा -पिहानी संग्रह) गजेन्द्र ठाकुर

2010 50 ISBN NO.978-93-80538-60-0
33. बजन्ता-बुझन्ता (विहनि कथा संग्रह)-जगदीश प्रसाद मंडल, 2010 100 ISBN NO.978-93-80538-89-1
34. तरेगन (बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह)-जगदीश प्रसाद मंडल 2010 100 ISBN NO.978-93-80538-25-9
35. जीवन-संघर्ष (उपन्यास)-जगदीश प्रसाद मंडल 2010 100 ISBN NO.978-93-80538-27-3
36. जीबन-मरन (उपन्यास)-जगदीश प्रसाद मंडल 2010 100 ISBN NO.978-93-80538-26-6
37. मिथिलाक संस्कार/विधि-व्यवहार गीत आ गीतनाद -(गीत संकलन) उमेश मंडल ISBN NO.978-93-80538-34-1
38. प्रबन्ध- निबंध-समालोचना भाग दू (कुरुक्षेत्रम अन्तर्मनक-2)- गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-54-9
39. सहस्त्रशीर्षा (उपन्यास) गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-29-7
40. सहस्त्रजित् (पद्य संग्रह) गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-59-4
41. शब्दशास्त्र म् (कथा-गल्प संग्रह) गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-52-5
42. उल्कामुख (नाटक) गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-50-1

43. जलोदीप (बाल नाटक) गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-53-2

44. नाराशंसी (गीत-प्रबन्ध) गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-58-7

45. पुरुष-परीक्षा (मैथिली चित्रकथा) प्रीति ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-49-5

46. मिथिलाक लोकदेवता -प्रीति ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-24-2

47. मिथिलाक इतिहास- प्रोफेसर राधाकृष्ण चौधरी ISBN NO.978-93-80538-28-0

48. अम्बरा (कविता संग्रह)- राजदेव मंडल ISBN NO.978-93-80538-30-3

49. निश्तुकी (कविता संग्रह)- उमेश मण्डल ISBN NO.978-93-80538-37-2

50. बेटीक अपमान आ छीनरदेवी (नाटक)-.बेचन ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-35-8

51. अनचिन्हार आखर (मैथिली गजल संग्रह)- आशीष अनचिन्हार ISBN NO.978-93-80538-48-8

52. कलानिधि (कविता संग्रह)- कालीकान्त झा बूच ISBN NO.978-93-80538-31-0

53. समय साक्षी थिक (विहनि कथा संग्रह)- अनमोल झा ISBN NO.978-93-80538-47-1

54. पंचवटी (एकांकी-संचयन) - जगदीश प्रसाद मंडल ISBN NO.978-93-80538-41-9
55. अर्द्धांगिनी..सरोजनी.. सुभद्रा.. भाइक सिनेह इत्यादि (लघुकथा-संग्रह) - जगदीश प्रसाद मंडल ISBN NO.978-93-80538-42-6
56. कम्प्रोमाइज (नाटक) - जगदीश प्रसाद मंडल ISBN NO.978-93-80538-44-0
57. झमेलिया वियाह (नाटक) - जगदीश प्रसाद मंडल ISBN NO.978-93-80538-45-7
58. इन्द्रधनुषी अकास (पद्य संग्रह) - जगदीश प्रसाद मंडल ISBN NO.978-93-80538-46-4
59. धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ (गजल संग्रह)- गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-51-8
60. क्षणप्रभा (कविता संग्रह)- शिव कुमार झा "टिल्लू" ISBN NO.978-93-80538-32-7
61. अंशु (समालोचना)- शिव कुमार झा "टिल्लू" ISBN NO.978-93-80538-33-4
62. रथक चक्का उलटि चलै बाट (पद्य संग्रह)- रामविलास साहु ISBN NO.978-93-80538-69-3
63. वर्णित रस (पद्य संग्रह)- उमेश पासवान ISBN NO.978-93-80538-71-6

64. हमरा बिनु जगत सुन्ना छै (गीत आ झारू संग्रह)- रामदेव प्रसाद मण्डल झारूदार ISBN NO.978-93-80538-70-9

65. शंभुदास (तीनटा दीर्घ कथा मइटुग्गर, शंभुदास आ फाँसी)- जगदीश प्रसाद मंडल ISBN NO.978-93-80538-74-7

66. गीतांजलि (गीत संग्रह)-जगदीश प्रसाद मंडल ISBN NO.978-93-80538-72-3

67. राति-दिन (कविता संग्रह)-जगदीश प्रसाद मंडल ISBN NO.978-93-80538-73-0

68. प्रतीक (विहनि कथा संग्रह)- मुन्नाजी ISBN NO.978-93-80538-75-4

69.माँझ आंगनमे कतिआएल छी (गजल संग्रह)- मुन्नाजी ISBN NO.978-93-80538-76-1

70.हम पुछैत छी (साक्षात्कार)- मुन्नाजी ISBN NO.978-93-80538-77-8

71. विदेह कोष मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोष- गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO. 978-93-80538-22-8

72. जीनियोलोजिकल मैपिंग (मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्ध)- भाग-2- गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा ISBN NO. 978-93-80538-62-4

73. जगदीश प्रसाद मण्डल (बायोग्राफी)- गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO. 978-93-80538-68-6

74. हमर टोल (उपन्यास) -राजदेव मण्डल ISBN NO.

978-93-80538-78-5
75. सतभैंया पोखरि (लघु कथा संग्रह)-जगदीश प्रसाद मंडल ISBN NO.978-93-80538-80-8
76. विदेह सदेह-5 (मैथिली विहनि कथा) (विदेह ई-पत्रिकाक 51 सँ 100 अंकसँ बीछल) - सं. गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-63-1 ISSN 2229-547X VIDEHA
77. विदेह सदेह-6 (मैथिली लघु कथा) (विदेह ई-पत्रिकाक 51 सँ 100 अंकसँ बीछल) - सं. गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-64-8 ISSN 2229-547X VIDEHA
78. विदेह सदेह-7 (मैथिली पद्य) (विदेह ई-पत्रिकाक 51 सँ 100 अंकसँ बीछल) - सं. गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-65-5 ISSN 2229-547X VIDEHA
79. विदेह सदेह-8 (विदेह नाट्य उत्सव- मैथिली समानान्तर रंगमंच) (विदेह ई-पत्रिकाक 51 सँ 100 अंकसँ बीछल) - सं. गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-66-2 ISSN 2229-547X VIDEHA
80. विदेह सदेह-9 (विदेह शिशु उत्सव- शिशु, बाल आ किशोर साहित्य) (विदेह ई-पत्रिकाक 51 सँ 100 अंकसँ बीछल) - सं. गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-67-9 ISSN

2229-547X VIDEHA

81. विदेह सदेह-10 (मैथिली प्रबन्ध, निबन्ध आ समालोचना) (विदेह ई-पत्रिकाक 51 सँ 100 अंकसँ बीछल) - सं. गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-79-2 ISSN 2229-547X VIDEHA

82. रिहर्सल (नाटक) रवि भूषण पाठक 2012 ISBN NO.978-93-80538-43-3

83. नव अंशु (गजल-हजल, रुबाइ संकलन) अमित मिश्र 2012 ISBN NO.978-93-80538-82-2

84. मोनक बात (गजल-हजल-बाल गजल-रुबाइ-कता संकलन) चन्दन कुमार झा 2012 ISBN NO.978-93-80538-81-5

85.गंगा ब्रिज (नाटक)- गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-92-1

86.बाप भेल पित्ती आ अधिकार- बेचन ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-91-4

87. विदेह सदेह-11 (विदेह ई-पत्रिकाक 101 सँ 110 अंक धरिक बीछल रचना) - सं. गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-86-0 ISSN 2229-547X VIDEHA

88. कियो बूझि नै सकल हमरा (गजल, रुबाइ आ कता संकलन) ओम प्रकाश 2012 ISBN NO.978-93-80538-87-7

89. तीन जेठ एगारहम माघ (गीत संग्रह)-जगदीश प्रसाद मंडल ISBN NO.978-93-80538-88-4

90.विदेह सदेह-12 (विदेह ई-पत्रिकाक 111 सँ 115 अंक धरिक बीछल रचना) - सं. गजेन्द्र ठाकुर ISBN NO.978-93-80538-90-7 ISSN 2229-547X VIDEHA

91. सहस्त्रबाढ़नि (उपन्यास) गजेन्द्र ठाकुर 2009 100 ISBN NO.978-93-80538-00-6 (पहिल मैथिली ब्रेल पोथी)

92. पञ्जी ताड़पत्र गजेन्द्र ठाकुर 2009 1000 जीनोम मैपिंग (मिथिलाक पञ्जी -प्रबंध) भाग-1 ISBN NO.978-81-907729-6-9 आ जीनियोलोजिकल मैपिंग (मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्ध)- भाग-2 ISBN NO. 978-93-80538-62-4 क अनुलग्नक

93. खाली कमरा (कथा-संग्रह)- प्रसन्न कुमार आचार्य ISBN NO.978-93-80538-40-2

94. उन्मुक्त (कविता-संग्रह)- संतोष कुमार झा ISBN NO.978-93-80538-85-3

ENGLISH TITLES

95. VIDEHA DICTIONARY English-Maithili Dictionary-2012- Gajendra Thakur ISBN

NO.978-93-80538-23-5

96. Learn Mithilakshar - Gajendra Thakur ISBN NO.978-93-80538-55-6

97. Learn Braille through Mithilakshar - Gajendra Thakur ISBN NO.978-93-80538-56-3

98. Learn International Phonetic Script through Mithilakshar - Gajendra Thakur ISBN NO.978-93-80538-57-0

99. A Survey of Maithili Literature- Radhakrishna Chaudhary ISBN NO.978-93-80538-36-5

100. English-Maithili Dictionary Vol.-1 (COMPUTER DICTIONARY) Gajendra Thakur, Nagendra Kumar Jha, Panjikar Vidyanand Jha 2009 500 ISBN NO.978-81-907729-3-8

बहुविधाविध रचनाकार युवा पत्रकार श्री गजेन्द्र ठाकुरजी सँ युवा प्रतिनिधि बीहनि कथाकार एवं समीक्षक मुन्नाजीसँ भेल गप्प सप्प

मुन्नाजी: गजेन्द्र जी नमस्कार। युवावर्गमे अहाँक कार्य देखि आह्लादित होइत रहलौं अछि, ताहि हेतु अहाँसँ ऐ पर विस्तृत चर्चा करऽ चाहब। गजेन्द्रजी अहाँक बेशी रहनाइ आ शिक्षा मिथिलासँ बाहर भेल। उच्च शिक्षाक माध्यम अंग्रेजी रहल तखन मिथिला/ मैथिलीसँ एतेक लगाव कोना?

गजेन्द्र ठाकुर: बच्चामे 1979-80मे चौथा-पँचमा हम अपन गामक प्राइमरी स्कूलसँ केने छी। हमर पिताजी बिहार सरकारमे कार्यपालक अभियन्ता रहथि जखन कार्यकालहिमे हुनकर मृत्यु भऽ गेलन्हि। मुदा ई गप ओहिसँ पुरान अछि, ओहि समयमे हमर पिताजी सहायक अभियन्ता रहथि आ पटना-हाजीपुरक गंगापुल बनि रहल रहए। पिताजी ईमानदार रहथि से ठिकेदार सभ आ अभियन्ता सभ रोलरसँ पिचबाक धमकी देने रहन्हि, बच्चा सभकेँ मारबाक धमकी देने रहन्हि। अपने तँ ओ पलायन नहि केने रहथि मुदा हमरा सभकेँ गाम पठा देने रहथि। भऽ सकैए यएह डेढ़ सालक गामक निवास मैथिलीसँ आ मिथिलासँ हमर लगावक कारण रहल हुअए। फेर बादोमे सालमे दू बेर पिताजीक संग गाम

जाइते छलहुँ, एक बेर होलीमे आ दोसर बेर दुर्गापूजामे। पिताजीक मुँहे एक बेर सुनने छलहुँ जे एहि जन्ममे तँ नग्रमे रहि रहल छी मुदा अगिला सात जनम गाम नै छोड़ब।

मुन्नाजी: पहिल बेर रचनाक प्रेरणा कोना/ कतऽसँ आ कहिया भेल। पहिल रचना (लिखल) कोन छल आ पहिल प्रकाशित रचना कोन (विधा सहित कही) कतऽ कहिया छपल।

गजेन्द्र ठाकुर: वएह 1979-80क गप अछि। गामक स्कूलमे एकटा बाल नाटकक भार हमरा कान्हपर वीरभद्रजी नवका मास्टर साहेब आ बड़हराबला मास्टर साहेब देलन्हि। नाटकक पोथी कत्तऽ सँ भेटत? तँ दानवीर दधीची लिखलहुँ। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनकमे ई ढेर रास सुधारक संग प्रकाशित अछि 2009 ई। मे। 2000 ई। मे जे हम मैथिलीक देवनागरीक साइट याहूसिटीजपर बनेलहुँ ओहिसँ हमर पाण्डुलिपि टाइप भऽ अन्तर्जालपर नियमित रूपे आबए लागल, बादमे याहू अपन जियोसिटीज बन्न कऽ देलक मुदा 5 जुलाइ 2004 केँ "भालसरिक गाछ" नामसँ बनाओल हमर मैथिलीक अन्तर्जाल पहिल मैथिली उपस्थितिक रूपमे एखनो विद्यमान अछि। यएह भालसरिक गाछ 1 जनवरी 2008 सँ विदेह पाक्षिक ई-पत्रिकाक रूपमे नियमित रूपेँ आबि रहल अछि, आब तँ एकर

371 टा विदेह रूप आ 36 टा सदेह रूप आबि गेल छै। प्रिंट पत्रिका/ दैनिकक जतऽ धरि गप अछि तँ भारती-मंडन, समय साल, घरबाहर, अंतिका, आँकुर, पूर्वोत्तर मैथिल, जखन तखन, मिथिला डट कम (जनकपुर), परमेश्वर कापड़ि जीक पत्रिका (धुआ-धजा, जनकपुर), मिथिला समाद, मिथिला दर्शन आदिमे रचना सभ छपल अछि। भारती-मंडन लेल पूर्णियाँसँ हम रचना पठेने छलियनि 2001-02 मे केदार कानन/ तारानन्द झा “तरुण”केँ, जे बादमे छपबो कएल, ओहि कालमे हम सासुरमे रही एकटा दुर्घटनाक बाद, बैशाखीपर डेढ़ बरख धरि रही(2001-02)। भऽ सकैए ओहो कालावधि हमरा समय देलक आ हमर दिशा निर्धारित कएलक।

मुन्नाजी:एक संग एतेक विधामे रचना करबामे असोकर्ज नै होइछ? एक संग बहुविधाक संगोर प्रकाशित करबाक की उद्देश्य?

गजेन्द्र ठाकुर: एतेक विधा माने कतेक विधा? विधा तँ दुइये टा छैक गद्य आ पद्य। हमर कथा शब्दशास्त्रम् मे ढेर रास गीत छै। तस्कर कथा पञ्जी मे वर्णित तस्कर केशवक तहमे गेलाक उपरान्त फुराएल। आब पञ्जीक मिथिलाक्षरसँ देवनागरीमे लिप्यन्तरण नै करितहुँ तँ लैला-मजनू आ हीर राँझाक कोटिक

मैथिली प्रेमकथा मैथिलीमे नै अबितए। मैथिली अंग्रेजी डिक्शनरी रहै मुदा इंग्लिश-मैथिली डिक्शनरी नै रहै, से ओ बनएबाक क्रममे हम ब्लॉगकेँ जालवृत्त लिखै छी आ इन्टरनेटकेँ अन्तर्जाल, तँ से कोना होइतए, हमर विज्ञान कथा काल-स्थान विस्थापन, आ अन्तर्जाल आ प्रबन्धनपर आलेख, मैथिलीक लेल SWOT अनेलिसिस मैथिलीमे कोना लिखाइत? तँ सिद्ध भेल जे हमर गद्य-पद्य एक दोसराक लेल ऋणी अछि, हमर पाण्डुलिपिक लिप्यन्तरण/ अंकण आ शब्दकोषक निर्माण सेहो हमर गद्य-पद्यक विशिष्टतामे योगदान देलक। हमर मैथिली-संस्कृत शिक्षाक कार्य मूल संस्कृत कथा-काव्यक अन्वेषणमे हमर सहायता केलक, आ ताहि कारणसँ “दानवीर दधीची”क पौराणिक दन्तकथा जाहिमे दधीची हड्डी दान दै छथि केँ हम नै मानलहुँ आ वैदिक कथा मानलहुँ जाहिमे आश्विनौ हुनका (दधीचीकेँ) घोड़ाक मुँह लगा दै छथि आ ओहि गरदनिकेँ इन्द्र काटै छथि आ फेर आश्विनौ दधीचीक असल मुँह लगा दै छथि, आ ओहि काटल घोड़ाक मुँहक हड्डीसँ इन्द्रक हथियार तैयार होइ छै, दधीचीक हड्डीसँ नै। त्वञ्चाहञ्च (मूल संस्कृत महाभारतपर आधारित)आ असञ्जाति मन (संस्कृतमे अश्वघोषक बुद्धचरितपर आधारित) ई दुनू गीत प्रबन्धमे आएल मूल विशिष्टता सेकेन्डरी सोर्सक अध्ययनसँ सम्भव नै छै, आ नहिये दूर्वाक्षत मंत्रक वा आन वैदिक युगक कथ्यक विश्लेषण (ग्रिफिथक अंग्रेजी अनुवादक सेकेन्डरी सोर्सक विपरीत) बिना मूल अर्थ बुझने सम्भव, से

मायानन्द मिश्रक प्रथम शैल पुत्री च, मंत्रपुत्र, पुरोहित आ स्त्रीधनक समीक्षामे सेहो काज आएल। तँ हमर संस्कृत-मैथिली शिक्षा एतए काज आओल। हमर दर्शन शास्त्रक मूल वाचस्पति/ कुमारिल/ मंडनक ओ भामती आ ब्रह्मसिद्धिक दार्शनिक तत्व शब्दशास्त्रम् मे आओल। तँ हमर अंग्रेजी साहित्यक शिक्षा हमर आलेख मैथिली साहित्यपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभावक आधार बनल। हमर ऋगवैदिक संस्कृत आ अवेस्ता क मूल अध्ययन मैथिलीक गजलशास्त्रक आलेखमे प्रयुक्त भेल तँ हैकू आ हैबून-मूल जापानी काव्यशास्त्रक अनुवादक आधारसँ विशिष्टता प्राप्त कऽ सकल। सहस्रबाढ़निक ब्रेल वर्सन, कैथी आ मिथिलाक्षर यूनीकोडक निर्माणमे योगदान हमर कम्प्यूटर विशेषज्ञताक बिना सम्भव नै छल तँ हमर ’लेबर इन डेवेलपमेन्ट’क कोर्स हमर बाल-श्रमपर आधारित बाल कविता लेल अपरिहार्य छल।

एक संग ई सभटा रचना हार्डबाउन्डमे कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक नामसँ एहि द्वारे प्रथमे-प्रथम छपल कारण हम एकरा परिवारक सभ सदस्य लेल लिखने छी। शिशु/ बाल साहित्य सेहो एहिमे अछि कारण छोट बच्चा स्वयं ओ रचना नै पढ़त वरन् अहाँ ओकरा पढ़ि कऽ सुनेबै, कविता यादि करेबै, अंकिता वर्णमाला शिक्षा देखू, नाटक करबबियौ। मूड अछि तँ कथा पढ़ू, नै तँ कविता-समीक्षा/ नाटक पढ़ू खेलाउ। महाभारत/ बुद्धचरित पढ़बाक पलखति नै अछि तँ त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन

पढ़ू। मोन अछि तँ उपन्यास पढ़ू आ नै तँ दीर्घकथा-विहनि कथा पढ़ू। बादमे ई सातो खण्ड पेपरबैकमे सेहो सात खण्डमे आएल। हार्डबौन्डक हजार कॉपी तँ गोट-गोट बिका गेलै।

मुन्नाजी:एक संग बहुविधाक रचना प्रकाशनसँ अहाँक अपन अस्तित्वकेँ खतरा नै बुझाइत अछि? एहेन केलासँ भऽ सकैछ जे समीक्षक अहाँक कोनो मूल्यांकन नै कऽ सकैथ?

गजेन्द्र ठाकुर: मुदा से भेलै नै। कारण लीखपर चलैसँ हमरा परहेज नै अछि जे ओ कत्तौ धरि पहुँचाबए, आ नै तँ नव लीख बनेबामे सेहो कोनो असोकर्ज नै। कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक हमर 2009 धरिक समस्त कृतिक (पञ्जी आ डिक्शनरीकेँ छोड़ि जे अलगसँ प्रकाशित भेल) संकलन अछि। ई पाठक लेल लिखल गेल अछि, समीक्षकक लेल नै, मैथिलीक ओहेन समीक्षकक लेल नै जिनका मिथिलाक्षर नै अबैत छन्हि आ कम्प्यूटर इलिटेरेट छथि से पञ्जी आ कमप्यूटर/ प्रबन्धन विषयक आलेखक समीक्षा नै कऽ सकताह से हम बुझै छी, करबाको नै चाहियन्हि; ऋगवैदिक संस्कृतक ज्ञान नै छन्हि तँ हमर ताहि सम्बन्धी समीक्षापर ओ समीक्षा नै कऽ सकताह से हम बुझै छी, आ से करबाको नै चाहियन्हि। मुदा जाहिपर ओ कऽ सकै छथि ताहिपर करथु, कतेक समीक्षक केबो केलन्हि अछि, जेना प्रेमशंकर सिंह, शिव कुमार झा आ राजदेव मंडल। पक्ष-विपक्षमे सएसँ बेशी चिट्ठी

सेहो आएल अछि। मुदा जे पाठक छथि हुनकर प्रतिक्रिया आह्लादकारी अछि, प्रिंटक अतिरिक्त हजारसँ बेशी डाउनलोड विश्वभरिमे पसरल मैथिलीभाषी द्वारा हमर सभ पोथीक भेल अछि। बिना कोनो सरकारी साहित्यिक संस्थाक सहयोगसँ हमर उपन्यास सहस्रबाढ़निक अनुवाद अंग्रेजी, संस्कृत, तुलु, कन्नड़, मराठी आ कोंकणीमे कएल गेल। एहि उपन्यासकेँ ब्रेलमे लोक पढ़ि रहल छथि।

खिरदमंदों से क्या पुछूँ कि मेरी इब्तिदा क्या है
कि मैं इस फिक्र में रहता हूँ मेरी इन्तिहा क्या है,
(इकबाल)
(बुधियारसँ हम की पूछू जे हमर आरम्भ की अछि, हम तँ एहि चिन्तामे छी जे हमर ओरछोर की अछि।-इकबाल)
खुदी को कर बुलन्द इतना, के हर तकदीर से पेहले
खुदा बन्दे से खुद पूछे, बता तेरी रज़ा क्या है ?
(इकबाल)
(अपन निःस्वार्थताकेँ ओहि स्तर धरि लऽ जाउ जे ककरो भाग्य बनेबाक पहिने भगवानकेँ ओकरासँ ई पूछए पड़न्हि जे बता केहन भाग्य चाही तोरा।- इकबाल)

मुन्नाजी:अहाँ निश्शन रचनाकार आ समीक्षकक अतिरिक्त मैथिली पत्रिकाक एकटा आधार स्तम्भ भऽ देखार भेलौं

अछि। “विदेह ई पाक्षिक” प्रारम्भ करबाक विचार कोना भेल? आइ एकरा आ एकरा माध्यमेँ अपनाकेँ कतऽ पबै छी?

गजेन्द्र ठाकुर: मैथिली पत्रिका सभकेँ रचना पठाएब तँ दू बरखक उपरान्त नम्बर आएत, नहियो आएत। अतिथि सम्पादक रचना मंगबा कऽ गीड़ि गेलाह, सेहो उदाहाण अछि। नव रचनाकार हतोत्साहित रहथि। से विदेह प्रकाशनक नियमितता लऽ कऽ आएल, वितरणक समस्या एकरा नै रहै , कारण ई अन्तर्जालपर छल। भारत आ नेपालक मैथिली भाषीक बीचक जे बोर्डर छलै, देशक बोर्डर, से विदेह लेल नै छलै। भारतक नै वरन विश्वक बीच पसरल मैथिली भाषी मध्य विदेह लोकप्रिय भेल। मैथिलीमे पाठक नै छै, नीक लेखक नै छै, युवा लेखक नै छै, गएर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ- गएर सवर्ण लेखक नै छै, ई समस्त धारणा विदेह तोड़ि देलक। आइ धरि विदेह ई पत्रिकाकेँ 107 देशक 1,571 ठामसँ 51,077 गोटे द्वारा विभिन्न आइ।एस।पी। सँ 2,72,082 बेर देखल गेल अछि (गूगल एनेलेटिक्स डेटा, 2012 धरि)। विदेह: सदेह:1 मे 118 टा लेखक (18 बर्खसँ 88 बर्ख धरि) छलाह। विदेह मैथिलीक एकमात्र अन्तर्राष्ट्रीय शोध जर्नल अछि जकरा पेरिस स्थित अन्तर्राष्ट्रीय संस्था मान्यता देने छै। विदेह अही सभ उद्देश्यसँ शुरू भेल आ अपन सभटा उद्देश्य प्राप्त कएलक। मुदा एतेक भेलाक पश्चातो हम कहब जे ई

तँ एखन मात्र प्रारम्भ अछि।विदेहक कारणसँ बहुत गोटे नीक-अधलाह लोक भेटलाह, बेशी नीके। विदेहक कारणसँ हमरा पाठक भेटल, स्नेह भेटल। विदेहक कारणसँ एकटा दवाब रहैत अछि, रचना करबाक दवाब आ रचनाकारकेँ जोड़बाक दवाब।

मुन्नाजी: ब्राह्मण वर्ग अपन हितपूर्ति लेल मैथिलीक दुरुपयोग केलनि वा मैथिलीकेँ गरोसि गेला। गएर ब्राह्मण वर्ग निङ्घेस जकाँ टारि पलथी मारने रहला, एकर की कारण, ऐ सँ मैथिलीकेँ कतऽ धरि लाभ वा हानि भेलै?

गजेन्द्र ठाकुर: मैथिलीक दुरुपयोग वा कोनो भाषाक दुरुपयोग केना सम्भव अछि? ई तखने सम्भव अछि जखन लोकक आर्थिक दशा तेहन होइ जे ओ भोजन लेल झखैत हुअए वा सरकार ओकर शिक्षा-व्यवस्थामे दोसर भाषा घोसिया दइ, भारतमे हिन्दी आ नेपालमे नेपाली घोसियाओल गेल। ब्राह्मण वा कायस्थ-वर्ग शिक्षामे आगाँ छलाह (देशक दोसर भागक ब्राह्मण वा कायस्थसँ हम तुलना नै कऽ रहल छी- हुनका सभसँ तँ ई लोकनि बड्ड पछुआएल छथि।), माने मिथिलाक दोसर जातिसँ। से साहित्यमे सेहो यएह सभ अएलाह। ने मिथिलामे राममोहन राय भेलाह जे विधवा लेल लड़ितथि, ने गेब्रियल गार्सिया मार्क्विस भेलथि जे “ए हन्ड्रेड ईयर्स ऑफ सोलिट्यूड” लिखबा

लेल कार बेचि देलथि जे ओहि पाइसँ परिवारक साल भरिक खर्चा चलतन्हि आ ओहि अवधिमे ओ ई उपन्यास लिखताह! मुदा ई दुनू गप पूर्णतः सत्य नै अछि, बहुत गोटे अपन सर्वस्व बेचि मैथिली लेल झोकलन्हि, मुदा गुटबन्दीक कारण हुनकर चर्चा नै भेल। कतेक गोटे विवादमे घसीटल गेलाह तँ ओ तथाकथित पतनुकान लऽ लेलन्हि। पञ्जी मे कमसँ कम तीनटा सर्वस्वदाताक विवरण अछि जाहिमे एक गोटे अपन जीवनमे तीन बेर सर्वस्व दान केलन्हि। पञ्जी मे सैकड़ामे अन्तर्जातीय विवाहक विवरण अछि आ से ब्राह्मण आ दलितक बीच। तस्कर केशव राजाक निहुछल लड़कीसँ विवाह केलन्हि, लक्ष्मीश्वर सिंह किछु नै कऽ सकलाह। मुदा ई सभ दू साल पहिने धरि अभिलेखित नै भेल। 1942 ई।क आन्दोलनमे पंचानन झा आ पुरन मंडल झंझारपुरमे संगहि अपन बलिदान देलन्हि मुदा से अभिलेखित नै भेल, आब 2009 ई। मे जगदीश प्रसाद मण्डल ओहि घटनाकेँ अपन पछताबा कथाक आधार बनेलन्हि। गएर ब्राह्मण वर्गक जगदीश प्रसाद मण्डल/ राजदेव मण्डल/ बेचन ठाकुर/ महेन्द्र नारायण राम/ मेघन प्रसाद/ बिलट पासवान “विहंगम”, हिनका सभक अतिरिक्त जे साहित्यकार छथि ओहिमेसँ बेसी वएह आगाँ बढ़ि सकलाह जे टोना-टापर जानै छथि आ ब्राह्मण- कायस्थ मध्य सेहो बेशीकाल टोना-टापर जानैबला आगाँ बढ़लाह, से ककरा दोष देबै? ने पाठक रहै, जे जेबीसँ खर्चा केलन्हि से विवादित कएल गेलाह, जे प्रतिभावान

रहथि से हतोत्साहित कएल गेलाह आ जे टोना-टापर जानैबला रहथि से आगाँ बढ़लाह। कारण सेहो स्पष्ट अछि जे मैथिलीमे पाठक नै छल तेँ ई भेल आ ईहो सत्य जे एहि सभ कारणसँ पाठक नै बढ़ल, चिकन एण्ड एग प्रोब्लम। गएर ब्राह्मण वर्गक राजनीतिज्ञ बेसी दोषी छथि, ओ वोट मांगैले आबै छथि मुदा जितलाक बाद मैथिली नै बजताह जे हम अहाँक भाषा नै बाजै छी, से हमरासँ दूर रहू। विदेहक आगमन एहि सभ पक्षकेँ सोझाँमे राखि कऽ भेल, मैथिलीकेँ देल स्लो-प्वाइजनिंगक प्रभाव दूर भेल अछि।

मुन्नाजी:मैथिली विशेष कऽ गएर ब्राह्मणेक मूल भाषा छल। ब्राह्मणक मूल भाषा तँ संस्कृत रहल, बोली चालीमे सभक भाषा मैथिलीये रहल। मुदा ब्राह्मण लोकनि हुनका सभकेँ पूर्णतः दूर रखलनि। अहाँ हुनका सभकेँ जोड़ि लेलौं? कोना?

गजेन्द्र ठाकुर: मानुषीमिह संस्कृताम् – ई उक्ति हनुमान जीक छन्हि जे सीतामैयाक नैहरक भाषा मानुषीमे हुनकासँ अशोक वाटिकामे गप केलन्हि (वाल्मीकि रामायण- सुन्दरकाण्ड)। मैथिलीमे बहुत रास शब्द अछि जे वैदिक संस्कृतमे अछि मुदा लौकिक संस्कृतमे नै, से मैथिल खास कऽ गएर ब्राह्मण वर्ग

वैदिक संस्कृतक बेशी लग छथि तँ पढ़ल लिखल मैथिल (ब्राह्मण आ कायस्थ) लौकिक संस्कृतक। मुदा लोक कंठमे बसल साहित्य गएर ब्राह्मण वर्गमे अछि, उमेश मंडल 12-14 जातिक एहेन साहित्यक संकलन केने छथि तँ महेन्द्र नारायण राम/ विश्वेश्वर मिश्र/ मणिपद्मक पोथी सेहो छपल छन्हि। ई अवश्य जे विदेहक अएबासँ पूर्व एकभगाह स्थिति छल नब्बै प्रतिशत ब्राह्मण आ 10 प्रतिशत कायस्थ साहित्यकार छलाह। अन्य नगण्ये छलाह, विदेह सभक मध्य भरोस उत्पन्न कऽ सकल ताहिमे ओ सभ गोटे शामिल छथि जे विभिन्न कालावधिमे विदेहसँ जुड़ैत गेलाह आ एकरा शक्ति प्रदान कएलन्हि। पहिने विद्यानन्द झा, नागेन्द्र कुमार झा, रश्मि रेखा सिन्हा, उमेश मंडल, शिव कुमार झा आ मनोज कुमार कर्ण, जया वर्मा आ राजीव कुमार वर्मा विदेहसँ जुड़लाह। हमरा आ सम्पादक मंडलक सदस्यकँ मानसिक रूपेँ प्रतारित करबाक घृणित प्रयास सेहो किछु टोना-टापर जानैबला साहित्यकारक इशारापर कएल गेल, मुदा एहिसँ हमरा सभकेँ झमेलासँ बाहर अएबाक कला सिखबाक अवसर भेटल। मुदा उत्साहवर्धन करएबलाक तुलनामे ई सभ बड्ड कम मात्रामे रहथि, राखू पाँच प्रतिशत। हम सभ लोककेँ जोड़लहुँ आ ओ सभ जुड़लाह, दुनू सत्य अछि। हमर ई प्रयास एहि अभाव-भाषणकेँ खतम कऽ देलक- यौ बड्ड प्रयास केने छिऐ, नै सम्भव छै यौ।।आदि।।।आदि; आ एहि अभाव भाषणमे ब्राह्मण-कायस्थ तँ शामिले रहथि, गएर ब्राह्मण-कायस्थ साहित्यकार आ

राजनीतिज्ञ सेहो शामिल रहथि, आ ओ सभ बेशी दोषी छथि। दोसर आबि जएताह तँ हमर चलती कम भऽ जाएत, माने प्रतियोगितासँ दूर भागब, ई जेना ब्राह्मण-कायस्थ आ गएर ब्राह्मण-कायस्थ साहित्यकार- दुनुक मनोभावना बनि गेल छल; ओना एहिमे अपवादो सभ छथि।

मुन्नाजी:अहाँ स्वयं ब्राह्मण वर्गसँ रहि पुरना बभनौटी (ब्राह्मणवाद) सँ अलग बाभनवादसँ दुखी वा कतिआएल रचनाकार, सभ जाति-धर्मक नव-पुरान रचनाकारकेँ एक मंचपर एक संग जगजियार कऽ रहलौंहेँ, एकरा पाछाँ की मानसिकता वा रहस्य अछि?

गजेन्द्र ठाकुर: मैट्रिकक सिलेबसमे पढ़ै छलहुँ जे सभ जातिक मैथिलीभाषी मैथिल छथि, मुदा वास्तविक धरातलपर, विद्यापति पर्व आदिमे ई मैथिल विशेषण मुख्यतया दू जातिक भऽ जाइत छल। माने कथनी आ करणीक अन्तर। हमर पालन-पोषण आ शिक्षा-दीक्षामे कथनी आ करणीक अन्तर नै रहल, प्रायः सएह कारण हएत। दोसर प्रतियोगिता बढ़त तँ अहींक साहित्य ने मजगूत हएत, बेशी लोक आएत तखन ने नीक लोक बेशी आएत। जातिक नामपर वा सर-सम्बन्धीक नामपर हमर सहयोग क्यो मंगबाक हिम्मत नै केने छथि, कमसँ कम ओ लोकनि जे

हमर पिता आ हमरा चिन्हैत छथि। ने कोनो रचना-चोरकेँ हम जातिक नामपर बकसैबला छियन्हि। आ जे ओहि प्रवृत्तिक छथि से सभ जाति-धर्मक लोक एकट्ठा भऽ जाथु जाहिसँ पीठमे छूरा भोंकेबासँ तँ हमरा सभ बचि जाएब। आ हमर मानसिकताक लोक जे एक मंचपर एक संग जगजियार भऽ रहल छथि तँ हम सएह कहब जे हमर काज हुनका सभमे हमरा सभक प्रति विश्वास देने छन्हि- से हुनका सभकेँ धन्यवाद।

मुन्नाजी:कोनो एहेन विशेष क्रियाकलाप वा घटना जे अहाँकेँ बाभनक वा बभनौटीक प्रति आक्रोश आ गएर बाभनक प्रति लगाव बढ़ेलक।

गजेन्द्र ठाकुर:कोनो एक घटनाक आवश्यकता कत्तऽ छै। दरभंगाक दोकानमे मैट्रिकक सिलेबसक गाइडक अतिरिक्त कोनो मैथिली पोथी नै भेटै छलै, कोनो एक साहित्यकारक मुँहसँ दोसराक प्रति आदर वचन नै निकलै छलै, कियो अतिथि सम्पादक बनि अहाँक रचनाक चोरि केलक तँ ओकरा अहाँ पकड़ी तँ ताहिपर एकमत नै होइ जाइ छलाह उनटे दोषीकेँ पीठ ठोकै जाइ छलाह, शब्दशः चोरि आ आक्रान्त वा प्रभावित भेल रचनाक अन्तर ककरा नै बुझल छैक आ ओहि आरिमे शब्दशः चोरि केनिहारक पीठ ठोकब! विदेहक आगमनक बाद एहि सभमे परिवर्तन आएल, एकरा के नकारि सकत।सत्यक प्रति लगाव

रहत आ अन्यायक प्रति विरोध तँ सभ किछु अनायासे आबि जाएत, कोनो विशेष क्रियाकलाप वा घटनाक आवश्यकता नै पड़त, कोनो घटनासँ फाएदा उठेबाक आवश्यकता नै पड़त।

मुन्नाजी:अहाँक मैथिली पत्रकारिताकेँ दूरि हेबासँ बचेबाक वा सत्यक खोजक कारणेँ गारि-गंजनक पछातियो एक स्टंपपर अड़ल रहबाक दृढ़ संकल्प कतेक दिन धरि निमहता हएत?

गजेन्द्र ठाकुर: कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक समर्पणमे हम लिखने रही-
पिताक सत्यकेँ लिबैत देखने रही स्थितप्रज्ञतामे
तहियेे बुझने रही जे
त्याग नहि कएल होएत
रस्ता ई अछि जे जिदियाहवला।
आ ई पढ़ि गामक बहुत गोटे कानए लागल छलाह। हुनका सभकेँ बुझल छन्हि, मुदा अहाँकेँ हम यएह कहि सकै छी जे एकर निर्धारण भविष्य़ करत, अपन विषयमे बढ़ा-चढ़ा कऽ की कहू।
मुन्नाजी:किछु सम्पादक- "अहाँ हमर छापू वा हमरापर लिखू आ हम अहाँक छापब"बला नियतिपर छथि। ओ किछु चुनल-बीछल लोककेँ छपै छथि वा परिवारवादमे लेपटाएल रहै छथि। मुदा अहाँ ऐ सँ इतर सभकेँ स्थान दै छियैक- ई की सोच जाहिर करैए?
गजेन्द्र ठाकुर:मैथिलीमे समस्या रहै जे पाठक नै रहै, तँ ओना होइ

छलै। हम सभ सभकेँ स्थान दैत छिऐ तँ एहिसँ पाठक बढ़ल, मैथिली मृत होएबासँ बचि गेल। आ आब दोसरो पत्रिका सभ सभकेँ स्थान देनाइ शुरू कऽ देने छथि- कारण अभाव-भाषण जेना लेखके नै छै, दोसर जाति लिखिते नै छै, नव लोक मैथिलीमे आबिये नै रहल छै, ई सभ मिथ विदेह द्वारा ध्वस्त कऽ देल गेल छै।

मुन्नाजी:मैथिलक मानसिक अतिक्रमणसँ अहूँ अपन विचार बदलि ओहिना रहरहाम तँ नै भऽ जाएब, जेना मैथिली पत्रकारितामे आइ धरि चलि आबि रहलैए?

गजेन्द्र ठाकुर:मैथिलक मानसिक अतिक्रमण हमरापर होएत कोना? प्रतियोगितासँ, मेहनतिसँ हम दूर नै भागै छी। मैथिली पत्रकारितामे प्रतिभावान लोकक संख्या कम छलै से ओहन अतिक्रमण होएब स्वाभाविक रहै। मैथिली किएक, सभ भाषाक पत्रकारितामे/ विश्वविद्यालय शिक्षणमे भाषा विषयमे कम मार्क्समे नामांकन होइ छै, तेँ एहन अतिक्रमण बेशी होइ छै। मुदा विदेहक आगमनक बाद दोसर विषयक जेना इतिहास, भूगोल, कम्प्यूटर साइन्स, चाटर्ड एकाउन्टेन्सी, डॉक्टर आदिक संख्या मैथिली साहित्यमे बढ़ल अछि; साहित्य विषयमे सेहो प्रतिभावान लोक सभ छथि, सेहो सोझाँ आएल छथि। हमर मृत्युक बादो ई रक्तबीज सभ हमर उद्देश्यकेँ आगाँ बढ़बैत रहताह।

मुन्नाजी:ठाम-ठीम ई चर्च उठैत अछि जे अहाँ आ श्रुति प्रकाशन, व्यक्ति विशेषकेँ छपबामे अपन आर्थिक-मानसिक ऊर्जाक बेशी अंश लगा रहल छी, ताहि हेतु अहाँ की कहब?

गजेन्द्र ठाकुर:विदेहमे आइ धरि ई नै भेल अछि। हमर "प्रोविडेन्ट फन्ड आ एरियरक पाइ" आ माँक पेंशनक सीमित संसाधनक बावजूद जे मानसिक संसाधन अछि, जेना बुक डिजाइन, साइट-डिजाइन, टाइपिंग ई सभ विदेहक सम्पादक मंडल द्वारा मुफ्त उपलब्ध कराओल जाइत अछि। कोनो मैथिलीक पत्रिका वा संस्था वेबसाइट निर्मांण, पत्रिकाक रजिस्ट्रेशन आदि लेल विदेहसँ सम्पर्क केने होथि आ से हुनका नै भेटल होइन्ह, से नै भेल अछि। श्रुति प्रकाशनक मैथिली पोथीक लेल सेहो हम कैमरा-रेडी-कॉपी धरि तकनीकी सहायता दैत छियन्हि। हमर देल सलाहपर श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीक आठ टा किताब आ स्व। राधाकृष्ण चौधरी जीक मिथिलाक इतिहास छापल गेल अछि, ई सभटा पोथी विदेह आर्काइवपर मुफ्त डाउनलोड लेल उपलब्ध छै, एकरा सभकेँ अहाँ पढ़ू आ स्वयं निर्णय करू जे गुणवत्ताक आधारपर ई सभ छपबा योग्य अछि वा एकर छपबाक निर्णय व्यक्ति विशेषक आधारपर कएल गेल छै। बहुत रास हमर सलाह प्रकाशक द्वारा नहियो मानल गेल, सभ संस्थाक आर्थिक

संसाधनक सीमा छै। श्री जगदीश प्रसाद मण्डल आ स्व। राधाकृष्ण चौधरी जीक पाण्डुलिपि कतेको सरकारी मैथिली संस्थासँ जुड़ल पुरोधा लग गेलन्हि मुदा ओ लोकनि अपन पोथी छपेबाक जोगारमे छलथि, छपबेबो केलन्हि, भने ओकर कोनो ग्राहक/ पाठक नै होइ।मुदा एते धरि होएबाक चाही जे गुणवत्ता आधारित पोथी सभक हजारक हजार डाउनलोडक संग प्रिंट वर्सनक पाइ दऽ कऽ किननिहार संख्या देखि ई मैथिली सरकारी-गएर सरकारी संस्था सभ आब अपन विचार बदलथि। कारण आब हम मात्र विदेहपर केन्द्रित भऽ काज कऽ रहल छी आ प्रकाशक सेहो सीमित मात्रामे पोथी प्रकाशित करबामे समर्थ छथि तेँ जे ई लोकनि आगाँ आबथि तँ विदेह आर्काइवमे अमूल्य आ ढेर रास अद्भुत रचना/ रचनाकार उपलब्ध अछि/ छथि। कैमरा रेडी कॉपी धरि बनेबाक काज हम मुफ्तमे कऽ देबन्हि।

मुन्नाजी:अहाँसँ एकटा व्यक्तिगत जीवनक पहलूसँ जुड़ल प्रश्न पूछब जे अहाँ नोकरीक संग सभसँ नियमित सम्पर्क, नियमित रचनारत रहि नियमित पत्रिकाक संचालनक अतिरिक्त पारिवारिक समन्वयन कोना कऽ पबैत छी?

गजेन्द्र ठाकुर:पत्नी प्रीति ठाकुरक सहयोग छन्हि, ओहो मैथिली चित्रकथाक चित्रकारीमे लागल रहै छथि, बच्चो सभ, ओम आ आस्था, शान्त प्रकृतिक छथि, से अतिरिक्त सुविधा प्राप्त अछि।

विदेहक दूर-दूर प्रान्त देशमे बसल सम्पादक मंडलक सहयोग छन्हि, जे कतेक मेहनति करै छथि आ हुनका सभसँ कम मेहनति जे हम करी तँ हम कथीक सम्पादक। कोनो बौस्तु लेल हृदयमे अग्नि रहत तँ सभटा समन्वयन भऽ जाएत।

मुन्नाजी:एतेक काज केलाक पछातियो एखन धरि अहाँक कोनो मूल्यांकन (व्यक्तित्व आ कृतित्व दुनूक) नै भऽ सकल। अइ सँ अपनाकेँ प्रभावित तँ नै पबै छी?

गजेन्द्र ठाकुर: नै, एहिसँ हम सहमत नै छी। हमरा प्राप्त ई-पत्र आ चिट्ठी सभ, पाठकक प्रशंसापत्र, पाण्डुलिपि सभक परिरक्षणक हमर योजनाक सफलता आ भाषा-विज्ञानक हमर शोध ई सभ हमरा संतुष्टि देने अछि। खराब लोक सेहो अहाँकेँ नीक कहत से कोना सम्भव? से हमरा चाहबो नै करी। व्यक्तित्व आ कृतित्व दुनूक मूल्यांकन मैथिली की आनो भाषामे मृत्युक बादे होइ छै।

मन ऐसो निर्मल भयो जैसे गंगा नीर।
पीछे पीछे हरि फिरें कहत कबीर कबीर।।
(कबीर)
(मोन एहन निर्मल भऽ गेल जेना ई गंगाक जल अछि। पाछाँ-पाछाँ भगवान कबीर-कबीर कहैत पछोर धेने छथि।-कबीर)

मुन्नाजी:मैथिलीमे समीक्षाक स्तर की अछि, समीक्षाक वास्तविक प्रतिरूप की अछि, आ ओ मैथिलीमे कत्तऽ अछि?

गजेन्द्र ठाकुर:मैथिली समीक्षाक समक्ष वास्तविक समस्या रहै। पहिल रहै पाठकक संख्या शून्य रहब आ दोसर रहै लेखक आ समीक्षकक एक दोसराक सर-सम्बन्धी/ दोस- महीम होएब। से एहि स्थितिमे गपाष्टक आधारित समीक्षाक चलती भेलै। मुदा आब से नै अछि। जे पुरनका समीक्षक लोकनिकेँ अपन अस्तित्व बचेबाक छन्हि आ दुर्गानन्द मंडल, शिव कुमार झा, राजदेव मंडल, धीरेन्द्र कुमार आ मारते रास राक्षसी प्रतिभा सम्पन्न समीक्षकसँ टक्कर लेबाक छन्हि तँ बिना पढ़ने समीक्षा लिखबाक आह-बाह आकि छी-छी बला विपरीत ध्रुवक समीक्षा छोड़ए पड़तन्हि।

मुन्नाजी:अन्तमे अहाँ अपन समकक्ष रचनाकर्मीकेँ कतऽ ठाढ़ देखै छी, हुनक दशा-दिशाक मादेँ की कहब?

गजेन्द्र ठाकुर:आश्चर्य लगैत अछि जे कत्तऽ ई लोकनि नुकाएल छलाह, सभ अपन सामाजिक-पारिवारिक जिम्मेदारी निमाहैत मैथिलीक लेल जतेक कऽ रहल छथि से आन भाषामे सम्भव नै छै, किछु अपवादो छथि आ से तँ रहबे करताह।

मुन्नाजी:अपनेक स्वतंत्र विचार आ एतेक समय देबा लेल बहुत-बहुत धन्यवाद।

(विदेह पेटारसँ, ई साक्षात्कार मूल रूपसँ पूर्वोत्तर मैथिल केर जनवरी-मार्च, 2011 केर अंकमे छपल रहए। बादमे ई विदेह-सदेह 33 मे संग्रहित भेल)

गजेन्द्र ठाकुर केर साक्षात्कार
(आशीष अनचिन्हार द्वारा ई-मेल केर माध्यमसँ)

1) मुन्नाजीक देल साक्षात्कारमे अहाँक कथन अछि जे पञ्जी एवं अहाँक इंटरनेट बला काजक कियो समीक्षा नहि कऽ सकताह मुदा प्रस्तुत पोथी लेल पञ्जी बला काज लेल सेहो आलेख आएल अछि एवं इंटरनेट बला काजपर सेहो संगहि एहि पोथीक अतिरिक्तो अहाँक इंटरनेट बला काजक मूल्यांकन भेलै। एहि परिवर्तनपर अपनेक की टिप्पणी अछि।

उत्तर- पञ्जीक समाजशास्त्रीय अध्ययन कएल गेल अछि, रुचि बढ़ल छै।

2) विलासी मनुख धरतीक पर्यावरण खत्म केलकै आब पुरस्कारी लेखक सभ साहित्यिक-सांस्कृतिक पर्यावरणकेँ खत्म कऽ रहल छै। दूनू पर्यावरणकेँ बचेबाक लेल की-की करबाक चाही?

उत्तर- सोंगर लागल घर बेशी दिन नै टिकै छै, पुरस्कारी लेखक मूल धाराकेँ सुखा देने छथि, ओतुक्का साहित्यिक-सांस्कृतिक पर्यावरण मरुद्यान धरि मात्र छै। समानान्तर धारा सभ दिनेसँ रहल छै, साहित्यिक-सांस्कृतिक पर्यावरण मूल धाराक अधीन नै

छै।

3) बेसी रचना रचलासँ लेखन गंभीरतापर की प्रभाव पड़ैत छै। गजेन्द्र पासवान बहुत लेखन करै छथि तँइ हुनकर रचनामे गुणवत्ता नै छनि मुदा गजेन्द्र झा बहुत लेखन करै छथि माने बहुत सक्रिय ओ उर्जाशील छथि। एहि दू उदाहरणमे अहाँ कोन पक्षमे छी।

उत्तर- सोंगर लागल मूलधारामे ई सभ चर्चा चलिते रहत।

4) विदेहक शुरुआती समयमे डॉ. रामदेव झा एवं हुनक सहयोगी गणक साहित्य अकादमीमे वर्चस्व छल। विदेहक सक्रिय विरोधसँ अकादमीमे परिवर्तन भेलै आ अलग-अलग लोक अकादमी प्रतिनिधि बनलाह। मुदा की साहित्य अकादमीक चरित्रमे अंतर एलै? पहिनेक अकादमी चरित्र एवं एखन केर अकादमी चरित्रमे की अंतर छै?

उत्तर- सीमित पाठक-लेखकक घोंघाउज ओतऽ एहिना चलिते रहत, संरचनामे दोष छै। एक्को प्रतिशत सुधारक गुंजाइश ओतऽ तइ कारणसँ नै छै।

5) लेखक तमाम नैतिकताक बंधन आन प्रोफेशन बलापर थोपि दैत छथि मुदा अपना लेल सभ स्वतंत्रता लऽ लै छथि। कोनो पुलिस वा कि सरकारी मुंशी-अफसर घूस लैत छै तँ पूरा पुलिस आ सरकारी नौकर घूसघोर मानि लेल जाइत छै मुदा जखन कोनो लेखक द्वारा समीक्षार्थ पोथी देल जाइत छै आ समीक्षक-आलोचक गदगदी आलोचना करैत छै तखन पूरा लेखक वर्गकेँ खराप किए ने मानल जाए? यदि पुलिस या सरकारी मुंशी भ्रष्ट भऽ गेलै घूससँ तँ गदगदी समीक्षा लीखि कऽ आलोचक भ्रष्ट किए नै भेलै?

उत्तर- एथिक्स सत्य-असत्य, बा झूठ-सत्यक निर्धारण नै करैत अछि, ई छिऐ उपलब्ध चोइसक अन्तर्गत अपन निर्णय लेब, अपन चोइस लऽ कऽ। मूल धारामे जेहने चोइस उपलब्ध छै तहीमे सँ अहाँकेँ निर्णय लेबऽ पड़त।

6) कल्पना करियौ जे सभ पुरस्कार बंद भऽ जेतै, तमाम एसाइन्मेंट खत्म, सभ मंच, सभ-संस्था बंद। एहन स्थितिमे मैथिली भाषा-साहित्य बचतै कि नै बचतै। यदि बचतै तँ कतेक आ नै बचतै तँ किए?

उत्तर- सी.डी. मे संरक्षित केलासँ, यू ट्यूबपर देलासँ, पुरस्कार, अनुवाद, एसाइनमेण्ट, मोनोग्राफ.. ऐ सभसँ मैथिली भाषा-

साहित्य नै फौदायले छै आ नहियेे ई सभ बन्द भेने कोनो फर्के पड़तै। ओ दुनिये अलग छै, लोककेँ बुझलो नै छै जे पुरस्कार, अनुवाद, एसाइनमेण्ट, मोनोग्राफ- ई सभ की होइ छै, सोंगर लागल मूल धाराक घरक चीज-बौस्तु छिऐ।

7) मैथिली लेखक केर एक वर्ग एहन छै जे धार्मिक रचना करऽ बलाकेँ अपन खेमासँ बारि दैत छै मुदा जखन मंत्रेश्वर झा जे कि कलक्टर छलाह ओ जखन धार्मिक गीत लीखै छथि तखन ओ ओहि खेमाक सर्वेसर्वा बनल रहि जाइत छथि। एहन उदाहरण बहुत छै। साहित्यकेँ धर्मसँ विरोध छै वा कि लेखक विशेषसँ?

उत्तर- धर्म मनुक्खक साइकोलोजिस्ट छिऐ, किछु गोटेकेँ किछु काल तकर जरूरति हेबे करतन्हि। जँ संस्कृति रहतै तँ तकरो विरोध करऽ पड़त, उत्सवमे किसानी गीतकेँ ताकि कऽ अलग करऽ पड़त काली बन्दी गीतसँ। धार्मिक लोकसँ बेशी कट्टर तखन ऐ तरहक लोक भऽ जाइ छथि।

8) एकटा पाठकक तौरपर जखन हम विदेह पत्रिकाकेँ देखैत छी तऽ ओकर दू कालखंड देखाइए सेहो बहुत रास परिवर्तनक संग। जेना 2014-15 धरि बहुत रास उपेक्षित

लेखकक रचना रहैत छल मुदा तकर बाद ओकर संख्या कम होइत चलि गेल। तहिना विदेहमे बहुत रास संपादन सहयोगीक नाम रहैत छलनि से आब प्रायः नहि अछि। 2015 केर बाद बहुत रास मुख्यधाराक लेखक विदेहक सहयोग केनाइ शुरू केलथि। ई परिवर्तन कोना संगहि एहि परिवर्तन कोनो लाभ-हानि विदेहकेँ भेलै?

उत्तर- विदेहक सालमे 24 टा अंक निकलै छै। जखन इण्टरनेटक शुरुआती चरण रहै तखनुका परिस्थितिमे मुख्यधाराक लेखक भऽ सकैए एकरा दब माध्यम मानैत होथि, आ आब नै। उपेक्षित लेखकक कोनो कैटगरी विदेह कहियो मानबे नै केलक। मन के हारे हार है मन के जीते जीत। सम्पादन सहयोगीक संख्यामे कमी हमहीं केने छी, मुख्यधाराक संस्था सभ द्वारा ओइ नाम सभकेँ टारगेट कएल जयबाक किछु घटनाक बाद। विदेहमे समानान्तर धाराक रस्ता पकड़ि जे मुख्यधाराक लेखक अबै छथि तिनकर सम्मान छन्हि।

9) वर्तमानमे मैथिली आलोचनाक की स्थिति छै आ एखन के सभ छथि आलोचनामे?

उत्तर- मुख्यधारामे आलोचन शून्य छै। समानान्तर धारामे विदेहक समालोचना अंक देखि सकै छी, अपन समीक्षाशास्त्र छै एतऽ।

10) मैथिलीमे दलित-उपेक्षित वर्गकेँ साहित्यमे नै अनबाक श्रेय हुनके सभहक वर्गकेँ जाइत छनि। उदाहरण लेल तारानंद वियोगी, सुभाष चंद्र यादव होथि वा कि महेन्द्र नारायण राम मुख्यधारामे रहियो कऽ अपन जातिक एकौटा लेखक मैथिलीकेँ नै दऽ सकलाह मुदा मैथिलीपर जातिवादी हेबाक बेसी आरोप वएह लगाबै छथि। एकरा अहाँ कोना देखै छियै?

उत्तर- मन के हारे हार है मन के जीते जीत। मूलधारा मोनसँ हारि चुकल अछि, सोंगरपर ठाढ़ घरसँ हमर सएह संकेत अछि।

11) वर्तमान भारतीय साहित्य लग मैथिलीक की स्थिति छै?

उत्तर- मूल धारा मैथिलीकेँ आन भाषाक साहित्यक संग अपन रचनाकारक रचना संग प्रस्तुत करैत अछि, आलेख, नाटक, उपन्यास, कविता, गजल आदि द्वारा। आ तइ हिसाबे आन साहित्य मध्य मैथिलीक स्थान झूस अछि। हँ समानान्तर धाराक संकलन जँ देखी तँ ई आन साहित्यक समकक्ष अछि।

12) लेखन कारण अहाँक अपन व्यक्तिगत जीवनमे कोनो एहन घटना घटल जाहि कारणसँ अहाँ अपनाकेँ लज्जित अथवा गौरवान्वित मानने होइ।

उत्तर- नै, हम अपन नोकरी, जीवन आ साहित्य तीनू एक्के रङ रखने छी आ स्थितप्रज्ञता तीनूमे अछि।

13) वर्तमान मैथिली साहित्यमे गजल विधा, गजल आलोचना कोन ठामपर अछि। एहि विधाक भविष्य की छै?

उत्तर- सरकारी आ गएर सरकारी संस्थागत मूलधाराक हिसाबे आन साहित्य मध्य मैथिली गजल/ गजल अलोचनाक स्थान झूस अछि। हँ समानान्तर धाराक हिसाबे जँ देखी तँ ई आन भाषाक समकक्ष अछि।

14) मैथिलीक वर्तमान युवा साहित्यकारसँ अहाँ कतेक संतुष्ट छी।

उत्तर- युवा आ बूढ़मे कोनो अन्तर हम नै देखै छी, ओहिना जेना कम लिखनहार बा बेशी लिखनहारमे, दुनू नीक-अधला भऽ सकै छथि, हुनकर रचना नीक-अधला भऽ सकै छन्हि। युवा हतोत्साहित कऽ सकै छथि, युवा भेनाइ जीवनक चरण छिऐ,

कथूक गारण्टी जीवनक कोनो अवस्था हिसाबे नै।

15) 'सगर राति दीप जरए' नामक कार्यक्रममे नंबरिंग केर जे विवाद छै से किएक छै? की कारण छै जे दिल्लीमे भेल ओहि कार्यक्रमक गनती नहि होइत छै?

उत्तर: बहुत गोटे बहुत तरहक बात घुमबै छथि, साहित्य अकादमी स्पॉन्सर केलकै आदि, पहिनहियो भेल छै स्पॉन्सर आदि। मुदा असली गप छै जे ओ कार्यक्रम रवीन्द्र नाथ टैगोर केर 150 म जयन्ती वर्ष मे रवीन्द्र नाथ टैगोर पर साहित्य अकादमी करेलकै बा स्पॉन्सर केलकै। आ साहित्य अकादमी ओहि कथा गोष्ठीकेँ अपन कार्यक्रममे गिनती करै छै, तखन कहू जे एकै कार्यक्रम केर दू दावेदार कोना मानल जेतै। जँ साहित्य अकादमी मैलोरंगकेँ वा कोनो संस्थाकेँ मात्र आ मात्र 'सगर राति दीप जरए' लेल फंड देने रहितै आ अकादमीमे से उल्लेखित रहितै तखन ओकर नम्बरिंग पर हमरा आपत्ति नै रहैत मुदा साहित्य अकादमी फंड देतै Tagore In Maithili Theatre लेल आ ओ कहेतै कथा गोष्ठी से कोना संभव छै। सगर राति दीप जरय मैथिली कथाक पाठक कार्यक्रम छिऐ, तें रवीन्द्र जयंतीक कार्यक्रमक गनती केना हेतै। एगो सगर राति दीप जरय मात्र तऽ बचल छै साहित्य अकादेमीक प्रकोप सँ| जाहि संस्थाकेँ जाहि नामपर

फंड भेटलै से हुनका मजबूरीमे कार्डपर छापऽ पड़ल छनि आ से हम ओकर फोटो दऽ रहल छी। एहि कार्ड सभकेँ देखला पर ईहो स्पष्ट हएत जे नैतिक स्तर पर सेहो गलत भेल छै जेना कथा रवीन्द्र नामक जे विषय छै तकर मतलब ई भेलै जे रवीन्द्र नाथ टैगोर केर कथाक अनुवाद हेतै वा हुनक कथा पर बात हेतै जखन कि 'सगर राति दीप जरए' केर मूल शर्त छै जे कथा अप्रकाशित एवं अप्रसारित हो। एहने सन रवीन्द्र काव्य लेल बूझू। एहू सत्रमे रवीन्द्रनाथक कविताक बदला आने किछु भेल हेतै। या तऽ अकादमीकेँ धोखा देल गेल छै फंड लेल या ओहि समयमे जे अकादमीक लोक छलाह से मिली-भगतसँ चुप रहि गेलाह।

हकार
MINISTRY OF CULTURE • GOVERNMENT OF INDIA
संस्कृति मंत्रालय • भारत सरकार
सत्यमेव जयते
maithili lok rang
mailorang
Presents
TAGORE IN MAITHILI THEATRE
Five days festival in DELHI
22nd – 26th March, 2012
All presentation in Maithili Language
एहि महत्त्वपूर्ण महोत्सवमे सपरिवार आमंत्रित छी,
हम सब अहाँक बाट ताकब.
Supported by
Ministry of Culture
Government of India
mailorang@gmail.com
9811774106, 9910671203

मैथिली लोकरंग / मैलोरंग रेपर्टरी

TAGORE IN MAITHILI THEATRE

22 - 26 मार्च, 2012

महोत्सव विवरण

22 मार्च, 2012 : रवीन्द्र नाट्य (डाकघर) -

समय : सायं 06.30 बजे
स्थान : मुक्तधारा, भाई वीरसिंह मार्ग, गोलमार्केट, दिल्ली
(आर.के.आश्रम मार्ग, मेट्रो स्टेशन)
प्रस्तुति : मिथिलांगन, दिल्ली

23 मार्च, 2012 : रवीन्द्र अर्पण (जल डमरू बाजे) -

समय : सायं 07.00 बजे
स्थान : लिटिल थिएटर ग्रुप (एल.टी.जी.), दिल्ली
(मंडी हाउस, मेट्रो स्टेशन)
प्रस्तुति : मैलोरंग रेपर्टरी, दिल्ली

24 मार्च, 2012 : कथा रवीन्द्र (सगर राति दीप जरय-76) -

समय : सायं 06.00 बजे – 06.00 बजे प्रात:काल
स्थान : अग्रवाल धर्मशाला, मधुबन रोड, दिल्ली
(निर्माण विहार, मेट्रो स्टेशन)

25 मार्च, 2012 : रवीन्द्र काव्य (काव्य रचनापाठ) -

समय : सायं 06.30 बजे
स्थान : एम.एल.आर. एकेडमी ऑफ आर्ट, मधुबन रोड, दिल्ली
(निर्माण विहार, मेट्रो स्टेशन)

26 मार्च, 2012 : रवीन्द्र नाट्य (व्यवस्था) -

समय : सायं 06.30 बजे
स्थान : मुक्तधारा, भाई वीरसिंह मार्ग, गोलमार्केट, दिल्ली
(आर.के.आश्रम मार्ग, मेट्रो स्टेशन)
प्रस्तुति : पंचकोसी, सहरसा

26 मार्च, 2012 : रवीन्द्र नाट्य (काबुलीबाला) -

समय : सायं 07.30 बजे
स्थान : मुक्तधारा, भाई वीरसिंह मार्ग, गोलमार्केट, दिल्ली
(आर.के.आश्रम मार्ग, मेट्रो स्टेशन)
प्रस्तुति : मैलोरंग रेपर्टरी, दिल्ली

•

कवन नगर के सेनुरिया सेनुर बेचे आयल रे आहे कवन नगर के कुमारी धिया सेनुर बेसाहल हे...

गजेन्द्र ठाकुर एवं प्रीति ठाकुरक परिचय

गजेन्द्र ठाकुर एवं प्रीति ठाकुरक परिचय

एहि ठाम गजेन्द्र ठाकुर एवं प्रीति ठाकुरक परिचय देल जा रहल अछि आ ई परिचय विस्तृत अछि। पाठककेँ ई विचित्र लगतनि। मुदा जे हमर पोथी "मैथिली गजलक व्याकरण एवं इतिहास" केर भूमिकामे पढ़ने हेताह से बूझि सकैत छथि जे एना हम किए कऽ रहल छियै। हमर स्पष्ट मानब अछि जे कोनो व्यक्तिकेँ विराट रूपमे पहुँचेबा धरि अनेक लोकक सहयोग रहैत छै खास कऽ परिवारक। तँइ जखन ओइ व्यक्ति द्वारा गौरवबोध करेबाक अवसर अबैत छै तखन ओहि समस्त लोककेँ चिह्नित कएल जेबाक चाही। फोटो सभ अंतमे परिशिष्टमे दे जा रहल अछि। एखन धरि गजेन्द्र ठाकुरक तीन भाषामे विकीपीडिया बनि चुकल अछि जकर लिंक एना अछि-

मैथिली- https://mai.wikipedia.org/s/co

अंग्रेजी-
https://en.wikipedia.org/w/index.php?title=Gajendra_Thakur&oldid=1144739154

एव मिश्र देशक अरबीमे-
https://arz.wikipedia.org/w/index.php?title=%D8%AC%D8%A7%DA%86%D9%8A%D9%86%D8%AF%D8%B1%D8%A7_%D8%AB

%D8%A7%D9%83%D9%88%D8%B1&oldid=2849105

चित्र- 1-गजेन्द्र ठाकुर

जन्म तिथि : 30 मार्च 1971 (भागलपुर)
माता : श्रीमती लक्ष्मी ठाकुर (नैहर-हैंठी बाली, मधुबनी)
पिता : स्व. कृपानंद ठाकुर (मामा गाम- राजे, मधुबनी)
पत्नी : श्रीमती प्रीति ठाकुर (विवाह दिवस- 26 जनवरी 2000)
पुत्र : ओम ठाकुर
पुत्री : आस्था ठाकुर
गाम : मेंहथ, झंझारपुर, मधुबनी (बिहार)
शिक्षा : एम.बी.ए. (फाइनेन्स), सी.आइ.सी., सी.एल.डी., एम.बी.एल., पी.जी.डी.सी.एल.सी.एफ., पी.जी.डी.आइ.पी.आर.एल., कोविद
वृत्ति- भारत सरकारक सेवामे
गजेन्द्र ठाकुरजी केर परिवारक अन्य सदस्य :

नाना : अभय नारायण झा

नानी : फूल दाइ

मामा: राम अवतार झा आ देवेन्द्र झा (गाम-हैंठी बाली, मधुबनी)

भाइ: श्री कुमार जितेन्द्र

भौजी: श्रीमती सुनीता ठाकुर (नैहर- भवानीपुर, मधुबनी)

भातिज: वेदान्त ठाकुर

भतीजी: स्वास्तिका ठाकुर

बहीन :श्रीमती नीलिमा चौधरी (सासुर- रुद्रपुर, मधुबनी)

बहिनोइ: (श्री) श्रीमोहन चौधरी

भगिनी: मधूलिका मिश्र

भगिन जमाय: रवि मिश्र (गाम- सतलखा, मधुबनी)

भगिनीक बेटी-बेटा: आव्या आ रिधान

दोसर भगिनी: तूलिका

भगिन जमाय: सर्वेश कुमार झा (गाम- हरड़ी, मधुबनी)

प्रीति ठाकुरजीक नैहर पक्ष-

चित्र- 2-प्रीति ठाकुर

जन्म-3 जून 1977 (किशनगंज)
माता :श्रीमती इन्दिरा झा
पिता :श्री सुधीर चन्द्र झा
ग्राम जगेली, भाया-तारानगर, पूर्णिया.
शिक्षा-वनस्पति विज्ञानमे स्नातक
परिवारक अन्य सदस्य-
बाबा-गौरीकांत झा
दाइ-वरदा देवी
नाना-जयकृष्ण झा
नानी-शशिकला देवी
भाइ : शशि शेखर
भौजी : प्रियंका
भतीजी- भातिज : अनन्या आ अथर्व
भाइ : रवि भूषण
भौजी- रश्मि प्रिया
भतीजी- भातिज: अपर्णा आ विक्रमादित्य

प्रीति ठाकुरक रचना संसार
मूल:
1. गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा -पहिल मैथिली चित्रकथा (बालसाहित्य), (2008)

2. मैथिली चित्रकथा (बालसाहित्य), (2009)
3. मिथिलाक लोकदेवता (बालसाहित्य), (2010)
4. विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बालसाहित्य), (2012)

अनुवाद (मैथिली):

1. छोट आ पैघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा, बाल साहित्य) (Ist Edition 2002, Revised Edition 2022)
2. माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बालचित्रकथा, बाल साहित्य) (Ist Edition 2003, Revised Edition 2022)
3. हमर परिवार (अनुवाद- बालचित्रकथा, बाल साहित्य) (Ist Edition 2007, Revised Edition 2022)
4. जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा, बाल साहित्य) (Ist Edition 2016, Revised Edition 2022)
5. पोथी 13: 1... 2... 3... (अनुवाद- बाल चित्रकथा, बाल साहित्य) (Ist Edition 2018, Revised Edition 2022)
6. बाजाक अबाज (अनुवाद- बालचित्रकथा, बाल साहित्य) (Ist Edition 2019, Revised Edition 2022)
7. रेस (अनुवाद- बालचित्रकथा, बाल साहित्य), (2022)
8. ए बी सी डी- प्रकृति अक्षर पोथी (अनुवाद- बालचित्रकथा, बाल साहित्य) (2022)

9. सभ खाइत अछि (अनुवाद- बालचित्रकथा, बाल साहित्य) (2022)

10. बो म्याउ बाह (अनुवाद- बालचित्रकथा, बाल साहित्य), (2022)

11. रङ सभ (अनुवाद- बालचित्रकथा, बाल साहित्य), (2022)

विशेष काज:

Compiled, Scanned & Catalogued: 11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

1. पञ्जी (11000 मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र) 2007

गजेन्द्र ठाकुरक रचना संसार

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक पोथीमे उपरक देल क्रम संख्या 1 सँ लऽ 7 धरिक पोथीकेँ एकै पोथी बना कऽ प्रकाशित कएल गेल रहै, प्रकाशनक सुविधा आ मूल्य कम रखबाक लेल। पाठक चाहथि तऽ एकरा एक पोथी मानि सकै छथि मुदा हम अलग-अलग क्रम देलहुँ।

मूल (मैथिली- ब्रेल):

1. सहस्रबाढ़नि_ब्रेल-मैथिली (मैथिलीक पहिल ब्रेल पोथी), (2009)

मूल (मैथिली):

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

देवनागरी वर्सन तिरहुता वर्सन ब्रेल वर्सन

1. गल्प-गुच्छ (विहनि आ लघु कथा संग्रह) (2009)
2. बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि) (बाल साहित्य), (2009)
3. प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग-1 (2009)
4. संकर्षण (नाटक), (2009)
5. सहस्राब्दीक चौपड़पर (पद्य संग्रह), (2009)
6. त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन (दूटा गीत प्रबन्ध), (2009)
7. सहस्रबाढ़नि (उपन्यास), (2009)
8. मिथिला रत्न/ मिथिला चित्रकला/ मिथिलाक पाबनि तिहार (कथा) आ मिथिलाक संगीत (2009)
9. Learn MithilaksharScript (2009, Second edition 2023)
10. Learn Braille through MithilaksharScript (2009, Second edition 2023)

11. Learn International Phonetic Script through MithilaksharScript (2009, Second edition 2023)
12. Learn Kaithi (2009, Second edition 2023)
13. Learn Newari (2009, Second edition 2023)
14. Learn Calligraphic Newari (Ranjana) (2009, Second edition 2023)
15. Learn Urdu Script (2009, Second edition 2023)
16. Learn Tibetan Script (2009, Second edition 2023)
17. Learn Japanese Script for Haiku (2009, Second edition 2023)
18. Learn Brahmi (2009, Second edition 2023)
19. Learn Kharoshthi (2009, Second edition 2023)
20. अक्षरमुष्टिका (बाल-लघुकथा संग्रह), (बाल साहित्य), (2010)

21. सहस्रशीर्षा (उपन्यास), (2010)
22. जलोदीप (बाल-नाटक संग्रह), (बाल साहित्य), (2012)
23. बाङक बड़ौरा (बाल-पद्य संग्रह), (बाल साहित्य), (2012)
24. नाराशंसी (गीत-प्रबन्ध), (2012)
25. भऽ जाएब छू (मैथिलीक 2012 मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले- Maithili's first climate-fiction play originally published in 2012), (बाल साहित्य), (2012)
26. जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी (2013)
जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी (हिन्दी अनुवाद रामेश्वर प्रसाद मण्डल)
27. प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग दू (कुरुक्षेत्रम अन्तर्मनक-2), (2014)
28. धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ (रुबाइ, कता आ गजल संग्रह), (2014)
29. सहस्रजित् (पद्य संग्रह), (2014)
30. मचण्ड (नाटक), (2014)
31. मैथिली समीक्षाशास्त्र (2022)
मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)
32. नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (2022)
नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

33. कमलाक भगता, (बाल साहित्य), (2022)
34. तरहरिमे परीलोक (बाल साहित्य), (2022)
35. बेसी छुट्टी कम इसकूल (बाल साहित्य), (2022)
36. बड़द करैए दाउन ने यौ, (बाल साहित्य), (2022)
37. बाल गजल (बाल साहित्य), (2022)
38. फिनिश लाइन, (बाल साहित्य), (2022)
39. मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-2, अनुप्रयोग), (2023)
40. मैथिली प्रतियोगिता, (बाल साहित्य), (2023)
41. प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, (भाग-2, कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक खण्ड-8), (संक्षिप्त), (2023)
42. नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (2023)
नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (मिथिलाक्षर)
नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (कैथी)
नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (नेवाड़ी)
नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (IPA)
43. दूषण पञ्जी- The Black Book (2023)
दूषण पञ्जी- The Black Book (मिथिलाक्षर)
44. पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (बीहनि, लघु आ दीर्घ कथा संग्रह), (2023)
पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (मिथिलाक्षर)
पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (कैथी)

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (नेवाड़ी)

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल (IPA)

शब्दशास्त्रम् (लघुकथा संग्रह)

45. स्वप्नमे मिज्झर होइत (2023)

46. गंगा ब्रिज (नाटक), (2023)

47. उल्कामुख (नाटक), (2023)

48. Learn Maithili Sign Language (2023)

49. मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) (2023)

50. नित नवल सुशील (2023)

मूल (अंग्रेजी):

1. Rajdeo Mandal- Maithili Writer (2022)

2. JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer (2023)

अनुवाद (अंग्रेजी):

1. The_Science_of_Words (2014)

अनुवाद (मैथिली):

1. तेलुगु कथा आ ओड़िया, तेलुगु, गुजराती, भोजपुरी आ कश्मीरी कविता (2009)

2. तेलुगु कथा आ ओड़िया, तेलुगु, गुजराती, भोजपुरी आ कश्मीरी कविता (मिथिलाक्षर)

3. विदेह:सदेह 27 (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक 1-350 सँ), (2022)

4. मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका, (बाल साहित्य), (2022)
5. सुनू, (बाल साहित्य), (2022)
6. घर सभ, (बाल साहित्य), (2022)
7. एकटा नीक दिन, (बाल साहित्य), (2022)
8. चलू हम तँ ठीक छी ने! , (बाल साहित्य), (2022)
9. की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी? (बाल साहित्य), (2022)
10. टोस्ट (बाल साहित्य), (2022)
11. बड़ीटा! कनियेटा! (बाल साहित्य), (2022)
12. एतऽ हम सभ रहै छी (बाल साहित्य), (2022)
13. भारतोल्लक राजकुमारी, (बाल साहित्य), (2022)
14. वुयो (बाल साहित्य), (2022)
15. कच-कच कचाक, (बाल साहित्य), (2022)
16. चुन्नू-मुन्नूक नहेनाइ, (बाल साहित्य), (2022)
17. नेना जे बैलूनसँ डेराइत छल (बाल साहित्य), (2022)
18. अद्भुत फिबोनाची अंक-शृंखला, (बाल साहित्य), (2022)
19. हारू (बाल साहित्य), (2022)
20. अखन नै, अखन नै! (बाल साहित्य), (2022)
21. जन्मदिनक उत्सव भोज, (बाल साहित्य), (2022)
22. मोट राजा पातर-दुब्बड़ कुकुड़, (बाल साहित्य), (2022)

23. बचिया जे अपन हँसी नै रोकि सकैत छलि (बाल साहित्य), (2022)
24. अंग्रेजी (बाल साहित्य), (2022)
25. हम सूँघि सकै छी, (बाल साहित्य), (2022)
26. छोट लाल-टुहटुह डोरी (बाल साहित्य), (2022)
27. करू नीक, भोगू नीक (बाल साहित्य), (2022)
28. ई सभटा बिलाड़िक दोख अछि! , (बाल साहित्य) , (2022)
29. चोभा आम! (बाल साहित्य), (2022)
30. हमर टोलक बाट (बाल साहित्य), (2022)
31. जखन इकड़ू स्कूल गेल, (बाल साहित्य), (2022)
32. माछी फेर आउ टाटा!, (बाल साहित्य), (2022)
33. अमाचीक जुलुम मशीन सभ, (बाल साहित्य) ,(2022)
34. टिंग टोंग, (बाल साहित्य), (2022)
35. पाउ-म्याऊ-वाह, (बाल साहित्य), (2022)
36. कुकुड़क एकटा दिन, (बाल साहित्य), (2022)
37. हमरा नीक लगैए, (बाल साहित्य), (2022)
38. रीताक नव-स्कूलमे पहिल दिन, (बाल साहित्य), (2022)
39. कनी हँसियौ ने! , (बाल साहित्य), (2022)
40. लाल बरसाती, (बाल साहित्य), (2022)
41. भूत-प्रेतक नाट्यशाला, (बाल साहित्य), (2022)
42. आउ पएर गानी, (बाल साहित्य), (2022)

43. कतऽ अछि ई अंक 5? (बाल साहित्य), (2022)
44. भारतोल्लक राजकुमारी, (बिनु शब्दक), (बाल साहित्य), (2022)
45. मू परियोजना (तिरहुता लिपि), (2023)
46. मू परियोजना (देवनागरी लिपि), (2023)

मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग रीड-अलाउड ऑडियो बुक:

1. https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाई केर परिवर्तनकारी रेबेका), (बाल साहित्य), (2022)
2. https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम तँ ठीक छी ने! चलू हम तँ ठीक छी ने!), (बाल साहित्य), (2022)
3. https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन), (बाल साहित्य), (2022)
4. https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घर सभ), (बाल साहित्य), (2022)

5. https://bloomlibrary.org/player/dAzC0Fubt7 (की अहाँ ऐ चिड़ै सभकेँ देखने छी?), (बाल साहित्य), (2022)

6. https://www.youtube.com/@videha_ejournal पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल, (2022)

सम्पादन:

विदेह अंक 1-376 आ आगाँ, विदेह-सदेह अंक 1-36

संयुक्त सम्पादन:

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा:

11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

1. जीनोम मैपिंग (450 ए. डी. सँ 2009 ए. डी.)--मिथिलाकपञ्जीप्रबन्ध (2009)

2. Maithili-English Dictionary Vol. I (2009)

3. Maithili-English Dictionary Vol. II (2009)

4. English-Maithili Computer Dictionary (2009)

5. जीनियोलोजिकल मैपिंग (450 ए. डी. सँ 2009 ए. डी.)—मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध -भाग-2 (2012)

6. Videha English Maithili Dictionary, (2012)

गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार:

1. मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा), (2012)

2. मैथिलीक प्रतिनिधि गजल (2017)

NTA-UGC/ UPSC/ BPSC Maithili Optional आदि लेल गजेन्द्र ठाकुर नि:शुल्क जे मेटेरियल देने छथि से एना अछि-

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-2, अनुप्रयोग)

मैथिली प्रतियोगिता

[Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय

भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान/ मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)]

(Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

(ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददास सिलेबसमे छथि आ रसमय कवि चतुर चतुरभुज विद्यापति कालीन कवि छथि. एतय समीक्षा श्रृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व चारू गोटेक शब्दावली नव शब्दक पर्याय संग देल जा रहल अछि. नव आ पुरान शब्दावलीक ज्ञानसँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददासक प्रश्नोत्तरमे धार आओत, संगहि शब्दकोष बढ़लासँ खाँटी मैथिलीमे प्रश्नोत्तर लिखबामे धाख आस्ते-आस्ते खतम होयत, लेखनीमे प्रवाह आयत आ सुच्चा भावक अभिव्यक्ति भय सकत.)

(बद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- विद्यापति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा- बानगी)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोक गाथा नृत्य नाटक संगीत)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- यात्री)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली रामायण)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द विचार)

(तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकास)

अनुलग्नक-1-2-3   अनुलग्नक- 4-5

(मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ ओड़िया) [यू.पी.एस.सी. सिलेबस, पत्र-1, भाग- "ए", क्रम-5])

[मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली- बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल]

NTA_UGC_NET_Maithili_01- गजेन्द्र ठाकुर

NTA_UGC_NET_Maithili_02- गजेन्द्र ठाकुर

Test Series-1- गजेन्द्र ठाकुर

Test Series-2- गजेन्द्र ठाकुर

GS (Pre)

Topic 1 - गजेन्द्र ठाकुर

NTA-UGC/ UPSC/ BPSC केर विद्यार्थी सभ गजेन्द्र ठाकुरजीक youtube चैनलपर जा सकै छथि जकर लिंक अछि

1) https://www.youtube.com/@videha-elearning

2) https://www.youtube.com/@videha_ejour

nal/videos
3)
https://www.youtube.com/@ggajendra71/videos
विशेष- IEHC द्वारा 3 नवम्बर 2012 कैँ "समन्वय" नामसँ भारतीय भाषा महोत्सवमे लेख पाठ। एहि आलेख पाठकैँ एहि लिंकपर देखल जा सकैए पाठक आन मैथिली सहभागीक पाठ तेसर नम्बर बला चैनलपर जा कऽ देखि सकै छथि। https://www.youtube.com/watch?v=qKkki28Haxg

विशेष- Diorama International Film Festival मे गजेन्द्र ठाकुरजीक तीन टा मैथिली कथाक प्रदर्शन भेल अछि (अंग्रेजी अनुवाद केर माध्यमसँ, अनुवादक लेखक अपने छथि)। Log in केलाक बाद देखि सकैत छी। एकर लिंक अछि https://watch.diorama.in/story/the-science-of-words/?fbclid=IwAR3zmWoyXmiViBXa4T0WfSDXjrSjN61Ka5L_KmvLHd_c-H8AmUTmoVhX4hg

विभिन्न सम्मान केर संस्थापक-गजेन्द्र ठाकुर

गजेन्द्र ठाकुर द्वारा विदेह सम्मान केर स्थापना भेल जे कि समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ सेहो विख्यात अछि। ई पहिल एहन सम्मान अछि जाहिमे ओहन तबकाकेँ सेहो सम्मान भेटलै जकर प्रतिभा संस्था-सरकारक दलाल आगू दबि गेल छलै। ई सूची बहुत नमहर अछि तँइ पाठक एकरा विदेहक एहि लिंकपर जा कऽ देखि सकै छथि-
https://drive.google.com/file/d/1KVCDIKRLXihmEvYENLmX4YfELT3yl_RJ/view
एकर अतिरिक्त मैथिली गजल विधा लेल पहिल सम्मान "गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा सम्मान" लेल सेहो बहुत रास सहायता केने छथि। एहि सम्मानसँ जुड़ल सूचनाक लिंक अछि-
https://anchinharakharkolkata.blogspot.com/p/blog-page_4.html
"समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान" ई नाम सुनिए कऽ मैथिलीक मुख्यधाराक मठाधीश सभ बगदल रहै आ एखनो छै मुदा ई मैथिलीक सौभाग्ये टा बुझियौ जे एहन परंपरा ओ पहिने चलेलक। हिंदी भाषा धरिमे एहन समानान्तर काज केर जरूरति ओहि भाषाक कतिपय लेखक सेहो प्रकट केलक। एकटा हिंदी लेखक (देवेन्द्र आर्य) केर 2015 मे कएल

फेसबुक पोस्टक स्क्रीनशाट आ ओकर लिंक दऽ रहल छी (फोटो क्रम, वामासँ दहिना)-

https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=pfbid0344bgsLbDw818X38MrdL9wt2SvhyrX6KmQsc1GqF6oKkKa2ZhF5Y6bwRJjZNtrtqLl&id=100002871986777&mibextid=2JQ9oc

17:16
Devendra Arya
Pradeep Sharma
सरकार के हाथ बहुत लंबे हैं।
8y Like Reply
Shiv Murti Tiwari
आर्य जी कितना साहित्य जनहिताय या स्वान्तः सुखाय लिखा जा रहा है? कुछ वाद के लिए कुछ प्रतिवाद के लिए और कुछ पुरस्कार- स्वाद के लिए बस****
8y Like Reply 1
Pradeep Sharma
असहमत ! तिवारी जी। आपने भी सारिका,नई कहानियाँ,पुराना ज्ञानोदय,हंस,कथादेश पढ़ा है। ये प्रकाशन साहित्य की सतत सेवा करते आ रहे हैं। नये कथाकारों को भी अवसर मिल रहे हैं।
8y Like Reply 1

17:17
Devendra Arya
8y Like Reply 1
Prem Prakesh Verma
एक पाठक के हैसियत से इतना अवश्य कहना चाहूँगा कि साहित्यकार यदि मूलत: ईमानदार है तो वो वाद, प्रतिवाद या पुरस्कारवाद की चिन्ता किये बगैर अपने पथ चलता रहता है। यदि कोई 'प्रेमचन्द्र' के साहित्यिक-यात्रा में वाद ढूढना चाहे तो उसे भी कुछ कहने और लिखने को कोई न कोई 'वाद' मिल ही जायेगा। पर उससे लेखक की सच्चाई पर कोई ऊँगली नहीं उठा सकता।
तिविरी जी व शर्मा जी की टिप्पणी पर इतना अवश्य कहना चाहूँगा कि वर्त... See more
8y Like Reply 1
Shiv Murti Tiwari
पता नहीं सन्त कबीर,बाबा तुलसी, काव्यसूर्य सूरदास जी को तत्कालीन समयानुसार कोई पुरस्कार मिला होगा या नहीं???? परसाई जी, मुक्तिबोध, धूमिल जी को कितने सारे पुरस्कारों से नवाज़ा गया??
8y Like Reply
Comment as Ashish Anchinhar

17:17

Devendra Arya

Saurabh Pandey
साहित्य अकादमी इन्हीं शर्तों के साथ शुरु हुई थी क्या ? ये जानना रोचक होगा।
8y Like Reply 1

Ganesh Pandey
जैसे-जैसे साहित्य में समझदारी और ईमानदारी बढ़ती जाएगी, पुरस्कारों का महत्व लेखकों के बीच कम से कम होता जाएगा। सच तो यह कि पुरस्कार एक मूर्खतापूर्ण प्रथा है। इसमें तनिक भी अच्छाई है तो हिन्दी में सबसे बड़ा पुरस्कार पाने वाले कवि मुक्तिबोध के पैर के नाखून के बराबर भी क्यों नहीं हैं या हो सकते हैं? हिन्दी में पुरस्कार की प्रतिष्ठा इसके पक्ष में कुतर्क करने वालों की वजह से है। इसे खत्म होना ही है, आज... See more
8y Like Reply 5

शौकत हुसैन मंसूरी
उम्दा सच है।
8y Like Reply 1

Pradeep Sharma
पुरस्कार तो बंद नहीं किए जा सकते हैं ।
हाँ ! अपने वालों को दिए जा सकते हैं ।।
8y Like Reply 1

Comment as Ashish Anchinhar

17:17

Devendra Arya

डॉ.राधेश्याम सिंह
जन्नत की हकीकत।दिल बहल गया।
8y Like Reply 1

Kishore Tiwari
पुरस्कार वास्तव में सामाजिक तिरस्कार का पर्याय बन चुके हैं.
8y Like Reply 1

Farook Shah
बात वाजिब है और आज अब अनिवार्य भी बन गयी है... पर जन अकादमी आड़े-तिरछे बंटे हुए माहौल में ज़रा कठिन साहस होगा. अगर पूरे संकल्प से बहुत से लेखक मिलकर यह बना सके तो वह एक क्रांतिकारी कदम होगा.
8y Like Reply 2

Ravinder Rangdhar
स्वागत योग्य है यह सोच, इसका क्रियान्वयन होना चाहिए. एक क्रान्तिकारी क़दम होगा यह
8y Like Reply

Ajay Saini
आर्य जी स्वागत् योग्य प्रस्ताव है ।इस पर अमल की पहल शुरू होगी तो कारवां बढता जाएगा ।

Comment as Ashish Anchinhar

17:17

Devendra Arya

8y Like Reply 1

Bhupi Sood
लेखकों को इकठा करना....अच्छी सोच है। करिये प्रयास और बाँटिये पुरस्कार। वैसे अभी भी ढेरों संसथान हैं जो दर्जनों की संख्या में पुरस्कारों की रेवड़ियां बाँट रहे हैं। यही कारन है की साहित्य हाशिये पर चला गया है।

8y Like Reply

Ashish Anchinhar
Devendra Arya Ji--- ये हिंदी मे हो सकता है। मगर मैथिली मे तो कई सालों से समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार दिया जा रहा है। विस्तृत विवरण केलिये यहाँ आयें --http://www.videha.co.in/aboutme.htm
https://www.facebook.com/gajendra.thakur/posts/42587611819377?pnref=story

VIDEHA.CO.IN
'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका

8y Like Reply 1

Devendra Arya
वाह, अनुकरणीय है

परिशिष्ट-1

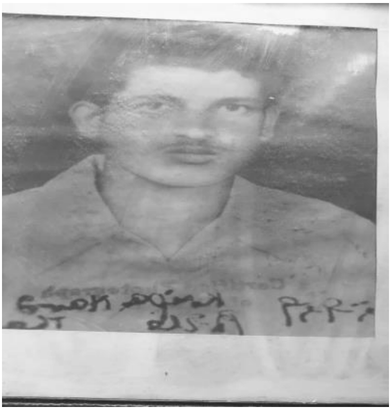

चित्र- 3-स्व. कृपानंद ठाकुर चित्र- 4-श्रीमती लक्ष्मी ठाकुर

चित्र- 5 एवं 6-पहिल फोटोमे वामा कातसँ- स्वास्तिका ठाकुर, श्री कुमार जितेन्द्र, श्रीमती सुनीता ठाकुर, वेदान्त ठाकुर। दोसर

फोटोमे वामा कातसँ- (श्री) श्रीमोहन चौधरी, श्रीमती नीलिमा चौधरी

चित्र- 7 एवं 8-पहिल फोटोमे वामा कातसँ- श्रीमती लक्ष्मी ठाकुर, ओम ठाकुर, प्रीति ठाकुर एवं आस्था ठाकुर। दोसर फोटोमे पाछू वामा कातसँ- मधूलिका मिश्र, रवि मिश्र, आगूमे वामा कातसँ- रिधान एवं आव्या

चित्र-9 एवं 10 पहिल फोटोमे वामा कातसँ- तूलिका एवं सर्वेश कुमार झा। दोसर फोटोमे आस्था ठाकुर

चित्र- 11-ओम ठाकुर (2013 मे)

चित्र- 12-गजेन्द्र ठाकुर

चित्र- 13 एवं 14 - श्री सुधीर चन्द्र झा एवं श्रीमती इन्दिरा झा

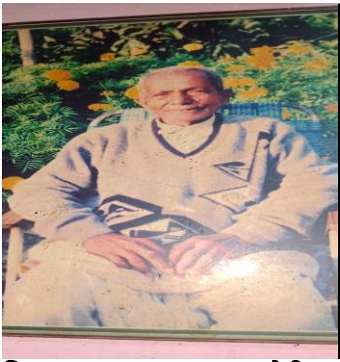

चित्र- 15 एवं 16 - गौरीकांत झा एवं वरदा देवी

चित्र- 17 एवं 18 - जयकृष्ण झा एवं शशिकला देवी

चित्र- 19 एवं 20 - शशि शेखर एवं प्रियंका

चित्र- 21 एवं 22 - शशि शेखर, प्रियंका, अथर्व आ अनन्या

चित्र- 23 & 24 - रवि भूषण एवं रश्मि प्रिया

चित्र- 25 एवं 26 - अपर्णा आ विक्रमादित्य

करमी के लत्ती जकाँ लतरथु पुरैन जकाँ पसरथु हे...

मेंहथ गाम, कृपानंद ठाकुरजीक आँगनमे बैसि एखन धरि अहाँ सभ जे पढ़लहुँ से मात्र प्रस्तावना छल। आब एहिठामसँ डेग उठा रहल छथि ई दंपति रचनाकार 22म शताब्दीक मैथिली साहित्यिक कोबर लेल जे पूर्णतः सजि कऽ तैयार छनि खास हिनके लेल। इएह कोबर घर साक्षी बनत नव-नव योजना-परियोजनाक। इएह कोबर घर साक्षी बनत भाषा-साहित्य केर सिनेहक। इएह कोबर घर साक्षी बनत वचन केर, चुपचाप वचन निमाहि देबाक। इएह कोबर घर साक्षी बनत ओहि नेओं केर जाहिपर ठाढ़ हएत 32म-35म शताब्दीक मैथिली।................

कोहबर लिखलनि कौशल्या रानी औरो सुमित्रा रानी…
पाकल बीड़ा पनमा के खिलिया बनाओल............
नदिया के तीरे तीरे माली फुलवरिया ताहीमे चानन के गाछ हे......
घर पछुअरबामे लौंग केर गछिया लौंग फुलाइ आधी राति हे........
कोनो कैंची कतरब माइ हे आलरि झालरि......

से आब एखन हमरा लोकनि अपन पएर पाछू कऽ ली। हमरा

लोकनि घुरि चली। आन अवसर फेर एबे टा करतै। फेरो हम सभ एबे टा करब।

सहयोगी लेखक परिचय

हम भने 'अनचिन्हार' होइ मुदा एहि पोथीमे सहयोग देनिहार लेखक सभ पाठक लेल अनचिन्हार नहि छथि तँइ हुनक विशेष परिचय नहि देल गेल अछि। ई नाम सभ स्वयं अपनामे परिचय अछि। तथापि PDF पढ़ऽ बला पाठक लग एकटा सुविधा ई हेतनि जँ ओ कोनो लेखक केर नामपर क्लिक करताह तऽ ओहि लेखक केर परिचय हमरा जाहि रूपमे भेटल (विकीपीडिया, पोथी, पत्रिका, आन उपल्बध परिचय या विदेह विशेषांक, विदेहमे संग्रहित लेखक परिचयक खंड- विदेह रत्नमे देल फोटो) से आबि जेतनि। मुदा जेना कि भूमिकामे ई कहने छी जे ई सुविधा प्रिंटमे उपल्बध नहि हेतै तँइ एहि लेल हम प्रिंट माध्यमक पाठकसँ माफी माँगि रहल छियनि। ओना प्रिंट पाठक ई सोचि खुश भऽ सकै छथि जे जहिया ई लिंक काज नहि करतै तखन प्रिंट आ लिंक सभ बराबर भऽ जेतै। जँ कोनो लेखक केर नामक निच्चा एकै अंडरलाइन अछि तकर माने जे ओहिमे एकैटा लिंक देल गेल अछि। मुदा जाहि लेखक केर नाममे अलग-अलग अंडरलाइन अछि तकर माने ई भेल जे हम ओहिमे एकसँ बेसी लिंक देलहुँ अछि। उदाहरण लेल सियाराम झा 'सरस'मे एकटा लिंक छै तँइ एकटा अंडरलाइन भेटत, डॉ. रमण झामे दू लिंक छै तँइ दू अलग अंडरलाइन भेटत मुदा उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'मे चारि अलग-अलग अंडरलाइन भेटत माने ओहिमे

कुल चारि टा लिंक देल गेल छै जकरा ऑनलाइन पोथीक पाठक अलग-अलग क्लिक कऽ खोलि पढ़ि सकै छथि-

1. सियाराम झा 'सरस' 2. डॉ. शेफालिका वर्मा 3. वीणा ठाकुर 4. डॉ. रमण झा 5. शिव कुमार झा 'टिल्लू' 6. धीरेन्द्र कुमार 7. दुर्गानन्द मण्डल 8. कल्पना 9. कीर्तिनाथ झा 10. लालदेव कामत 11. विनयानंद झा 12. जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' 13. डॉ. कैलाश कुमार मिश्र 14. भवनाथ झा 15. भीमनाथ झा 16. डॉ. शिव कुमार मिश्र 17. उदय नारायण सिंह "नचिकेता"18. प्रणव 19. लक्ष्मण झा 'सागर' 20. शिवशंकर श्रीनिवास 21. रबीन्द्र नारायण मिश्र 22. डॉ. धनाकर ठाकुर 23. डॉ. योगानन्द झा 24. अशोक 25.अरविन्द ठाकुर 26. राजदेव मंडल 27. प्रोफेसर प्रेमशंकर सिंह (आब स्वर्गीय) 28. डॉ. आभा झा 29. आचार्य रामानंद मंडल 30. अजित कुमार झा 31. मुकेश दत्त 32. मुन्ना जी

संपादक परिचय

आशीष अनचिन्हार

मैथिली गजल एवं शेरो-शाइरीपर केंद्रित इंटरनेट पत्रिका (ब्लाग रूपमे) “अनचिन्हार आखर” केर संस्थापक ओ संपादक। मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास एवं मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास सहित कुल 8 टा पोथीक लेखक आ 4 टा पोथीक संपादक। विशेष परिचय लेल https://mai.wikipedia.org/s/5i लिंकपर जा सकैत छी। ई-मेल ashish.anchinhar@gmail.com

Redefining Maithili

सम्पादक परिचय

आशीष अनचिन्हार

मूल नाम--आशीष कुमार मिश्र

माता--श्रीमती गम्भीरा मिश्र

पिता- स्व.कृष्ण चंद्र मिश्र

गाम-- भटरा घाट, बिस्फी, मधुबनी

जन्म--4/12/1985

बर्ख 2008 मे शुरू भेल मैथिली गजल एवं शेरो-शाइरीपर केंद्रित इंटरनेट पत्रिका (ब्लाग रूपमे) "अनचिन्हार आखर" केर संस्थापक ओ संपादक।

प्रकाशित कृति -

1) अनचिन्हार आखर (गजल, रुबाइ ओ कता संग्रह)

2) मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास (ई भर्सन प्रकाशित)

3) मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास (ई भर्सन प्रकाशित)

4) जंघाजोड़ी (गजल संग्रह, ई भर्सन प्रकाशित)

5) मैथिली गजलक Ready Reckoner (ई भर्सन प्रकाशित)

6) कुमारि इच्छा (गजल संग्रह, ई भर्सन प्रकाशित)

7) शब्द-अर्थ-शक्ति (स्वतंत्र रूपे मैथिली गजलक पहिल आलोचना पोथी, ई-भर्सन प्रकाशित)

8) संदर्भ सहित (गजल-आलोचना)

संपादित पोथी-

1) स्वतंत्रचेता (अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व, विदेहक अरविन्द ठाकुर विशेषांक केर संशोधित रूप)

श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक संगे सह-संपादित पोथी

1) मैथिली गज़ल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (संपादित रूपमे मैथिली गज़ल आलोचनाक पहिल पोथी), ई-भर्सन प्रकाशित

2) मैथिलीक प्रतिनिधि गजल (1905सँ 2022 धरि), ई-भर्सन प्रकाशित

सम्मान-

बर्ख 2014 लेल विदेह भाषा सम्मान (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)सँ पोथी "अनचिन्हार आखर" (गजल संग्रह) लेल सम्मानित।

संपर्क सूत्र-(मेल)ashish.anchinhar@gmail.com

संपर्क सूत्र-(मोबाइल) 8876162759/8134849022

अनचिन्हार आखर केर लिंक-

https://anchinharakharkolkata.blogspot.com/